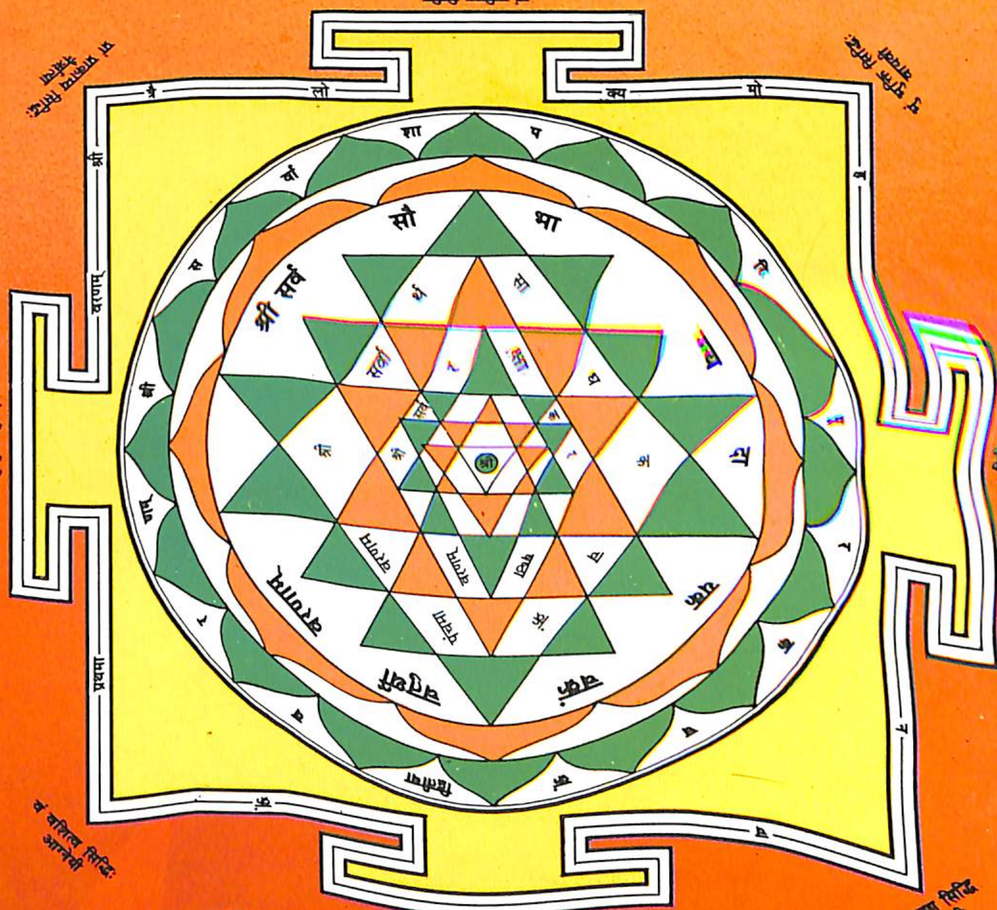
डा॰ भोजराज द्विवेदी

यंत्र शक्ति और साधना



यन्त्र शक्ति

और

साधना

डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०



द्वारा प्रकाशित

डॉ० भोजराज द्विवेदी की अनुपम पुस्तकें

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र—हिंदी संस्करण	100.00
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र—अंग्रेज़ी संस्करण	150.00
कमर्शियल वास्तु—हिंदी संस्करण	120.00
कमर्शियल वास्तु—अंग्रेज़ी संस्करण	150.00
पर्यावरण और वास्तु—हिंदी संस्करण	120.00
पर्यावरण और वास्तु—अंग्रेज़ी संस्करण	150.00
स्टॅडी ओफ ऑमेन्स—अंग्रेज़ी संस्करण	60.00
वक्री ग्रह	25.00
अनुभूत यंत्र, मंत्र, तंत्र और टोटके	100.00
अपनी जन्म पत्रिका आप बनाएं	35.00
ज्योतिष प्रश्नोत्तरी	25.00
ज्योतिष में भवन, वाहन और कीर्ति योग	40.00
ज्योतिष और धनयोग	40.00
ज्योतिष और राजयोग	40.00
ज्योतिष और विवाहयोग	40.00
ज्योतिष और आयुष्य योग	40.00
ज्योतिष और रोग विचार	40.00
ज्योतिष और संतानयोग	40.00
मंत्र शक्ति और साधना	60.00
तंत्र शक्ति और साधना	60.00
यंत्र शक्ति और साधना	60.00
वृहद् हस्त रेखा विज्ञान	60.00
सम्पूर्ण हिप्नोटिज़्म (सम्मोहन विज्ञान)	60.00
सस्वर रुद्राभिषेक प्रयोग : एक मीमांसा	50.00

प्रकाशक

डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा०) लि०

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेस-2, नई दिल्ली—110 020

यन्त्र शक्ति और साधना

लेखक

श्रीमाली कुलकमलदिवाकर, वेदिया कुलभूषण, प्राच्यविद्या महामहोपाध्याय

भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक, अंगवस्त्रम् से सम्मानित

दैवज्ञ शिरोमणि डॉ. भोजराज द्विवेदी

एम०ए० संस्कृत (दर्शन), पी०एच०डी० (ज्योतिष), लब्ध स्वर्णपदक

प्रधान संपादक– 'अज्ञातदर्शन' व "श्रीचण्डमार्तण्ड पंचांग"

प्रथम बी रोड, सरदारपुरा, जोधपुर

फोन–0291-31883

फेक्स–0291-49093



डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2

नई दिल्ली-110 020

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :

डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया-2,

नयी दिल्ली-110020

फोन : 011-6841033, 6822803, 6822804

फैक्स : 011-6925020

वितरक :

पंजाबी पुस्तक भंडार

257, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

फोन : 3266232, 3266317,

मूल्य : 50.00

संस्करण : जुलाई 1997

मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

स्पेशल इफेक्टस : प्रिंटलाइन कम्पयूटर्स, फोन : 3263922

YANTRA SHAKTI AUR SADHANA
BHOJRAJ DWIVEDI

अनुक्रमणिका

विषय प्रवेश

विश्व में जितनी भी मानव सभ्यताएं हैं वे किसी-न-किसी रूप में यन्त्र-मन्त्र--तन्त्र, तावीज़, तिलस्म व टोटकों में अपने-अपने ढंग से आस्था एवं विश्वास रखती हैं। बीमारी, प्राकृतिक प्रकोप, बुरी आत्मा या किसी के द्वारा किये गये जादू, टोने-टोटके को दूर करने के लिए अक्सर लोग तावीज़ (यन्त्र) या तो गले में पहनते हैं या फिर भुजा में धारण करते हैं।

जन्त्र 'यन्त्र' का ही अपभ्रंश स्वरूप है। पंजाबी बोलचाल की भाषा में मन्त्र को "मन्तर" एवं जन्त्र को "जन्तर" कहते हैं। इसी यन्त्र को उर्दू या मुस्लिम बोल-चाल की भाषा में 'तावीज़' कहते हैं।

अगर तावीज़ (यन्त्र) पहनने के इतिहास पर नजर डाली जाये तो हम पाते हैं कि प्रागैतिहासिक काल से ही मनुष्य किसी-न-किसी रूप में तावीज़ धारण करता चला आ रहा है। यह वह समय था जब मनुष्य "भगवान्" शब्द से भी परिचित नहीं था। हां, सूर्य की रोशनी से लेकर बिजली चमकने, तूफान, वर्षा एवं बीमारी तक की घटना उसे एक चमत्कार या जादू लगती थी। इस जादू से वह खासा डरता भी था और चाहता भी था कि किसी तरह वह इस जादू के बुरे प्रभाव से बचा रहे। उस समय मनुष्य सिर्फ अपने को ही नहीं वरन् अपनी पत्नी, बच्चे यहां तक कि अपने पूरे समूह को हर तरह से तिलिस्म, प्राकृतिक प्रकोपों एवं अशुभ की आशंका से बचाना चाहता था।

जब मनुष्य ने "भगवान" शब्द को परिभाषित कर लिया तो उसने प्रकृति के हर करिश्मे को भगवान का किया करिश्मा मान लिया और इस समय भी वह तावीज़ उपरोक्त कारणों यानी किसी भी बुरे प्रभाव से स्वयं को बचाने के लिये पहनता है। हां यह भी सत्य है कि उस प्रागैतिहासिक काल में तावीज़ का कोई विशेष आकार प्रकार नहीं था। किसी भी रंग का पत्थर का टुकड़ा, बीज, जड़, फल आदि को वह अपने पास केवल यह सोचकर रख लेता था कि इसकी वहज से उसके परिवार, मवेशियों आदि की सुरक्षा रहेगी। उस समय मनुष्य तावीज़ को गले या बांह में बांधता नहीं था, अपितु या तो खाल के बने कपड़ों में ठूंस लेता था या अपनी गुफा में रख देता था। जिस समय मनुष्य ने किसी बीज यानी पत्थर को लंबी घास में पिरोकर गले में बांधा होगा उस समय से ही तावीज़ को शरीर पर बांधने की प्रथा चल पड़ी होगी।

अंग्रेजी में तावीज़ को "ऐम्युलेट" कहते हैं। यह शब्द लैटिन एम्युलेट्म से बना है। महान् इतिहासकार प्लाइनी के अनुसार एम्युलेट्म शब्द साइक्लेमन नामक पौधे का ही बिगड़ा रूप है। इस पौधे को रोमवासी अपने घरों में लगाते थे ताकि जहरीली दवाएं बेअसर हो जायें।

प्राचीन काल से ही तावीज़ दो प्रकार के होते हैं, व्यक्तिगत एवं सामान्य। व्यक्तिगत को कोई व्यक्ति अपने लिये शरीर पर धारण करता है, परन्तु सामान्य तावीज़ को घर की दीवार, गांव के प्रवेश स्थान या चौराहे पर गाड़ दिया जाता है। तावजों को पत्थर, लकड़ी ,हड्डी, धातु, हाथी दांत, कौड़ी, चमड़ी, सांप की केंचुल, अन्य जन्तुओं की खाल के टुकड़े, मनुष्य के शरीर के टुकड़े मनुष्य के शरीर के टुकड़ों जैसे लिंग अथवा अंगुली या पूरा पंजा आदि से बनाए जाते हैं। कई बार तावीज़ों पर जादू-टोने से संबंधित कोई मंत्र या चित्र भी खुदा होता है। धातु का ज्ञान होते ही मनुष्य ने तांबे, पीतल, लोहे, सोने, चांदी आदि के यंत्र बनाने शुरू कर दिये थे। पहले तो यह भी माना जाता था कि जिस चीज या धातु का तावीज़ बना होगा उसका असर भी वैसा ही होगा बाद में तावीज़ (यंत्र) पर लिखे मंत्र या बनी तस्वीर को असर का असली कारण माना जाने लगा। इसलिए तावीज़ निर्जीव वस्तु की भांति अपना काम करती रहती है। पुराने समय में भी (यंत्र) तावीज़ को देने वाले ओझा या पुजारी इन पर फूंक मार कर कोई मंत्र बुदबुदाते थे ताकि तावीज़ की शक्ति बढ़ जाये।

प्राचीन मेसोपोटामिया में आज से 3000 साल पहले बसे लोगों का इन तावीज़ों में बेहद विश्वास था। मिश्र निवासियों की तरह ये लोग भी मानते थे कि मनुष्य के हाथ में जादुई शक्ति ईश्वर ही देते हैं। यह भी माना जाता था कि ईश्वर ही जादूगर भी है। ठीक ऐसा ही विचार बेबीलोनिया, सुमेर व मिश्र की प्राचीन सभ्यता में भी था।

प्राचीन मिश्रवासियों को तावीज़ (यंत्र) इतने प्रिय थे कि वे इन्हें पहनने के अलावा घर में भी रखते थे। मिश्र के मकबरों, मंदिरों यहां तक कि मृत व्यक्ति के शरीर के भीतर भी तावीज़ों को रखा जाता था। तावीज़ कई तरह के पत्थरों, लकड़ी , तांबे, सोना-चांदी मिश्र धातु, हाथी दांत, हड्डी, कौड़ी, मोम व पेड़ की छाल तक से बनाए जाते थे। मिश्र के राजपरिवार के सदस्य "आंख" नाम का यन्त्र पहनते थे। जिसे अंग्रेज़ी के अक्षर "टी" के रूप में दर्शाया जाता था।

इस "टी" के ऊपर एक गोल या अंखाकार तूप भी बना होता था। अंख का मतलब दीर्घ जीवन होता था। प्राचीन मिश्र के लोग गोबर के टुकड़े को अपनी पिछली टांगों से लुढ़काकर ले जाने वाले गुबरैलों को बेहद पवित्र मानते थे क्योंकि मृत व्यक्ति की ममी बनाने के बाद उसके दिल के पास मरा हुआ गुबरैला एक तावीज़ की तरह ही रख दिया जाता था।

इथियोपिया सहित तमाम देशों में ईसा मसीह के समय से ही क्रास यानि सलीब को ही सबसे अच्छा तावीज़ (यंत्र) माना गया है। तमाम ईसाई लोग आज भी इस धर्म से संबंधित संतों के नाम या पहचान चिह्न वाले तावीज़ (यन्त्र) या मैडल गले में पहनते हैं।

प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध में सैनिकों व उनके अफसरों से लेकर विमान चालकों, गोताखोरों, सुरंग बिछाने वालों आदि सभी ने तावीज़ (जन्तर) धारण किये थे। यन्त्र (जन्तर) का महत्त्व आज भी घटा नहीं है। आने वाले समय में इनका महत्त्व कम होगा ऐसी कोई संभावना नज़र नहीं आती।

एक बार नोबल पुरस्कार विजेजा फिजीशियन नैल्सबोर्न के मकान के बाहर घुड़नाल देखकर उसके वैज्ञानिक मित्र को आश्चर्य हुआ और उसने पूछा–"क्या तुम भी अन्ध विश्वास को मानने वाले व्यक्तियों में से हो?" सर नैल्सबोर्न ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया– "मैं अन्ध विश्वासी हूं या नहीं, मैं टोटकों या तिलस्म को मानता हूं या नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, परन्तु जबसे यह घुड़नाल मेरे मकान के बाहर बंधी है, मुझे राहत व आराम है।"

विश्व की सबसे प्राचीन हिन्दू संस्कृति के वैदिक साहित्य में हमें यन्त्रों के वैज्ञानिक चिंतन एवं उसके परिष्कृत स्वरूप के व्यापक दर्शन होते हैं "**यमनात् त्रायत इति यन्त्रम्**" यह निरुक्ति भी विशेषार्थक होने से प्रसिद्ध ही है। आगम शास्त्रज्ञों ने दु:खों का निवारण करने से ही इसे "यन्त्र" कहा है।

देवीभागवत में अर्चा-प्रतिमा के अभाव में यन्त्र को ही इष्टदेव का स्वरूप बतलाते हुए कहा गया है कि–

अर्च्चाभावे तथा यन्त्रम्। 3/26/21

और "नारदीय-पुराण" में इसी बात की पुष्टि करते हुए प्रसंगवश कहा गया है कि–

आपोऽग्निर्हृदयं चक्रं विष्णोः क्षेत्र-समुद्भवम्।
यन्त्रंच प्रतिमास्थानमर्चने सर्वदा हरेः॥

अर्थात जल, अग्नि, हृदय, चक्र, विष्णु के क्षेत्र में उत्पन्न वस्तु और यन्त्र के सब भगवान् विष्णु की प्रतिमा के समान पूजन के स्थान हैं।

"गौतमीय-यन्त्र" में भी यही बात कही गई है-

शालग्रामे गणौ यन्त्रे प्रतिमामण्डलेषु च।
नित्यं पूजा हरेः कार्या न तु केवलभूतले॥

इस प्रमाण के अनुसार सालिग्राम शिलाखण्ड, मणी, मण्डल एवं प्राकृतिक पत्थर सभी यन्त्रों की श्रेणी में आते हैं। शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है—

यन्त्रं मन्त्रमयं प्रोक्तं मन्त्रात्मा दैवतैव हि।
देहात्मनोर्यथा भेदो यन्त्र-देवतयोस्तथा॥

यन्त्र मन्त्ररूप है, मन्त्र देवताओं का ही विग्रह है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता है, उसी प्रकार यन्त्र और देवता में भी कोई भेद नहीं होता हैं।

अन्यत्र यह भी निर्देश है कि **"यन्त्र की पूजा किए बिना देवता प्रसन्न ही नहीं होते हैं।"** जिस प्रकार सामान्य जीवों के रहने के लिए उनके घर बने रहते हैं या बनाए जाते हैं, उसी प्रकार देवताओं के निवास योग्य गृह भी यन्त्र ही हैं।

यन्त्र को "देवनगर" अथवा "देवताओं का आवास -गृह" कहना ही वस्तुतः यन्त्र की एक उत्तम परिभाषा कही जा सकती है। यह गृह केवल गृहमात्र ही न होकर एक मज़बूत दुर्ग—किला है, जिसमें अपने-अपने स्थान, दिशा, मण्डल, कोण आदि के अधिपति पूर्णरूप से सादर आमंत्रित होकर पूजा प्राप्त करते हैं तथा यन्त्र के प्रधान अधिष्ठाता देव की आज्ञा पाकर अपने-अपने स्थानों की सुरक्षा के लिए नियुक्त होते हैं। इस तरह यन्त्रस्थ पूरा देव परिवार धारक-साधक की सुरक्षा एवं कार्य सिद्धि में सदा-सदा सहायक होता है।

मन्त्रों की तरह यन्त्रों को भी सिद्ध करना पड़ता है। सिद्ध यन्त्रों की पूजा, धारणा, स्थापना और पंचोपचार पूजन प्रक्रिया पूर्ण रूप से फलवती होती है। यन्त्र एक शक्तिशाली केप्सूल है। जिसमें शक्तियों का भण्डार होता है। इस प्रकार यन्त्र सर्वोच्च-स्थानीय है तथा मन्त्र और तन्त्र इसके साधक तत्व हैं। आगम शास्त्रों के अनुसार तीनों मिलकर साधक की कामनाओं को पूर्ण करते हैं।

जिस प्रकार से अकेला मन्त्र किसी कागज़ पर लिख देने से न तो सिद्ध होता है न ही काम कर पाता है। ठीक उसी प्रकार से किसी यन्त्र को कागज़

या किसी धातु पर लिख देने से न तो वह सिद्ध होता है न ही वह कुछ काम कर पाता है। इसलिये यन्त्र शक्ति का परीक्षण करने के लिए हमें शुभ मुहूर्त में यन्त्र को बनवाना पड़ेगा, फिर उन्हें प्राण प्रतिष्ठित करके निर्दिष्ट मन्त्रों के द्वारा व पूजा विधान के द्वारा सिद्ध करना पड़ता है। तभी यन्त्र काम करते हैं। आजकल फुटपाथ पर बिकने वाले यन्त्र एवं फुटपाथी (अशास्त्रीय) लोगों द्वारा लिखे गये इस विषयक साहित्य ने यन्त्रों की महिमा को एकदम गिरा दिया है। इसलिए हमने श्रीविद्या यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना की स्थापना की है। और विशिष्ट मुहूर्त पर हम सामूहिक रूप से इसकी साधना भी कराते हैं एवं सभी प्रकार के यन्त्रों को तन्त्र-प्रतिष्ठित करके सिद्ध भी करते हैं।

हमने इस पुस्तक में सौन्दर्य लहरी के यन्त्रात्मक प्रयोग की इस अत्यन्त गोपनीय व गूढ़ विद्या के रहस्य से पाठकों का पहली बार परिचय करवाया है। हमने इस पुस्तक में सभी प्रकार के उपयोगी एवं व्यावहारिक यन्त्रों के बारे में प्रामाणिक सामग्री प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। पाठक स्वयं यह महसूस करेंगे कि यह पुस्तक बाज़ार में उपलब्ध अन्य पुस्तकों से कुछ हट कर है।

अन्त में मैं डॉयमण्ड पॉकेट बुक्स के निर्देशक श्री नरेन्द्र जी वर्मा का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनके विशेष परिश्रम से यह पुस्तक इतने सुन्दर ढंग से पाठकों के हाथों में पहुँच पायी है। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद प्रबुद्ध पाठकों के मन में अनेक प्रकार की जिज्ञासाओं एवं शंकाओं का उठना स्वाभाविक है। प्रतिदिन डाक के माध्यम से ढेरों पत्र आते हैं, सभी का जवाब देना सम्भव भी नहीं है। फिर भी इस पुस्तक के पाठकों के प्रति मेरा विनम्र प्रयास रहेगा कि उनकी सारगर्भित शंकाओं का समाधान यथा सम्भव कर सकूं।

—डॉ. भोजराज द्विवेदी

साधना स्थली :—
श्रीविद्या यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना पीठ
कार्यालय
(जोधपुर से 9 किलोमीटर दूर, राष्ट्रीय राजमार्ग पाली रोड पर स्थित, पेट्रोल पम्प के पास (जिला-जोधपुर राज.)

कार्यालय :—
अज्ञातदर्शन (ज्योतिष पत्रिका)
पो-कुडी-भगतासनी प्रथम बी रोड,
गोल बिल्डिंग के पीछे
सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
पिन- 342 003
दूरभाष-31883,
फैक्स नं. 0291-49093

पुस्तक के बारे में

यन्त्र शक्ति और साधना यन्त्र विज्ञान को लेकर लिखी गई पहली प्रामाणिक पुस्तक है। जिसमें यन्त्र विज्ञान की सार्थकता व सत्यता को लेकर व्यापक प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के प्रारम्भ में यन्त्र की परिभाषा, यन्त्र लेखन के नियम यन्त्रों की महिमा एवं विशेषता के बारे में प्रकाश डालते हुए विद्वान लेखक ने सारगर्भित सामग्री प्रस्तुत की है।

इस आर्थिक युग में सबको लक्ष्मी की आवश्यकता रहती है। लक्ष्मी प्राप्ति हेतु श्रीयन्त्र, कनकधारा यन्त्र, कुबेर यन्त्र, एवं कर्जनाशक मंगल यन्त्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। नवग्रह यन्त्र साधना एवं रत्न जड़ित लक्ष्मी यन्त्र, गजकेसरी यन्त्र के द्वारा लेखक के व्यावहारिक ज्योतिष ज्ञान का पता भी सहज में चल जाता है। बगुला यन्त्र नागपास यन्त्र मारुती यन्त्र एवं पागड़े जीत जैसे अत्यन्त प्राचीन यन्त्रों को नवीन उपलब्धि व सार्थकता के साथ प्रस्तुत करके एक नया शोध व चिन्तन प्रबुद्ध पाठकों हेतु प्रस्तुत किया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् लेखक डॉ. भोजराज द्विवेदी ने इस तथ्य को पहली बार उद्घाटित किया है कि किसी कागज या धातु पर लिख देने मात्र से यन्त्र काम नहीं करता अपितु मन्त्रों की तरह ही यन्त्रों को पूर्ण तपस्या के साथ सिद्ध करना पड़ता है। इस सन्दर्भ में सौन्दर्यलहरी के यन्त्रात्मक प्रयोग की अत्यन्त गोपनीय व गूढ़ विद्या के रहस्यों से पाठकों को पहली बार परिचय कराया गया है। प्राचीन पाण्डुलिपि से उद्धृत ये यन्त्र आज से सौ वर्ष पूर्व मैसूर विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ने विश्वविद्यालय के स्नातकों हेतु प्रकाशित किये थे। उसके बाद आम जनता जनार्दन विविध यन्त्रों के प्रयोग को पहली बार देख पायेंगे। यन्त्र-मन्त्र विज्ञान में सिद्धहस्त विद्वान् लेखक नौ पीढ़ियों से कर्मकाण्डी श्रीमाली ब्राह्मणों के गुरु पद पर आरूढ़ हैं। अतः कर्मकाण्ड व यन्त्र-मन्त्र के क्षेत्र में वे स्वयं एक प्रमाण हैं। मन्त्र शक्ति और साधना, एवं तन्त्र शक्ति और साधना की बेहद मांग के पश्चात् **यन्त्र विद्या** प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष व गर्व का अनुभव हो रहा है। इस पुस्तक में लगभग डेढ़ सौ यन्त्रों का सचित्र परिचय कराया गया है, तथा लेखक ने यह बतलाया है कि रत्नजड़ित यन्त्र ज़्यादा तेजी से काम करते हैं। आशा है कि प्रबुद्ध पाठक विद्वान् लेखक की अन्य पुस्तकों की तरह इस पुस्तक को भी अपने मन-मस्तिष्क में विशिष्ट स्थान देंगे।

—प्रकाशक

यन्त्र की परिभाषा और उपयोग

"यंत्र" शब्द "यम्" धातु से बना है। इस धातु के अर्थ क्रमशः विपरीत, पारवेष्ण और वेष्टान आदि होते हैं। यन्त्र रहस्यमय शक्तियों का भण्डार होता है। देवी भागवत में कहा गया है कि वांछित प्रतिमा के अभाव में यन्त्र को ही इष्टदेव की तरह पूजना चाहिए।

शास्त्रकारों ने कहा है यन्त्र की पूजा किये बिना देवता प्रसन्न नहीं होते। कहा भी है —

"यन्त्र मन्त्रमय प्रोक्तं देवतैत हि,
देहात्मनोर्यथा भेदो मन्त्र देवतयोस्तथा॥"

अर्थात यंत्र मन्त्ररूप है, मन्त्र देवताओं का विग्रह है। जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता, उसी प्रकार यन्त्र और देवता में भी कोई भेद नहीं होता।

यन्त्रों की उपयोगिता

चमत्कारी विद्याओं में यन्त्र का स्थान सर्वोपरी है तथा यन्त्र और तन्त्र इसके साधक तत्व माने जाते हैं। यन्त्र सब सिद्धियों का द्वार है तथा देवताओं का आवास ग्रह है, जिसमें अपने-अपने स्थान, दिशा, मण्डल, कोण आदि के अधिपति व्यवस्थित रूप से आह्वाहित होकर विराजे रहते हैं, मध्य में उच्च सिंहासन पर प्रधान देवता प्राण प्रतिष्ठित होकर पूजा प्राप्त करते हैं। यंत्र-मंत्र का रचनात्मक शरीर है जिसमें अनुष्ठेय कर्मकाण्ड की सम्पूर्ण प्रक्रिया सक्षम रूप से ठीक उसी प्रकार से छुपी होती है जिस प्रकार से नक्शे में भवन व बीज में वृक्ष छुपा रहता है। यन्त्रों की तरह कुछ ऐसे क्लिष्ट यन्त्र भी होते हैं जो कि आवरण पूजाओं से कीलित होते हैं। इसके विपरीत कुछ ऐसे यन्त्र भी होते हैं जिसके दर्शन मात्र से व्यक्ति अभीष्ट मनोरथ को पा लेता है। श्रीयन्त्र, गायत्री यन्त्र व स्वर्णकर्षक, भैरवयन्त्र ऐसे ही यन्त्रों की श्रेणी में आते हैं जिनके दर्शन मात्र शुभ फल देने वाले कहे गये हैं। शास्त्रकारों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई

भेद नहीं होता। फलतः यन्त्र ऐसे भी होते हैं जिनमें "अंक सिद्धि" होती है। जो कि बिना मंत्रों के कार्य करते हैं तथा उनका परिणाम आश्चर्यजनक होता है। सिद्धि पुरुषों ने इन यन्त्रों के माध्यम से ऐसे-ऐसे कार्य कर दिखाये जो कि द्रष्टा को आश्चर्य में डाले बिना नहीं रह सकते। ऐसे ही मन्त्रों में पंचदशी व बीसा का नाम सर्वोपरी लिया जा सकता है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मंत्र की तरह यंत्र में भी अनन्त शक्तियों का भण्डार होता है।

यन्त्रों की आकृतियां एवं प्रकार

जिस प्रकार यंत्र अनेक हैं उसी प्रकार यंत्रों की आकृतियां भी अनेक हैं। हमने यन्त्रों के प्रकारों के बारे में विवेचन करते हुए आकृतियों के बारे में भी कुछ निर्देश किया है, तथापि कुछ विस्तार से इस सम्बन्ध में यहां विचार किया जा रहा है।

मुख्यरूप से यंत्रों की आकृतियां "पूजा" के लिये और "प्रयोग" के लिये बनाई जाती हैं। पूजा के यन्त्रों की आकृति के कुछ स्वरूप शास्त्रों में मिलते हैं, जिनमें 1. भूपृष्ठ, 2. मेरूपृष्ठ, 3. पाताल 4. मेरू प्रस्तार और 5. कूर्मपृष्ठ, ऐसे पांच प्रकार देखने में आते हैं इनका परिचय इस प्रकार है:

1. भूपृष्ठयन्त्र— इस आकृति के यन्त्र किसी भी वस्तु के बनाये जा सकते हैं। इसमें भूपृष्ठ का तात्पर्य है समतल भूमि का भाग। अर्थात् भूपृष्ठयंत्र समतल आकार वाली वस्तु पर यन्त्र की आकृति को उत्कीर्ण करके बनाया जाता है। इसके दो प्रकार होते हैं:—

(क) रेखा, वर्ण, मन्त्र, बीज आदि जो भी यन्त्राधार पर अंकित हों वे उभरे हुए हों।

(ख) उपर्युक्त बातें उत्कीर्ण खुदी हुई हों। ये दोनों बातें सभी यन्त्रों में हो सकती हैं।

2. मेरूपृष्ठयन्त्र— यह आकृति वस्तु के आकार को मेरू की तरह ऊंची क्रमशः उठी हुई पर्वताकार में बनाई जाती है। अन्तिम भाग शिखर होता है जो ऊपर नुकीला बन जाता है। नीचे का हिस्सा चौड़ा होता है जो बीच में क्रमशः छोटा होता जाता है। इनमें भी 1. रेखा आदि उभरी हुई तथा 2. उत्कीर्ण—खुदी हुई होती हैं।

3. पाताल यन्त्र— यह जैसा मेरू पृष्ठ यन्त्र ऊपर उठा होता है। यह कटोरी के आकार का बनता है।

4. मेरूप्रस्तार यन्त्र— उर्पयुक्त मेरू पृष्ठ में जैसे रेखा आदि उभरे हुए और खुदे हुए होते हैं वे ही इस यन्त्राकृति में कटे हुए होते हैं। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि यन्त्राडंकन का प्रत्येक भाग काटकर एक के ऊपर का आकार कछुए की पीठ के समान होता है।

5. कर्मपृष्ठ यन्त्र— यह आकृति मेरूयन्त्र के शिखर से रहित तथा कुछ ढलाव वाली होती है। नीचे का आकार चौकोर तथा ऊपर का आकार

कछुए की पीठ के समान होता है।

इनके अतिरिक्त कुछ और भी आकृतियों में अंकित यन्त्र यत्र-तत्र दिखाई देते हैं। यथा—

गले में धारण करने के योग्य जंजीर के पेण्डुलम में त्रिकोण, स्वस्तिक, पान आदि की आकृति में बने हुए। कुछ यन्त्र एक निश्चित प्रकार की पीठिका बैठक बनाकर उस पर भी बनाये जाते हैं।

ऐसे यन्त्रों की रचना भिन्न-भिन्न फलों को लक्ष्य में रखकर की जाती है। जिसका ज्ञान गुरु परम्परा से प्राप्त करना चाहिए।

यन्त्रों के तत्व

पांच तत्वों की आकृति वाले यन्त्र और उनका फल—

रेखायन्त्र और अंकयन्त्रों में "पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश" इन पांच तत्वों का भी समावेश किया जाता है। इनमें पृथ्वी, जल और अग्नि की रेखायें तो स्पष्टतः ज्ञात हो जाती हैं। जैसे-पृथ्वी का आकार चौकोर चतुष्कोणात्मक है। जल का मण्डल गोल वृत्ताकार माना गया है। अग्नि का आकार त्रिकोण रूप है। वरुण के मण्डल को ही त्रिवृत्त और साढ़े तीन आवर्त वाला भी लिखते हैं तब वह सार्ध त्रिवलयाकारा कुण्डलिनी का स्वरूप हो जाता है।

त्रिकोण जब उर्ध्वमुख और अधोमुख के रूप में लिखा जाता है तब वह क्रमशः शिव और भगवती का सूचन करता है।

पंचदशी यंत्र के सम्बध में भी हमारे यहां तत्वों का वर्णन आया है। यद्यपि वहां इन तत्वों के आकार नहीं हैं किन्तु अंकों की योजना ही, वहां तत्वों का सूचन करती है अतः तत्वों का उपासना से मिलने वाले फलों का संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जा रहा है:—

(1) **पृथ्वी तत्व**— यह तत्व स्थिरता, धैर्य, उत्साह, विचारप्रधानता, भौतिक सुख एवं सफलता को प्रदान करता है।

(2) **जल तत्व**— यह तत्व चंचलता, स्निग्धता, सम्मान, प्रेम, सन्तोष एवं विवेक का प्रदाता है।

(3) **अग्नि तत्व**—यह तत्व शीघ्रता, उद्वेग, क्लेश, हानि, असफलता. विनाश बहुत परिश्रम से कार्य में सफलता एवं उग्र कर्म की प्रवृत्ति में सहायक होता है।

(4) **वायु तत्व**— यह तत्व विक्षिप्तता, अविवेक, अपयश, दुःख, सम्मान. मूर्खता एवं अज्ञानता को बढ़ाने में सहायक होता है।

(5) **आकाश तत्व**— यह अध्यात्म प्रेम, विरक्त भाव, गहनचिन्तन, मनन. अध्ययन एवं एकान्त का प्रतीक है। इन तत्वों के सुफल में न्यूनाधिकता आ जाती है तथा कर्म की दृष्टि से उनका उपयोग किया जाता है।

जिस यन्त्र में इन तत्वों की आकृतियों का निर्देश हो उनके मन्त्राक्षर भी उन्हीं तत्वों के अक्षर वाले प्राप्त होने पर सिद्धि में अधिक विलम्ब नहीं

होता। जिन व्यक्तियों का शास्त्रीय ज्ञान के प्रति अधिक झुकाव हो, उनके लिए स्वर और व्यंजनों का भी तत्व विचार निम्नलिखित है:—

पृथ्वी तत्व के वर्ण :—उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड़, द, ब, ल।

जल तत्व के वर्ण:— औ, घ, झ, द, ध, भ, व, स।

अग्नि तत्व के वर्ण:— इ, ई, ऐ, ख, छ, ठ, थ, फ, र।

वायु तत्व के वर्ण:— अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य, ष।

आकाश तत्व के वर्ण:— अः, अं, ङ, न्य, ण, न, म, श, ह।

सिद्धमातृका अथवा वर्णमाला के विस्तार पर मन्त्रराशि का निर्माण होता है। अतः शास्त्रों में भी यह निर्देश है कि पहले मातृका के वर्णों की उपासना कर लेनी चाहिए। जिससे मन्त्र सिद्धि में सहायता मिलती है। इसी प्रकार अंकों की साधना तथा यन्त्रगत रेखाओं की लेखन रूप साधना की जाती है।

अंकों की संख्या वर्णमालातृका के अक्षरों की क्रमागत गणना से बन जाती है। अ—1, आ—2, इ—3, ई—4, इस तरह की गणना से अंक यन्त्रों के अंकों का यदि योग किया जाये तो उससे मंत्रों का आविर्भाव हो जाता है ऐसा भी गुरुजनों का कथन है।

साधक को यह नहीं भूलना चाहिये कि कोई भी साधना किसी एक ही अंग से पूर्ण नहीं होती है। अपितु उसके लिये जो जो अंग आवश्यक बताये गये हैं, उनकी पूर्ति के लिये परम् आग्रह रखना चाहिये। कुछ अपवादों को छोड़कर सभी साधनाओं का पूर्णांक प्राप्त होने पर ही साधना आरम्भ करने से वह निर्विघ्न समाप्त हो जाती है।

अंक यन्त्रों की महिमा एवं विशेषता

अंक यन्त्रों का अपने आप में भारी महत्त्व है। यन्त्र विज्ञान में अंकों के माध्यम से कठिन कार्य सिद्ध होते देखे गये हैं। अंक यन्त्र में पन्द्रह से लगाकर 10,00,000 तक की संख्या के अंक होते हैं। प्राचीन शास्त्रों में उनका महत्त्व इस प्रकार से आंका गया है:—

1. पनरिया (15) यन्त्र सब प्रकार की सिद्धियों का दाता माना गया है तथा इसको "यन्त्र राज" भी कहा गया है।
2. सोलहवां (16) यन्त्र से चोर की बाधा नष्ट होती है।
3. उन्नीसां (19) यन्त्र से धान में कीड़े नहीं लगते हैं।
4. बीसां (20) यन्त्र सोलह कोठे में लिखकर पास में रखने से सभी तरह के भय का नाश होता है।
5. चौबीसां (24) यन्त्र से तीर का निशान नहीं लगता है।
6. अठाईसा (28) यन्त्र रोग भय को नष्ट करता है।
7. तीसा (30) यन्त्र से शाकिनी भय नष्ट होता है।
8. बत्तीसा (32) यन्त्र का बालक के जन्म के समय उपयोग करने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
9. चौतींसा (34) यन्त्र देव ध्वजा पर लिखा जाये तो शुभ कारण है, परचक्र अथवा किसी के द्वारा भय प्राप्त होने वाला हो तो उसे मिटाता है, मकान के बाहर दीवार पर लिखने से पराभव नहीं होता, कामण-टुमण का जोर नहीं चलता शाकिनी आदि का पलायन हो जाता है।
10. छत्तीसा (36) यन्त्र यदि सट्टा करने वाले लोग पास में रख कर सट्टा करें तो विजय होती है।
11. चालीसा (40) यन्त्र से सिर दर्द मिटता है, वैरी पैरों में गिरता है, गांव में, परगने में, मान-सम्मान बढ़ता है।
12. पच्चासवां (50) यन्त्र से बालक रोना बन्द करता है।
13. छप्पनवा (56) यन्त्र से मोहन होता है।
14. बासठवां (62) यन्त्र से बंध्या स्त्री को गर्भ स्थित होता है।
15. चौसठियें (64) यन्त्र की महिमा बहुत है। मार्ग में सर्व प्रकार के भय को नष्ट करता है, वैरीभय और शाकिनी डाकिनी के भय से धारक बच जाता है।

16. सत्तरवां (70) यन्त्र से रुतबा बुलन्द होता है।
17. बहतरवां (72) यन्त्र से भूत प्रेत का भय नष्ट होता है और संग्राम में विजय पाता है।
18. अठोतरिये (78) यन्त्र शिव सुख दाता एवं सर्व कष्ठ को नष्ट करने वाला है।
19. अस्सीवां (80) यन्त्र से सेवा फल प्राप्त होता है।
20. पिच्चासिये (85) यन्त्र से मार्ग का भय मिटता है।
21. नब्बे (90) यन्त्र से चोर चोरी नहीं करता है।
22. सौवां (100) यन्त्र से सर्वकाम सिद्धि होती है।
23. एक सौ बीस (120) यन्त्र बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है इससे प्रसव सुखपूर्वक होता है तथा वेदना मिटती है।
24. एक सौ छब्बीसवां (126) यन्त्र से बंधा हुआ गर्भ छूटता है।
25. एक सौ बावनवां (152) यन्त्र को पानी से धोकर मुख धोयें तो भाईचारा एवं स्नेह बढ़ता है। भाई-बहिन का आपस में प्रेम रहता है।
26. एक सौ सतरिये (170) यन्त्र की महिमा बहुत है। इसका वर्णन तुच्छ बुद्धि मनुष्य नहीं कर सकता।
27. एक सौ बहतरियां (172) यन्त्र से पुत्र का लाभ होता है तथा भय मिटता है।
28. दौ सौ का (200) यन्त्र दुकान के बाहर दीवार पर या किसी मांगलिक स्थापना के पास लिखने से व्यापार बहुत बढ़ता है।
29. तीन सौ (300) यन्त्र से नर-नारी का स्नेह बढ़ता है और टूटा हुआ स्नेह फिर से जुड़ता है।
30. चार सौ (400) यन्त्र से घर में भय नहीं रहता, खेत पर लिखने से व लिखकर खेत में रखने से धान्य उत्पत्ति अच्छी रहती है।
31. पांच सौ (500) यन्त्र से स्त्री को गर्भ धारण हो जाता है और साथ ही पुरुष भी बांधे तो उत्तम सन्तति सुख बनता है।
32. छः सौ (600) यन्त्र से सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।
33. सात सौ (700) यन्त्र बांधने से झगड़े-टन्टों में विजय कराता है।
34. नौ सौ (900) यन्त्र से मार्ग में भय नहीं होता तथा तस्कर भय मिटता है।
35. एक सहिस्रिये (1000) यन्त्र से पराजय-पराभव नहीं होता और धारण करने वाला विजय पाता है।

36. ग्यारह सौ (1100) यन्त्र दुष्टात्मा की ओर से भय-क्लेश होता हो तो वह मिट जाता है।

37. बारह सौ (1200) यन्त्र से बन्दी मुक्त हो जाता है।

38. पचास सहस्रिये (50,000) यन्त्र से राज सम्मान मिलता है और सब प्रकार का कष्ट मिटता है।

39. दस लाख दस हजार (10,10,000) यन्त्र से मार्ग में चोर नहीं आता है।

इस दृष्टि से सभी यन्त्रों के फल को समझ लेना चाहिये। यह तो निर्देश मात्र है।

यन्त्र के अंक एवं देवता

एक से नौ तक संख्या के देवताओं की तालिका एवं उनकी दिशाएं क्रमशः इस प्रकार हैं:—

1. सूर्य-पूर्व
2. भुवनेश्वरी-नैऋत्य
3. गणपति-उत्तर
4. हनुमान-वायव्य
5. श्री विष्णु-पश्चिम
6. कार्तवीर्य-आग्नेय
7. काली-दक्षिण
8. भैरव-ईशान
9. भैरवी-पश्चिम

यन्त्र लेखन के नियम

धातु के यन्त्रों के निर्माण में ध्यान रखना चाहिये कि कोई भी यन्त्र कभी भी खुदा हुआ नहीं होना चाहिए। यन्त्र की सभी रेखायें धरातल से उभरी (उठी) हुई होनी चाहियें। उत्कीर्ण (खुदी हुई) रेखायें दरिद्रता को लाती हैं। धातुओं में तांबा ही सबसे उत्तम माना जाता है।

यदि यन्त्र लक्ष्मी कामना, धन प्राप्ति एवं ऐश्वर्य वृद्धि हेतु बनाया जा रहा है तो वह स्वर्ण या रजत पर होना चाहिये। कनक धारा यन्त्र, श्रीयन्त्र, लक्ष्मी यन्त्र, लक्ष्मी गणेश यन्त्र वगैरा प्रायः स्वर्ण या रजत पर बनाने चाहियें क्योंकि शास्त्रकारों ने लक्ष्मी का वासा सोने एवं चांदी में ही माना है। इन धातुओं के यन्त्रों में ही लक्ष्मी की प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है।

त्रिलोह की व्याख्या—

त्रिलोह में बनाये गये यन्त्र व अंगूठियां बहुत चमत्कारी होती हैं। त्रिलोह में 10 रत्ती सोना, 12 रत्ती चांदी, 16 रत्ती तांबा होता है। इस मात्रा में बनाये

गये यन्त्र व अंगूठियां केवल "रविपुष्य" संयोग में बनती हैं। त्रिलोह के यन्त्र व अंगूठियों के पहनने से दरिद्रता व कर्ज़ का नाश होता है एवं आकर्षण बढ़ता है क्योंकि ये अंगूठियां तान्त्रिक कहलाती हैं।

धातु के अलावा भोजपत्र एवं शुद्ध-स्वच्छ सफेद कागज़ पर भी यन्त्र लिखे जाते हैं। लिखने के लिये शास्त्रों में 1. पचगन्ध, 2. अष्टगन्ध, 3. गन्धत्रय के विधानों का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है:—

गन्धत्रय— इसमें (1) सिन्दूर (2) हल्दी तथा (3) कुमकुम काम में लिया जाता है। पानी की जगह गंगाजल, गुलाबजल या इत्र से काम लिया जाता है। यह आकर्षण, वंशी एवं अन्य अच्छे कार्यों में प्रयुक्त किया जाता है। मारण, उच्चाटन, विद्वेषण एवं अन्य निम्न कार्यों में श्मशान की भस्म, श्मशान का कोयला एवं रक्त या आक का दूध काम में लिया जाता है।

पंचगन्ध— 1. केसर, 2. कस्तूरी, 3. कपूर, 4. चन्दन, 5. गोरोचन। इन पांच वस्तुओं के मिश्रण से पंचगन्ध बनाया जाता है।

अष्टगन्ध— 1. अगर, 2. तगर 3. गोरोचन, 4. कस्तूरी, 5. चन्दन, 6.सिन्दूर, 7. लाल चन्दन, 8. केसर इन सबको खरल में घोटकर स्याही जैसा रस बना लेना चाहिये।

लेखनी— प्रत्येक यन्त्र लेखन में लेखनी की आवश्यकता होती है। यह लेखनी मुख्य रूप से अनार अथवा चमेली की ग्रहण की जाती है। वैसे स्तर्ण, रजत, ताम्र, लोह एवं अन्य धातुओं से बनी शलाकाओं से भी यन्त्र लिखे जाते हैं। इसमें भी कर्म भेद से नीम, आम, आक, पक्षियों के पंख, वृक्षों के कांटे आदि का उपयोग होता है। जिनका विशेष उल्लेख यंत्र के साथ होता है।

कुछ सावधानियां—

लिखते समय कलम का टूटना अथवा रुक जाना अपशकुन रूप होता है अतः पूरी सावधानी रखनी चाहिये।

आजकल होल्डर और पेन आदि का प्रचलन बहुत हो गया है अतः इनका प्रयोग करें तो नये सोने के बने हुए निब का प्रयोग किया जा सकता है। किन्तु कील, बालपेन, पेन्सिल, स्पाट पेन आदि का उपयोग ठीक नहीं होता। पेन में डालने के लिए स्थाई स्याही (पेन इंक) ऊपर लिखी पद्धति से बनानी चाहिए। बाजार की स्याही न लें। भोजपत्र, कागज़, वृक्ष के पत्ते,

धातु से बने पतरे, स्फटिक तथा शालिग्राम शिला एवं मणि आदि सभी वस्तुएं स्वच्छ हों, कीटादि विद्ध अथवा खण्डित न हों, यह स्मरण रखना भी आवश्यक है। शुद्धता और पवित्रता सिद्धि का पहला सोपान है।

यन्त्र किसी अन्य कारीगर से खुदवाना हो तो आधार वस्तु पर पहले शुभ मुहूर्त में उपयुक्त वस्तुओं से रेखांकन कर लें बाद में यथा समय कारीगर के औज़ारों को स्वच्छ जल से धोकर गन्धाक्षत दें, कारीगर के मस्तक पर तिलक करके, उसे कुछ दक्षिणा एवं खाद्य वस्तु प्रसाद दे दें फिर यंत्र उत्कीर्ण करवायें।

यन्त्र लिखने के लिए जब बैठें तो यंत्र के साथ लिखे हुए विधान का पूर्ण रूप से पालन करें। इनके अतिरिक्त निम्न बातों का भी ध्यान रखें :—

1. लिखते समय मौन रहें तथा इष्टमन्त्र अथवा यन्त्र सम्बन्धी मन्त्र का भक्तिपूर्वक स्मरण करें।
2. सुखासन में बैठें किन्तु कर्मभेद से अन्य आसनों का उपयोग भी किया जा सकता है।
3. अपने सामने चौकी, बाजोट या पट्टा रखकर उस पर आधार वस्तु रखकर लिखें। अपने घुटने पर रखकर लिखना निषिद्ध है क्योंकि नाभि के नीचे का अंग ऐसे कार्यों में अनुपयोगी है।
4. यन्त्र लिखने के समय धूप-दीप अवश्य रखना चाहिए।
5. यन्त्र-लेखन के पूर्व अपना दैनिक नित्य कर्म संध्या-पूजा आदि पूर्ण कर लेना चाहिये।
6. दिशा, प्रहर, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, चन्द्र बल एवं शुभ पर्व दिन का ज्ञान करके कार्य प्रारम्भ करें।
7. पहनने के वस्त्र शुद्ध और स्वच्छ हों। धोबी के यहां से धुले हुए और फटे-पुराने सिले हुए न हों। जहां तक सम्भव हो रेशमी अथवा ऊनी धोती और दुपट्टा ही धारण करें।
8. लिखते समय मन में अशुभ विचार न लाएँ अपितु मेरा यह कार्य सिद्ध होगा, प्रभु कृपा करेंगे, ऐसी भावना करें।
9. अनुचित कार्य की सिद्धि के लिये प्रयास न करें।
10. मारण-उच्चाटन जैसे कर्मों से सदा बचते रहें। ऐसे कर्मों के लिये की जाने वाली क्रिया का परिणाम कर्ता को भी भोगना पड़ता है।

11. इसी प्रकार आसन, स्थान व अन्य साधकों के उपयुक्त निर्देशों का भी पालन आवश्यक है।

12. यन्त्र को ज़मीन पर रखें, श्रद्धा बनायें रखें, यन्त्र को सदा देव स्वरूप समझकर उसका बहुमान करें।

13. यन्त्र धारण में अथवा पूजा आदि में लोकाचार वश सूतक मृतकादि का प्रसंग आ जाए, तो उसे पुनः धूप देकर मन्त्र जप करके शुद्ध कर लें।

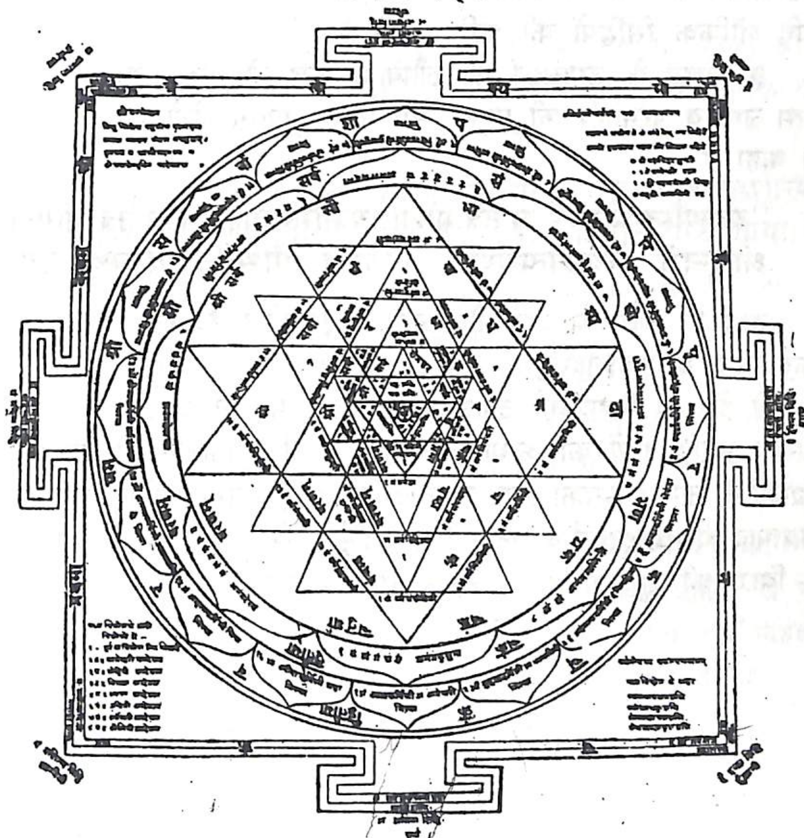
लक्ष्मी प्राप्ति का अचूक उपाय 'श्रीयन्त्र'

अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी प्राप्ति के लिये 'श्रीविद्या' व श्रीयन्त्र का महत्त्व सर्वाधिक है। श्री विद्या 'शताक्षरी परमा विद्या' के नाम से जानी जाती है। श्री विद्या ही ललिता, राजराजेश्वरी, महात्रिपुरसुन्दरी, बाला, पंचदशी और षोडशी इत्यादि नामों से विख्यात है। प्रसिद्ध दश महाविद्याओं में 'षोडशी विद्या' 'श्रीविद्या' का ही परिणित स्वरूप है। इसके मूलमन्त्र में केवल सौ अक्षर ही होते हैं। **जिसके निरन्तर आवृत्ति में 'श्री कामः शततं जपेत'** तत्काल सिद्धि मिलती है। श्रीमाली ब्राह्मणों के पास यह विद्या कुलपरम्परा (परिपाटी) से प्राप्त होती रही है। सभी श्रीमाली ब्राह्मणों के घर में कुलदेवी के रूप में आद्याशक्ति श्री स्वरूप भगवती महालक्ष्मी की ही उपासना होती है, यही कारण है कि श्री विद्या के निश्णात उपासक व पण्डित कालान्तर में श्रीमाली ब्राह्मण के नाम से पहचाने जाने लगे।

प्रातः स्मरणीय पूज्य पिताश्री हमें श्री विद्या के अनेक रोचक संस्मरण सुनाया करते थे। उन्होंने बताया कि सौराष्ट्र के प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर के भूगर्भ में स्वर्ण शिलाओं पर श्रीयन्त्र उत्कीर्ण थे। जिनकी गुप्त रूप से श्रीमाली ब्राह्मणों द्वारा नित्य राजोपचार पूजा की जाती थी। यही कारण था कि वहां अतुल सम्पत्ति की नित्य वर्षा होती थी। अरबों-खरबों के रत्न तो केवल मन्दिर के स्तम्भों में ही जड़ित थे। इस मन्दिर की प्रशंसा व वैभव से आकृष्ट होकर मोहम्मद गज़नवी इसे लूट कर ले गया तथा स्वर्ण के लालच में श्रीयन्त्रों को भी खण्ड-खण्ड करके अपने साथ ले गया। तब से यह मन्दिर 'श्रीयन्त्र' विहीन है। दक्षिण भारत की यात्रा के दौरान जब मैं तिरूपति बालाजी पहुंचा तो मैंने पाया कि वहां के मुख्य विग्रह के पीठ में श्रीयन्त्र उत्कीर्ण है, जिसका अभी भी विधि-विधान से नित्य पूजन होता है। यह मन्दिर अब सरकार के अधीन है फिर भी आज भी वहां मासिक आय लाखों करोड़ों में प्राप्त है।

सामान्यतः 'श्री' शब्द श्रेष्ठता व पूज्यता का द्योतक है। श्रेष्ठ पुरुषों के नामों के पहले 'श्री' शब्द का प्रयोग किया जाता है। श्रेष्ठतत्व के तारतम्य के अनुसार 3,4,5,6 बार तक 'श्री' शब्द-प्रयोग के लिये शास्त्रों में प्रमाण पाये जाते हैं। प्रधान पीठाधिपति या सम्प्रदाय विशेष के आचार्यों के नामों के आगे या पीछे 108 बार तक श्री शब्द का प्रयोग होना पाया जाता है। व्यवहार में श्री शब्द का लक्ष्मी अर्थ ही प्रसिद्ध है परन्तु हरिताय-नसंहिता,

॥ श्रीयन्त्रम् ॥



ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्ड आदि पुराणेतिहासों में वर्णित कथाओं के अनुसार 'श्री' शब्द का मुख्यार्थ महात्रिपुरसुन्दरी ही है। श्री महालक्ष्मी ने महात्रिपुरसुन्दरी की चिरकाल आराधना कर जो अनेक वरदान प्राप्त करने का भी एक वरदान प्राप्त किया है, उनमें ही 'श्री' शब्द से ख्याति प्राप्त करने का भी एक वरदान उनको मिला है, तबसे 'श्री' शब्द का अर्थ लक्ष्मी होने लगा।

श्रीविद्या की विशेषताः—

श्रीविद्या सात्विक उपासनाओं में सर्वोपरि एवं श्रुतियों में अभिषिञ्चित श्रेष्ठ साधना है। विभिन्न देवताओं की आराधना करने से पशु, पुत्र धन, धान्य आदि लौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

श्री विद्या के उपासकों को लौकिक फल तो मिलते ही हैं साथ में आत्म ज्ञान व परमतत्व की प्राप्ति, भोग तथा अपवर्ग दोनों की प्राप्ति होती है। कहा है-

''यत्रनास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो, यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरी सेवनतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव॥''

जहां पर भोग है वहां मोक्ष नहीं, जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं हो सकते परन्तु श्री महालक्ष्मी की सेवा से भोग व मोक्ष दोनों ही सहज में प्राप्त हो जाते हैं। श्री विद्या की उपासना का प्रबल माध्यम श्रीयन्त्र है। जिसकी उपासना पद्धति तन्त्रों की आधारभूत पद्धति है। त्रिपुरोपनिषद् में कादि-हादि विद्याओं के नाम से इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। परमकारुणिक शंकरावतार भगवत्पाद श्रीमच्छङ्कचार्य की लेखनी से प्रादुर्भूत, 'सौदर्न्य-लहरी' व प्रपञ्चसार, इस विद्या की शुद्ध सात्विकी का सर्वोपरी प्रमाण है।

यह विद्या गुरुगम्य है। बिना गुरु कृपा के श्रीयन्त्र फल नहीं देते। श्रीमच्छङ्कराचार्य को इस विद्या की दीक्षा योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य से मिली थी। श्री गोविन्दापादाचार्य को इस विद्या की दीक्षा श्री गौड़पादाचार्य के गुरु परमाचार्य भगवान् श्री दत्तात्रेय ने स्वयं दी। इस प्रकार से इस विद्या की अति प्राचीन गुरुपरम्परायें सर्वप्रसिद्ध हैं।

'सुन्दरीतापनीय' में कहा है- जैसे घर, कलश और कुम्भ, ये तीनों शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं, वैसे ही यंत्र, देवता और गुरु, ये तीनों शब्द भी एक ही अर्थ के वाचक हैं।

श्रीयन्त्र की महिमा:—

श्रीयंत्र का विषय अत्यन्त गहन है। तान्त्रिक साहित्य में अकेले श्रीयंत्र पर जितना लिखा गया है उतना किसी पर नहीं। 'रुद्रयामलतन्त्र' नामक ग्रन्थ में इसका मन्त्रोद्धार इस प्रकार दिया गया है:—

बिन्दुत्रिकोण वसुकोणदशारयुग्मं, मन्वस्रनाग-दलसंयुतषोडशारम्।
वृतत्रयं च धरणीसदनत्रयं च, श्री चक्रराजमुदितं परदेवतायाः॥

अर्थात् इस श्री यन्त्र के नौ चक्र (आवरण पूजा एवं बनावट दोनों ही दृष्टि से) इस प्रकार हैं—1. बिन्दु 2. त्रिकोण 3. वसु (आठ) त्रिकोणों का समूह 4. (दशार युग्मं) दस त्रिकोणों का समूह 5.दस त्रिकोणों का (दूसरा) समूह 6. (मन्वस्र)चौदह त्रिकोणों का समूह 7. (नागदल)आठ दलों वाला कमल 8. सोलह दलों वाला कमल एवं तीन वलय 9. भूपुर अर्थात् तीन परकोटे।

श्री यन्त्र पूजन की दक्षिण मार्ग तथा वाम-मार्ग विधियों का वर्णन 'त्रिपुरतापिनी' और त्रिपुरा उपनिषदों में मिलता है। जो बीजाक्षरों से युक्त होता है वह 'श्रीयन्त्र' एवं जो बीजाक्षरों से रहित होता है वह 'श्रीचक्र' कहलाता है। श्रीयन्त्र का आर्त्तभाव से श्रद्धापूर्वक नियमित पूजन करने व दर्शन करने में बहुतों को अथाह धन-सम्पत्ति प्राप्त होती हुई प्रत्यक्ष देखी व सुनी गई है।

जो लोग आवरण पूजाओं को स्वयं करने में समर्थ हों, वे लोग बीजमन्त्रों से युक्त 'श्रीयंत्र' से काम लें। शास्त्रकारों के अनुसार लक्ष्मी का निवास स्वर्ण व रजत में होता है। अतः स्वर्ण व रजत पत्रों पर निर्मित 'श्रीयन्त्र' ज्यादा प्रभावशाली होते हैं। धातु निर्मित श्रीयन्त्रों में पुनः प्रतिष्ठा व अभिषेक की सुविधा रहती है। यदि तीन धातु (स्वर्ण, रजत व ताम्र) से मिश्रित अंगूठी

बनाकर उस पर 'श्रीयन्त्र' निर्मित किया जाये तो ज्यादा प्रभावशाली रहता है। हमारे कार्यालय ने इस प्रकार की अंगूठियां बनाकर अनेक लोगों पर प्रयोग किये, जो कि सर्वाधिक सफल रहे। भोजपत्र पर अष्टगन्ध से श्रीयन्त्र बनाकर यदि बटुए (पर्स)में रखा जाये तो बटुआ नोटों से भरा रहता है, रुपयों की बरकत होती है। यह अनुभूत है। यामलतन्त्र में इस यन्त्र के दर्शन मात्र का फल लिखा है। यथा—

महाषोडशदानानि कृत्वा यल्लभते फलम्
तत्फलं समवाप्नोति कृत्वा श्री चक्रदर्शनम्॥
सार्धत्रिकोटितीर्थेषु स्नात्वा यत्फलमश्नुते।
लभते तत्फलं भक्त्या कृत्वा श्रीचक्रदर्शनम्॥

श्री यन्त्र का मूलमन्त्र

जिज्ञासु पाठकों के अनेक पत्र प्रतिमाह प्राप्त होते हैं कि श्री यंत्र पर जपने के लिये सूक्ष्मतर व सटीक चमत्कारी मन्त्र कौन सा है? हमारे प्रबुद्ध पाठकों के लाभार्थ यह दुर्लभ मंत्र यहां दे रहे हैं– "ॐ श्री ह्रीं क्लीं ह्रीं महालक्ष्म्मै नमः।"

चौबीस अक्षरों का महालक्ष्मी मंत्र–

"ॐ श्रीं कमले कमलालये प्रसीद, प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः"

सुगन्धित धूप सुगन्धित पुष्प, या चमेली के इत्र को चढ़ा कर उपरोक्त मंत्रों का श्रीयंत्र के सामने, एकाग्रचित से १८, २७, ४५, या १०८ बार पढ़ने से अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है।

श्रीयन्त्र की तीन आकृतियां

1. भूपृष्ठ, (सिक्के पर)
2. कूर्मपृष्ठ (बीच में से उभरा हुआ)
3. मेरुपृष्ठ (एक-एक खण्ड आवरण पूजा के अनुसार उभरा हुआ)

श्रीयन्त्र का अद्भुत रहस्य

यह यंत्र अर्थात् 'श्रीयन्त्र' भगवती त्रिपुर सुन्दरी का है, वैदिक वाङ्मय में इसे सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ यंत्र कहा गया है। इसकी उत्पति के सम्बन्ध में "योगिनी हृदय" में कहा है कि परम्परा शक्ति अपने संकल्प बल से ही विश्व ब्रह्माण्ड का रूप ग्रहण करती है। और अपने स्वरूप को निहारती है तभी श्री चक्र का आविर्भाव होता है।

इसी से 'यामलतन्त्र' में कहा गया है कि—

चक्रं त्रिपुर सुन्दर्या ब्रह्माण्डकारी मीश्वरि।

अर्थात् हे ईश्वरी! त्रिपुर सुन्दरी का आधार ब्रह्माण्डकार है इस यन्त्र में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विकास का प्रदर्शन किया गया है।

श्री यन्त्र का निर्वचन

"श्री यन्त्र" में श्री शब्द का अर्थ इस प्रकार किया गया है— "श्री यते या सा श्री" अर्थात् जो श्रवण की जाये वही श्री है। जो नित्य परब्रह्म का आश्रयण करती है, वह श्री है। जिस प्रकार प्रकाश या गर्मी में अभिन्नता रहती है, उसी प्रकार ब्रह्मा और शक्ति दोनों अभिन्न रहते हैं।

आगम का भी यही सिद्धान्त है—

"नशिवेन विना देवी न देव्या च विना शिवः।
नानयोरन्तर किं चिन्चंद्र चन्द्रिकयोरिव॥"

अर्थात शिव के बिना देवी नहीं है और बिना देवी के शिव नहीं है। इन दोनों में कुछ अन्तर नहीं होता है, जिस तरह से कि चन्द्र और उसकी चन्द्रिका में कोई अन्तर नहीं रहता है।

ब्रह्मा की उत्पत्ति, स्थिति और पालन की सामर्थ्य करने का श्रेय 'श्री' के कारण ही है।

शिवः शक्त्या युक्तो सदैव भवति शक्ति प्रभावितुं।
न च देवं देवों न कुशलः स्पन्दिग्मपि॥

अर्थात् "जो शिव" शक्ति के सहित होता है, वही शक्ति युक्त अर्थात्

सामर्थ्यवान होता है। यदि शक्ति से हीन होता है तो देव स्पन्दन करने के योग्य नहीं होता है। 'ब्रह्मा स्वयं निरंजन, निष्कल्प एवं निर्गुण है।'

आगम में यह कहा गया है कि चिन्तन करने के अयोग्य अमित आकार और शक्ति स्वरूप वाली, प्रति व्यक्ति में अधिष्ठान सप्ताह रखने वाली एक मूर्ति, गुणों से परे, निर्द्वन्द्व बोध ही केवल जानने के योग्य आप एक परम ब्रह्म रूप से सिद्ध है।

'श्रीकण्ठ' व पाँच त्रिकोणों का रहस्य

इस प्रकार की महिमा वाली त्रिपुर सुन्दरी के यंत्र का अध्ययन यहां मेरा अभीष्ट है। श्रीयंत्र के चित्र में हमें कई वृत्त दिखाई देते हैं। सबसे ऊपर वाले वृत्त के केन्द्र में बिन्दु स्थित है। इस बिन्दु के चारों ओर 9 त्रिकोण बनाये गये हैं। इनमें से पाँच की नोक ऊपर की ओर और 4 की नोक नीचे की ओर दिखाई देगी। जिनकी नोक ऊपर की ओर है वे भगवती का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें शिव युवती की संज्ञा दी जाती है, नीचे के ओर नोक वाले शिव का प्रतिनिधत्व करते हैं इन्हें "श्रीकण्ठ" कहा जाता है। ऊर्ध्व मुखी 5 त्रिकोण, पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां 5 तन्मात्रा और पंच माया भूतों के प्रतीक हैं। शरीर में जीवन-प्राण, शुक्र और मज्जा के द्योतक हैं। और ब्रह्माण्ड में मन-बुद्धि, चित, अंहकार के प्रतीक हैं। 5 ऊर्ध्व मुखी त्रिकोण नौ मूल प्रवृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार यन्त्र में एक आठ दल वाला और दूसरा सोलह दल वाला कमल है। पहला अन्दर वाले वृत्त के बाहर है और दूसरा, दूसरे वृत्त के बाहर है।

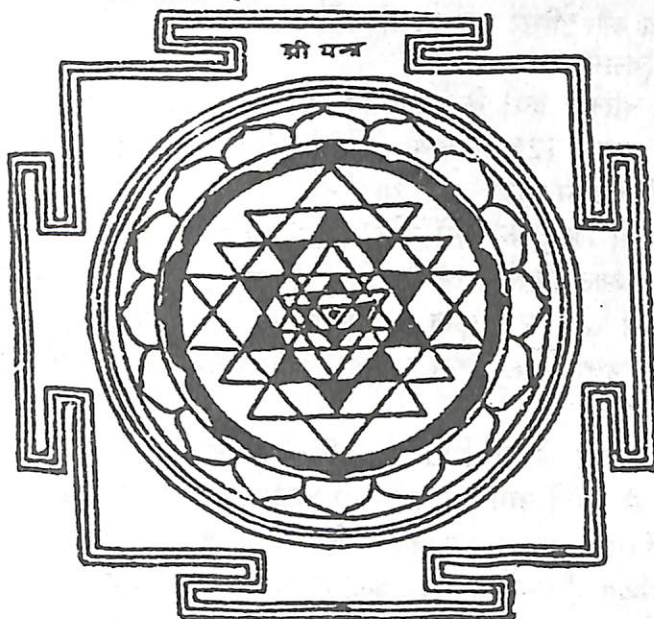
इस यन्त्र में ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण अग्नि तत्व के, अधो वायु के, बिन्दु आकाश का और भूपुर पृथ्वी का प्रतीक माना जाता है। यह यन्त्र सृष्टि क्रम का है। इसकी उपासना समय मत वाले करते हैं। भगवान् शंकराचार्य भी इसी मत के उपासक थे। उनके हर मठ में यह यन्त्र रहता है।

कौल मत का श्रीयन्त्र अलग प्रकार का होता है, अन्तर केवल इतना ही है कि 5 शक्ति त्रिकोण, जो समय मत वाले श्रीयन्त्र में ऊर्ध्व मुखी होते हैं, वह उसमें अधोमुखी होते हैं और चार शिव त्रिकोण जो अधोमुखी रहते हैं वह उसमें ऊर्ध्वमुखी हो जाते हैं। इस प्रकार यह यंत्र संहार क्रम का यन्त्र बन जाता है।

☐ श्रीयन्त्र की रहस्यमय बनावट

श्रीयन्त्र में 9 चक्र हैं, वे एक प्रकार से 9 कलों का रूप धारण करते हैं तथा मेरूपृष्ठ श्रीयन्त्र में प्रत्येक किला एक दूसरे से ऊंचा ऊपर होता है। प्रथम भूपुर चक्र-ज़मीन पर है और अन्तिम बिन्दु चक्र शिखर पर है। इन किलों के रंग इस प्रकार हैं—

1. नीला, 2. पीला, 3. गुलाबी, 4. लाल, 6. काला, 7.नीला, 8. पीला, 9. बिन्दु चक्र का रंग लाल है।



श्रीयन्त्र की रेखा कृति में भूपुर में तीन रेखाएं हैं। ये तीन किले हैं जो एक दूसरे से थोड़े ऊंचे हैं। इन किलों की चारों दिशाओं में चार द्वार हैं और चार कोणों पर चार बुर्ज हैं। बाहरी किले पर अणिमा इत्यादि सिद्धि देवियां, द्वार व बुर्ज पर हैं। दूसरे किले पर ब्रह्मी आदि मातृकायें और तीसरे किले पर मुद्रा शक्तियां हैं। जहां 8 के स्थान पर 10 शक्तियां हैं वहां पूर्वी पश्चिमी द्वार पर दो-दो शक्तियां हैं। द्वितीय षोडशदल पर दो रेखाएं हैं। ये दो गो़ल किले हैं। जिनमें से बाहर का किला थोड़ा नीचा है। बाहरी किले पर सोलह नित्या शक्तियां हैं जिन पर कामाकर्षिणी इत्यादि 16 कला शक्तियां हैं।

तृतीय अष्ट-दल कमला का एक ही किला है और इसकी आठ पंखुड़ियों में आठ देवियां हैं। चौथे चतुर्थसार चक्र का किला गोल है। इस पर थोड़ी

अधिक ऊंचाई पर 14 त्रिकोण हैं एवं प्रत्येक त्रिकोण पर एक-एक शक्ति है। पांचवें बर्हिदशार चक्र का किला दश त्रिकोणों का बना हुआ है तथा छठा अन्तदर्शाचक्र का किला सबसे ऊंचा है। किन्तु यह भी दश त्रिकोणों के समूह से निर्मित है। सातवें अष्टहार चक्र का किला आठ त्रिकोणों से बना हुआ है एवं प्रत्येक किले में चार द्वार हैं। आठवां मध्य त्रिकोण का किला त्रिकोणाकृति में है और उसके तीनों कोणों में 3 गोल बुर्ज हैं। इन पर 3 महाशक्तियां हैं। इस किले में तीन द्वार हैं जिनमें दो द्वारों पर एक-एक शक्ति और तीसरे द्वार पर दो शक्तियां हैं। नवां व बिन्दु चक्र का किला गोल हैं जिसमें एक द्वार हैं।

श्री ललिता देवी के आख्यान के अनुसार श्री ललिता देवी महात्रिपुर सुन्दरी ने अपनी 125 शक्तियों के साथ ऐसे मेय पृष्ठ श्री चक्र के आकार के रथ में बैठकर युद्ध लड़ा था।

मध्य में बिन्दु के चारों ओर एक मुख्य त्रिकोण और उसके बाहर चारों ओर फिरते आठ त्रिकोण अर्थात् बिन्दु के बाहर फिरते नव त्रिकोण के ग्रंथन की रचना से छोटे-मोटे कुल 3 त्रिकोण स्वतः बन जाते हैं। इन नौ त्रिकोणों में से पांच ऊर्ध्व मुख, जिन्हें शक्ति त्रिकोण कहा गया हैं और चार त्रिकोण कहा गया है।

मध्य बिन्दु में सर्वश्रेष्ठ महाशक्ति श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी देव विराजमान हैं। बिन्दु से घूमते समय प्रथम महात्रिकोण के तीन कोणों पर दूसरे नम्बर की तीन त्रिगुणात्मक महाशक्तियां विराजमान हैं। उसमें घूमती चार आयुध शक्तियां स्थित हैं। इस प्रकार बिन्दु से घूमता एक चक्र बनता है। बिन्दु के चारों तरफ शेष 42 त्रिकोणों का समूह है। इसमें से एक के बाद एक दूसरे चार चक्र बनते हैं। प्रत्येक चक्र का अलग-अलग नाम है। प्रत्येक चक्र के प्रत्येक त्रिकोण में एक-एक देवी है।

43 त्रिकोणों के समूह के बाहर अष्टदल कमल हैं जिसे अष्टदल चक्र कहा गया है। अष्टदल के कमल के बाहर एक अन्य 16 पंखुड़ियों का षोडशदल कमल है। दोनों कमलों की प्रत्येक पंखुड़ी में देवियां विराजमान हैं। इन दो कमल चक्रों के बाहर चौकोर भूपुर चतुर चक्र है। उसकी चार दिशाओं में चार दरवाजे हैं। चारों दरवाजों व चारों कोनों पर भी देवियां हैं। प्रत्येक स्थान, पर दर्शाई गई देवियों के अलावा प्रत्येक चक्र में उसकी एक अधिष्ठात्री देवी है।

इस प्रकार बिन्दु व छोटे-बड़े नौ मुख्य त्रिकोण और इन 9 त्रिकोणों से बने 43 त्रिकोणों, दो कमल और भूपुर चतुरस्र कुल 9 चक्रों का यह

अद्‌भुत श्रीयन्त्र बनता है। यह श्रीचक्र अखिल ब्राह्मण का आकार बनाता हैं। इतना ही नहीं मनुष्य के शरीर में जो योग के 9 चक्र हैं उनके साथ भी इसकी तुलना की जा सकती है। इस यन्त्र के ध्यान से अंड, पिण्ड व ब्राह्माण्ड की भावना जागृत होती है।

यन्त्र राज क्यों?

देवी देवताओं के अनेक कवच और स्तोत्र वणित हैं। उन सभी में चण्डी-पाठ में दिया हुआ कवच श्रेष्ठतम माना जाता है। इसका कारण यह है कि चण्डी कवच में शरीर के बाहरी और आन्तरिक अंगों की रक्षा बताई हुई है। शारीर के अंग-उपांग की इतनी सूक्ष्म विवेचना दूसरे किसी भी कवच में नहीं हैं। उदाहरण के लिए आंख, जीभ, वाणी, तालु, कण्ठ, गला, कण्ठ का बाह्यंगी भाग, कण्ठ नलिका, शिखा, बाल, चमड़ी, छिद्र, स्कन्द, भुजा, हाथ, उंगलियां, नाखून, रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी, आंत, पित्त, कफ, वीर्य आदि इत्यादि अंग-प्रत्यंगों का सूक्ष्म विवेचन है। कवच में तो यहां तक कि शरीर के जोड़ों, हृदय, अंहकार, मन, बुद्धि, प्राण, आयु, धर्म, गोत्र, स्त्री, पुत्र, पुत्री, पशु, मार्ग, राजदरबार, भय स्थावर, जंगम, विष, अकाल, मृत्यु, महारोग, मारण, मोहन, यंत्र-मंत्र इत्यादि की भी रक्षा मांगी गई है। इनसे भी आगे कवच में भीतरी शरीर में रहे योग चक्रों, पान, अपान, व्यान, उदान और समान वायु सत् रज, तमोगुण, रस, रूप, गंध, स्पर्श, यश, कीर्ति, लक्ष्मी, धन, विद्या आदि की भी सुरक्षा का समावेश हुआ है।

जिस प्रकार सभी कवचों में चण्डी कवच श्रेष्ठ है, उसी प्रकार सभी देवी-देवताओं के यंत्रों में श्रीदेवी का भी यन्त्र सर्व श्रेष्ठ है और इसी कारण उसे यन्त्र राज अथवा यन्त्र शिरोमणी कहा गया है।

जब घी का दीप तथा अगरबत्ती जलाकर किसी भी स्तोत्र का सतत पाठ किया जाये तो वातावरण के अणु परमाणुओं में हलचल पैदा होकर एक प्रकार का यन्त्र तैयार होता है। ऋषि-मुनियों ने दिव्य दृष्टि से संशोधन करके कई स्तोत्रों व यन्त्रों का निर्माण किया है। आज ऐसे यन्त्र कई जगह पूजन में काम आते हैं। श्रीयन्त्र त्रिकोणों के मन्थन व संयोग से बना षट्कोण यन्त्र है। इसके पंचकोण, काम-क्रोध, लोभ-मोह व मत्सर के सूचक हैं। इस प्रकार इस यन्त्र के पूजन से इन पांचों आवेशों का नाश हो, मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्रीयन्त्र कब बनायें?

प्रश्न यहां उठता है कि श्रीयन्त्र किस प्रकार व कब बनाया जाये। सर्वोत्तम तो यह रहता है कि पौष मास की संक्रान्ति के दिन रविवार को और उस दिन अष्टमी भी हो तो ऐसा दिन इस महायन्त्र को बनाने के लिये अत्यन्त शुभकारी दिन है। परन्तु ऐसा महायोग प्राप्त न होने पर किसी भी माह की संक्रान्ति के दिन, रविवार के दिन शुभ माना जाता है। इसी प्रकार किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन रविवार को उस दिन अथवा नवरात्रि के समय, धनतेरस से दीपावली तक अथवा रवि पुष्य के दिन इस यन्त्र का निर्माण वेदपाठी ब्राह्मण के द्वारा किया जाना चाहिये।

ब्रह्म मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नानादि से निवृत हो शान्त स्थान पूर्वाभिमुख बैठकर धूप दीप करके भोज पत्र पर तुलसी या अनार की कलम अथवा मोर पंख की कलम से रक्त चन्दन में यन्त्र तैयार किया जाता है। नीले रंग के स्थान पर केशर का प्रयोग करना चाहिये। मंगलवारी अमावस्या और उसी दिन मध्य रात्रि में यह यन्त्र बनाना चाहिये। बहुत उत्तम तो यह होगा कि इस यन्त्र को जानकार व्यक्तियों द्वारा ताम्र पत्र पर उत्कीर्ण करवाना चाहिये।

जब इस प्रकार का महायन्त्र तैयार हो जाए तब उसे धूप, दीप, गंध इत्यादि समर्पण कर उसका षोडशोपचार से पूजन कर सुयोग्य कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा उस यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा करवा कर पूजा स्थान पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर केशर या हल्दी से रंगे हुए पीले चावलों से अष्टदल बनाकर उस पर स्थापित किया जाना चाहिये तथा व्यक्ति को प्रतिदिन दैनिक कार्यों से निवृत होने के बाद, पंचोपकार से पूजन करके श्रीसूक्त का नियमित पाठ करना चाहिये। यदि नित्य पूजन न हो तो मात्र अगरबत्ती जलाकर दर्शन कर बीज मन्त्र का जाप कर लेना पर्याप्त रहता है। तांबे, चांदी अथवा स्वर्णपत्र पर भी महायन्त्र उत्कीर्ण किया जाता है। मैंने अपने जीवन में स्फटिक पर भी इस मन्त्र को बने हुए देखा है।

श्रीयन्त्र में प्रथम भूपुर चतुरस्य चक्र है जो चौकोर आकृति का है। उसकी चार दिशा में चार दरवाज़े हैं। इस चक्र में तीन लाइनें, रेखायें हैं जो एक के बाद एक किले की सूचक हैं। इन तीन किलों के चारों कोनों पर अणिमा इत्यादि दस सिद्धियां ब्रह्मी इत्यादि आठ लोक मातायें तथा मुद्रा शक्तियां विराजमान हैं। इस चक्र का केन्द्र तीर्थ राज प्रयाग में है और उसकी अधिष्ठात्री महादेवी विन्ध्यवासिनी देवी हैं।

दूसरा षोडशदल चक्र है। उसमें बाहरी भाग में दर्शाई गई दो रेखाएं दो किलों की सूचक हैं। उसमें चन्द्रमा की 16 कलाओं की स्वरूप काम-

कर्पिणा इत्यादि नित्या शक्तियां विराजमान हैं। इस चक्र की अधिष्ठात्री देवी कामाक्षी देवी हैं।

तीसरा अष्टदल चक्र है, यह किला आग्नेय खण्ड कहलाता है। उसमें अग्नि की आठ कला स्वरूप अनेक, कृत्या शक्तियां विराजमान हैं। इस चक्र की अधिष्ठात्री देवी ज्वालामुखी हैं।

चौथा चतुर्दशार चक्र है। अष्टदल कमल के अन्दर चारों तरफ 14 त्रिकोणों का समूह इस चक्र का निर्माण करता है। इसमें दस इन्द्रियां व मन-बुद्धि व चित्त व अंहकार स्वरूप 14 शक्तियां विराजमान हैं जो इन्द्रिय विषय रूप हैं। इसकी अधिष्ठात्री देवी वैष्णवी देवी हैं।

पांचवां अंतर्दशर चक्र भी दस त्रिकोणों से बना है जो शुद्ध, विद्यादि चार तत्व तथा जीवन भाव के माया काल राग आदि छः तत्व कुल 10 तत्वों को स्पष्ट करता है। 5 ज्ञानेन्द्रियां व 5 कर्मेन्द्रियां 10 शक्तियां यहां सर्वज्ञ आदि विराजमान हैं। इस चक्र की अधिष्ठात्री देवी कामाक्षी देवी हैं।

सातवां अष्टार चक्र है जो आठ त्रिकोणों से बना हुआ है। इसको नवयोनी चक्र भी कहते हैं। इस चक्र में स्वप्न, वासना व अग्नि खण्ड प्रदर्शित है। श्री कामेश्वर महादेव और कामेश्वरी महादेवी के तेज से आठ आयुध उत्पन्न हुए। उन प्रत्येक आयुधों की अधिष्ठात्री देवी का एक-एक त्रिकोण में आसन है। ये वासिनी इत्यादि मातृ-देवियां हैं। अधिष्ठात्री देवी गुह्येश्वरी देवी हैं।

आठवां योनि चक्र है। इसे शक्ति चक्र का त्रिकोण चक्र कहते हैं। यह जीवन त्रिकोण वासना प्रदर्शित करता है। इसमें वासिनी आदि चार आयुध शक्तियां तथा परावाक् महाशक्ति के 3 भिन्न-भिन्न स्वरूपों की तीन महाशक्तियां विराजमान हैं। ये ज्येष्ठा, वामा, रौद्री, शक्तियां हैं। इनकी अधिष्ठात्री देवी दुर्गा देवी हैं।

नौवां बिन्दु चक्र है। इसमें सभी चक्रों की सर्वोपरि अधिष्ठात्री महादेवी, परावाक्, पराशक्ति, महात्रिपुर सुन्दरीदेवी शक्ति विराजमान हैं। उनकी सेवा में विमला, अरुणा व जैनी शक्तियां हैं।

श्री यन्त्र में त्रिकोणों का रहस्य

श्रीचक्र व ज्यॉमितीय सिद्धान्तों की एकरूपता

श्री चक्र रेखागणित के प्रमाण से देवी शक्तियों का एक प्रतीक स्वरूप यन्त्र बनाया गया है। त्रिकोण त्रिगुणात्मक शक्ति का प्रधान स्रोत है। 43 त्रिकोणों से निर्मित उन्नत श्रृंग के सदृष्य मेरुपृष्ठीय श्रीयन्त्र अलौकिक शक्ति व चमत्कारों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रजनन केन्द्र-बिन्दु कहा गया है। ज्यामितीय सिद्धांतों, त्रिकोणमिति, ज्योतिर्विद्या और भूगोल के प्राचीन इस रहस्यात्मक ज्ञान का आभास केवल भारतीय मनीषियों को ही नहीं अपितु मिस्र के ज्योतिर्विदों को भी था।

त्रिकोणमिति के गणितीय चमत्कार को मूर्तरूप सबसे पहले मिस्र के बुद्धिजीवियों ने दिया। त्रिकोणाकृति में बने मिस्र के पिरामिड इन रहस्यों का ज्वलन्त प्रमाण हैं। ईसा से 2500 वर्ष पूर्व निर्मित, शिल्पकला में बेजोड़ ये पिरामिड दुनिया के महान् आश्चर्यों में गिने जाते हैं। परन्तु इनकी चमत्कारी शक्तियों का रहस्य बीसवीं शताब्दी में अब खुला है। फ्रांस के वैज्ञानिक बोबिस ने इन पिरामिडों की सैर की, खाने के एक डब्बे के पास चूहे-बिल्ली की दुर्गन्धरहित निर्जलीय लाश को देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पाया कि पिरामिड की आन्तरिक शक्ति के परिणाम स्वरूप उनकी लाश निर्जलीय होकर ममी बन गई थी। मिस्र से लौटकर बोबिस ने फ्रांस में खुफु के पिरामिड के नमूने पर लकड़ी का एक छोटा-सा पिरामिड बनाया। उसके प्रयोग से यह निष्कर्ष निकला कि त्रिकोणाकृति पिरामिड कार्बनिक वस्तुओं को निर्जलीय कर देता है।

बोबिस की इन खोजों को चेकोस्लोवाकिया के प्रमुख इंजीनियर कारेल ने प्रोत्साहित किया। बाद में कारेल व बोबिस ने मिलकर पिरामिड के आकार की टोपी बनाई। इस तरह की टोपियां सर्कस के जोकर अक्सर पहने देखे जाते हैं। इस टोपी का चमत्कार यह है कि इसके लगने से सिर दर्द दूर हो जाता है। बोबिस का कहना है कि इसके लगाने से कई प्रकार के मानसिक विकार दूर हो जाते हैं। अनेक मानसिक चिकित्सालयों में बोबिस की इस टोपी का प्रयोग किया जाता रहा है तथा उससे हुए आश्यर्चजनक लाभ पर बराबर आंकड़े तैयार किये जा रहे हैं।

पिरामिड की इस शक्ति से प्रभावित होकर अमेरिका और आस्ट्रेलिया में आधुनिक अस्पतालों व भवनों को त्रिकोणाकृति में परिवर्तित किया जा रहा है। यहां तक कि यूगोस्लाविया में निर्माताओं ने दूध और दही के डिब्बे पिरामिड के आकार में बनाने शुरू कर दिये हैं। उन्होंने देखा कि पिरामिड

के आकार के पात्र में दूध-दही जैसी वस्तुएं जल्दी खराब नहीं होतीं। रूस के वैज्ञानिक भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने पाया कि पिरामिड में रखा जल पिलाने से बच्चों का टांसिल रोग तुरन्त ठीक हो जाता है। इसके जल से नियमित रूप से आंखें धोयी जायें तो नेत्र-शक्ति व स्मृति शक्ति दोनों बराबर बढ़ जाती हैं।

आखिर पिरामिड में इतनी शक्ति क्यों है? ज्यामितीय व खगोल शास्त्र के ज्ञाताओं ने निष्कर्ष निकाला कि पिरामिड के प्रत्येक ढाल का कोण 51^0 51' है। इसकी प्रत्येक दीवार की सतह का क्षेत्रफल उसकी लम्बवत् ऊंचाई के बराबर है। पिरामिड के अवरोही मार्ग का कोण 26^0 17' है जो कि जानबूझ कर ध्रुवतारे की सीध में रखा गया है। पिरामिड का परिमाप पृथ्वी की परिधि का प्रतिनिधित्व करती है। इसकी ऊंचाई पृथ्वी के ध्रुवीय अर्द्धव्यास को दर्शाती है। इसकी सतह का क्षेत्रफल पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध का परिचायक है। इसमें निहित चुम्बकीय ऊर्जा स्रोत पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

ज्योतिष जगत में कुण्डलीदर्शन के अन्तर्गत केन्द्र (Quadrants) से भी त्रिकोण (Trines) को अधिक शक्तिशाली इन्हीं कारणों से माना गया। तभी तो महर्षि पाराशर कहते हैं- "सर्वे त्रिकोण नेतार ग्रहाः शुभफल प्रदाः" अर्थात त्रिकोण (ट्राइन ऐस्पेक्ट) में आने पर भी सभी ग्रह शुभफलप्रदत्त हो जाते हैं।

यह सारी बातें तो सुमेरूपृष्ठीय श्रीयन्त्र में प्रतिबिम्बित हैं। इसमें सारी सृष्टि का विकास व विलय क्रम बताया गया है। मनुष्य देह का नाप 96 अङ्गुल प्रमाण होता है। इसलिए श्रीचक्र का माप भी 96 इकाईयों पर रखा जाता है। मध्य का बिन्दु बीज शक्त्यात्मक है। प्रथम केन्द्रीय त्रिकोण में सर्वसिद्धिप्रद शुभ का स्थान माना गया है। अष्टकोण अष्टवसु के स्थान हैं। अन्तबर्हि दश-दश त्रिकोण दस प्राणों के द्योतक हैं। षोडश दल चन्द्रमा की विशुद्ध 16 कलाएं हैं तथा आठ दलों में 16 कलाओं का समावेश भी दर्शाया गया है। इसके बाहर की तीन भूपुर रेखा त्रैलोक्य वशीभूत साधन है तथा इसके चार द्वार, चारों दिशाओं से ऋद्धि-सिद्धि के प्रवेश के उपकरण ही तो हैं। यह श्रीयन्त्र आकाश में विचरण करने वाली समृद्धिशाली किरणों के ऐश्वर्यप्रदाता+धनात्मक इलेक्ट्रोनस् को अपनी ओर आकर्षित कर उसे वापस रिफलेक्ट करके उपासक के मुखमण्डल व उपासना स्थल को आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित करता है।

श्रीविद्या व आद्य शंकराचार्य

श्रीविद्या की उपासना पद्धति तन्त्रों की आधारभूत पद्धति है। त्रिपुरोपनिषद् में कादि-हादि विद्याओं के नाम से इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। श्रीविद्या

का प्रचार मद्रास प्रान्त में अधिक है। परमकारुणिक शंकरावतार भगत्पाद श्रीमच्छङ्कराचार्य की लेखनी से प्रादुर्भूत सौंदर्य लहरी व 'प्रवञ्चसार' इस विद्या की शुद्ध सात्विकी का सर्वोपरी प्रमाण है। श्रीमच्छङ्कराचार्य की श्रीविद्या की दीक्षा योगीन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य से मिली थी। श्री गोविन्दपादाचार्य को इस विद्या की दीक्षा श्री गौडपादाचार्य के गुरु परमाचार्य भगवान श्री दत्तात्रेय ने स्वयं दी। इस प्रकार से इस विद्या की अतिप्राचीनता सिद्ध है। कथा प्रसिद्ध है कि गुरुगृह-निवास के नियमानुसार आचार्य शंकर एक दिन भिक्षा के लिए किसी ब्राह्मण सद्-गृहस्थ के द्वार पर गये। गृहस्थ बहुत ही निर्धन था। भिक्षा देने योग्य मुट्ठी भर चावल भी उसके घर में नहीं थे। निदान ब्राह्मण पत्नी ने शंकर के हाथ में एक आंवला देकर रोते हुए अपनी निरन्त अवस्था का वर्णन किया। ब्राह्मणी की दुःखद निर्धनता ने करुणामूर्ति शंकर के कोमल हृदय को द्रवित कर डाला। उन्होंने वहीं खड़े होकर करुणाविगलित चित्त से श्रीविद्या की अधिष्ठात्री देवी, आद्याशक्ति भगवान महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की और उनकी वाणी से अनायास ही करुणापूर्ण कोमल कान्त पद्यावली से आकृष्ट होकर भगवती महालक्ष्मी देखते-देखते आचार्य के सम्मुख अपने त्रिभुवन मोहनरूप में प्रकट हो गईं और कोमल शब्दों में कहा—"बेटा, मैंने तुम्हारा अभिप्राय जान लिया है, परन्तु इस निर्धन परिवार ने पूर्व जन्मों में ऐसा कोई भी सुकृत, पुण्य कार्य नहीं किया जिससे मैं इन्हें धन दे सकूं।"

आचार्य ने बड़े ही विनीत शब्दों में करुणामयी अम्बा से निवेदन किया- "पूर्वजन्म में ब्राह्मण ने ऐसा कोई सुकृत नहीं किया है जिसके फलस्वरूप उसे धन सम्पत्ति दी जा सके इससे क्या हुआ? मेरे जैसे भिक्षुक को आंवले का दान देकर इसने तो महान् पुण्य-राशि अर्जित की है उसके कारण यह अतुल धन सम्पत्ति का अधिकारी हो गया है अतः यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हुई हों तो इस परिवार को दारिद्रय से मुक्त कर दीजिये।"

इस युक्ति का भगवती खण्डन नहीं कर सकीं और प्रसन्न होकर देवी ने कहा-'यही होगा बेटा। मैं इन्हें प्रचुर सोने के आंवले दूंगी।' यह सुनकर आचार्य शंकर ने प्रसन्नता के साथ ब्राह्मणी को शीघ्र धनवान होने का आशीर्वाद देकर गुरु गृह लौट गये। दूसरे दिन ही प्रातः काल ब्राह्मण-दम्पत्ति ने देखा, उनके घर में सर्वत्र सोने के आंवले बिखरे पड़े हैं। इस घटना का उल्लेख 'शंकरदिग्विजय' के चतुर्थसर्ग में सांगोपांग है। इस प्रकार से हम यह देखते हैं कि न केवल श्रीविद्या के उपासक अपितु श्रीविद्या के उपासक जिस पर प्रसन्न हो जाये उस पर भी भगवती श्री की कृपा सद्य हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं। श्रीविद्या की साधना हेतु उसके आधारभूत 'श्रीयन्त्र' को समझना प्रथमतः अनिवार्य है। इस 'श्रीयन्त्र' को आर्त्तभाव से श्रद्धापूर्वक पूजन करने पर बहुतों को धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती हुई प्रत्यक्ष देखी व सुनी गई है।

कनकधारा यन्त्र सम्पूर्ण प्रयोग

कनकधारा स्तोत्र व यन्त्र अत्यन्त दुर्लभ परन्तु लक्ष्मी प्राप्ति के लिये रामबाण प्रयोग है तथा अपने आप में अचूक, स्वयं सिद्ध, ऐश्वर्य प्रदान करने में सर्वथा समर्थ है। इस यन्त्र का उपयोग दरिद्रता का नाश करता है। यह स्वर्ण वर्षा करने वाला कहा गया है। रंक को राजा बनाने की सामर्थ्य इसमें है। निकम्मा व गरीब व्यक्ति एकाएक धनोपार्जन करने लगता है। यह अद्‌भुत यन्त्र तुरन्त फलदायी है परन्तु इसकी प्राण-प्रतिष्ठा उतनी ही दुर्लभ व दुःसाध्य है। जटिल प्रक्रिया के कारण बहुत कम लोग इसे सिद्ध कर पाते हैं। सिद्ध होने पर यह यन्त्र व्यापार वृद्धि, दारिद्र्य नाश करने व ऐश्वर्य प्रदान करने में आश्चर्यजनक रूप से काम करता है।

प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ 'शंकर दिग्वजय' के चौथे सर्ग में इस घटना का उल्लेख है। एक बार भगवत्पाद आचार्य शंकर भिक्षाटन के लिये निकले तथा ग्रूमते-घूमते एक सद्‌गृहस्थ के द्वार पर अचानक अलख जगाई 'भिक्षा देहि।' संयोग से वह एक विद्वान् विनम्र, किन्तु अत्यन्त निर्धन ब्राह्मण का घर था। अपने द्वार पर एक अत्यन्त तेजस्वी अतिथि को देखकर, संकोच के मारे घर की स्वामिनी लाज में गड़ गई क्योंकि भिक्षा में देने के लिये घर में एक दाना तक नहीं था। संकल्प-विकल्प में उलझी अतिथि प्रिय, पतिव्रता स्त्री को अपने दुर्दिन को देखकर रोना आ गया तथा अश्रुपूर्ण नेत्रों ने घर के कोने में पड़े कुछ सूखे आँवलों को लेकर, अत्यन्त संकोच के साथ दिव्य तपस्वी को भेंट करने लगी। साक्षात् शंकर के रूप में विचरण करने वाले, ओढरवरदानी को अबला नारी की दीनावस्था पर तरस आ गया। करुणासागर आचार्यपाद का ह्रदय दया व करुणा से भर आया और तत्काल ऐश्वर्य व सुख की अधिष्ठात्री,करुणामयी वात्सल्यमयी, विष्णुपत्नी, मातेश्वरी महालक्ष्मी को सम्बोधित करते हुये, कोमलकान्त व करुणापूर्ण पद्यावली से एक स्तोत्र की रचना की। कनकधारा नामक उस स्तोत्र की अनायास रचना से, भगवती लक्ष्मी अपने त्रिभुवन मोहन स्वरूप में आचार्य श्री के सम्मुख प्रकट हो गई तथा अत्यन्त मधुर व कोमलवाणी में विस्मय से पूछा—"आचार्यप्रवर अकारण मेरा स्मरण किसलिये?" आचार्य-शंकर ने ब्राह्मण परिवार की दरिद्र अवस्था को लक्षित करते हुये, उसे सम्पन्न, सबल एवं धनवान बनाने की प्रार्थना की।

भगवती लक्ष्मी ने प्रत्युत्तर दिया "इस गृहस्थ के पूर्व जन्म में अर्जित पाप के कारण" इस जन्म में इसका लक्ष्मी-सम्पन्न होना सम्भव नहीं है, इसके प्रारब्ध में धन ही नहीं है।" आचार्य शंकर ने करुणा विगलित कण्ठ से कहा- 'क्या मुझ से याचक के द्वारा इस स्तोत्र पाठ के बाद भी सम्भव नहीं?' भगवती लक्ष्मी तत्काल अन्तर्ध्यान हो गई। इतिहास साक्षी है कि उसी समय उस दरिद्र ब्राह्मण के आंगन में सोने के आँवलों की वर्षा हुई। ब्राह्मण का दुर्दैव नष्ट हुआ, कनक की वर्षा होने के कारण, इस स्तोत्र का नाम 'कनकधारा स्तोत्र' के नाम से कालान्तर में विश्व प्रसिद्ध हो गया।

अज्ञातदर्शन के पाठकों की सुविधा हेतु यह दुर्लभ स्तोत्र यहां हिन्दी सरलार्थ के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

☐ **कनकधारा स्तोत्र—**

वन्दे वन्दारु-मन्दार-मिन्दिरानन्द कन्दलम्।
अमन्दानन्द-सन्दोह बनधुरं सिन्धुराननम्॥
अंङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंङ्गीकृता-ऽखिंल-विभूतिरपाङ्गलीला
मांगल्यदाऽस्तु मम मंगलदेवतायाः॥ 1॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेपत्रपा-प्रणिहितानी गताऽऽगतानि।
माला-दृशो मर्धुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागर-सम्भावायाः॥ 2॥
विश्वामेस्द्र-पदविभ्रम दानदक्ष
मानन्द-हेतुरधिंक मुर-विद्विषोऽपि।
ईषान्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध-
मिन्दीवरोदर-सहोदर-मिन्दिरायाः ॥ 3॥
आमीलिताक्ष-मधिगम्य मुदा-मुकुन्द
मानन्द कन्दम निमेष मनङ्ग तन्त्रम्।
आकेक्कर स्थित कनीनिक पक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजंग शयागंनायाः ॥ 4॥
बाह्वन्तरे मुरजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु में कमलालयायाः॥ 5॥

कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तिडङ्गनेव।
मातुःसमस्तजगतां महनीयमूर्ति-
भद्राणि मे दिशतु भार्गव-नन्दनायाः॥ 6॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत् प्रभावात्
मांगल्यभाजि मधु-माथिनी मन्मथेन।
मय्यापतेत् तदिह मन्थर-मीक्षाणार्ध
मन्दाऽलसं च मकरालय- कन्यकायाः॥ 7॥
दद्याद् दयानुवनो द्रविणाम्बुधारा-
मस्मिन्न किंचन विहंगशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्म-धर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायण-प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः॥ 8॥

कनकधारा स्तोत्र—

जिस प्रकार भ्रमरी अर्धविकसित पुष्पों से अलंकृत तमालवृक्ष का आश्रय ग्रहण करती है, उसी प्रकार भगवान् श्रीहरि (विष्णु) के रोमांच से शोभायमान लक्ष्मी की कटाक्ष-लीला श्री अंगों पर अनवरत पड़ती रहती है और जिसमें समस्त ऐश्वर्य धन-सम्पत्ति का निवास है, वह समस्त मंगलों की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी की कटाक्षलीला मेरे लिये भी मङ्गलदायिनी हो ।1।

जिस प्रकार भ्रमरी कमलदल पर मँडराती (बार-बार आती-जाती) रहती है, उसी प्रकार भगवान मुरारि के मुखकमल की ओर प्रेम सहित जाकर और लज्जा से वापस आकर समुद्र-कन्या लक्ष्मी की मनोहर मुग्धदृष्टिमाला, मुझे अतुल श्री-ऐश्वर्य प्रदान करे ।। 2॥

जो समस्त देवों के स्वामी इन्द्रपद का वैभव-विलास (सुखोपभोग) देने में समर्थ है तथा मुर नामक दैत्य के शत्रु भगवान् श्रीहरि को भी अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाली है, एवं नील कमल जिस लक्ष्मी का सहोदर भ्राता है, ऐसी लक्ष्मी के अधखुले नेत्रों की दृष्टि किंचित् क्षण के लिये मुझ पर थोड़ी अवश्य पड़े ॥ 3॥

जिसकी पुतली एवं भौहें (बरौनियां) काम के वशीभूत हो अर्धविकसित एकटक नयनों से देखने वाले आनन्दकन्द सच्चिदानन्द भगवान् मुकुन्द को अपने सन्निकट पाकर किंञ्चित तिरछी हो जाती हैं- ऐसे शेषशायी भगवान् विष्णु की अर्द्धाङ्गिनी श्री लक्ष्मीजी के नेत्र हमें प्रभूत धन-सम्पत्ति-प्रदायक हों ॥ 4॥

जिन भगवान् मधुसूदन के कौस्तुभमणि से विभूषित वक्षस्थल में इन्द्रनीलमयी हारावली की तरह जो सुशोभित होती है तथा उन (भगवान्) के चित में काम (स्नेह) संचारिणी, कमल-कुंजनिवासी लक्ष्मी की कृपा कटाक्ष-माला मेरा भी मङ्गल करे॥ 5॥

जिस प्रकार मेघों की घनघोर घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार कैटभ दैत्य के शत्रु श्री विष्णु भगवान् के काली मेघपंक्ति की तरह मनोहर वक्षःस्थल पर आप विद्युत के समान दैदीप्यमान होती हैं तथा जो समस्त लोकों की माता, भार्गवपुत्रा भगवती श्रीलक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति हैं वह मुझे कल्याण प्रदान करें॥ 6॥

समुद्रकन्या लक्ष्मी की वह मन्दालस, मन्थर, अर्धोन्मीलित चंचल दृष्टि के प्रभाव से कामदेव ने मङ्गलमूर्ति भगवान् मधुसूदन के हृदय में प्राथमिक (प्रधान) स्थान प्राप्त किया था, वही दृष्टि यहाँ मेरे भी ऊपर पड़े॥ 7॥

भगवान् नारायण की प्रेमिका लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ, दयारूपी अनुकूल वायु से प्रेरित होकर दुष्कर्म (कुकर्म) रूपी धाम को दीर्घकाल के लिये दूर हटाकर विषादग्रस्त मुझ दीन-दुखी सदृश चातक पर धनरूपी जलधारा की वर्षा करे॥ 8॥

इष्टा-विशिष्ट मतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्यां त्रिविष्टपपदं सुलभं भजन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर-विष्टरायाः॥ 9॥
गीर्देवतेति गरुड़ध्वज-सुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति।
सृष्टि स्थिति-प्रलय केलिशु संस्थिता या
तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरौसतरुण्यै॥ 10॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै।
पुष्टयै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै॥ 11॥
नमोऽस्तु नालीक-निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्मभूम्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै ॥ 12॥
नमोऽस्तु हेमाम्बुज-पीठिकायै

नमोऽस्तु भूमण्डल नायिकायै
नमोऽस्तु देवादि-दयापरायै
नमोऽस्तु शांड् र्गायुध-वल्लभायै ॥ 13 ॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णुरुरसि स्थितायै।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामदोरवल्लभायै ॥ 14 ॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भूवनप्रसूत्यै।
नमोऽस्तु नन्दात्मज- वल्लभायै ॥ 15 ॥
मस्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि
साम्राज्य-दान निरतानि सरोरुहाक्षि।
त्वद् वन्दानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ 16 ॥

विलक्षण मतिमान् मनुष्य जिसके प्रीतपात्र होकर उनकी कृपा के प्रभाव से स्वर्गपद को अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं, उन्हीं कमलासना कमलालक्ष्मी की वह विकसित कमल गर्भ के सदृश कान्तिमयी दृष्टि मुझे मनो-अभिलषित पुष्टि-सन्तत्यादि की वृद्धि प्रदान करे ॥ 9 ॥

जो भगवती लक्ष्मी सृष्टि-क्रीड़ा के अवसर पर वाग्देवता (ब्रह्मशक्ति) के स्वरूप में विराजमान होती है और पालन-क्रीड़ा के समय पर भगवान् गरुड़ाध्वज अथवा विष्णु भगवान् की सुन्दरी पत्नी लक्ष्मी (वैष्णवी शक्ति) के स्वरूप में स्थित होती हैं तथा प्रलय-लीला के समय शाकम्भरी (भगवती दुर्गा) अथवा भगवान् शंकर की प्रिय पत्नी पार्वती (रुद्र शक्ति) के रूप में विद्यमान होती हैं, उन त्रिलोक के एकमात्र गुरु भगवान् विष्णु की नित्य यौवना प्रेमिका भगवती लक्ष्मी को मेरा नमस्कार है॥ 10 ॥

हे लक्ष्मी! शुभकर्मफलदायिनी! श्रुतिस्वरूप, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। रमणीय गुणों के समुद्रस्वरूपा रति के रूप में स्थित आपको नमस्कार है शतपत्र वाले कमल-कुंज में निवास करने वाली शक्तिरूपा रमा को नमस्कार है तथा पुरुषोत्तम श्रीहरि की अत्यन्त प्राणप्रिय पुष्टिरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है॥ 11 ॥

कमल के समान मुख वाली लक्ष्मी को नमस्कार है। क्षीर-समुद्र में उत्पन्न होने वाली रमा को प्रणाम है। चन्द्रमा और अमृत की सहोदर बहन को नमस्कार है। भगवान् नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी को नमस्कार है ॥ 12 ॥

स्वर्ण कमल पर आसीन होने वाली, भूमण्डल की नायिका, देवताओं पर दया करने वाली शार्ङ्गायुध विष्णु की वल्लभा आपको नमस्कार है॥ 13 ॥

श्री विष्णु भगवान के वक्ष:स्थल में निवास करने वाली देवी, कमल के आसान वाली दामोदर प्रिया लक्ष्मी आपको मेरा नमस्कार है ॥ 14 ॥

श्री विष्णु भगवान् की कान्ता, कमल-नेत्र वाली, त्रैलोक्य को उत्पन्न करने वाली, देवताओं द्वारा पूजित नन्दात्मज की वल्लभा ऐसी लक्ष्मी देवी को मेरा नमस्कार है ॥ 15 ॥

हे कमलाक्षी! आपके चरणों में की हुई स्तुति ऐश्वर्यदायिनी और समस्त इन्द्रियों को आनन्दकारिणी है तथा साम्राज्य (पूर्णाधिकार देने में सर्वथा समर्थ) एवं सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने में उद्यत है। हे मातः मुझे आपकी चरण-कमलों की वन्दना करने का सर्वदा शुभ अवसर मिलता रहे ॥ 16 ॥

यत्कटाक्ष-समुपासना विधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
सन्तोति वचनांगमानसैः
त्वां मुरारि हृदयेश्वरी भजे ॥ 17 ॥
सरसिजनयने! सरोजहस्ते!
धवलतमांशुक-गन्ध माल्याशोभे!
भगवति हरिवल्लभे! मनोज्ञे!
त्रिभुवन भूतिकरि! प्रसीद मह्यम् ॥ 18 ॥
दिग्धस्तिभिः कनक-कुम्भ मुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनी विमल-चारुजल प्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमानि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथ गृहणीममृताब्धि पुत्रीम्॥ 19 ॥
कमले! कमलाक्षवल्लभे!
तं करुणापूर तरंङ्गितैरपाङ्गैः।
अवलोकय माकिंञ्चनाना
प्रथमं पात्रमकृत्रिम दयायाः॥ 20 ॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयींमयीं त्रिभुवन मातरं रमाम।
गुणाधिका गुरुतर भाग्य भाजिना
भवन्ति ते भुवि बुधमाविताशयाः॥ 21 ॥
सुवर्णधारा स्तोत्रं यच्छंङ्कराचार्य निर्मितम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्य स कुवेरसमो भवेत् ॥ 22 ॥

(इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं कनकधारास्तोत्रं समाप्तम्)

जिनके कृपा कटाक्ष (तिरछी-चितवन) के लिये की गई उपासना (आराधना) सेवक (उपासक) के लिये समस्त मनोरथ और सम्पत्ति का विस्तार

करती है, उस भगवान् मुरारी की हृदयेश्वरी लक्ष्मी को, मैं मन, वचन और शरीर से भजन करता हूँ ॥ 17॥

हे भगवती भगवान् हरि की प्रिय पत्नी! आप कमल-कुंज में रहने वाली हैं, आपके चरण-कमलों में नील कमल शोभायमान है। आप श्वेत वस्त्र तथागन्ध, माला आदि से सुशोभित हैं। आपकी सुन्दरता अद्वितीय है। हे त्रिभुवन के वैभव प्रदायिनी! आप मेरे ऊपर भी प्रसन्न होइए ॥ 18॥

दिग्गजनों के द्वारा कनककुम्भ (सुवर्णकलश) के मुख से पतित, आकाश गङ्गा के स्वच्छ, मनोहर जल से जिस (भगवान्) के श्री अङ्ग का अभिषेक (स्नान) होता है, उस समस्त लोकों के अधीश्वर भगवान् विष्णु-पत्नी, क्षीरसागर की पुत्री, जगन्माता भगवती लक्ष्मी को मैं प्रातः काल का नमस्कार करता हूँ।॥ 19॥

हे कमलनयन भगवान् विष्णुप्रिया लक्ष्मी! मैं दीन-हीन मनुष्यों का अग्रगण्य हूँ, इसलिये आपकी कृपा का स्वभावसिद्ध पात्र हूँ। आप उमड़ती हुई करुणा के बाढ़ की तरल-तरङ्गों के सदृश कटाक्षों द्वारा मेरी दिशा में भी अवलोकन कीजिये ॥ 20॥

जो मनुष्य इन स्तोत्रों के द्वारा नित्यप्रति वेदत्रयी-स्वरूपा, तीनों लोकों की माता, भगवती रमा (लक्ष्मी) का स्तोत्र-पाठ करते हैं, वे लोग इस पृथ्वी पर महागुणी और सौभाग्यशाली होते हैं एवं विद्वद्जन भी उनके मनोगत भाव को समझने के लिये विशेष इच्छुक रहते हैं॥ 21॥

श्रीमान् आदि शङ्कराचार्य विरचित इस सुवर्ण कनक धारा स्तोत्र का पाठ जो मनुष्य तीनों काल (प्रातः मध्याह्न, सायं) में करते हैं, वे लोग कुबेर के समान धनी हो जाते हैं ॥ 22॥

कनकधारा यन्त्र प्रयोग—

यह मूल यन्त्र तीन त्रिकोणों से निर्मित होता है। यन्त्र के चारों ओर तीन परिधियां खींची जाती हैं जो कि तीन महा शक्तियों महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती की प्रतीक होती हैं। इसके पश्चात् गोल घेरा (वृत्त) त्रिभुवन सुन्दरी का प्रतीक है।

इसके बाद आठ कमल दलों के भीतर अष्ट सिद्धियों व अष्ट लक्ष्मियों का निवास माना गया है जो इस प्रकार है—

1. अणिमा (श्रीवरदालक्ष्मी) 2. लघिमा (धनदालक्ष्मी) 3 प्रकाम्य (पद्मलक्ष्मी) 4. वशिता (कमलालक्ष्मी)3. महिमा (महालक्ष्मी) 6. प्राप्ति (श्रेष्ठालक्ष्मी) 7. ईशिता (वसुधालक्ष्मी) 8. ख्याति (काम्यालक्ष्मी)

इसके पश्चात् सोलह कमलदल सोलह कुबेरों के प्रतीक माने गये हैं। जो इस प्रकार हैं—

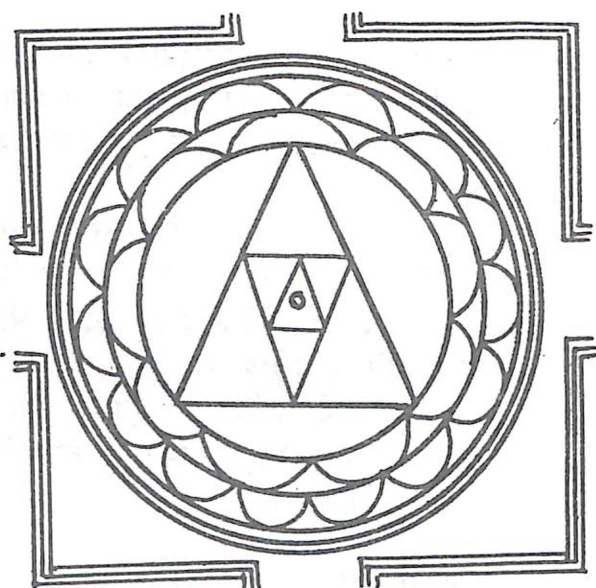
1. कुबेर 2. त्रयम्बकसुख 3. यक्षराज 4. गुह्यकेश्वर 5. धनद 6. राजराज 7. धनाधिप 8. किन्नरेश 9. वैश्रवण 10. पौलस्त्य 11. नरवाहन 12. यक्ष 13. 14. ऐलविल 15. श्रीद 16. पुण्यजनेश्वर।

इनके पूजन से जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता। इस यन्त्र के भीतर के त्रिकोण क्रमशः

1. दारिद्रय विनाशक 2. श्रेष्ठा लक्ष्मी एवं 3. ऐश्वर्य के प्रतीक हैं।

ॐश्री कनकधारा यंत्र

ॐ श्री कनकधारा यंत्र



त्रिकोण का मध्य बिन्दु मां भगवती (भुवनेश्वरी) का सूचक है जो अनिष्ट निवारक, प्रसन्नता एवं ऐश्वर्यदायक है। साधक को इस बिन्दु पर कमल सिंहासनरूढ़ भगवती श्री लक्ष्मी की परिकल्पना कर, अर्चना करनी चाहिए।

यन्त्र पूजन काल—

कनक धारा यन्त्र को चांदी या स्वर्ण (कनक) पर बनवाना चाहिये यदि यह कूर्म पृष्ठीय निर्मित करवा लें तो सर्वोत्तम रहता है। इसका निर्माण दीपावली में, नवरात्रि में, सिद्धियोग में, अक्षय तृतीया व रवि पुष्य या गुरु पुष्य को

होना चाहिये। प्रत्येक त्रिकोण व कमल दल का एक निश्चित परिणाम है। उसके अनुसार यन्त्र निर्माण होना चाहिये। कार्यालय में इस प्रकार के सर्वथा शुद्ध यन्त्र, शुद्ध धातु पर निर्मित करवाये गए हैं।

वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक से फाल्गुन मास का समय इसके लिये शुभ रहता है। इस यन्त्र का उपयोग घर में, दुकान में, फैक्टरी में, वर्कशाप में, धन्धे व व्यवसाय स्थल पर कर सकते हैं। दीपावली, होली, या शुक्लपक्ष की द्वितीया नवमी, सप्तमी, दशमी, पूर्णिमा, सोम, बुध, शुक्रवार रोहिणी, पुर्नवसु, हस्त, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र प्राण-प्रतिष्ठा हेतु उत्तम रहते हैं।

पूजन सामग्री :—

यन्त्र साधना, प्रतिष्ठा व पूजन के लिए निम्न सामग्री पहले से ही मंगवाकर रख लेनी चाहिए।

श्रीफल, कुंकुम, अबीर, गुलाल, मौली, सिंदूर, वर्क, सुपारी, लौंग, इलायची, इत्र, यज्ञोपवीत, ताम्रपात्र, लाल व श्वेत वस्त्र, पीत वस्त्र, रुई, अगरबत्ती, माचिस, प्रसाद, फल, दही, घी, शहद, शक्कर, गुड़, कमल गट्टे व हल्दी का गांठिया आदि।

कनक धारा यन्त्र सामने पट्टा बिछाकर उस पर रेशमी वस्त्र व पुष्पों का आसन लगाकर रखना चाहिये। यन्त्र शुभ मुहूर्त पर, शुद्ध धातु एवं वैदज्ञ ब्राह्मण की उपस्थिति में बनना चाहिए।

ध्यान रहे प्राण प्रतिष्ठा युक्त यन्त्र, मन्त्र सिद्धि होने पर ही कार्य करता है। कनकधारा यन्त्र पूजन से पूर्व गणपति पूजन, वरुण कलश पूजन, नवग्रह पूजन, षोड़शमातृका पूजन, सर्वतोमण्डल पूजन अवश्य कर लें। इसके लिए किसी योग्य कर्मकाण्डी पंडित की सहायता लेनी चाहिये। तदुपरान्त कनकधारा यन्त्र के सामने शुद्ध वस्त्र पहन, पत्नी सहित शुद्धासन पर बैठकर संकल्प करें।

ॐ अस्य श्री कनकधारा महामंत्रस्य श्री भगवत्पाद शंकर ऋषिः श्री भुवनेश्वरी महामाया देवता,

श्री बीजं ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकम् श्री विद्यापरा देवता, (मम) दुःख दारिद्रयादि दोष निवारणार्थ अप्राप्त लक्ष्मी-प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याः चिरकाल संरक्षणार्थं तथा च धनदा लक्ष्मी प्रसाद सिद्धये कनक-कान्ति भूषितां, कनकधारावृतां, श्री प्रीत्यर्थं कनक धारा यंत्र संमुखे स्फटिक मणिमालोपरि अष्टसिद्धि दात्रयाः भगवत्या भुवनेश्वर्याः कनक धारा महामंत्र जपे विनियोगः॥

इतना पढ़कर जल शुद्ध भूमि पर त्याग दें।

कनकधारा यन्त्र स्वतः अपने आप में आश्चर्यजनक व श्रेष्ठ फल देने वाला है। अटूट श्रद्धा, विश्वास भक्ति से मात्र इसे घर में स्थापित करने से ही आश्चर्य-लाभ, व्यापार वृद्धि कार्य सिद्धि व ऐश्वर्य तथा सम्पन्नता बढ़ती है। यन्त्र के सम्मुख यदि इस स्तोत्र का पाठ करें तो फल कई गुना अधिक बढ़ जाता है।

कनकधरा मन्त्र—

"ॐ वं श्री वं ऐं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा।"

कोई भी साधक अपने घर में सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यंत्र को स्थापित कर नित्य कनकधारा मंत्र की एक माला फेरे, तब ही से उसके जीवन में आर्थिक उन्नति होती है। स्फटिक मणि की माला पर एक लाख जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र व स्तोत्र का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। व्यक्ति को चाहिये कि वह अपने घर में, फैक्टरी में, कार्यालय में,दुकान में सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र स्थापित करे व नित्य उनका सामान्य पूजन कर, स्तोत्र का पाठ करे। स्तोत्र पाठ से विभिन्न कार्य सम्पन्न होते हैं। श्री यन्त्र व कनकधारा दोनों का विशेष समान्जस्य है। जिसके पास श्री यन्त्र है, वे उसके ही पास कनकधारा यन्त्र भी अवश्य रखें तो फल 100 गुना अधिक बढ़ जाता है।

श्री सूक्तात्मक "कनकधारा महा-यन्त्र" साधना एवं प्रयोग

यो न्तः प्रविश्य मम वाच मियां प्रसुप्ता।
संजीवयत्यखिल शक्तिधरः स्वधाम्ना॥
अन्यांश्च हस्त चरण श्रवण त्दगादीन्।
प्राणान्नमो भगवतेपुरुषाय तुभ्यम्॥

आद्याशक्ति भगवती त्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी ही साधकों की कामना के अनुसार महाविद्यालयों के रूप में स्वयं को व्यक्त करती हैं। उसमें भी दो कुल हैं। काली कुल तथा श्रीकुल। श्रीकुल में भगवती कमलात्मिका महाविद्यारूपिणी भगवती लक्ष्मी के प्रभाव को कौन सांसारिक व्यक्ति नकार सकता है। दृष्ट-श्रुत समस्त संसार के व्यवहार आज धन दौलत पर ही निर्भर करते हैं। धन वैभव आदि की प्राप्ति हेतु भगवती कमला अर्थात लक्ष्मी की ही साधना बताई गई है। इन साधनाओं में श्रीसूक्त की फलश्रुति में स्पष्ट कहा गया है "श्चियः पंच दशर्चं च श्री कामः सततं जपेत्।"

श्रीसूक्त की अनेकों साधनाएं प्रचलित हैं। यही नहीं बल्कि श्रीसूक्त के आधार पर अनेक प्रकार के यंत्रों की भी रचना के विधान प्राप्त होते हैं और उन सभी यंत्रों को श्रीयन्त्र ही कहा जाता है। इसी प्रकार की एक अत्यन्त गुप्त रचना, साधना विधि हम नीचे दे रहे है।

सर्व प्रथम हम यंत्रोद्धार दे रहे हैं—

श्री बीज साध्य संयुक्त कर्णिकायां समालिखेत्।
वस्वादित्यव्धष्ट सख्या पत्रेष्वपि यथाक्रमम्॥
श्रीसूक्तस्याप्यर्द्ध मर्द्ध मृचमाचिख्य तद्ब हिः।
यः शुचिः प्रयतोभूत्वेत्यृचा मातृकयापिच॥
संवेष्ट्य च धराबिंबं कोणुषु श्रियमालिखेत्।
श्रीसूक्त यंत्र मेतत्तु साध्ये/धारयेयो यथाविधिः॥
पुत्रारोग्यधरा धान्य धन गोसस्य शरदां शालिनीम्।
लब्ध्वाति बहुसां लक्ष्मीं जीवेज्च शरदां शतम्॥

अर्थात्—सर्वप्रथम अष्टदल कमल बनावें। कर्णिका में साधक के नाम सहित "श्री" लिखें। बाहर के आठ दलों में "हिरण्यवर्णा" इस प्रथम ऋचा

से प्रारम्भ करके प्रत्येक दल में आधी-आधी ऋचा लिखें। इस प्रकार "तामिहोपहवये श्रीयम्" तक की चार ऋचाएं पूर्ण हो जावेंगी। उसके बाहर फिर द्वादश दल कमल बनाएं तथा पूर्वोक्ताविधि से ही दक्षिणावर्त विधि से साधक अपने सामने वालें दल से "चंद्रां प्रभासां" से आधी ऋचा लिखें। इस प्रकार दसवीं ऋचा तक "श्री श्रयतां यशः" पूर्ण हो जावेगी। पुनः इसके बाहर षोडश दल कमल बनाएं तथ उपरोक्त विधि से ही ऋचाएं भरें "कर्दमेन प्रजाभूता" से लेकर तीन ऋचाओं के आधे-आधे भाग प्रत्येक दल में भरें। इस प्रकार तेरहवीं ऋचा "जातवेदोम आवह" तक पूर्ण हो जायेंगी। तथैव इस षोडश दल कमल के छः दल पूर्ण हो जायेंगे। इससे आगे के छः दल खाली छोड़ दें तथा 13.14.15 व 16 वें दलों में चौदहवीं ऋचा "आर्द्रा यः करिणी" तथा पंद्रहवीं ऋचा "ताम्म आवह" के आधे-आधे भाग भर दें। इसके बाहर तीन वृत्त बनाएं। इन तीनों वृत्तों के मध्य में दो वलय बनेंगे। प्रथम वलय में "यः शुचिः प्रयतः" यह सोलहवीं ऋचा पूरी लिखें। दूसरी वलय पंक्ति में पूरी मातृका लिपि यदि सम्भव हो लिख देवें अन्यथा यन्त्रोद्धार के समय इन मन्त्रों का उच्चारण करें। इसके बाहर चतुरस, भूपुर बनाएं तथा चारों कोणों में श्रीबीज "श्री" लिखें।

उर्पयुक्त यंत्र अष्टदल, द्वादशदल, षोडश दल, वृत्तयात्रय तथ भूपुर कोण सभी में कुछ न कुछ मंत्र अथवा बीजमंत्र भर दिये गए हैं परन्तु 16 दल कमल से 7 से 12 वें दलों में श्रीसूक्त के मंत्रों को न भर कर निम्नांकित मंत्रों को भरा जायेगा-

(1) "गौरी मिमाय सलिला नित्यैक पदि द्विपदी चतुष्पदी अष्टापदी नवपदी बुभूषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्"॥

(2) "प्रणो देवि सरस्वती बाजिभि र्वाजिनिवती धीनामवित्रयवतु"॥

अर्थात सातवें दल में "गौरी मिमाय सलिला नित्यैकपदी, आठवें दल में द्विपदी सा चतुष्पदी, नवें दल में अष्टापदी नवपदी बुभुषी" दसवें दल

---

1. पाठकों को ध्यान दिला दें कि श्रीसूक्त की कई पुस्तकें जो काशी आदि से छपी हैं, तथा जिनमें श्रीसूक्त श्रीयन्त्र का चित्र भी दिया गया है, और उपरोक्त रचना वाला ही है, परन्तु उन सब पुस्तकों में छपे श्रीयंत्र के 16 दल कमल के छः दलों (7 से 12 संख्या के दलों) में श्रीसूक्त की ऋचाओं की ही पुनरावृत्ति करके स्थान पूर्ति कर दी गई यहां पर यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि पुनरावृत्ति किस आधार पर की गई। क्योंकि भारतीय वाङ्मय में कोई भी अप्रामाणिक उल्लेख नहीं है। वेद के मंत्रों के बारे में यदि धनपाठ व जटापाठ आदि विधियों है तो दुर्गासप्तशती के पाठ के लिये भी योगिनी तन्त्र आदि में श्लोकों मंत्रों की संख्या तथा आनुपूर्वी क्रम का वर्णन है। तथैव मंत्रोद्धार विधि के आधार पर सम्पूर्ण मंत्रों व यन्त्रों की रचना का ठोस आधार उपलब्ध है। तदनुसार 7 से 12 वें दल में श्रीसूक्त की ऋचाओं की पुनरावृत्ति कहीं भी वर्णित नहीं है।

में ''सहसप्राक्षरा परमें व्योंमन्'' ग्यारहवें दल में ''प्रपीदेवि सरस्वति वाजिभि वत'' तथा बारहवें दल में ''धीना भवित्रयवतु'' भरा जायेगा तथा इस प्रकार षोडश दल के सभी दल पूर्ण हो जायेंगे।

वास्तव में यह श्रीसूक्तात्मक श्रीयंत्र ही ''कनकधारा'' यंत्र है। आय जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा रचित व प्रयुक्त कनकधारा यंत्र का तो उल्लेख ''शंकरदिग्वजय'' ग्रंथ में है, परन्तु यह यंत्र व मंत्र उनकी कोई स्वतंत्र रचना नहीं थी। उन्होंने पूर्णतया वैदिक प्रयोग किया था। हाँ, उन्होंने स्तुति रूप में लौकिक संस्कृत में ''कनकधारा'' स्तोत्र की रचना अवश्य की थी। वर्तमान में जो कनकधारा यंत्र व मंत्र प्रचलित हैं तथा जो कि आजकल पुस्तकों व पत्रिकाओं में मुद्रित उपलब्ध भी हैं, मेरे विचार से वे भी अशुद्ध नहीं हैं क्योंकि उनको उस रूप में प्रस्तुत करने के पीछे संबद्ध विद्वानों के मन व मस्तिष्क में यह विचार अवश्य रहा है कि अत्यन्त गुह्य ज्ञान प्रकाश में तो आना चाहिये, परन्तु अनधिकारी के हाथ में नहीं जाना चाहिये।

अत: संभवतया उन्होंने श्रीयंत्र से मिलती-जुलती रचना वाला कनकधारा यंत्र ही प्रचलित कर दिया। जो कनकधारा मंत्र प्रचलित है उसका उपलब्ध आगम ग्रन्थों के आधार पर कहीं भी मंत्रोद्धार इस लेखक की दृष्टि में नहीं आया है। परन्तु गुरुमुख परम्परा से इतना जरूर ज्ञान हुआ था कि श्री विद्या की परम्परा गुरुमुख पद्धति द्वारा ''श्रुति'' रूप में वर्तमान काल में केवल ''श्रीमाली'' ब्राह्मणों में ही रह गई है। हो सकता है इस आधार पर ''कनकधारा'' मंत्र का वर्तमान रुप श्रीमाली कुल का परम्परा प्राप्त मंत्र हो। लेखक को भी यह सौभाग्य प्राप्त है कि 10-12 पीढ़ियों से श्रीचक्रोपासक परिवार में उसका जन्म हुआ है तथा असंख्य हस्तलिखित ग्रंथ संग्रह रूप में सुरक्षित हैं। उन्हीं में से एक के आधार पर यह रचना प्रस्तुत की गई है।

कनकधारा का सामान्य प्रचलित अर्थ है- ''सोने की धारा'' अर्थात जिस यंत्र विशेष में सोने की कुछ धाराएं खचित हों वह भी कनकधारा ही कहलायेगा। ''पचदशी'' यंत्र भी ''कनकधारा'' कहलायेगा। इस लेख के मुख्य विषय ''यन्त्र'' के विषय में मूल पंक्तियां इस प्रकार हैं:—

'' इदमेव ताम्रपदे विलिख्य जम्बवा च सिक्त
संपातं संस्थायत प्रांगण भूमौ लक्ष्मीमावहृय साधु

---

1. श्रीमाली ब्राह्मणों की उत्पत्ति श्रीमाल नगर में हुई तथा आद्यादेवी भगवती लक्ष्मी (श्री) ही उनकी कुलदेवी के रूप में पूजित होती हैं। फलत: श्रीविद्या के निष्णात उपासक एवं इस विद्या के गूढ़ रहस्य को गुरुमुख पद्धति से जानने वाले साधक श्रीमाली ब्राह्मणों में ही पाये जाते है। स्वयं इस पत्रिका के सम्पादक पं. भोजराज द्विवेदी श्री विद्या के निष्णात उपासक व कर्मकाण्डी अनुष्ठानों के सिद्धहस्त मर्मज्ञ हैं एवं श्रीमाली ब्राह्मणों के कुलगुरु के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

संपूज्य भूयः परिवार युतां बलिं हरेत् भूतबलिं
समीकृत्य यास्मिन्नेवाह्नि हिन्यते वर्द्धते तस्य
संपत् वै पुत्रैर्दारै रिष्टै विभवै र्भृत्यैश्च नागै रथै
स्तुरगै र्वृषभै र्गोभि श्च सख्यया हीनैः रमयति गेहे
स्मिन्विहरत्या भूत संप्लवं लक्ष्मीः''

इस पाठ में वे शब्द या पंक्तियां विशेष ध्यान देने लायक हैं- ताम्रपदे-जम्ब्वा च सिक्त-प्रांगणभूमौ लक्ष्मी मावाह्य, तांबे पर बना हो, सोने (जाम्बुनद) की धाराओं से खचित हो- आंगण की भूमि में स्थापित करके लक्ष्मी का आवाह्न किया जाए ''संताप'' शब्द भी प्रासंगिक अर्थ देने वाला है, काल विशेष में अचानक आ पड़ना।

इस प्रकार पहले दो शब्दों से जहां इस लेख में वर्णित श्रीसूक्त श्रीयंत्र का कनकधारा यंत्र होना प्रमाणित होता है वहीं आंगन की भूमि वाली प्रक्रिया आद्य शंकराचार्य द्वारा प्रयोग की गई तथा शंकर दिग्वजय में वर्णित कनकधारा प्रयोग की विधि से मेल खाती है।

इससे आगे तो विद्वज्जन ही विचार करें कि क्या हो सकता है क्या नहीं? अब हम आगे की पंक्तियों में इस विशिष्ट साधना की विधि दे रहे हैं:—

कनकधारा महायन्त्र की विशेष उपासना विधिः—

ब्रह्ममुहूर्त में उठें नित्यकर्म से निवृत्त होकर पूजास्थान में आएं, संध्या वंदनादि के पश्चात शास्त्रोक्त विधि से भूशुद्धि से योगपीठ तक के कर्म करें।

---

1. कुछ विद्वानों द्वारा प्रचलित किया गया वर्तमान कनकधारा मंत्र भी विशेष विचारणीय है। भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य द्वारा रचित कनकधारा स्तोत्र भी पाठ भेद से दो प्रकार का उपलब्ध होता है। श्रुति परम्परा से अनुमान है कि जिस प्रकार भगवत्पाद ने सौन्दर्य लहरी के प्रत्येक श्लोक में गुह्यात्मक बीजमन्त्रों एवं प्रयोगों का प्रतीकात्मक वर्णन किया है। ठीक उसी प्रकार कनकधारा के प्रत्येक श्लोक में एक-एक बीजाक्षर निहित है। बीजाक्षर कोष आदि, अगणित ग्रन्थ कोष रूप में उपलब्ध हैं। उनकी सहायता से विद्वानों को इस मंत्र के विषय में शोध करना चाहिये। तंत्र परम्परा के अनुसार श्रीसूक्त की 16 ऋचाएं हैं परन्तु प्रचलित 15 ही हैं 16 वीं तो फलश्रुति है। इस प्रकार 16 वीं वास्तविक ऋचा गुप्त है। सूक्त की 16 वीं ऋचा में ''श्रियः पंचदशर्चंच'' पादही षोडशी के स्वरूप ''श्री'' बीज का प्रतीक है अतः वह फल कीर्तनात्मक होते हुए भी मन्त्रात्मक ही है। तथैव भगवत्पाद ने कनकधारा स्तोत्र की वास्तविक श्लोक संख्या तो 16 ही है। परन्तु उपलब्ध 18 होते हैं जिनमें से 18 वां श्लोक फलश्रुति है तथा 17 वां श्लोक रहस्गुप्ति के रूप में है। वर्तमान लेख का विषय ''साधना'' पूर्णतया बंदिक है क्योंकि इसके मूल हस्तलिखित ग्रंथ में ''अथाश्विन नवरात्रे वेदोक्त प्रकारेण उक्त यंत्र साधने महालक्ष्मी पूजनं त्रक्ष्यते'' यह स्पष्ट रूप से कहा गया है। अस्तु।

पूर्ण विधि से भगवान गणेशपूजन, कलशस्थापना करें। मूल से प्राणायाम करके यंत्र स्थापना कर, अग्न्युत्तरण प्राणप्रतिष्ठा करें। मानसिक उपचारों से उसका पूजन करें। विशेषार्घ्य करें।

ॐ ह्नीं श्रीं हं सः सो हं स्वाहा इस मंत्र के पीठ पूजा कर मंडूकादि परतत्वांत देवों का पूजन स्थापन करें।

पर्वद्वार पर–द्वार श्री, इंद्र, ब्रह्मा, सनकादि ऋग्वेद, आत्मकालतत्व, अंबिका, इंद्राणी, वेदमाता, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्र, घंटा, कूष्मांडा, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी का पूजन करें। फिर दक्षिण द्वार पर श्री क्षमा, शांति, सिद्धा, विष्णु, यजुर्वेद, रज, विद्यातत्त्व, जगन्माता, माया, शिवा, शांति, ह्नींकारा, क्लींकारा, मायाशक्ति, वीरा, प्रवीरा, अनंतरात्मा, दंडधर का पूजन करें। तत्पश्चात् पश्चिम द्वार पर द्वारश्री, वरुण, रुद्र, सामवेद, आदित्य, वारुणी, शंखायुधा हंसवाहिनी, जगजीवा, जगदीजा, षोडशकला, पूर्णकंलशा, चित्रिणी, चित्रमाला, चित्रा, चामुंडा का पूजन करें। अंत में उत्तर द्वार पर–द्वारश्री, कपालद्वारिणी, भक्तवत्सला, हुंकारा, क्षांकारा, विमलरूपा, ईशान, पार्वती, ब्रह्मा, अर्थववेद धाता, ज्योत्सना, कल्याणी, शर्वाणी, चंद्रकला, चंद्रवदना, विभूति, परविभूति, भस्मधारिणी, पावना गंगा, भागीरथी, गोदावरी, प्रवरा प्रणता, क्लींकारा, क्रींकारा, क्रौंकारा, सर्वबीजात्मा, बीजप्रवाहिनी का पूजन करें। ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य, अनैवर्य, शतछत्र, चिच्छाक्ति, मायाशक्ति, आनंदपार, संविश्ललाप, प्रककृतिमयपत्र, विकृतिमयकेसर, पंचशर्द्धबीज, सर्वतत्वरूपा, कर्णिका, सूर्यमंडल, चंद्रमंडल, बहिनामंडल, सत्व, रज, तम, आत्म, अन्तरात्मा, परमात्मा, ज्ञानात्का, आत्मतत्व, मायातत्व, विद्यातत्व, परतत्व, का पूजन करें।

उसके बाद पूर्वादि अष्ट दिशाओं तथा मध्य में भूति, कांति, ह्नी, कीर्ति, संतति, व्याप्ति, उत्कृष्टि, मति, ऋद्धि का पूजन करें। ॐ श्री सर्वशक्तिकमलासनाय नमः से समस्त पीठ का पूजन करें। अब भगवती लक्ष्मी का पूजन प्रारंम्भ करें। सबसे पहले स्थापना, आवाह्न, (यहां पर आवाह्नादि दस मुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिये) मूलमंत्र से दीपिनी मालिनी अर्घ्योदक आदि क्रिया करें। श्रीसूक्त की प्रत्येक ऋचा से आसन आदि समर्पित करें। यहां हम प्रथम ऋचा से पूजा का विस्तृत प्रकार उदाहरण रूप में दे रहे हैं:—

ॐ दुर्गे कात्यायनी देवि शांभवी शंकरप्रिये।
भक्त्या मया कृतां पजां ग्राहण त्वं सुरेश्वरि॥
ॐ हिरणयवर्णा हिरणीं सुवर्णरजत स्रजात्।
चंद्रा हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमराति यतो निदह्यति वेदः।
स नः पषदति दुर्गाणि विश्वानवेव सिंधु दुरितात्यग्निः॥

ॐ नमो देव्यै महादेवयै शिवायै सततं नमः।
नमःप्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणतास्म ताम्॥
ॐ तप्पकांचन वर्णाभं मुक्तामणि विराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यं आसनं परिगृह्यताम्॥
इत्यासनं समर्पयामि।

इसी प्रकार दूसरी ऋचा से स्वागत व पाद्य, तीसरी से अर्घ्य, चौथी से आचमनः पांचवी से मधुपके, छटी से स्नानमंडप, सुगंधित तैल उबटन, तीथोदक, पंचामृत तथा शुद्ध स्थान, वस्त्र, सातवीं से आभूषणादि, आठवीं से सुगंधद्रव्य, नौवीं से चंदन अक्षत आदि सिंदूर आदि, दशमी से पुष्प- पुष्पमाला, समर्पित करें।

कनकधारा महायन्त्र के अंग पूजन का विधानः—

इसके बाद अंगपूजा करें-चंचला नाम से चरणों का, चपला टखनों का, कांति से जानु, मंगला से जंघा भद्रकाली से ऊरू, कमलिनी से कटि, शिवा से नाभि, क्षमा से उदर, गौरी व सिंहवाहिनी से दोनों स्तन, स्कंदमाता व काम-माता से दोनों भुजा, कबु कढ़ा से ग्रीवा, सरस्वती से मुख, सुबासिनी से नासिका, स्वर्णकुंड से दोनों कान, चंडिका से दोनों नेत्र, शिवा से ललाट, कुमारी से सिर तथा सर्वरूप से सारे अंगों का पूजन करें।

इसके बाद लक्ष्मी के 108 नामों से (मालामंत्र में आये 108 नामों से) लक्ष्मी का पूजन करें, तत्पश्चात् कणिका में श्रांश्रीं आदि से षडंगपूजन करें। आठों दलों में पूर्वादि क्रम से पद्ममाला, पद्मवर्णा, पद्मसंस्था, आर्द्रा, तर्पयंती, तृप्ता, ज्वलिनी स्वर्णप्रकारा का पूजन तथा दलों के अग्रभागों में ब्रह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इंद्राणी, चामुंडा, महालक्ष्मी का पूजन करें। फिर भूपुर में पूर्वादि क्रम से इंद्र, अग्नि, यम, निऋर्ति वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा अनंत का पूजन करने के पश्चात् उनके आयुध वज्र, शक्ति, दण्ड, खक्ग, पाश, अंकुश, गदा, शूल, पद्म, चक्र का पूजन करें तत्पश्चात् पुष्पांजलि, दशांगधूप, समर्पित करें। ग्याहरवीं ऋचा से दीपक, बारहवीं से नैवेद्य, तेरहवीं

---

* भगवती लक्ष्मी के 108 नाम वाले कई स्तोत्र लक्ष्म्यष्टोत्तशतनाम स्तोत्र नाम से उपलब्ध होते हैं। इसी प्रकार 108 नामों का एक मालामंत्र भी प्रसिद्ध हैं। यहां पर उसी अष्टोत्तर शत नाम माला मंत्र के नामों से ही भगवती लक्ष्मी के पूजन का निर्देश दिया गया है। यदि यह मालामंत्र उपलब्ध न हो तब अन्य किसी भी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र से भी पूजन किया जा सकता है। चाहे मालामंत्र हो या स्तोत्र, पूजन में, ऋष्यादि न्यास अवश्य करें।

से करोद्वर्तन, चौदहवीं ऋचा से तांबूल, पंद्रहवीं से सुवर्णपद्म तथा आरार्तिक्य, समर्पित करें।

गौरी मिमाय: तथा प्रणोदवि: ऋचाओं सहित समस्त श्रीसूक्तं के द्वारा प्रदक्षिणा करें।

इसके पश्चात् श्रीसूक्त, चंडीपाठ, लक्ष्मीदृष्य आदि पाठ करें तथा भगवती को अर्पित कर दें।

यहां पर श्रीसूक्त श्रीयंत्र का जो वर्णन है, यह तंत्र तांबे का बनाया जाना चाहिये तथा चार स्वर्ण (कनक) रेखाएं (धाराएं) पूर्व से पश्चिम तथा चार स्वर्ण की रेखाएं उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जानी चाहियें। इस प्रकार स्वर्ण खचित यह श्रीसूक्तात्मक श्रीयंत्र ही कनकधारा यंत्र है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि 4-4 रेखाओं के कारण जो कोष्ठक निर्मित होंगे वे वास्तव में पंचदशी यंत्र के नौ कोष्टकों का ही प्रतिरूप है। इस प्रकार यह कनकधारा गर्भा पंचदशी या पंचदशी गर्भा श्री यंत्र भी कहा जा सकता है।

इस यंत्र के प्रथम अष्टदल में पंचदशी की सिद्धि के साथ नवग्रहों की स्थापना भी की गई है जिनके प्रतीक चिह्न साथ में ही दिये गये हैं।

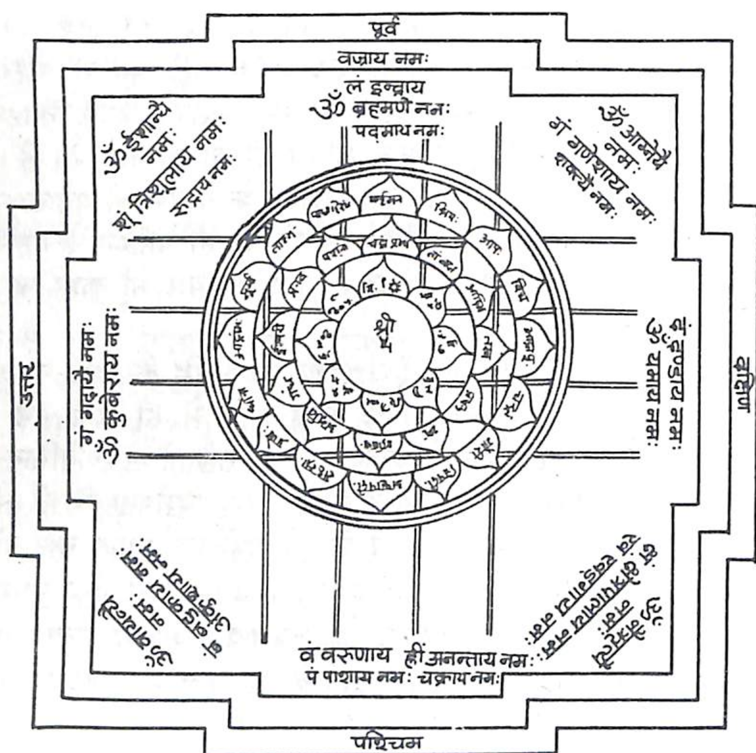
ये सभी ग्रह अपनी-अपनी उच्च व श्रेष्ठ राशियों में प्रतिष्ठित होकर वैदिक यन्त्रों के माध्यम पूजन प्राप्त करते हैं। यह विशेषता किसी भी यन्त्र में नहीं है। इससे जातक की कुण्डली के बुरे ग्रहों का प्रभाव नष्ट हो जाता है। जातक के ग्रह सुधर जाते हैं तथा दशायें उत्तम फल देना प्रारम्भ कर देती हैं। यह अनुभूत है कि नवग्रहों के कुप्रभाव (अनिष्ट-फल) को यह महायन्त्र चमत्कारी रूप से नष्ट करके ग्रहों के शुभफल में आश्चर्यजनक वृद्धि करता है। संक्षेप में प्रस्तुत यन्त्र त्रिविध ताप का नाशक है।

---

* देखें पीछे पृष्ट संख्या 21 पर

ग्रहों के प्रतीक चिन्ह आंग्ल देशीय प्रदेशी में प्रचलित है। यह अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों को ध्यान में रखकर दिये गये है। वैसे मूल प्रकरण में ग्रहों के चित्र देने का उल्लेख मिलता है। इतने छोटे प्रकोष्ट में ग्रह चित्र नहीं आने के कारण। प्रतीक चिन्ह दिये गये हैं। मूल पाण्डुलिपि में ग्रहों के नाम था नामाक्षर लिखने का उल्लेख नहीं है। प्रस्तुत प्रतीक का मुख्य प्रयोजन तत्सम्बन्धी प्रकोष्ट में अमुक ग्रह को स्थापित करना ही है। आशा है, पाठक अन्यथा न लेंगे।

श्रीसूक्तात्मक कनकधारा महायन्त्र



एक जगह इस यंत्र की साधना का सर्वश्रेष्ठ समय शारद नवरात्र बताए गये हैं। उसके बाद दीपावली के पांच दिन शिवरात्रि से होली तक का समय, होलाष्टक भी क्रमशः अच्छे बताए गए हैं।

इस यंत्र के लेखक द्वारा कई बार प्रयोग किया गया है तथा फलश्रुति के अनुसार ही फलप्रद पाया गया है इस विषय में किसी भी जिज्ञासा के समाधान हेतु लेखक से सम्पर्क किया जा सकता है।

अचूक सिद्धिदायक कुबेर यन्त्र



कथा प्रसिद्ध है महर्षि कौत्स के ब्रह्मचारी शिष्य ने अपने दीक्षान्त समारोह पर 'गुरु-दक्षिणा' देने के लिये बालहठ किया। महर्षि के बार-बार मना करने पर भी शिष्य जब न माना तो उन्होंने कुछ क्रोध में आकर आदेश दिया-"वत्स! मैंने तुम्हें 18 प्रकार की विद्याओं से दीक्षित किया है। यद्यपि विद्यादान की कोई कीमत नहीं होती तथापि यदि एक प्रकार की विद्या की कीमत एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएं आंकी जाएं, तो 18 कोटि स्वर्ण-मुद्राएं मेरे चरणों में अर्पित करेगा, तभी तेरी गुरुदक्षिणा स्वीकार होगी।"

ब्रह्मचारी शिष्य ने विनम्रता पूर्वक गुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्य कर छः माह की अवधि मांगी। ब्रह्मचारी ने अपने नगर के राजा के पास जाकर कहा-गुरु की आज्ञा का पालन करना शिष्य का कर्तव्य है। ब्राह्मण की आज्ञा का पालन करना, हर क्षत्रिय का कर्तव्य है। और फिर प्रजा की हर जायज इच्छा की पूर्ति करना राजा का कर्तव्य है। नीति व राजधर्म यही कहता है कि आप मेरे लिये वांछित द्रव्य का प्रबन्ध करें ताकि मैं 'गुरुऋण' से मुक्त हो सकूं।

राजा ने नतमस्तक होकर कहा- हे द्विज श्रेष्ठ! मेरे राजकोष में इतना द्रव्य नहीं है। मैं आपके साथ चलकर इस प्रदेश के महाराजा के पास यथेष्ट धन के प्रबन्ध हेतु प्रार्थना करूंगा।" नगर के राजा व ब्रह्मचारी दोनों महाराजा के पास गये। महाराजा ने अपनी असमर्थता प्रगट करते हुये भारत के सम्राट सूर्यवंशी महाराजा रघु के पास जाकर यही निवेदन किया। महाराजा रघु तात्कालिक 'राजसूर्य यज्ञ' में अपना सर्वस्व दान कर चुके थे। तथा उस समय

मृण्मय पात्र में भोजन करते हुये ऋषि तुल्य निर्लिप्त, निर्विकार जीवन जी रहे थे।

महाराजा रघु ने आगन्तुक ब्राह्मण के वचनों की रक्षा के लिये धन की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी की स्तुति करके, उसे काम चलाऊ धन देने की याचना की। लक्ष्मी राजा की कर्तव्य निष्ठा पर प्रसन्न होकर बोली- "राजन्! मैं नियमों से बंधी हूं तथा बिना भाग्य कृपा नहीं करती और फिर तुम्हारे जैसे वीरवर क्षत्रिय को इस तुच्छ कार्य हेतु याचना करना शोभा नहीं देता। तुम अपने क्षत्रियोचित कर्तव्य का पालन करो।" इतना कहकर लक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गई। महाराजा रघु अपने व्यक्तिगत कार्य हेतु प्रजाजनों एवं अधीनस्थ राजाओं से किसी प्रकार का कर या भेंट भी स्वीकार नहीं करते थे। अन्त में उन्होंने सोच-विचार कर धनाधिपति कुबेर पर चढ़ाई करने का निश्चय किया। महाराजा के दृढ़ संकल्प को एवं अतुल पराक्रम को समझकर धनेश कुबेर ने तत्काल स्वर्ण-मुद्राओं की वर्षा कर दी।

कहते हैं तब से यह जनश्रुति प्रसिद्ध हो गई है कि जहां धन प्राप्ति हेतु अन्य प्रयत्न व उपासनाएं निष्फल हो जाती हैं वहां कुबेर की उपासना शीघ्र फलदाई होती है। लंकेश रावण ने इसी उपासना के बल से कुबेर को वश में कर रखा था तभी वह स्वर्णमयी लंका व अथाह सम्पत्ति का स्वामी था।

कुबेर मंत्र तो 'मन्त्रमहोदधि' में एवं अन्य प्राच्य ग्रंथों में मिल जाता है। परन्तु इसके यन्त्रों की प्राप्ति अत्यन्त गोपनीय व दुर्लभ है। धनतेरस कुबेर की पूजा का दिन माना जाता है। धनतेरस व दीपावली को नये वर्ष या अपने जन्म दिन पर इस यन्त्र का निर्माण करके इसके पूजन से लोगों को वांछित द्रव्य की प्राप्ति होती है। ऐसा शास्त्र वचन है। कुबेर शिवजी का परम मित्र होने से शिवजी के उपासकों पर कुबेर शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

हमने शोध करके इस यन्त्र की उपलब्धियां एवं पूजन पद्धति प्राप्त की है। उसे आम जनता के लाभार्थ, इस दुर्लभ सामग्री को दीपोत्सव के अवसर पर पहली-बार यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है इस पुस्तक के माध्यम से प्रबुद्ध पाठक एवं विज्ञ विद्वान इसका उपयोग लेंगे। 'मंत्र महोदधि' में हमें 35 अक्षरों का कुबेर मंत्र प्राप्त होता है जो इस प्रकार है:—

अथ कुबेर मन्त्र—

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय, धनधान्यधिपतये।
धनधान्य समृद्धिं में देहि, दापय स्वाहा॥

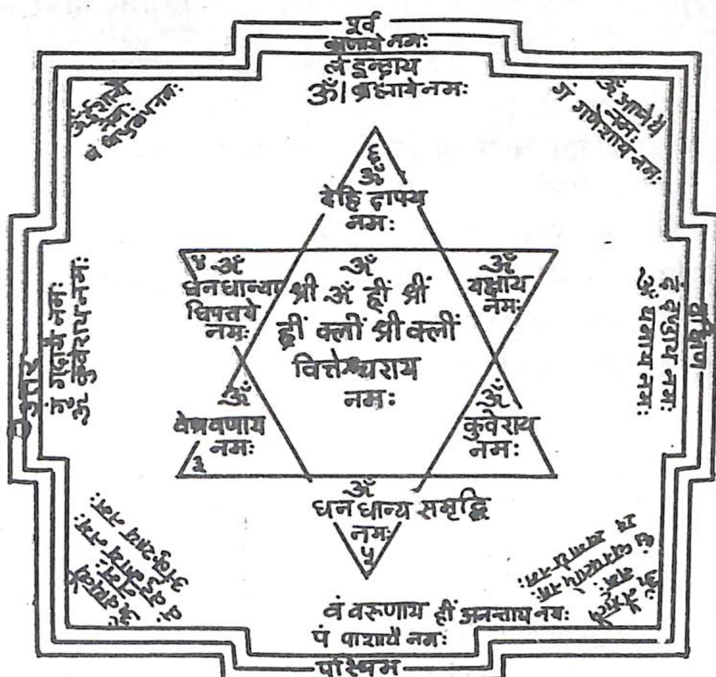
इस मन्त्र का विनियोग हाथ में जल लेकर इस प्रकार पढ़ें।

विनियोग—

अस्य श्री कुबेरमंत्रस्य विश्रवा ऋषिः बृहती छन्दः।
शिवमित्र धनेश्वरो देवतां, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः॥

इसके बाद इसी मंत्र से ऋष्यादि हृदयादि व करन्यास करें। गोघृत से दीपक को जलाकर सुगन्धित पुष्प कुबेर यन्त्र की ओर देखते हुए यन्त्र के मध्य भाग में कुबेर का ध्यान करें।

श्री कुबेरयन्त्र



कुबेर का ध्यान—

मनुवाह्या विमानवरस्थितं
गरूड़रतननिभं निधिनायकम्।
शिवसखा मुकुटादि विभूषितं,
वरगदे दधतं भज तुन्दिलम्॥

तत्पचात् यन्त्र को ताम्रपत्र में रखकर पंचामृत से स्नान कराके उस पर मन्त्र से दुग्धधारा और जलधारा डालकर स्वच्छ वस्त्र से साफ कर पुष्पासन देकर, प्राण-प्रतिष्ठा करके यन्त्र को गल्ले, तिजोरी या सेफ में स्थापित कर दें।

"मन्त्र महार्णव" में इसकी आवरण पूजा एवं पुरश्चरण पर विशेष चर्चा की गई हैं। धन वृद्धि के लिये शिवालय में दस हज़ार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है तथा बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर एक लाख जप करने से वांछित धन की प्राप्ति होती है। मन्त्र महार्णव के अनुसार षोडशाक्षर कुबेर मंत्र इस प्रकार है:—

अथ षोडशाक्षर मन्त्र—

ॐ श्री ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं, वित्तेश्वराय नमः।

यह सोलह अक्षरों वाला मन्त्र सब प्रकार की दरिद्रता को नाश करने वाला कहा जाता है। मूल कुबेर यंत्र में इसी प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा की जाती है। धनाधिपति कुबेर का चित्र भी इसके यन्त्र की भांति दुर्लभ है। फिर भी दिल्ली की पार्लियामेंट रोड पर स्थित "भारतीय रिर्जव बैंक" के बाहर कुबेर की विशालकाय मूर्ति देखी जा सकती है।

कर्ज़नाशक व दाम्पत्य सुखकारक मंगलयन्त्र

जन्म पत्र के 1,4,7,8,12 भावों में मंगल हो तो कुण्डली मंगलीक बनती है। पुरुष की कुण्डली में इस स्थिति वाले मंगल को "मौलिया मंगल" एवं स्त्री की कुण्डली में होने से इसे "चुनरी मंगल" कहते हैं। यह देखने में आता है कि इस प्रकार की ग्रह स्थिति वाली लड़कियों की शादी प्रायः नहीं होती, होती भी है तो बहुत देरी से, तथा होने के बाद भी यह देखने में आता है कि उनका दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण होता है। जन्म पत्र हो चाहे न हो उपरोक्त स्थितियां जब भी जीवन में आती हैं उसका मुख्य कारण मंगल ग्रह का दूषित होना है। चाहे वह गोचर प्रभाव से हो या जन्म स्थिति से।

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित दम्पत्ति के जीवन में दीर्घकाल तक सन्तानाभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ऋण पर ऋण लेते हुए कर्ज़ग्रस्त होने के बाद, कर्ज चुकाने के आसार से निराश हो जाना, इन तीनों दुःखों को दूर करने के लिये ज्योतिष शास्त्र में मंगल व्रत का विधान है।

मंगल व्रत का नाम सुनते ही जन साधारण एक समय भोजन कर, हनुमान जी का दर्शन करके छुट्टी मना लेते हैं। फिर काम पूर्ण न होने पर अन्य देव को पकड़ते हैं। यह सब जानकारी के अभाव में होता है।

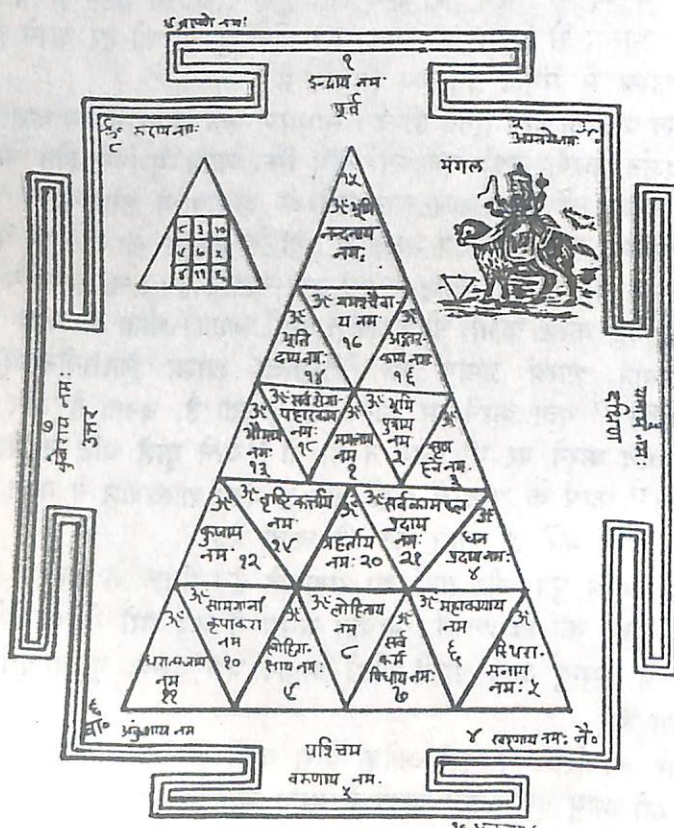
कर्मकाण्ड शास्त्र ज्योतिष शास्त्र से प्रदर्शित अनिष्ट का निवारण करवाता है। कर्मकाण्ड के अंग-उपासना, जप, पूजन, यज्ञादि हैं। अतः शास्त्रीय पद्धति से किया हुआ कार्य कभी भी निष्फल नहीं जाता। गीता में कहा है—

"तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते" **"ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तम् कर्म कर्तुमिहार्हसि।"** यत्न करने पर भाग्य भी फलता है, बनता है और संचित होता है। यत्न करने पर भी कार्य न हो तो **"यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्रदोषः"** कार्य के यत्न में कहीं त्रुटि है ऐसा शास्त्रकार ने कहा है उसे निकालकर यत्न करें तो काम बन ही जाता है।

मंगल भूमि पुत्र और ग्रहों का सेनापति है। मंगल के व्रत में "मंगल यन्त्र" के पूजन का विधान है। प्राचीन समय में कई घरों में यह यंत्र पाया जाता रहा है, परन्तु आने वाली पीढ़ी अज्ञान वश उसके पूजन एवं विधान से अनभिज्ञ है।

हमारे कार्यालय में ऐसे अनेक केस आते हैं कि लड़कियां 30 से 40 वर्ष की आयु तक पहुंच जाती हैं परन्तु मंगलीक दोष के कारण विवाह तो दूर, सगाई तक नहीं बैठती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे-ऐसे उदाहरण

आते हैं कि दो-दो, तीन-तीन विवाह कर लिये परन्तु 'मंगली दोष' के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्ज़दार होता और कर्ज़दार भी ऐसा कि उसका कर्ज़ा उसकी आयु पर्यन्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नहीं जो आपादमस्तक कर्ज में डूबे हुये हैं, उन्होंने लक्ष्मी साधना, श्रीयंत्र एवं रुपयों की प्राप्ति हेतु कई यज्ञ व अनुष्ठान भी किये परन्तु पैसा आता है व चला जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे जातकों को पहले 'मंगल यन्त्र' की साधना से अपने मंगलीक दोष की निवृत्ति करनी चाहिये। हमने प्रयोग किये और पाया कि 'मंगल यन्त्र' की विधिवत उपासना के पश्चात्, 21 मंगलवार पूर्ण होते-होते लोगों को अपने-अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों ने विवाह के पश्चात् सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किये। सभी को अनुकूल लाभ हुए। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, या पंचम भाव में मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो, तो तेजस्वी पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु 'मंगल यन्त्र' का सहारा लेना चाहिये।



सर्वजन हित मंगल व्रत और मंगल यन्त्र पूजन की सम्पूर्ण विधि संस्कृत के साथ-साथ, अत्यधिक सरल ढंग से हिन्दी में भी दी जा रही है ताकि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी इसका लाभ ले सकें।

मंगल यन्त्र का चित्र या प्लेट कार्यालय द्वारा अलग प्राप्त करें। तांबा मंगल का मुख्य धातु है। परन्तु ध्यान रहे तांबे की प्लेट पर मन्त्र खुदा हुआ नहीं होना चाहिये। उत्कीर्ण (खुदा) हुआ यन्त्र शास्त्रानुसार निकृष्ट होता है। आप चाहें तो भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर भी इस यन्त्र को बना सकते हैं। अष्टगन्ध में शुद्ध कस्तूरी, केसर, गोरोचन, कंकुम, चन्दन का ही प्रयोग करना चाहिये। यदि असुविधा हो तो यह दोनों प्रकार के सिद्ध यन्त्र कार्यालय में सम्पर्क साध कर प्राप्त किये जा सकते हैं।

मंगलवार के दिन पूजन सूर्योदय वेला में सुन्दर रहता है, परन्तु दोपहर बारह बजे के पहले पूजन कर लेना चाहिये। स्नान करके धुले हुये वस्त्र पहनें, लाल वस्त्र हों तो उत्तम, नहीं तो लाल ऊन का आसन ज़रूरी है। पूजन सामग्री में धूप, दीप के अलावा लाल, फूल, लाल चावल कुंकुम में किये हुए या लाल चंदन ज़रूरी है। गुड़ का भोग लगाएं, लाल फल रक्खें। मौली चढ़ावें। यंत्र को पहले गंगा जल से स्नान कराएं, फिर पंचामृत से, फिर शुद्ध जल से धोकर, लाल वस्त्र से पोंछ लें पश्चात् यंत्र में एक दो के क्रम से 21 बिंदियां लगाएं। कुंक गुलाब डालकर वस्त्र दीप नैवेद्य फल दक्षिणा धरें तब प्रार्थना करें। इस तरह 21 मंगलवार व्रत रखने से काम पूर्ण रूप से हो जाता है या प्रगति पर आ जाता है। एक कामना लेकर, श्रद्धा विश्वास से व्रत करें, एक कामना पूर्ण होने पर उद्यापन करके, तब कोई दूसरी इच्छा हो तो उसके हेतु व्रत पुनः शुरू करें। एक ही कामना से व्रत आरम्भ करने के बाद उसमें दूसरी इच्छाएं नहीं जोड़ना चाहिये। यंत्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त लें या घर पर बनावाएं तो विद्वान् ब्राह्मण से प्राण प्रतिष्ठा करा लें।

संकल्प—

दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें। 'ॐ अद्य पूर्वोच्चरितसय गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (अमुक) स्थाने स्थित भौम जनित दोष परिहारार्थ तथाच आजन्म पर्यन्तं स्त्रीसुख प्राप्त्यर्थं अनेन भौमजपाख्येनकर्मणा भगवान् भौम प्रीयताम्।'

हिन्दी भाषा में इस प्रकार करें—

मैं (अपना नाम) आज (अमुक) वर्ष के (अमुक) मास (अमुक) तिथि

(अमुक) वार को श्री मंगल देवता को प्रसन्न करने हेतु तथा मेरी कुण्डली में अमुक स्थान में स्थित मंगल दोष के निराकरण हेतु, भक्ति के साथ (अमुक कामना) की पूर्ति हेतु 'मंगलमंत्र' का पूजन और व्रत करता हूँ (कहकर जल छोड़ दें) फिर न्यास, ध्यान के साथ यन्त्र में यन्त्रस्थ देवता का आह्वान कर, यन्त्र का पूजन करें। उसके बाद कवच व स्तोत्र का पाठ करना होता है।

न्यास—

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्या नमः
ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलपृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ हूं शखायै नमः। ॐ ह्रीं कवचाय हुंम्॥
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट्॥
ॐ खंखः इति दिग्बन्धः॥

न्यास—सबसे पहिले न्यास करें यानि मूल में जो न्यास के मंत्र लिखे हैं उन मंत्रों को बोलते जायें और उन-उन अंगों को स्पर्श करते जायें जो कि, मूल-मंत्रों में ही लिखे हैं। हाथ की पांचों अंगुलियों का नाम संस्कृत में क्रम से अंगुष्ठ (अंगूठा) 2 तर्जनी (अंगूठे के पास की उंगली) 3 मध्यमा (बिचली) 4 अनामिका (चौथी) कनिष्टिका, सबसे छोटी उंगली कही जाती है। करतल हथेली तथा पृष्ठ, हाथ की पीठ कही जाती है। हृदय-छाती, शिर-खोपड़ी, शिखा- चोटी, कवच-भुजाएं, नेत्रत्रय तीन नेत्र कहे जाते हैं। इन संस्कृत के शब्दों वाले पदों से इनका स्पर्श होता है। ये दोनों करन्यास और अंगन्यास कहलाते हैं। "अस्त्राय फट्" कह कर अपने दोनों ओर हाथ घुमा ताली बजाएं तथा ओम् खंखः कहकर चुटकी बजाने से दिग्बन्ध हो जाता है।

ध्यानम्—

एह्येहि भगवन्भौम अङ्गारक महाप्रभो।।
त्वयि सर्वं समायातं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥
भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्तिं दुरासदम्॥
रुद्ररूपमनिर्देश्यवक्त्रचं रूधिर प्रभम्॥ 2॥

विनियोग—

अग्निमूर्धाङ्गिरसो विरूपोंङ्गरको गायत्री। मंगलावाहने विनियोग॥

ध्यानम्—रक्तमाल पहिने, शक्ति शूल और गदा हाथ में लिये हुए चतुर्भुजी तथा मेढ़े की सवारी करने वाले धरानन्दन वर दिया करते हैं, इस प्रकार ध्यान करें। हे अंगारक महाप्रभो भौम! पधारिये, आपके आने से चराचर समेत तीनों लोक आ गये, लोह जैसा लाल-लाल मुख, साक्षात् रुद्ररूपी तेजोमूर्ति दुरासद मंगल का आह्वान करता हूँ।

मंगल आवाह्न—

ॐ अग्निर्मूर्धा0॥ ॐ नमो भगवते धनसमृद्धिदाय मंङ्गलाय नमः॥ मंगलमावाह्यामि इत्यावाह्य अग्निर्मूर्धेति मन्त्रेण मंगलगायत्रया वा आसनादि पुष्पान्तं पूजयित्वा यन्त्रस्थैकविंशतिकोष्ठेष्वङ्गां न्येकविंशतिनामभिः पूजयेत्॥

मंगल आवाह्न—

"अग्निर्मूर्धा" इस मंत्र के आंगिरस विरूप ऋषि है, मंगल देवता है, गायत्री छन्द है, मंगल के आवाहन में विनियोग होता है। "ओम् अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपांधू रेंताघुंसि जिन्वति।" या पृथिवी का पुत्र भौम, दिवका मूर्धा तथा सबका अग्रणी है। सबका पालक तथा सबसे श्रेष्ठ है, यह पानी के सारों को पुष्ट करता या व्यापकों को बल देता है। इस मंत्र को अथवा धन समृद्धि देने वाले भगवान् मंगल के लिये नमस्कार करता हूँ! मंगल का आह्वान हुआ।

अंग पूजा—

1. ॐ मंगलाय नमः पादौ पूजयामि 2. भूमिपुत्राय नमः गुल्फौ पूजयामि। 3. ऋणाहर्त्रे नमः जंघौ पूजयामि 4. धनप्रदाय नमः जानुनी पूजयामि। 5. स्थिरासनाय नमः उरुं ॐ पूजयामि। 6. महाकायाय नमः कटीं पूजयामि। 7. सर्वकर्मावरोधकाय नमः नाभि पू0। 8. लोहिताय उदर पू0। 9. लोहिताक्षाय हृदयं पूजयामि। 10. सामगानांकृपाकराय करौ पू0। 11. धरात्मजाय नमः बाहू पूजयामि। 12. कुजाय स्कन्धौ पू0। 13. भौमाय नमः कण्ठं पूजयामि। 14. भूतिदाय हनुं पू0। 15. भूमिनंदनाय मुखं पूजयामि। 16. अङ्गारकाय नासिके पू0। 17 यमाय नमः कर्णौ पूजयामि। 18. सर्वरोगापहारकाय नमः चक्षुषी पू0। 19. वृष्टिकर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि। 20. वृष्टिहत्रे नमः मूर्धानं पूजयामि। 21 सर्वकामफलप्रदाय नमः शिखाम् पूजयामि॥

ततो धूपांदिपुष्पांजल्यन्तं कृत्वा एतैरेव नाम भिरेकविंशत्यर्घ्यान्दद्यात्॥

अंग पूजा— "अग्निमूर्धा" इस मन्त्र से तथा "ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नौ भौमः प्रचोदयात्" इस मंगल गायत्री से आसन से लेकर पुष्प समर्पण तक की पूजा करें। यन्त्र को गंगा जल में धोवें फिर यन्त्र के जिस कोष्ठ में जो नाम मंत्र लिखे जाते हैं, उन्हीं इक्कीस नाम मंत्रों से उन-उन कोष्ठों में क्रमशः अंगों का पूजन करते हुए बिन्दियां लगाएं। बिन्दी लगाते समय सर्वत्र ॐ शब्द एवं उन-उन कोष्टकों के नाम मन्त्रों का उच्चारण करें। अंगपूजा-मंगल के लिये नमस्कार चरणों को पूजता हूं। भूमिपुत्र के गुल्फों को, ऋण हर्ता के जंघाओं को, धन देने वाले के जानुओं को, स्थिरासन के उरूओं को, महाकाय के कटी को, सब कर्मों के अवरोध के नाभि को, लोहित के उदर को, लोहिताक्ष के हृदय को, साम के जानने वालों पर कृपा करने वालों के हाथों को, धरात्मज के बाहुओं को, कुज के स्कन्धों को, भौम के कंठ को, भूति के देने वाले के हनु को, भूमिनन्दन के मुख को, अंगारक के नासिकाओं को, यम के कर्णों को, सब रोगों के ललाट को, वृष्टि के हर्ता के मूर्धा को, सब कामों के फल देने वाले के लिये नमस्कार शिखा को पूजता हूँ। अंग पूजा के पश्चात् डश दिशाओं में भी बिन्दियां लगाएं, पुष्प लगाएं।

मंगल कवच—

शिखायां मंगलः पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि॥
ललाटे ऋणहर्ता च चक्षुषीष्च धनप्रदः॥
स्थिरासनः श्रोत्रयोश्च महाकायश्च नासिके॥
आस्यदन्तोष्ट जिह्वासु सर्वकर्मावरोधकः॥
हनौ में लोहितः पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके॥
स्कन्धयोरूभयो रक्षात्सामगानां कृपाकरः॥
धरात्मजो भुजौ पातु कुजौ रक्षेत्त्करद्वयम्॥
भौमो मे हृदयं पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्ये त्वङ्गार कोऽवतु॥
उँरू मम यमो रक्षेज्जान्वो रोगापहारकः॥
जंघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ता च गुल्फयो॥
पादांगुष्ठौ च गुल्फौः च सर्वकामफलप्रदः॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूंल रक्षेच्च दक्षिणे॥
पश्चिमे च धनुः पातु उत्तरे चशरस्तथा॥

उर्ध्वं पिण्डननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम॥
एवं न्यंस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमिनन्दनम्॥

मंगल कवच—

शिखा की मंगल रक्षा करे। भूमिपुत्र मूर्धा की, ऋणहर्ता ललाट की, धनप्रद नेत्रों की, स्थिरासन श्रोत्रों की नासिकाओं की महाकाय, सर्व कर्मावरेधक मुख, दन्त ओष्ठ और जिह्वा की, लोहित हनु की, लोहिताक्ष कंठ की, सांमगों पर कृपा करने वाला दोनों स्कन्धों की, धरात्मज भुजाओं की कुज दोनों हाथों की, भौम हृदय की, भूतिद उदर की, भूमिनन्दन नाभि की, अंगारक गुह्य की, यम उरुओं की, रोगापहारक जानुओं की, वृष्टिकर्ता जांघों की, अपहर्ता गुल्फों की, सर्वकाम फलप्रद पाद, अंगुष्ठ और गुल्फों की रक्षा करे। शक्ति मेरी पूर्व से रक्षा करे। दक्षिण में शूल रक्षा करे। पश्चिम में धनुष रक्षा करे। उत्तर में शर रक्षा करे, ऊपर पिण्डानन तथा नीचे पृथ्वी रक्षा करे, इस प्रकार शरीर में न्यास या रक्षा के लिये इन रूपों को वहां बिठाकर मंगल का ध्यान करे। (ये न्यास कहे हुए अंगों पर रक्षा के लिये किये जाते हैं इस कारण हमने सोधी रक्षा करे यह अर्थ कर दिया है।)

इस प्रकार कवच का पाठ करें।

मंगल गायत्री—

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्तायधीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

मंगल गायत्री—

अंगार के समान रक्त वर्णीय, दोनों हाथों में शक्ति धारण करने वाले तेजस्वरूप तेजस्वी मंगल ग्रह को नमस्कार है। अथवा यहां 'ॐ ह्रीं भौमाय नमः' की एक माला फेरें। इसके बाद मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल स्तोत्र—

मंगलो भूमिंपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामंगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।

एतानि कुजनामानि नित्यं यः प्रयतः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य सन्तानं वर्धते सदा॥
एकविंशतिनामनि पठित्वा तु दिनान्तके।
रूपवान् धनवांश्चैव जायते नात्र संशयः॥
एककालं द्विकालं वा यः पठेत्सुसमाहितः।
एवं कृते न सन्देहो ऋणं हित्वा सुखी भवेत्॥

मंगल स्तोत्र—

मंगल, भूमिपुत्र, ऋणहर्ता, धनप्रद, स्थिरासन, महाकाय, सर्वकर्माविरोधक, लोहित, लोहिताक्ष, सामंगानां कृपाकर, धरात्मज, कुज, भौम, भूतिद, भूमिनन्दन, अंगारक, यम, सर्वरोगापहारक, वृष्टिकर्ता, वृष्टिअपहर्ता, सर्वकामफलप्रद, ये मंगल के 21 नाम हैं। जो रोज सावधानी के साथ इन्हें पढ़ता है, उस पर कष्ट नहीं होता, सदा सन्तान की वृद्धि होती है। सायं-काल के समय इन इक्कीस नामों को पढ़कर, रूपमान और धनवान हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। एक बार या दो बार एकाग्र चित हो पढ़े, इस प्रकार नित्य करने पर ऋण को चुका, व्यक्ति सुखी हो जाता है। रुचि के अनुसार काव्यात्मक इस स्तोत्र को भी पढ़ सकते हैं।

काव्यात्मक मंगल स्तोत्र—

भारद्वाज कुल उज्जवल कर, उज्जैन में वास लिया तुमने,
हे चारभुजाधारी, मंगल! हे शूलशक्ति धर भौम कुजे।
करते स्तुति देव सदा मिलकर, दानव गंधर्व सदा भजते,
करता कल्याण सदा उनका, जो पूर्ण मनोरथ से भजते॥
धरणी गर्भ से जन्म लिया, बिजली सी चमक उससे पाई,
सेनापति देवों के, विजय देव हे! सुखदाई।
हे रक्त वर्ण, हे लाल नेत्र, मीढ़ा है वाहन मनभाया,
हे मंगल! शक्ति हाथ तेरे, कर मम मंगल सुखदाया॥
मैं नमन करूं अब बार-बार, तुमने भक्तों को दिया तार,
तुम नष्ट करो ऋण सब मेरा, करदो अपनी करुणा अपार।
मम रोग हरो, भव, ताप हरो, अपमृत्यु हरो मेरी साँई,
हरो दरिद्रता इस जन की, वर दो! सन्तान, बढ़े भाई॥
धन दो, सब पाप मिटे मेरे, कर दो मम सन्तान सगाई,
हे ऋणाहर्ता, है नमस्कार, सुख सौभाग्य, मुझे दे दो।
दो पुत्र मुझे, जिससे सुख हो, देव-देव भक्ति तव दो,

हे धरणी नन्दन! हे मंगल, हे बाल कुमार विनय सुन लो,
तेरी पूजा से जन-जन-मन, पाते मंगल, मंगल कर दो॥

नमस्कार—

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कानितसमप्रभम्॥
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्॥

नमस्कार— भूमि के गर्भ से उत्पन्न होने वाले बिजली की कान्ति के समान प्रभा वाले, शक्ति हाथ में लिये हुए कहकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

तीन रेखाओं का प्रयोग—

(खदिरागरेण रेखात्रयं कृत्वा)—
अङ्गारक महीपुत्र भगवन्भक्तवत्सल
त्वां नमस्यामि मेऽशेषं ऋणमाशु विनाशय ॥ 1॥
ऋणरोगादिदारिद्रपापक्षुद्रापमृत्यवः
भवक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदाः॥ 2॥
ऋणदुःख विनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्रो जन्मसमुद्भवाः ॥ 3॥
दुःखदौर्भाग्यनाशाय सुखसन्तानंहेतवे।
कृतं रेखात्रय वामपदेन मार्जयाम्यहम् ॥ 4॥

तीन रेखाओं का प्रयोग—

इसके बाद आरती उतारकर खैर की लकड़ी के कोयले से अथवा खेजड़ी के कोयले से तीन रेखायें ज़मीन पर खींचें, फिर उन रेखाओं को बायें पैर से उपरोक्त मंत्र या हिन्दी के पद को बोलते हुये मिटाएं। खैर के अंगार से तीन रेखा करके कहें—

हे भगवान् अंगारक! हे महीपुत्र! हे भक्तवत्सल! मैं आपको नमस्कार करता हूं, मेरा समस्त ऋण नष्ट करिये, ऋण रोगादि, दारिद्र, पाप, क्षुद्रता, अपमृत्यु, भव के क्लेश, मन के ताप ये मेरे सदा नष्ट हों। ऋण के दुःख को नष्ट करने तथा पुत्र और सन्तान के लिये, तीन जन्म से होने वाली तीनों असित रेखाओं का मार्जन करता हूं। जिससे दुःख और दौर्भाग्य का नाश तथा सुख और सन्तान की प्रप्ति हो, दुर्भाग्य सूचक तीनों रेखाओं का बायें पैर से मार्जन करता हूं। इन मंत्रों से रेखाओं का मार्जन करें।

रेखाओं को मिटाते वक्त बोलने का पद—

हे अंगारक ! हे महीपुत्र, भगवान् भक्तों के प्यारे,
मैं नमस्कार करता तुमको, जो नमें उन्हें, तुमने तारे।
तीन जन्म की ये रेखायें, मेरी भाग्य बाधक प्यारे,
काली रेखा ऋण रोगों की दुर्भाग्य मिटाता हूं प्यारे।
सुख सन्तान बढ़े मेरे, या दे दो सुन्दर पति/पत्नी तुम प्यारे,
कन्या मेरी अब बड़ी हुई, उसको पति दो तुम प्यारे॥

मंगल प्रार्थना—

ऋणहर्त्रे नमस्तेऽस्तुः दुःखदारिद्रनाशक।
सुखसौभाग्यधनदो भव में धरणी सुत॥
ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याणकारकः।
प्रसादात्तव देवेश सदा कल्याणभाजनः।
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगाः।
प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वे सदा पूर्णमनोरथाः॥
प्रसादं कुरू मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रदः
बालः कुमारको यस्तु स भौमः प्रार्थितो मया।
उज्जयिन्यां समुत्पन्न, नमों भौम चतुर्भुज॥
भारद्वाजकुले जात शूलशक्ति गदाधरः

मंगल प्रार्थना—

हे दुख और दरिद्रता के नाश करने वाले मुझ ऋणनाशक के लिये नमस्कार है। हे धरणी के पुत्र! मुझे सुख और सौभाग्य का देने वाला बन जा, हे सबके कल्याण के करने वाले! तुझ ग्रहराज के लिये नमस्कार है। हे देवेश! आपकी कृपा से सदा कल्याण हो, क्योंकि आप सदा ही कल्याण के भाजन हैं। देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पन्नग ये सब सदा ही पूर्ण मनोरथ होकर कल्याण को पाते हैं। हे भौम! मुझ पर कृपा करिये, हे मंगल के देने वाले! सौभाग्य दे। जो चतुर्भुज बालकुमार उज्ज्यनी में उत्पन्न हुआ है, उसी से प्रार्थना कर रहा हूं। उसी के लिये मेरी ये नमस्कारें भी हैं। जो भारद्वाज के कुल में पैदा हुआ है। शक्ति शूल और गदा धारण करने वाला है। यह प्रार्थना करके फिर स्तोत्र पढ़ना चाहिये।

वायनदानम—

तिलगुड मिश्रितेनैकविंशतिलड्डूकान्
गोधूमभवान्फल दक्षिणासहितान्वेदविदे दद्यात्॥

वायनदानम्—

तिल गुड़ मिले हुए गेहूँ के इक्कीस लड्डू फल और दक्षिणा के साथ वेद के जानने वाले ब्राह्मण को दें, सब मंगलों के देने वाले तुझ मंगल के लिए नमस्कार है। इस वायने से संतुष्ट होकर मेरे मनोरथों को पूरा करिए, "देवस्य त्व" इस मन्त्र को बोलकर कहें कि, इस दान से मंगल देव प्रसन्न हों, पीछे दे दें। यह वायने के दान का मन्त्र है। यदि सन्तान की चाहना हो तो 21 लाल रंग की गोलियां छोटे-छोटे बच्चों को बांटें। यदि ऋण उतारना हो तो गाय को गुड़ खिलाएं। यदि रोग मिटाना हो तो ब्राह्मण व साधु को तृप्त भोजन करें। कार्य की सिद्धि हो जाने पर उद्यापन में 21 लाल रंग की वस्तु, लालपुष्प या लड्डू सत्पुरुषों में बाँट दें। दशाँश हवन करें। हवन करने पर ब्राह्मण भोजन अवश्य करावें।

दानमंत्र—

मंगलाय नमस्तुभ्यं सर्वमंगलदायक॥
वायनेन च संतुष्टः कुरू मे त्वं मनोरथान्॥
देवस्यत्वेति मन्त्रेण मंगल प्रीयतामिति दद्यात्॥
(आवाहनं न जानामि० इति पूजनम्)

फल स्तुति—

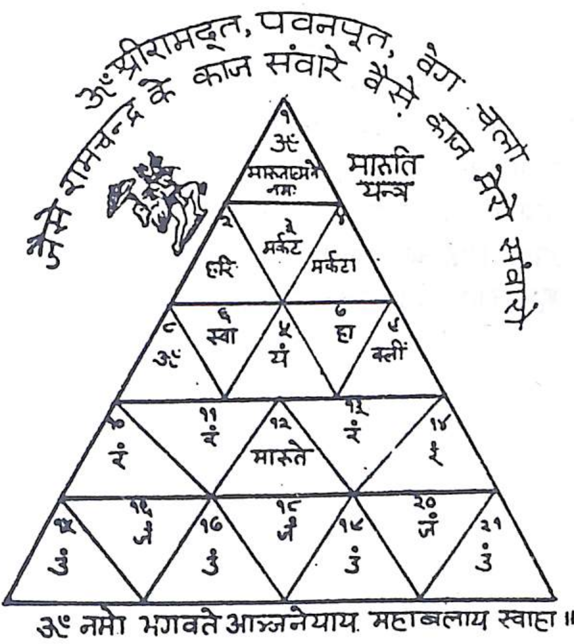
तस्य वै ग्रहपीड़ा च न भतेत्तु कदाचन॥
भूतवेतालशकिन्यौ न भवन्ति च हिंसका ॥ 1॥
दारिद्यं नश्यते तस्य पुत्रपौत्रेश्य वर्धते॥
एवकुत्वा च तत्रैव गंगलोऽपि दिवं गतः॥ 2॥
एवं व्रतं समाख्यातं सर्वसैख्यप्रदायकम्॥
इदं व्रतं करिश्यन्ति तेषां पीड़ा न जायते ॥ 3 ॥
स्त्रीभिर्व्रतं प्रकर्त्तव्यं पुरुषैश्च विशेषतः॥
तेषां मुक्तिर्भवत्येव स्वर्गवासो न संशयः ॥ 4॥

फल स्तुति—

उसे कभी ग्रहपीड़ा नहीं होगी। उसे भूत-प्रेत वेताल की बाधा और दारिद्रय नष्ट हो जाता है और बेटा नातियों के साथ वृद्धि को प्राप्त होता है यह कह कर मंगल देव अन्तरिक्ष में चले गये। यह सब सुखों का देने वाला व्रत मैंने कह दिया है। जो इस व्रत को करेंगे उन्हें कभी भी ऋण की पीड़ा नहीं होगी। यह व्रत स्त्रियों को करना चाहिए। विशेष करके पुरुष भी इसी व्रत को करें। उनकी मुक्ति और स्वर्गवास होगा इसमें सन्देह नहीं है। यह प्रयोग हर प्रकार से सुख सम्पति व प्रसन्नता को देने वाला कहा गया है।

वाहन दुर्घटना नाशक मारुतियन्त्र

यह कथा तो सर्व प्रसिद्ध हैं कि महाभारत युद्ध के समय वीरवर अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज व मारुति यन्त्र लगा हुआ था। जिसके प्रभाव से सम्पूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बावजूद भी अर्जुन का रथ जरा सा भी क्षत-विक्षत नहीं हुआ। भगवान् श्रीकृष्ण इस रहस्य को जानते थे कि जिस रथ, वाहन की रक्षा स्वयं मारुति-नन्दन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता है! उसका तो वाहन द्रुतगति से, वायुवेग से, निर्बाध गति से अपने लक्ष्य पर विजय पताका फहराता हुआ पहुंचेगा। अनेक विद्वानों , शोध छात्रों ने इस मारुति यन्त्र का पता लगाने हेतु अथक प्रयत्न किये, अन्ततोगत्वा मई 1983 के आस-पास अज्ञातदर्शन के सम्पादक पं. भोजराज द्विवेदी ने इस यन्त्र का पता लगा लिया तथा भोजपत्र पर इस यन्त्र को बनवाकर, इसके सार्वजनिक प्रयोग प्रारम्भ किये।



लोगों ने दुर्घटना नाशक इस यन्त्र को अपने स्कूटर, कार, बस, टैक्सी, मेटाडोर पर, ट्रकों के अगले हिस्सों पर लगाया। आज दिन तक वे वाहन

न तो दुर्घटनाग्रस्त हुए न ही उनको किसी प्रकार से कोई खरोंच तक आई है। लोगों ने इस मारुति यन्त्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। हिमाचल प्रदेश से एक भाई का पत्र आया कि पिछले वर्ष बरसात के कारण पहाड़ी के हर मोड़ पर, ऐसा लगता था कि मेरा ट्रक अब गड्डे में गिरने वाला है परन्तु तत्काल ही ऐसा बोध हुआ कि कोई दिव्य शक्ति मेरी निरन्तर रक्षा कर रही है, मैं सुरक्षित गन्तव्य स्थान पर पहुंच गया। निश्चय ही मारुति यन्त्र का प्रभाव मेरे लिये जीवन-दायक साबित हुआ। सैकड़ों की संख्या में पत्र आयें हैं कि मारुति यंत्र चाहिये। मारुति यंत्र के इच्छुक व्यक्ति कार्यालय से सम्पर्क साध कर यन्त्र प्राप्त कर सकते हैं। जो स्वयं घर पर बनाना चाहें तो विधि इस प्रकार है।

यन्त्र बनाने की विधि—

किसी भी मंगलवार या शुभ मुहूर्त में हनुमान मन्दिर या हनुमान जी की मूर्ति के सामने, धूप-दीप लगाकर भोजपत्र वा अष्टगन्ध से या ताम्रपत्र पर इस यन्त्र को बनावें। इस यन्त्र के मूल यन्त्र का 1008 जप करें। गुड़ या नैवेद्य का भोग श्री हनुमान जी को लगाएं। फिर सिन्दूर, लाल पुष्प, यन्त्र पर चढ़ाएं तत्पश्चात श्रेष्ठ चौघड़िये (समय) में यन्त्र को अपने वाहन पर लगाएं एवं इसका चमत्कार देखें।

मूल मन्त्र यह है— "ॐ मारुतात्मने नमः हरि मर्कट, मर्कटाय स्वाहा, ॐ क्लीं रं रं मारुते रं रं उं जं उं जं उं जं उं।" उपरोक्त मन्त्र से पूरित किया हुआ यन्त्र वाहन के लिये कवच का काम करता है। फिर यन्त्र पर लिखा हुआ दोहा 108 बार पढ़ने से वाहन पूर्ण रूप से अभिमन्त्रित होकर अनुकूल व शुभ लाभ देने वाला हो जाता है।

चमत्कारिक महामृत्युञ्जय

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहिमां शरणागतम्।
जन्ममृत्युञ्जरारोगैः पीड़ितं कर्म बन्धनै॥

जब दवाईयां अपना असर दिखाना बन्द करें, रोग असाध्य हो जाये, रोगी के प्राणों पर बन आये और मृत्यु सन्निकट हो, तब ऐसी अवस्था में लोग कालों के काल महाकाल मृत्युञ्जय महादेव की शरण में जाते हैं। आप और सभी लोगों ने देखा व अनुभव किया है कि औढरवरदानी आशुतोष भगवान् शिव की कृपा से असाध्य रोगी भी आश्चर्यजनक तरीके से ठीक होकर स्वस्थ हो जाते हैं। मृत्युञ्जय महादेव का सम्पूर्ण अनुष्ठान विधिवत् ढंग से अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ अतः हमारे प्रबुद्ध पाठकों हेतु यहां पहली बार यह चमत्कारिक विधान प्रस्तुत किया जा रहा है।



ज्यादा पुरानी बात नहीं है, राजर्षि मुकुण्ड सन्तानहीन होने की वजह से वंशवृद्धि की चिन्ता से दुःखी व त्रसित थे। उन्होंने अपने आराध्यदेव चन्द्रमौलीश्वर भगवान् शंकर के सम्मुख कठोर तपस्या की, अन्ततः शंकर प्रकट हुए और कहा- "तुम्हारे प्रारब्ध में सन्तान सुख नहीं है फिर भी तुम्हारी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर मैं तुम्हें सन्तान सुख दे रहा हूँ।" यदि तुम्हें योग्य, संस्कारी व तेजस्वी बालक चाहिये तो उसकी आयु केवल 16 वर्ष

की होगी और यदि अयोग्य, कुसंस्कारी व अल्पमति वाला बालक चाहिये तो उसकी आयु सौ वर्ष की होगी।" राजदम्पत्ति ने तेजस्वी बालक की कामना प्रस्तुत की। कालान्तर में राजर्षि के यहां सर्वांग सुन्दर, परम तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ। पितृगत संस्कार की वजह से बालक जन्म से ही भगवान् शंकर का अटूट भक्त था। अपनी विद्वत्ता की वजह से बालक ने बाल्यास्था से ही पतितपावपन, भूतभावन भगवान् शंकर की स्तुति में कई संस्कृत स्तोत्रों की रचना कर डाली। नित्य समय पर स्वयं यमराज बालक के प्राण लेने आये, उस समय मार्कण्डेय नामक यह कुमार तपस्वी शंकर की सेवा में व्यस्त था। अपने तपोबल से कुमार तपस्वी ने यम को देखा, और निर्भीक होकर निवेदन किया कि "अभी वह लिङ्ग अर्चना में व्यस्त है अतः लिङ्ग अर्चना पूरी होने तक आप प्रतीक्षा करें।" उद्दण्ड यम ने तिरस्कारपूर्ण हंसी बिखेरते हुये, अपना अमोघ मृत्युपाश बालक की ओर फेंका। मार्कण्डेय ने स्नेह से वशीभूत होकर उस शिवलिङ्ग को कसकर पकड़ लिया, तत्काल एक प्रलयंकर विस्फोट हुआ, शिव शंकर स्वयं लिंग से प्रकट हुये तथा विकराल काल की छाती पर कस कर लात मारी, साक्षात् रुद्र की क्रोधमुद्रा को देखकर यमराज भयत्रस्त होकर कांप उठे। उन्होंने मार्कण्डेय मुनि को नमस्कार कर, उसे अमर होने का वरदान दिया। पद्मपुराण 237/75/90 में इस घटना का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। तब से लेकर आज तक महर्षि मार्कण्डेय विरचित मृत्युञ्जय स्तोत्र अमोघ माना जाता है।

इतना ही नहीं यजुर्वेद की काण्डिकाओं में भी महामृत्युञ्जय मन्त्र की अवधारणा हुई है। वैदिक व पौराणिक अनुष्ठानों में **'महामृत्युञ्जय जप'** की व्यवस्थायें दी गई हैं, जिसके विधिवत् प्रयोग से मरणासन्न रोगी भी पुनर्जीवित हुये हैं। मारक दशाओं के लगने के पूर्व इसके प्रयोग से व्यक्ति भावी दुर्घटना से बाल-बाल बच जाता है। शूल की पीड़ा सूई में बदल कर रह जाती है। प्राणघातक दुर्घटना व सीरियस एक्सीडेन्ट में भी जातक सुरक्षित व बेदाग होकर बच निकलता है। प्राणघातक मार्केश टल जाते हैं। ज्योतिषी लोग अरिष्ट ग्रह के निवारणार्थ, आयुष्य वर्धन हेतु, अपघात किंवा अपमृत्यु व अकाल मौत से बचने के लिये जन्मपत्रिकाओं में स्पष्टतः 1,25,000 महामृत्युञ्जय जप कराने का निर्देश देते हैं। हमने हमारे कई मित्रों, परिचितों व रिश्तेदारों पर इस अनुष्ठान का प्रयोग किया है जिसमें अधिकतर जातक मृत्यु के मुख से बचे हैं। कुछ तो जातक के पूर्व संचित पुण्य काम कर जाते हैं, फिर वैदिक मन्त्रों का बल, एवं तपोनिष्ठ ब्राह्मणों का आशीर्वाद खाली नहीं जाता।

जिन लोगों के बालक जन्म कर 10-15 दिन के भीतर ही मर जाते

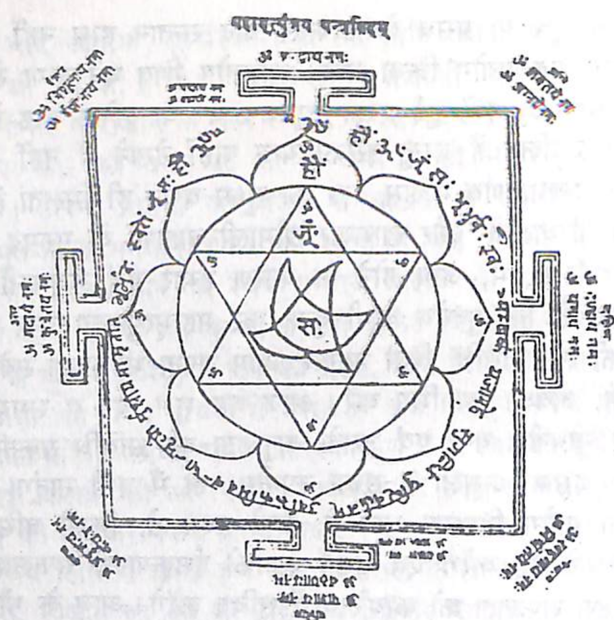
हैं, प्रसव के पूर्व या प्रसव के तत्काल बाद सन्तान हाथ नहीं लगती, उन लोगों पर भी यह प्रयोग किया गया। आशुतोष शिव की कृपा से फिर उस परिवार में अपमृत्यु नहीं हुई। महामृत्युञ्जय जप के अनेक तरह के अनुष्ठान और प्रयोग प्रचलित हैं परन्तु इसका यन्त्र कहीं देखने में नहीं आता। मन्त्र महौदधि व मन्त्रमहार्णव में इस यन्त्र का सूक्ष्म वर्णन ही मिलता है। वेदपाठी कर्मकाण्डी परिवार में, और खासकर श्रीमाली ब्राह्मणों के गुरुपद पर आरूढ़ होने वाले परिवार में, जन्म होने के कारण हमारे कई यजमानों व शिष्यों के पत्र आते हैं कि गुरुदेव कभी कृपा कर महामृत्युञ्जय यन्त्र एवं उसके अनुष्ठान की सरल विधि, जिसे पढ़कर, आम जनता भी समझ सके व प्रयोग में ला सकें, अवश्य प्रकाशित करें। आज वह शुभ दिन व समय आ गया है कि इस गोपनीय यन्त्र एवं उसके अनुष्ठान को सविधि प्रकाशित किया जा रहा है। इसका असली व सच्चा उपयोग तो मैं तभी मानूंगा जब आप लोग इसका प्रयोग निष्काम भाव से, सच्चे हृदय से, किसी त्रसित व्यक्ति के प्राण बचाने हेतु करेंगे एवं उसमें आपको ईशकृपा से सफलता मिलेगी और आप उस सफलता को कार्यालय में सूचित करेंगे। आज के भौतिकवादी वैज्ञानिक युग में मन्त्र चिकित्सा कई लोगों को ऊटपटांग सी प्रतीत होती होगी, परन्तु सही बात तो यह है कि रोगों व व्याधियों के सम्बन्ध में ज्योतिष समस्त रोगों को कर्मज मानता है। ज्योतिष का कहना है कि सभी प्रकार की व्याधियां, रोग, दु:ख एवं कष्ट कर्मज होते हैं। ज्योतिष श्राप, वरदान आशीर्वाद एवं प्रायश्चित के द्वारा उन-उन रोगों का शमन करता है। ऐसे एक नहीं हज़ारों प्रमाण हैं जब बिना दवाई के, मन्त्रचिकित्सा, प्रार्थनाओं एवं मन्त्रआशीर्वाद से व्यक्ति आश्चर्यजनक रूप से ठीक हुये हैं। इसी चमत्कारी शृंखलाओं में महामृत्युञ्जय प्रयोग एक प्रमुख सिद्ध प्रयोग के रूप में मुखरित हुआ है।

महामृत्युञ्जय यन्त्र—

'शिवार्चन सृति:' के अनुसार पंचकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर से युत, मूल मन्त्र के बीज से सुशोभित महामृत्युञ्जय यन्त्र होता है।

अत: चित्र में बताई गई दिशाओं व उसके स्वामियों के स्थान को यथाक्रम ध्यान में रखते हुये उनका पूजन भी विधिपूर्वक करना चाहिये। महामृत्युञ्जय मन्त्र से पूरित होने पर यह यन्त्र सचमुच प्राणों की रक्षा करने में समर्थ हो जाता है। जब व्यक्ति को अकारण मृत्यु का भय सताने लगे, नींद में डरावने सपने आने लगें, शत्रुओं के द्वारा अभिचार कर्म किया गया हो, जिसके कारण व्यक्ति मृत्यु भय से ग्रसित होने लगे तथा ऐसा महसूस होने लगे कि कोई

महामृत्युञ्जय यन्त्र—



हमारी प्राणलीला को समाप्त करने पर उतारु है, जब हमारी छठी इन्द्री, हमारा पूर्वाभास हमें यह महसूस कराने लगे कि हमारे प्राण संकट में हैं, तब इस यन्त्र राज का प्रयोग करना चाहिये। इसके सिरहाने रख कर सोने से अशुभ स्वप्न आने बन्द हो जाते हैं। लम्बी बीमारी से ग्रसित रोगी को या तो राहत मिलने लगेगी या उसका मोक्ष हो जायेगा। इससे अभिषिक्त जल का चरणामृत पीने से औषधियां अपना असर दिखाना शुरू कर देती हैं। यह यन्त्र हर प्रकार से व्यक्ति के ऊपर आये संकट को दूर कर उसमें एक नई जीवन ज्योति, नया आत्मविश्वास पैदा करता है।

महामृत्युञ्जय अनुष्ठान विधि एवं पूजन क्रम—

वैसे तो शिवजी को श्रावण मास अधिक प्रिय है परन्तु महामृत्युञ्जय का अनुष्ठान किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी, दशम या पूर्णिमा को अथवा, पुष्य नक्षत्र के संयोग से रवि-सोम या गुरुवार को, प्रारम्भ किया जा सकता है। अभीष्ट दिन को मुख्य पूजन प्रारम्भ करने के पूर्व शान्ति पाठ किया जाता है। फिर प्राणायाम व प्रायश्चित रूप गायत्री मन्त्र की एक माला फेरने के पश्चात् गणपति का स्मरण किया जाता है। उसके बाद संकल्प, शिवपूजन (रुद्री), महामृत्युञ्जय स्तोत्र, तत्पश्चात् मूल मन्त्र के न्यास, ध्यान, विनियोग,

करके जप प्रारम्भ किया जाता है। सवा लाख जप करने पर एक अनुष्ठान पूरा होता है। प्रतिदिन जप के अन्त में मार्कण्डेय मुनि विरचित स्तोत्र का पाठ होता है। फिर अर्पण व निवेदन होता है। पूजा के बाद महामृत्युञ्जय जप, जितना दैनिक निश्चित हो, करके सदाशिव भगवान् शंकर के दक्षिण हाथ में, 'गुह्यातिगुह्य' इत्यादि मन्त्र पढ़कर जप समर्पण करना चाहिये। मूल मन्त्र की जप संख्या के दशांश का हवन, हवन में काभ्य समिधाओं के अतिरिक्त दूध, गोघृत से संसिक्त अपामार्ग आदि समिधाओं का प्रयोग होता है। यज्ञ कामना अभीष्ट होने पर शताक्षरीगायत्री मन्त्र की एक माला प्रति दिन फेरी जाती है। हवन के दशांश मन्त्रों से मार्जन, उसके दशांश का तर्पण, तर्पण के दशांश का ब्राह्मण भोजन किया जाता है।

अथ अनुष्ठान प्रयोग प्रारम्भ—

(आदौ आजमनं कृत्वा, प्राणानायम्य शान्तिपाठं पठित्वा 'सुमुखश्चैकन्तश्च' इत्यादिना गणेशं स्मृत्वासङ्कल्पं कुर्यात्।)

दायें हाथ में जल, अक्षत, कुंकुम, पुष्प, दक्षिणा लेकर निम्न संकल्प बोलें—

ॐ विष्णुर्विष्णुपुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोऽहिन द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतावराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे (अमुक) सम्वत्सरे (अमुक) गोलावलम्बिनि भास्करे, (अमुक) अयने, (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, अमुक (तिथौ), (अमुक) वासरे, (अमुक)स्य, शरीरे उत्पन्नोत्पत्स्यमानाऽखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमृत्युञ्जयप्रसादात् दीर्घायुष्यसततारोग्याप्तये आदौशिवपूजनपूर्वक मृत्युञ्यमहामन्त्रजपमह- करिष्ये॥

इतना बोलकर अञ्जलिवाला जल शुद्ध भूमि पर त्याग करें तत्पश्चात् जिवमानस पूजा एवं मृत्युञ्जय स्तोत्र का, एकलय व एकाग्रचित्त होकर पाठ करें।

अथ मृत्युञ्जय सतोत्रम्—

कैलाशस्योत्तरे शृंगे, शुद्धस्फटिक सन्निभे।
तमोगुणविहीने तु, जरामृत्यु विवर्जिते ॥ 1॥
सर्वार्थसम्पदाधारे, सर्वज्ञानकृतलाये।
कृतांजलिपुटो ब्रह्मा, ध्यानासीनं सदाशिवम् ॥ 2॥
पप्रच्छ प्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनिं गतः।
सर्वार्थसम्पदाधार-ब्रह्मलोकपितामहः॥ 3॥

ब्रह्मोवाच—

केनोपायेन देवेश, चिरायुर्लोंशेऽभवत्।
तन्मे ब्रूहि महेशान, लोकानां हितकाम्यया ॥ 4 ॥

श्री सदाशिव उवाच—

शृणु ब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि, चिरायुर्मुनिसत्तमः।
संजातः कर्मणा येन, व्याधिमृत्युविवर्जितः॥ 5॥
तस्मिन्नकारर्णवेघोरे, सलिलौघमरिप्लुते।
कृतान्तभयनाशाय, स्तुतो मृत्युञ्जयः शिवः ॥ 6॥
तस्य संकीर्त्तनान्नित्यं, मुनिर्मुत्युविवर्जितः
तमेव कीर्तय ब्रह्मन्! मृत्यु जेतुं न संशयः॥ 7॥

लोमेश उवाच—

ॐ देवाधिदेव देवेश, सर्वप्राणाभृताम्वर।
प्राणिानामपि नाथस्त्वं मृत्युन्जय नमोऽस्तुते ॥ 8॥
देहिनां जीवभूतोऽसि, जीवो जीवस्य कारणम्।
जगतां रक्षकस्त्वंवै, मृत्युन्जय नमोऽस्तु।। 9॥
हेमाद्रि- शिखराकार सुधावीचिमनोहर।
पुण्डरीकपरं ज्योतिमृत्युन्जय नमोऽस्तुते ॥ 10॥
ध्यानाधार महाज्ञान, सर्वज्ञानैककारणम्।
परित्रातासि लोकानां, मृत्युन्जयनमोऽस्तुते॥ 11॥
निहता येन कालेन, सदेवासुरमानुषाः।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव, सिद्धिविद्याधरास्तथा॥ 12॥
साध्याश्च वसवो रुद्रास्तथाशिवनिसुतावुभौ।
मरुतश्च दिशो नागः स्थावराजंगमास्तथा॥ 13॥
जितः सोऽपित्वयाध्यानान्मृत्युन्जय नमोऽस्तुते॥ 14॥

शुद्ध स्फटिक मणि के समान श्वेत, कैलाश पर्वत के उत्तम शृंग पर विराजे हुये, भगवान् शंकर के वाहन नन्दिकेश्वर ने एक दिन देखा कि सब प्रकार की सम्पत्तियों को देने वाले, सम्पूर्ण ज्ञान के सागर, साक्षात् ब्रह्मा अपने दोनों हाथों को जोड़े हुये, हृदय में बारम्बार सदा शिव का ध्यान करते हुये, जरामृत्यु से रहित इस (कैलाश पर्वत) पर आकर के सदाशिव को साष्टांग (दण्डवत्) करके बोले-

ब्रह्मा जी बोले— हे प्रभो! किस उपाय के करने से महर्षि लोमेश चिरायु को प्राप्त हुये, हे महेश! लोक कल्याण की कामना से मुझे वह सभी वृतान्त कृपा करके बताएं ॥ 4 ॥

श्री सदाशिव बोले— हे ब्रह्मा! ध्यानपूर्वक सुनो, जिसके करने से महर्षि लोमेश जन्म-मृत्यु, जरारोग, व्याधि, भय व शोक इत्यादि से मुक्त हो गये, वह केवल 'मृत्युञ्जय महादेव' के नित्य संकीर्त्तन का प्रभाव है। जिसके करने से हे ब्रह्मा! मानव मृत्यु को जीत जाता है, इसमें कोई संशय नहीं॥ 7॥

लोमेश बोले— हे देवों के देव, महादेव! आप सब प्राणी मात्र के स्वामी हैं तथा जीवन व मृत्यु पर आपका आधिपत्य है। आपके मृत्युञ्जय स्वरूप को नमस्कार है॥ 8 ॥

देहधारी प्राणियों के प्राण व सभी अन्य जीवों की जीवन्त शक्ति आप हैं। समस्त संसार के आप रक्षक हैं, आपके मृत्युञ्जय स्वरूप को नमस्कार है॥ 9॥

हिमालय के उत्तङ्ग शिखर के समान, धवलित आभा से युक्त, पुण्डरीक ज्योति स्वरूप, आपके मृत्युञ्जय रूप को नमस्कार है॥ 10॥

सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान के कारण स्वरूप ध्यानियों (यतियों, योगियों व तपस्वियों) के ध्यान स्वरूप, समस्त लोकों (पृथ्वी, पाताल, व स्वर्ग) को तारने वाले, आपके मृत्युंजय स्वरूप को नमस्कार है॥ 11॥

देव, असुर मनुष्य गन्धर्व अप्सरा, सिद्ध, विद्याधर, वसु, रुद्र, अश्विनीपुत्र, मारुत, दिशाएं, नाग, सभी प्रकार के स्थावर व जर्गम वस्तुएं, जिस काल के अधीन हैं, उस काल के काल महाकाल शंकर को नमस्कार है॥ 13॥

जिस परामूर्ति शंकर के ध्यान धरने व विधिपूर्वक पूजा करने से मृत्यु वश में हो जाती है उस मृत्युंजय स्वरूप को नमस्कार है॥ 14॥

ये ध्यायन्ति परां मूर्तिम्पूजयन्त्यमरादयः।
न ते मृत्युवंश यान्ति मृत्युञ्जय नमोऽसतु॥ 15॥
त्वमोंकारोऽसि वेदानां, देवानां च सदाशिवः।
आधारशक्तिः शक्तीना, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते॥ 16॥
स्थावरे जंगमेवापि, यावत्तिष्ठतिदेहगः।
जीवत्यपत्यलोकोऽयं, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 17॥
सोमसूर्याग्निमध्यस्थ व्योमव्यापिन्सदाशिव।
कालत्रयमहाकाल, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते॥ 18॥

प्रबुद्धे चाप्रबुद्धे च, त्वमेव सृजसे जगत्।
सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 19 ॥
व्योम्नि त्वं व्योम रूपोऽसि, तेजः सर्वत्र तेजसि।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 20 ॥
जगज्जीवो जगत्प्राणः, स्रष्टा त्वं जगत प्रभुः।
कारणं सर्वतीर्थानां मृत्यञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 21 ॥
नेता त्वमिन्द्रियाणां च, सर्वज्ञानप्रबोधकः।
सांख्यं योगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 22 ॥
रूपातीतः सुरूपश्च, पिंडस्थपदमेव च।
चतुर्योगकला-धार, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 23 ॥
रेचके वह्निरूपोऽसि पूरके।
कुम्भके शिवरूपोऽसि, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 24 ॥
क्षयंकरोपि.पापानां, पुण्यनामपि वर्द्धनम्।
हेतुस्त्वं श्रेयसो नित्यं, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 25 ॥
सर्वमाया कलातीत, सर्वेन्द्रियपरावर।
सर्वेन्द्रियकलाधीश, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 26 ॥
रूपं गंधो रसः स्पर्शः, शब्दः संस्कार एव च।
त्वतः प्रकाश एतेषां, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 27 ॥
चतुर्विधानां सृष्टीनां, हेतुस्त्वं कारणेश्वर।
भावाभावपरिच्छिन्न, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 28 ॥
त्वमेको निष्कलो लोके, सकलम्भुवनत्रये।
अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 29 ॥
त्वं प्रबोधस्त्वमाधरस्त्वम्बीजं भुवनत्रये।
सत्वं रजस्तमस्त्वं हि, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 30 ॥
त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च, त्वमात्माप्रकृतेः परः।
अष्टत्रिंशतकालानाथ, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 31 ॥
सर्वेन्द्रियाणामाधारा, सर्वभूतगुणाश्रयः।
सर्वज्ञानमयानन्त, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 32 ॥
त्वमात्मा सर्वभूतानां गुणानां त्वमधीश्वरः।
सर्वानन्दमयाधार, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 33 ॥
त्वं यज्ञः सर्वयज्ञानां, त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणम्।
शब्दब्रह्मात्वमोंकारं, मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ 34 ॥

वेदों में ओंकार स्वरूप, देवताओं में सदाशिव स्वरूप, एवं सभी प्रकार की शक्तियों के आधार स्वरूप स्थावरजङ्गम व देहधारियों के जीव स्वरूप मृत्युञ्जय को नमस्कार है ॥ 17 ॥

सोम, सूर्य, अग्नि के मध्य में रहने वाले, सभी प्रकार के आकाश में अनन्त व्यापी तीनों कालों के महाकाल मृत्युजंय को नमस्कार है ॥ 18 ॥

बुद्धिमानों में प्रबुद्ध, आप ही संसार को सृजते हुये, सृष्टि के कारणरूप देव है, आप ही व्योम, सभी दैदीप्यमान वस्तुओं के तेज, ज्ञानियों के ज्ञान स्वरूप है, आपके मृत्युंजय स्वरूप को नमस्कार है ॥ 20 ॥

सभी तीर्थों के कारण स्वरूप, जगत्जीव, जगत के प्राण, जगत के स्वामी, इन्द्रियों को प्रेरित करने वाले, सभी प्रकार के ज्ञान के प्रबोधक, सांख्ययोग स्वरूप, मृत्युंजय को नमस्कार है ॥ 22 ॥

सुन्दर रूपवान होते हुये भी रूपातीत, पिंडस्थपद, चारों युगों को चलाने वाले रेचक,(प्राणायाम) में अग्निरूप, पूरक में सोमरूप, कुम्भक में शिवरूप विद्यमान आपके मृत्युंजय स्वरूप को नमस्कार है ॥ 24 ॥

पापों का क्षय करने वाले, पुण्यों को बढ़ाने वाले, श्रेसय के निमित्त कारण, सब प्रकार की माया, सब प्रकार की इन्द्रियों के परावर स्वामी आपके मृत्युंजय को नमस्कार है ॥ 26 ॥

रूप, गंध, रस, स्पर्श, शब्द, संस्कार वगैरह आपके ही प्रकाश से प्रकाशित हैं, आप चतुर्वित सृष्टि के कारण स्वरूप, मृत्युंजय को नमस्कार है ॥ 28 ॥

आप ही निष्कल, तीनों भुवनों के स्वामी, अति सूक्ष्म स्वरूप, सत्वरज व तम तीनों गुणों के बीज स्वरूप हैं, आपके मृत्युंजय रूप को नमस्कार है ॥ 30 ॥

आप ही सूर्य, चन्द्र प्रकृति, 38 कालों के स्वामी, सभी इन्द्रियों के आधार, सर्व भूतों के गुण, सर्वज्ञ स्वरूप, आपको नमस्कार है ॥ 32 ॥

आप ही सब भूतों की आत्मा, ईश्वर सर्वानन्द्मय, यज्ञों के स्वरूप, शब्द ओंकार व ब्रह्मस्वरूप हैं, आपके महामृत्युंजय स्वरूप को नमस्कार है ॥ 34 ॥

श्री सदाशिव उवाच—

एकं संकीर्त्तयेद्यस्तु, शुचिसतद्गतमानसः।
भक्तया श्रणोति यो ब्रह्मन्न स मृत्युवशो भवेत्॥
न च मृत्युभयं तस्य, प्राप्तकालं च लंघयेत्।
अपमृत्युभयं तस्य, प्रणाश्यति न संशयः ॥ 36 ॥

व्याधयो नो प्रपद्यन्ते, नौपसर्गभयं भवेत्।
प्रत्यासन्नन्तरे काले, शतैकावर्तने कृते॥ 37॥
मृत्युर्न जायते तस्य, रोगान्मुंचति निश्चितम्।
पंचम्यां वा दशम्यां वा, पौर्णमास्यामथापि वा ॥ 38॥
शतमावर्तयेद्यस्तु, शतवर्ष स जीवति।
तेजस्वी बलसम्पन्नो, लभते श्रियमुत्तमाम॥
त्रिविधं नाशयेत्पापं, मनोवाक्कायसंभवम्।
अभिचराणि कर्माणि, कर्माण्याथर्वणानि च॥
क्षीयन्ते नात्र सन्देहो, दुःस्वप्नश्च विनश्यति।
इदं रहस्यं, देवदेवस्य शूलिनः॥
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं, सर्वविघ्नविनाशनम्॥
(इति श्री शिव-ब्रह्म संवादे श्रीमृत्युन्जयस्तोत्रं सम्पूर्णम्)

सदाशिव बोले— इस प्रकार के पवित्र भाव में किये गये संकीर्त्तन को जो बोलता है, और सुनता है मृत्यु उसके वशीभूत हो जाती है। उसको अपमृत्यु, अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता, श्रद्धा व भक्तिपूर्वक अनवरत पाठ से, व्यक्ति मृत्युकाल को भी लांघ जाने में समर्थ हो जाता है। न तो उसे व्याधि सताती है, न रोग उसे तंग करते हैं।॥ 37॥

ऐसे जातक निरोग सौ वर्ष की आयु को प्राप्त करते हुये, बलसम्पन्न, तेजस्वी, प्रसन्न, व स्वस्थ रहते हैं, रोग उनके पास नहीं आते, उन्हें मृत्यु का भय नहीं रहता। ऐसे जातक के त्रिविध ताप नष्ट हो जाते हैं, उस पर किये गये अभिचारकर्म नष्ट हो जाते हैं, दुःस्वप्न व सब प्रकार के विघ्नों का नाश होकर जातक को उत्तम लक्ष्मी व अदभुत शांति की प्राप्ति होती है। यह परम रहस्यपूर्ण देवाधिदेव महादेव की विद्या है, जिसकी स्तुति का फल सब प्रकार की मंगल कामनाओं को देने वाला है।

अथ ऋष्यादिन्यासः—

(दायें हाथ में जल लेकर बायें हाथ से शरीर के अंगों को स्पर्श करें)

श्री वामदेवकहोलवशिष्ठा ऋषयः (मूर्ध्नि), पड़क्तिगायत्री-अनुष्टुप्छंदांसि (वक्त्रे), सदाशिव-महामृत्युंजय रुद्रदेवतायै नमो (हृदि), ह्रीं शक्तये नमो, (लिंगे), श्रीबीजाय नमः (पादयो)।

(यह ऋष्यादिन्यास हुआ, अब आचमनी में जल लेकर विनियोग करें)

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजयमन्त्रस्य वामदेवक-होलवशिष्ठा ऋषयः पंक्तिर्गायत्युष्णिागनुष्टुप् छंदांसि सदाशिवमहामृत्युंजय प्रीतये ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

अथ अङ्गन्यास—

ॐ हौं ॐ जूं सः भुर्भूवः स्वः व्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा, (हृदयाय नमः)॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय (शिरसि स्वाहा)। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्व सुगन्धिं पुष्टिवर्धन ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा (शिखायै वौषट्)। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजु-साममंत्रत्रयाय-शिखायै वौषट्)।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय उज्जवज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय (अस्त्राय फट्)। यह षंडङ्गन्यास परिपूर्ण हुआ।

अथ पवित्रिकरण—

ॐ त्र्यम्बकं (शिरसि) यजामहे (भ्रुवोः) सुगन्धिं (नेत्रयोः) पुष्टिवर्द्धनं (मुखे) उर्वारुकं (गण्डयोः) इव (हृदये) बन्धनात् (जठरे) मृत्यो (लिङ्गे) मुक्षीयः (ऊर्वोः) मा (जान्वोः) अमृतात् (पादयो)।

मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यानं कुर्यात,—

अथ ध्यानम्—

हस्ताम्भोजयुगेन कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः।
सिञ्चन्तं करयोर्युगेनदधतंस्त्वांके सकुम्यौ करौ॥
अक्षस्त्रक्मृगहस्तंम बुजगतं मूर्द्धस्थचंद्रं श्रवत्
पीयूषोन्ततनुं भजे सगिरिजं मृत्युंजय त्र्यम्बकम्॥
चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपति पीयूषपात्रं वहद्
हस्ताब्जेन दधत् सुदिव्यमंगलं हास्यास्यकेरुहम्।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम
भोजंबिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युंजय संस्मरे ॥ 2॥

इसके पश्चात् शिवमानस पूजा करे, शिवजी की मूर्ति या शिवलिङ्ग को गन्धक्षतपुष्प इन मंत्रों से चढ़ाएं।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि। ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि। ॐ वै अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ सं सर्वात्मकं मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

अब गोमुखी के हाथ डालकर, हृदय में मृत्युंजय शिव का ध्यान करके रुद्राक्ष की माला पर इस मृत्युञ्जय महामन्त्र का जाप करें।

मृत्युंजय महामन्त्र—

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगनिधं पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॥ॐ॥

जप के पश्चात मृत्युंजय महादेव के दक्षिण हाथ में या शिवलिङ्ग के दाहिने तरफ निम्न मन्त्र को बोलते हुये जल छोड़ दें।

समर्पण मन्त्र—

गुह्याति गुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्यत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु में देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युंजयरारोगैः पीड़ितं कर्म बन्धनैः।

अर्पणम्—

अनेन महामृत्युंजय जपाख्येन कर्मणा श्री-महामृत्युंजयः प्रीयतां न मम॥

अथ यज्ञार्थशताक्षरा गायत्री मन्त्र—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवभ्य धीमहि धियो
योः न प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसे सुनवबामसोम-मरातीयतोनीदहातिवेदः सनः पषदतिदुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरित्यग्निः॥ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिपुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ (स्वाहा)

☐ मार्कण्डेकृत मृत्युञ्जयस्तोत्रं—

ॐ भगवते मृत्युंजयाय
ततो विष्णवर्पितमनाः मार्कण्डेयो महामतिः।
तुष्टाव प्रणतो भूत्वा, देवदेवजनार्दनम् ॥ 1 ॥

विष्णुनैवोपदिष्टं तु, स्तोत्र कर्णौ महामनाः।
सम्भावितेन मनसा, तेन तुष्टाव माधवम् ॥ 2 ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवायाय
नारायणं सहस्त्राक्षं, पद्मनाभं पुरातनम्।
प्रणोतोऽस्मि हृषीकेशं किं मे मृत्युः करिष्यति॥ 3 ॥
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षमनन्त-मजमव्ययम्।
केशवं च प्रसन्नोऽस्मि, किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ 4 ॥
वाराहं वामनं विष्णु, नारसिहं जनार्दनम्।
माधवं च प्रसन्नोऽस्मि्, किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ 5 ॥
पुरुषं पुष्करं पुण्यं क्षेमबीजं जगन्पतिम्।
लोकनाथं प्रपन्नोऽस्मि्, किं मे मृत्युः करिष्यति॥ 6 ॥
भूतात्मानं महात्मानं, जगद्योनिमयोजिनम्।
विश्वरूपं प्रपन्नोऽस्मि्, किं मे मृत्युः करिष्यति॥ 7 ॥
सहस्त्रशिरसं दैवं व्यक्ताव्यक्तं सनातनम्।
महायोगं प्रपन्नौऽस्मि्, किं मे मृत्युः करिष्यति॥ 8 ॥
इत्युदीरितमाकणर्य, स्तोत्रं तस्य महात्मनः।
अपयातस्ततो मृत्युर्विष्णु दूतैश्च पीडितः॥ 9 ॥
इति तेन जितो मृत्युर्मार्कण्डेयन धीमता।
प्रसन्ने पुण्डरीकाक्षे, नृसिंहे नास्ति दुर्लभम्॥ 10 ॥
मार्कण्डेयहितार्थाय, स्वयं विष्णुरुवाच हि॥ 11 ॥
य इदं पठते भक्तया, त्रिकालं नियतः शुचिः।
नाकाले तस्य मृत्युः स्यान्नरस्याच्युतचेतसः ॥ 12 ॥
हृत्पद्ममध्ये पुरुषं पुराण, नारायणं शाश्वतमादिदेवं।
संचिन्त्य सर्यादपि रोचमानं, मृत्युं स रोगी जितवाँस्तदैव ॥ 13 ॥
(इति श्रीनृसिंहपुराणे मार्कण्डेयकृते मृत्युंजयस्तोत्र समाप्तम्)

घण्टाकर्ण महावीर

हिन्दुओं की चौसठ योगिनी एवं बावन वीर में से यह एक महावीर घंटाकर्ण (बेताल) है। परवर्ती जैन धर्मावलम्बियों ने इस वीर को अपने धर्म में भी बड़ा भारी स्थान दिया, ऐसी मान्यता है कि घंटा की आवाज़ कानों तक पहुंचे इतनी देरी में ही इस महावीर की शक्ति काम कर जाती है। सबसे पहले भोजपत्र पर अष्टगंध में घंटाकर्णयन्त्र बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करें तश्चात ग्रहणकाल अथवा होली, दीपावली जैसे विशिष्ट अवसर पर दस हज़ार जाप कर यन्त्र सिद्ध कर लें। भूत-प्रेत, डाकनी-शाकनी, नज़र-टोकार एवं पिशाच बाधा में इस वीर का मंत्र तत्काल काम करता है। चाकू या मोरपांखे के द्वारा इसके मन्त्र से झाड़-फूंक करने पर बाधित व्यक्ति को तत्काल राहत मिलती है।

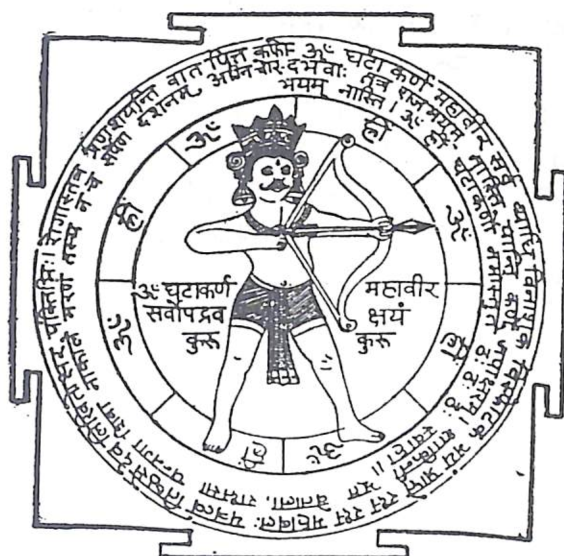
इसका मूल मन्त्र इस प्रकार है:—

मन्त्र—

'ॐ घंटाकर्णो महावीरः सर्व व्याधिविनाशकम् विस्फोटकभयमः प्राप्ते रक्ष-रक्ष महाबलः। यत्रत्वं तिष्ठसे देव लिखितोक्षर पंक्तिभिः रोगास्तत्र प्रणश्यन्तिः

वात्त पित्त कफोद्भंव तत्र राजभयम् नास्ति यान्ति कर्णेजपाक्षरं। शाकिनीभूत वेताला, राक्षसा पन्नगा शिवा, नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दंशनम्, अग्नि, चोर भयम् नासित। ॐ ह्रीं घंटाकर्णो नमोऽस्तुते ठः ठः ठः स्वाहा। * **घंटाकर्ण महायन्त्र**

विशेष— राजकामना, लक्ष्मीकामना और खासकर शत्रु नाश कामना में और भूत-पलीत कामना में जल, मंत्र कर पिलाने से भूत-प्रेत, रोग एवं अकाल मृत्यु से राहत मिलती है। इस मन्त्र को सिद्ध करने पर दशांश आहुति गुग्गल धूप से दी जाती है। तथा झाड़-फूंक के समय गुग्गल धूप देने से मंत्र का असर जल्दी व अधिक प्रभावशाली होता देखा गया है।



घंटाकर्ण लघु-मंत्र—

"ॐ घंटाकर्णो महावीरो (अमुकस्य/मम) सर्वोपद्रवं नाशनम् कुरू-करू स्वाहा।"

फल— एक लाख मंत्र जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसमें अमुकस्य शब्द के स्थान पर स्वयं का नाम अथवा मम शब्द का उच्चारण करना चाहिये। इस मंत्र के प्रयोग से सभी प्रकार के उपद्रवों का नाश होकर व्यक्ति विशेष की उन्नति होती है।

* कामण टूमण दूर करने का मंत्र—

अमुक जातकस्य उपरि चिनते चिन्तावे, जेड जडावें धरे धारवे अस्य उपरि कृत कामण, टूमण, नजर टोकर मध्ये, डाकिनी शाकिनी मध्ये, छल मध्ये, छिद्रामध्ये, इष्टमध्ये, मूठ मध्ये, यतदोषं जात, तत् परिहर परिहर ह्री घंटाकर्ण नमोऽस्तुते। अस्य सर्वान रोगान्, दोषान, निवामारय निवारय, दूरीकुरु, ठ. ठ. ठ. स्वाहा।

लक्ष्मी प्राप्ति का घंटाकर्ण मंत्र—

" ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय-पूरय सुख सौभाग्य कुरू-कुरू स्वाहा।"

धन त्रयोदशी को 40 माला, रूप चतुर्दशी को 42 और दीपावली के दिन 43 माला उत्तर दिशा की तरफ बैठकर जपें। लाल पीताम्बर, मूंगे की माला व रक्त चंदन से घंटाकर्ण मन्त्र की पूजा करें, धूप बत्तीसा या चन्दन अगरबत्ती जलाएं, ऐसा करने पर वीर घंटाकर्ण की कृपा से शीघ्र लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

श्रीरामरक्षास्तोत्र का माहात्म्य एवं प्रयोग-विधि

श्रीरामरक्षास्तोत्र अत्यन्त लाभप्रद है। यह पुस्तिकाकार में गीताप्रेससे प्रकाशित है। यह स्तोत्र जगत को बुधकौशिक ऋषि से प्राप्त हुआ है। बुधकौशिक ऋषि को यह स्वप्न में भगवान् शंकर से प्राप्त हुआ था। अनुष्टुप् छन्द में विरचित इस वज्रपंजर स्तोत्र के ऋषि बुधकौशिक हैं, भगवती श्रीसीता इसकी शक्ति हैं, भगवान श्रीराम इसके देवता हैं तथा हनुमानजी इसके कीलक हैं। इस स्तोत्र में विश्वाधार, विश्वसंरक्षक, पतितपावन, सर्वसमर्थ, पूर्णपुरुषोत्तम भगवान् श्रीसीतारामका ध्यान करने के उपरान्त अङ्ग-प्रत्यङ्गकी रक्षा करने के लिये उनसे प्रार्थना की गयी है। मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की वन्दना करने वाले का तथा उनके आश्रित रहने वाले का सर्वत्र और सर्वदा कल्याण ही होता है। लौकिक कष्ट की तो बात ही क्या, रामाश्रयी भक्त को न यमदूत भयभीत कर सकते हैं और न उसे संसार-चक्र में पड़ना पड़ता है।

भगवन् श्रीसीताराम की प्रसन्नता प्राप्ति के लिये इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। भगवान् श्रीसीतारामकी शक्ति अनिर्वचनीय तथा अचिन्त है। उनकी कृपासे सांसारिक कष्ट, शारीरिक रोग और मानसिक चिन्ताएँ दूर हो सकती हैं। पाठकर्ताकी श्रद्धा और भावना के अनुसार न केवल लौकिक, अपितु पारलौकिक और पारमार्थिक लाभ भी श्रीरामरक्षा-स्तोत्र के पाठ से होता है। इसके सिद्धकर्ताको श्रद्धा विश्वास के साथ भावपूर्वक अर्थ समझते हुए पुनः-पुनः पाठ करना चाहिये, जिससे अभीष्ट की प्राप्ति शीघ्र हो सके।

सिद्ध करने की विधि

श्रीरामरक्षास्तोत्र का प्रयोग करने से पूर्व इसे सिद्ध कर लेना चाहिये, अन्यथा पूर्ण फल की प्राप्ति में शङ्का रहती है। इस स्तोत्र को सिद्ध करने की संक्षिप्त विधि इस प्रकार है-इसे सिद्ध करने का समय नवरात्र है। नवरात्र साल में मुख्य रूप से दो बार आता है। किन्तु चैत्र मास में श्रीरामनवमी पर पूर्ण होने वाला नवरात्र अधिक उपयुक्त है। चैत्र मास या आश्विन मास के शुक्लपक्षके नवरात्र में नौ दिनों (अर्थात् प्रतिपदा से नवमी तिथि) तक प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में स्नानादि तथा नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण कर, कुश के आसन पर सुखासन से पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर बैठें। सामने भगवान् रामका दरबार-चित्र या भगवान् श्रीसीताराम का चित्र (धरें चाप सायक कटि भाथा' के अनुसार) अथवा श्रीहनुमानजी का चित्र होना

चाहिये। चन्दन-पुष्पादि से पूजन कर के इस महान् फलदायी स्तोत्र को सिद्ध करने के लिये इसका ग्यारह बार पाठ नियमित रूप से प्रतिदिन करना चाहिये। पाठ के समय अखण्ड प्रज्वलित दीपक तथा धूप रखना चाहिये। भगवान् श्रीसीताराम की कृपाशक्ति के प्रति आपकी जितनी अखण्ड निष्ठा होगी, उतना ही फल प्राप्त होगा। नवमी के दिन यथाशक्ति ब्राह्मण-भोजन भी करवा देना चाहिये।

यह स्तोत्र नवरात्रमें सिद्ध किया जाये तो सर्वोत्तम, अन्यथा भारतीय पंचाङ्ग के अनुसार किसी भी मास के शुक्लपक्ष के प्रथम नौ दिनों में अर्थात् प्रतिपाद से नवमी तिथि तक उपर्युक्त प्रकार से नियमित पाठ करके इस स्तोत्र को सिद्ध किया जा सकता है।

यह स्तोत्र श्रीहनुमानजी के द्वारा कीलित है। इसके उत्कीलन के सम्बन्ध में मैं तो केवल यह कह सकता हूँ कि इसका उत्कीलन श्रीहनुमानजीकी कृपा से होता है। अतः सिद्ध करते समय या प्रयोग करते समय भी श्रीहनुमानजीका संरक्षण एवं उनकी कृपा प्राप्त करनेके लिये प्रारम्भमें और समापनपर श्रीहनुमानजी का ध्यान, कृपाहेतु प्रार्थना-प्रणामादि श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक करते रहना चाहिये। इससे हनुमानजी साधक को संरक्षण एवं सिद्धि देते हैं। वास्तव में तो उत्कीलन का रहस्य यह है कि हनुमानजी के संरक्षण में उनके समान ही भक्ति एवं श्रद्धा से पाठ तथा प्रयोग करना चाहिये।

सिद्ध कर लेनेके बाद एक पाठ नित्य कर लेना चाहिये इसे सिद्ध करने से पूर्व इसे कण्ठाग्र कर लेना भी आवश्यक है। यथा—

'यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः।'

रोगी पर प्रयोग विधि

सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण करनेमें यह स्तोत्र समर्थ है। अत्यावश्यक समझने पर ही सकाम भावसे पाठ करना उचित होता है, वैसे भक्ति भावपूर्वक भगवत्प्रीत्यर्थ एक पाठ नित्य करना ही चाहिये।

किसी भी मनोरथ के लिये जप (पाठ) की विधि की ही प्रधानता होती है। किन्तु रोगके निवारणार्थ अभिमन्त्रित जल से रोगी का मार्जन उत्तम विधि है। मार्जन करने की विधि यह है कि कमल या गुलाब अथवा लाल रंग के उपलब्ध सात्त्विक पाँच पुष्प लीजिये। ये शुद्ध रहने चाहियें, क्योंकि गीले वस्त्र में लपेटने, धोने, सूँघने या अपवित्र हाथों से स्पर्श करने से पुष्प अशुद्ध एवं अपवित्र हो जाते हैं। जल के लोटे में चार पुष्प तैरते रहें, एक पुष्प हाथ में रहे अथवा सामने भगवान् के सिंहासन पर रखा रहे। नवरात्र में जिस विधिसे पाठ किया हो, उसी विधि से पाठ करें। एक मार्जन के लिये 11

या 21 पाठ करना ठीक है। पाठ के बाद हाथवाले पुष्प से रोगीका मार्जन करें। (लोटे के जल में पुष्प लगा कर फिर उस जल को पुष्प से रोगी पर सिर से पैर तक छींटे दें।) ग्यारह बार छींटे देकर वह पुष्प भगवान् के पूजा-स्थान पर छोड़ दें, बाकी चारों पुष्प रोगी के सिराहने रख दें। सिराहनेवाले पुष्प के सूखते-सूखते रोग भी सूख (नष्ट हो) जायेगा। मार्जन आवश्यकतानुसार एक, तीन सात, ग्यारह या इक्कीस की संख्या में किया जा सकता है। भगवान के पास रखे पुष्प को जलाशय में प्रवाहित कर देना चाहिये। बाकी सूखे पुष्पों को गाड़ देना चाहिये। मार्जनकर्ता उपवास के दिन की भाँति एक समय भोजन करके पवित्र-संयम एवं ब्रह्मचर्य-पूर्वक रहे। रोगी पर प्रयोग करने के लिये रोगी का हाथ अपने हाथ में लेकर पाठ करना या पाठ करके जल में फूँक मारकर अभिमन्त्रित करके वह जल रोगी को पिलाना आदि विधियाँ भी काम में लायी जाती हैं और वे विधियाँ भी श्रेष्ठ हैं, किन्तु रोगी के उपचार के लिये मार्जन-विधि ही उत्तम है। इसके कई कारण हैं—

1. जप या पाठ शुद्ध आसनपर बैठकर एकान्त में भगवान् राघवेन्द्र सरकार के ध्यानपूर्वक एकाग्रचित्त से करने पर अधिक शक्ति देता है। रोगीका हाथ अपने हाथ में लेकर पाठ करने में कुछ बाधाएं आयेंगी। पहले तो हर रोगीका इतनी देर स्थिर रहना कठिन होगा। दूसरे पाठकका ध्यान ऐसी स्थिति में एकाग्र रहने में कठिनाई होगी। तीसरे शुद्धता में भी बाधा रह सकती है, इत्यादि।

2. यद्यपि अभिमन्त्रित जल की विधि पहली से अधिक उचित है (यदि इसमें गंगाजल हो तो और भी अच्छा रहे), तथापि बार-बार फूंक मारने से जप तैल-धारावत् नहीं हो पाता, जो विशेष शक्ति देता है। साथ ही ध्यान-मन्त्रसहित ध्यान भी पुनःपुनः करना है।

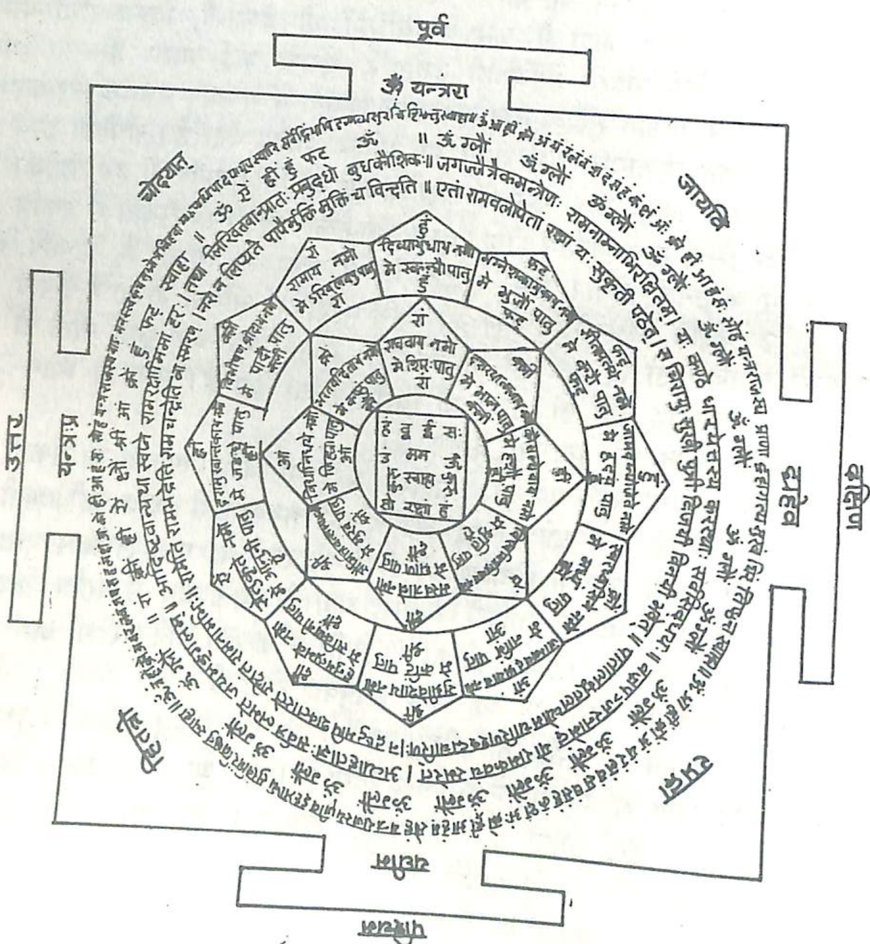
वैसे सुविधा, रुचि एवं विश्वासानुसार कोई भी विधि अपनायी जा सकती है। यदि किसीके द्वारा स्तोत्र सिद्ध नहीं भी हो अथवा उसे विधि नहीं आती हो तो भी किसी रोग के निवारण के लिये तो रोगी के पास लगातार कुछ उच्च स्वरसे पाठ चलाना चाहिये, जिससे वहां के वातावरण में स्तोत्र शब्द फैल जाये। इससे भी कल्याण ही होगा। रोगी के पास न होने पर भी अथवा अन्य मनोरथों के लिये भी यह पाठ उपयुक्त होता है।

इस रहस्य के मर्मज्ञ तो श्रीहनुमान जी ही हैं। किन्तु स्वल्प अनुभव एवं अपनी मति के अनुसार कुछ लिख दिया गया है। बाकी तो पाठक स्वयं अनुभव करके देख सकते हैं। यदि कहीं लिखने में त्रुटि हो तो विज्ञजनों से क्षमापूर्वक मार्गदर्शनकी प्रार्थना है।

भक्तरक्षक सियावर रामचन्द्रजीकी जय!

श्रीरामरक्षा-यन्त्रराज

श्रीरामरक्षा-यन्त्रराज कल्पवृक्ष की भाँति उपासक के लौकिक-पारलौकिक-सभी मनोरथ पूर्ण करता है। जिस प्रकार श्रीरामरक्षा-स्तोत्र का पाठ करने पर समस्त कामनाएँ फलीभूत होती हैं, वैसे ही श्रीरामरक्षा-यन्त्रराज का विधिवत् पूजन करने तथा उसे धारण करने से सभी फल प्राप्त होते हैं। प्राचीन संतजन इसको ताम्रपत्रपर अंकित करवाकर मन्दिरों में पूजन में रखते थे। श्रीरामतापनीयन्त्र कई मन्दिरों में अभी भी पूजे जाते हैं।



श्रीअगस्त्य-संहितामें इसके महात्म्यका वर्णन इस प्रकार किया गया है- श्रीरामचन्द्रजीके वज्रपंचरनामक श्रीरामरक्षा-यन्त्र को धारण करने से सर्वसिद्धियां प्राप्त होती हैं, सभी पाप नष्ट हो जाते हैं सभी आपत्तियां समूल नष्ट हो जाती हैं, भूत-प्रेत पिशाचादि इसके देखते ही भाग जाते हैं, मित्रों की मित्रता दृढ़ होती है, शत्रु मित्र बन जाते हैं, क्रूर कष्ट- प्रद प्रसन्न (अतएव शान्त)हो जाते हैं और शासकों की अनुकूलता प्राप्त होती है। बहुत क्या कहें, श्रीरामभद्रजी के श्रीराम-रक्षा-यन्त्र के पूजन तथा धारण करने से कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं रह जाता।

यावज्जीवं तु सौवर्णं रौप्यं विंशतिवर्षकम्।
भूर्जे द्वादश वर्षाणि तदर्धं ताम्रपत्रके॥
सौवर्णे राजते पत्रे भूर्जे वा सम्यगालिखेत्।
अथवा ताम्रपत्रे च गुलिकीकृत्य धारयेत्॥

अगस्त्यसंहिता के अनुसार स्वर्ण-पत्र पर अंकित रामरक्षा-यन्त्रराज जीवनपर्यन्त, रजतपत्र पर अंकित बीस वर्ष, भोजपत्रपर लिखित बारह वर्ष तथा ताम्रपत्रपर अंकित छः वर्ष तक प्रभावयुक्त रहता है। उपासक अपनी शक्ति के अनुसार सोने, चाँदी भोजपत्र अथवा ताम्रपत्र पर लिखकर इसे धारण करें। तावीज़ भी बनाकर धारण कर सकते हैं। यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर तथा प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर सोना, चाँदी या ताँबे के तावीज़ में धारण किया जा सकता है। यन्त्रराज के दर्शनमात्र से अनन्त लाभ होता है।

जो नित्यप्रति श्रीरामरक्षा-स्तोत्र का पाठ करते हुए श्रीरामरक्षा-यन्त्रराज पर तुलसी-पत्र अर्पण करता है, वह सैकड़ों दीक्षाओं से भी दुर्लभ फल प्राप्त करता है। वह आयु-आरोग्य पुत्र-पौत्र-सभी लौकिक एवं परलौकिक सुखों को प्राप्त कर अन्त में प्रभु के धाम में जाता है।

श्रीमानस-पुरश्चरण यन्त्र

किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये निश्चित संख्या या निश्चित अवधि तक नियमपूर्वक जो (मन्त्र-जप या स्तोत्र-पाठ या विग्रह-पूजनरूपी) अनुष्ठान किया जाये, उसे 'पुरश्चरण' कहते हैं। अभीष्ट की सिद्धि के लिये श्रीरामचरितमानस का पाठ प्राय: श्रद्धालु लोग किया करते हैं। श्रीरामचरितमानस-पुरश्चरण-रूप में एकाह्न-पारायण या नवाह्न पारायण या मास-पारायण अथवा अष्टोत्तरशत-पारायण करने वाले साधकों को पाठारम्भ के पूर्व स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध स्थान में शुद्ध आसन बिछाकर बैठ जाना चाहिये। दाहिने हाथ में जल, पुष्प और अक्षत लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़ना चाहिये—

संकल्प—

ॐ तत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमें कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे (अमुक) संवत्सरे (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) नामाहं मम सकलाभीष्टसिद्धये श्रीसीताराप्रीत्यर्थं च श्रीरामचरितमानसस्य (अमुक) पारायणं करिष्ये।

तदुपरान्त श्रीगणेश-पूजन, गौरी पूजन तथा कलश-संस्थापन करना चाहिये, जिससे आगत-अनागत सभी विघ्नों का निवारण हो और अभीष्ट सिद्धि प्रदायक पुरश्चरण निर्विघ्न सम्पन्न हों।

गणेश-पूजन—

श्रीगणेशजी की पूजा के लिये श्रीगणेशजीकी मूर्ति या चित्र को स्थापित करना चाहिये अथवा किसी शुद्ध पात्र में रखे हुए चावलों पर मौली लपेटी हुई सुपारी रखनी चाहिये। अथवा मानसिक भावना कर लेनी चाहिये। फिर नीचे लिखे मन्त्र के अनुसार श्रीगणेशजी का ध्यान करते हुए एवं आवाह्न की भावना करते हुए अक्षत या पुष्प छोड़ने चाहियें—

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादङ्कन्जम॥



श्रीगणेशजीको आवाहित करके 'ॐ गंगणपतये नमः' प्रत्येक बार बोलकर पंचोपचार (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, और नैवेद्य) से अथवा केवल गन्ध पुष्प समर्पित करते हुए पूजन करना चाहिये और उनसे प्रार्थना करनी चाहिये।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥



गौरी-पूजन— इसी प्रकार जगदम्बा गौरी का पूजन करने के लिये उनकी मूर्ति या चित्र सामने रख लेना चाहिये अथवा मानसिक भावना कर लेनी चाहिये। फिर जगदम्बा गौरी का ध्यान करते हुए तथा नीचे लिखे मन्त्र से आवाहन करते हुए लाल पुष्प या अक्षत अर्पित करने चाहिये—

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

जगदम्बा गौरी को आवाहित करके 'ॐ गौं गौर्यै नमः' प्रत्येक बार बोलकर पंचोपचार (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य) से अथवा केवल गन्ध

पुष्प समर्पित करते हुए पूजन करना चाहिये और उनसे प्रार्थना करनी चाहिये—

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते॥



कलश-संस्थापन—

कलशकी स्थापना मानस-पारायण-स्थलीके ईशान (उत्तर-पूर्व) दिशाओं में करनी चाहिये। शुद्ध भूमिपर रोली से अष्टदल कमल बनाकर, उसपर सप्तधान्य (यदि सप्तधान्य न हो तो गेहूँ या चावल) रखकर धान्य के ऊपर कलश स्थापित करें। फिरकलश में जल, चन्दन, सुपारी और सर्वौषधि छोड़कर उसके दूब पंच पल्लव, पूर्णपात्र और श्रीफल (नारियल) रखना चाहिये। तदुपरान्त कलश में वरुणदेवताका आवाह्न करते हुए निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिये—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सम्पद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शन्तिः पुष्टिकरी तथा॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

श्रीगणेश-गौरी-कलश पूजन के उपरान्त साधक को विनियोग, अङ्गन्यास करना चाहिये। विनियोग द्वारा संकल्प का स्पष्टीकरण होता है कि भगवान् श्रीसीतारामकी प्रसन्नता प्राप्ति के उद्देश्य से इस अनुष्ठान को किया जा रहा

है। उपासना का सिद्धान्त है कि उपासक अपने अंदर उपास्य की भावना करके ही उपासना करे- **'देवो भत्वा यजेद् देवम्।'** इसी सिद्धान्त के अनुसार मन्त्र के अवयवों का अङ्गन्यास के द्वारा उपासक अपने शरीर के अवयवों में न्यास (स्थापना) करता है और उस मन्त्र के विभिन्न अवयवों का- दोनों हाथों के अवयवों में भी न्यास किया जाता है। इसी को 'करन्यास' कहते हैं।

(अ) विनियोग— ॐ अस्य श्रीमन्मानसरामायण-श्रीरामचरितस्य श्रीशिवकाकभुशुण्डियाज्ञवल्क्यगोस्वामि-तुलसीदासा ऋषयः, श्रीसीतारामो देवता, श्रीरामनाम बीजम् भवरोगहरी भक्तिः शक्तिः, मम नियन्त्रिताशेष-विघ्नतया श्रीसीतारामप्रीतिपूर्वकसकलमनोरथसिद्धयर्थं पाठे विनियोगः।

इसका पाठ करके भूमिपर जल छोड़ दें। इस प्रकार विनियोग करके **'ॐ श्रीं सीतायै नमः रां रामाय नमः'** इस युगल-मन्त्रका जप करके आचमन करना चाहिये और इसी मन्त्र से प्राणायाम करना चाहिये। फिर न्यास क्रिया करें।

(आ) करन्यास—

(1) 'जग मंगल गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के॥' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः— इसे पढ़कर दोनों हाथों की अङ्गुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श करें।

(2) 'राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥' तर्जनीभ्यां नमः— इसे पढ़कर दोनों अंगूठों से दोनों तर्जनी अङ्गुलियों का स्पर्श करे।

(3) 'राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥' मध्यमाभ्यां नमः— इसे पढ़कर दोनों अँगूठों से दोनों मध्यमा अंङ्गुलियों का स्पर्श करें।

(4) 'उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं॥' अनामिकाभ्यां नमः— इसे पढ़कर अँगूठों से दोनों अनामिका अंगुलियों का स्पर्श करें।

(5) 'सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥' कनिष्ठिकाभ्यां नमः— इसे पढ़कर दोनों अँगूठों से कनिष्ठाका अंगुलियों का स्पर्श करें।

(6) 'मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः— इसे पढ़कर दोनों हाथों की हथेलियों एवं उनके पृष्ठभागों का परस्पर स्पर्श करें।

(इ) अङ्गन्यास—(1) 'जगमंलग गुनग्राम राम के। दानि मुकुति धन

धरम धाम के॥' **हृदयाय नमः**—इसे पढ़कर दाहिने हाथ की अंगुलियों से हृदय का स्पर्श करें।

(2) 'राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥' **शिरसे स्वाहा**—इसे पढ़कर दाहिने हाथ की अंगुलियों से सिर का स्पर्श करें।

(3) 'राम सकल नामन्ह ते अधिका। होउ नाथ अघ खग गन बधिका॥' **शिखायै वषट्**— इसे पढ़कर दाहिने हाथ की अंगुलियों से शिखा का स्पर्श करें।

(4) 'उमा दारु जोषित की नाईं। सबहि नचावत रामु गोसाईं॥' **कवचाय हुम्**—इसे पढ़कर दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधे का स्पर्श और बायें हाथ की अंगुलियों से दाहिने कंधे का स्पर्श करें।

(5) 'सनमुख होई जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥' **नेत्राभ्यां वौषट्**—इसे पढ़कर दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों का क्रमशः स्पर्श करें।

(6) 'मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥' **अस्त्राय फट्**— इसे पढ़कर दाहिने हाथ को सिर की बायीं ओर से आगे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर ले आयें और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजा दें।

न्यास-क्रिया के सम्पन्न हो जाने के बाद भगवान श्रीसीताराम का ध्यान करना चाहिये। यथा—

कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं वीरासनाध्यासितं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुज जानुनि।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं
पश्यन्तीं मुकुटाङ्गदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे॥

भावार्थ— बायें कर-कमल को घुटने पर रखकर दाहिने से ज्ञानमयी मुद्रा धारण किये हुए,अविरत वीरासनसे विराजमान, श्यामल बादल के समान मंजुल कान्तिमान, मुकुट, अङ्गद आदि विविध भूषाविभूषित, देदीप्यमान, दिव्य अङ्गोंको धारण करने वाले भगवान् राघवेन्द्र श्रीराम का एवं उनके पार्श्व में समासीन हो निर्निमेष-नेत्र से उन्हीं को निहारती हुई, बिजली के समान द्युतिवाली, करकमलधारिणी, धरानन्दिनी भगवती सीता का हम भजन करते हैं।

उपर्युक्त प्रारम्भिक पूजा कर चुकने के पश्चात यन्त्र का पूजन करना चाहिये। यन्त्र स्वर्ण-पत्र, रजत-पत्र, ताम्र-पत्र या भोज पत्र पर बनाया जा सकता है। अथवा बेल, आँवला, पीपल, वट या आम्र के समतल काष्ठपर भी बनाया जा सकता है। यन्त्रको अनार (या चमेली) की लेखनी से लिखना

चाहिये। जैसी सुविधा-व्यवस्था हो, तदानुसार यन्त्र लाल चन्दन, हल्दी, केशर या गोरोचन से लिखा जा सकता है। यन्त्रपूजन में यन्त्रस्थ देवी-देवताओं की पूजा षोडशोपचारसे या पंचोपचार से अथवा गन्ध-पुष्प से विधिपूर्वक करनी चाहिये। प्रारम्भ में यन्त्र के बहिर्दलस्थ देवी-देवताओं की पूजा होगी, फिर अन्त: कोणस्थ देवताओं की और अन्त में केन्द्रस्थ भगवान् श्रीसीताराम एवं श्रीरामचरितमानस की पूजा करनी चाहिये।

(क) **बहिर्दलस्थ- देवाराधन—** यन्त्र में बाहर के जिस दलपर '**ॐ श्रीगणाधिपतये नमः**' लिखा गया है, उस दलसे पूजा आरम्भ करके दक्षिणकी ओर से क्रमश: श्रीपार्वतीजी, श्रीनरहरिदासजी आदि की पूजा करते हुए अन्त में श्रीब्रह्माजी का पूजन करना चाहिये।

1- ॐ गं गणाधिपतये नमः। गणाधिपतिश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

2- ॐ पां पार्वत्यै नमः। पार्वतीश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

3- ॐ नं नरहरिदासाय नमः। नरहरिदास श्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

4- ॐ वां वाल्मीकये नमः। वाल्मीकेश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

5- ॐ सूं सूर्यदेवाय नमः। सूर्यदेवश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

6- ॐ विं विष्णवे नमः। विष्णुश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

7- ॐ धं धनदाय नमः। धनश्रीपादुकां पूजयामि,तर्पयामि नमः।

8- ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

(ख) अन्तः कोणस्थ-देवाराधन— यन्त्र के अन्त:- कोणस्थ जिस कोष्ठक में 'ॐ श्रीहनुमते नमः' लिखा है, उस कोष्टकसे पूजा आरम्भ करके दक्षिण ओर से क्रमश: श्री अङ्गदजी, श्रीसुग्रीवजी, श्रीयाज्ञवल्क्यजी आदि की पूजा करते हुए अन्त में श्री गोस्वामी तुलसीदास जी की पूजा करनी चाहिये।

9- ॐ हं हनुमते नमः। हनुमच्छ्रीपदुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

10- ॐ अं अङ्गदाय नमः। अङ्गदश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

11- ॐ सुं सुग्रीवाय नमः। सुग्रीवश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

12- ॐ यां याज्ञवल्क्याय नमः। याज्ञवल्क्यश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

13- ॐ लं लक्ष्मणाय नमः। लक्ष्मणश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

14- ॐ शिं शिवाय नमः शिवश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

15- ॐ भं भरताय नमः भरतश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

16- ॐ विं विभीषणाय नमः। विभीषणश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

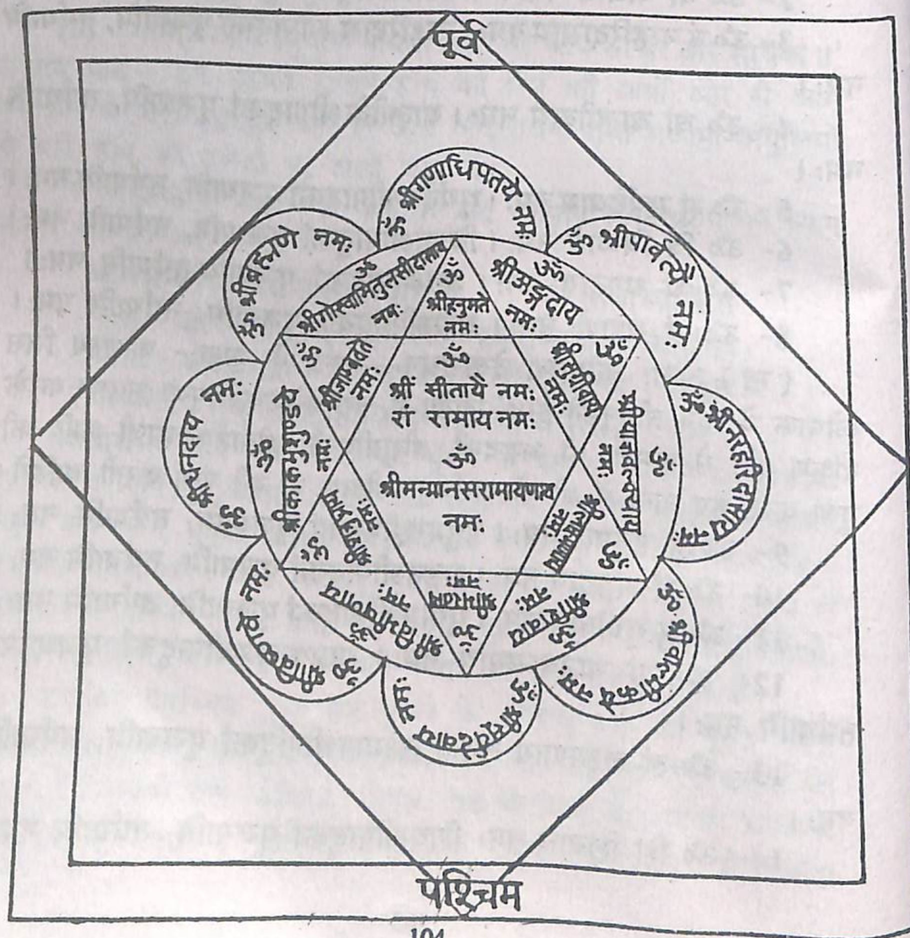
17- ॐ शं शत्रुघ्नाय नमः। शत्रुघ्नश्रीपदुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

18- ॐ कां काकभुशुण्डये नमः। काकभुशुण्डिश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

19- ॐ जां जाम्बवते नमः। जाम्ब्वच्छ्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

20- ॐ गों गोस्वामितुलसीदासाय नमः। गोस्वामितुलसीदासश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः।

(ग) केन्द्रस्थ-देवाराधन— अन्त में यन्त्र के केन्द्र में स्थित भगवान् श्रीसीताराम तथा श्रीरामचरितमानस की पूजा करनी चाहिये।



21- ॐ श्रीं सीतायै नमः। ॐ रां रामाय नमः। सीतारामश्रीपादुके पूजयामि, तर्पयामि नमः— इस मन्त्र से भगवान श्रीसीतारामका षोडशोपचार या पंचोपचार या गन्ध-पुष्प से पूजन करना चाहिये।

22- 'ॐ रां रामचरितमानसरामायणाय नमः। रामचरितमानसश्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि नमः'—इस मन्त्र से यन्त्र केन्द्रस्थ श्रीमन्मानसरामायण की और इसीके साथ-साथ जिस ग्रन्थ से मानस-पारायण पुश्चरण किया जाय, उस ग्रन्थ की भी षोडशोपचार या पञ्चोपचार या गन्ध-पुष्प से पूजा करनी चाहिये।

इस तरह यन्त्रस्थ देवी-देवताओं की पूजा करके निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिये—

ऊद्‌भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्कारीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादपल्वमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥
गिरा अरथ जेल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदऊँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥
मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंश मनि हरहु बिषम भव भीर॥

इस प्रकार प्रत्येक दिन, जब तक पुरश्चरण चलता रहे, पाठके पूर्व पूजा कर लेनी चाहिये। अन्त में जिस दिन पाठ पूरा हो रहा हो, उस दिन भी इन सभी देवताओं के लिये उनके-उनके मन्त्र से आहुतियाँ दी जानी चाहियें और प्रधान देवता भगवान् श्रीसीतारामजीके लिये उनके '**ॐ श्रीं सीतायै नमः ॐ रां रामाय नमः**' —इस युगल मन्त्र से कम-से-कम 108 आहुतियाँ दी जानी चाहियें। हवन के लिये तैयार किये गये शाकल्य में तिल, जौ, चावल, शर्कराके अतिरिक्त कपूर, चन्दन-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ श्री मिश्रित कर लेने चाहिये। फिर दशांश तर्पण एवं उसका भी दशांश मार्जन करके श्रीमानसजीकी आरती करनी चाहिये। सबसे अन्त में भगवान् श्रीसीताराम अपने परिवारों सहित यहाँ नित्य निवास करें—ऐसा कहकर श्रीमानस-पुरश्चरण को सम्पन्न करना चाहिये।

नवग्रह व यन्त्र साधना

जातक की जन्म कुण्डली स्वयं ही एक यंत्र है। उसमें 12 कोष्ठकों में 9 ग्रहों का स्थापन होता है इसमें केन्द्र और त्रिकोण, इन दो स्थानों पर परस्पर सम्बन्ध विशेष महत्त्वपूर्ण है। केन्द्र से भी त्रिकोण का महत्त्व अधिक है। श्री पाराशर ने त्रिकोण को अत्यधिक महत्त्व देते हुए लिखा है कि 'सर्वे त्रिकोण नेतारों ग्रहाः शुभफल प्रदाः' त्रिकोण में लग्न भी सम्मिलित है। इसे अधिक शुभ मानकर ही यंत्र गणना में इसी को आधार माना गया है। सम्पूर्ण राशि चक्र में तीन-तीन राशियों के चार त्रिकोण होते हैं। (अ)1,5,9 (ब) 2,6,10 (स) 3,7,11, (द) 4,8,12 का इसमें मेष, सिंह, धनु तथा कर्क, वृश्चिक, मीन इन छः राशियों का 1 समूह है और शेष का दूसरा। यह सम्पूर्ण भूचक्र दो समूहों में विभक्त है। 12 ही लग्नों में उक्त त्रिकोणों का वर्गीकरण करने से एक भाग सू.गु. मं. व चं.गु. मं. का तथा दूसरा भाग शु.श.बु. का होता है। सूर्य व चन्द्र एक एक राशि के स्वामी होने से गु. मं. का सम्बन्ध अपने अपने त्रिकोणों से रखते हैं और यही कारण है कि सू. चं. गु. मं. परस्पर मित्र हैं। दूसरे भाग में शु. श. बु परस्पर मित्र हैं इस तरह देवी व आसुरी दो दो समूह हैं और इनसे ही इनके शत्रु मित्रादि संबंध निश्चित होते हैं। इसमें 1,5,9 धनात्मक 4,8,12 ऋणात्मक इसी तरह 3,7,11 धनात्मक और 2,6,10 ऋणात्मक त्रिकोण है। वैज्ञानिक सिद्धांतानुसार धनात्मक ऋणात्मक शक्तियों के संयोग से ही विद्युत शक्ति का उत्पादन होता है। 1+5+9=15 और 4+8+12=24 दोनों एकांक योग है 6 सम संख्यक है इधर 3+7+11=21 और 2+6+10=18 दोनों का एकांक योग 3 व 9 विषम संख्यक है। इस तरह एकांक 3,6,9, की प्रधानता क्रमशः त्रिरातृत्ति बोधक है। 3,6 राशियों का स्वामी बुध और 9 का स्वामी गुरु अर्थात् बुध (पंडित) अधिष्ठात् देव गणपति का गुरु से संयोग अर्थात् गुरु गणपति दोनों ही यंत्र साधन के मुख्य अधिष्ठाता हैं। गणपति स्मरण के साथ गुरु निर्दिष्ट पथ से ही यंत्र साधन करना चाहिये।

इनमें (लग्न) या त्रिकोण का प्रथमांक वर्तमान काल का द्योतक है। पंचम भाव (त्रिकोण का दूसरा अंक) पूर्व जन्म वा भूतकाल का और नवम भाव (भाग्यत्रिकोण त्रिकोण का तीसरा अंक) भविष्यकाल का द्योतक है। तीनों अंकों को प्रथम द्वितीय तृतीय पंक्ति के मध्य में स्थान दिया गया है।

इस तरह 1+5+9=15 का सूर्य यंत्र बना है। इसमें प्रथम पंक्ति में सूर्य के उच्चत्व को प्रधानता दी है। एक भूचक्र भ्रमण अर्थात् 12 राशि भ्रमण के बाद 15+12=27 का यंत्र देव गुरु का यंत्र बनता है। उसमें भी 5+9+(12+1) का क्रम आदि मध्य अन्त में लिया गया है। जो कि 1-5-9 के त्रिकोण को ही स्पष्ट करता है। इसी तरह 2+6+10 के त्रिकोण का योग 18 का चंद्र यन्त्र चन्द्र की उच्च राशि को प्रधान्य देकर बना है। 18+12=30 का यंत्र शुक्र का यंत्र बना है जो आसुरी गुरु का है यहां 6+10+(12+2) के त्रिकोण को ही महत्त्व दिया गया है। मंगल सेनापति है अतः तृतीय त्रिकोण 3+7+11=21 का भौम यंत्र और 21+12=33 का शनि यंत्र 7+11+(12+3) इसी त्रिकोण के महत्त्व का है। दोनों ही क्रूर व पाप हैं अतः यह हठी त्रिकोणात्मक योग है। चतुर्थ त्रिकोण 4+8+12+24 का बुध यंत्र है चूंकि प्रथम त्रिकोण (1,5,9) का यह ऋणात्मक त्रिकोण है अतः सूर्य के मित्र व सान्निध्यता प्राप्त करनेवाले बुधको इसका स्थान दिया गया है उक्त 8+12+(12+4) त्रिकोण के महत्त्व को ही उजागर करते हुए 24+12+36 का यंत्र बुध के मित्र राहू का बनाया गया है।

राहू और केतू दोनों ही छायागृह एक दूसरे के पूरक हैं, व एक ही सर्प के मुख व पुच्छ हैं अतः सूर्य चन्द्र के विलोम को ही इसमें स्थान देकर 9+(12+1) + (5+12) का यंत्र 39 का बनाया गया है।

(2) दूसरी दृष्टि से देखें तो क्रमशः सू.च.मं. बु.गु. शु श. रा के आदि नवग्रहों के यंत्रों में 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 की संख्यांकों को ही आदि पंक्ति के मध्य में स्थान देकर सभी त्रिकोणों का समावेश किया गया है।

(3) प्रत्येक ग्रह यंत्र में 3 की संख्या का क्रमशः अन्तर है। 15, 18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 उक्त तीन संख्यांक अन्तर तीन प्रकार के क्रम को परिलक्षित करता है। सभी यंत्रों के एकांकवाली तो मुख्य 3 राशियाँ (3,6,9,) आयेंगी। उक्त तीन अंकवर्तन सृजन पालन संहार के देव ब्रह्मा, विष्णु, शिव की शक्ति के द्योतक हैं वा त्रिकाल सिद्धता किंवा त्रिगुणात्मक शक्ति के प्रधान स्रोत हैं। सबसे मुख्य बात तो ग्रहों की परस्पर त्रिकोण स्थिति (ट्राइन ऐस्पेक्ट) ही शुभत्व और मित्रता की द्योतक होने से श्रेष्ठत्व का प्रतिपादन करती है अतः 3 की संख्या त्रिकोणान्तर की ही द्योतक है। आधार शक्ति के लिए भी त्रिकोण यंत्र को मुख्य माना है।

हर कुण्डली में जैसे 4 त्रिकोण बनते है वैसे ही 3 केन्द्र बनते हैं। 17-4-7-10, 2, 5, 8, 11, 3, 6, 9, 12 का. परन्तु यह (स्क्वेअर ऐस्पेक्ट) परस्पर शत्रुता की प्रतीक है जैसे 1-4-7-10 में क्रमशः मं च शु.श. का समावेश

है अत: केन्द्र स्थिति त्रिकोणेश यदि केन्द्रेश से सम्बन्ध करे तो शुभ राजयोग होता है। परन्तु त्रिकोणेश परस्पर सम्बन्ध करे तो अतीव उत्कृष्ट राजयोग बनता है। राजयोगों के बिना कुण्डलियों में त्रिकोण सम्बन्ध टूट गये हों तो वे लोग ग्रह यंत्र साधन से उप परिस्थिति को प्राप्त कर सकते हैं।

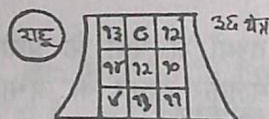
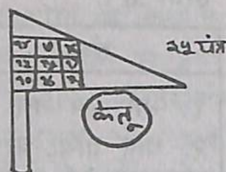
वैज्ञानिक पैरासिलीसस की मान्यता थी कि आदमी तभी बीमार पड़ता है जब उसके और उसके जन्म के साथ जुड़े हुए नक्षत्रों के बीच का तारतम्य टूट जाता है। पाइथागोरस ने "प्लेनेटरी हार्मनी" के द्वारा बताया था कि ग्रहों के बीच एक संगीत का सम्बन्ध है। इस संगीत ध्वनि की संवेदनशीलता अमूर्तरूप में मानव पर होती है। जब-जब यह तारतम्य टूटता है व्यक्ति विपत्तिग्रस्त होता है। इसी तरह जियाजारजी गिआरदी ने "कासिमक केमेस्ट्री" द्वारा सिद्ध किया था कि ग्रहों के परिवर्तन का असर मानव हृदय पर होता है। इसी तरह कृत्रिम उपग्रह छोड़े जाने के बाद यह सिद्ध हुआ कि अन्तरिक्ष में अनेक प्रकार की किरणों का जाल प्रवाहित होता है जो पृथ्वी पर टकराता है उससे सौर पृथ्वी के सभी जीव प्रभावित होते हैं। अत: (वाइब्रेशन) उच्चारण शक्ति एक ही मंत्र की बारम्बर पुनरावृत्ति से एवं मानव मन के अन्दर निहित भावों के साथ उसका तारतम्य होने से उसका प्रभाव, सूक्ष्म व स्थूल जगत पर आश्चर्यजनक परिणाम पैदा करता है।

हाल ही में पाश्चात्य वैज्ञानिक ने त्रिकोण, चतुष्कोण वर्तुलादि आकृति के घरों में बालकों को रखकर परिवर्धन का परिणाम अंकित कर यह पाया कि त्रिकोण आकृतियों के सहयोग में आनेवाले बालक ज्यादा परिपुष्ट व बौद्धिक प्रतिभा सम्पन्न हुए। इन सभी तथ्यों से यंत्र के प्रयोग, उनकी आकृतियां, उनके मंत्र व उनके तन्त्र सभी मिलकर मानव के अभाव को विगलित कर उसे यथेष्ट समृद्धि व सिद्धिप्रद होते हैं।

"कास्मिक केमेस्ट्री" द्वारा सिद्ध किया गया था कि ग्रहों के परिवर्तन का असर मानव हृदय पर होता है। इसी तरह कृत्रिम उपग्रह छोड़े जाने के बाद यह सिद्ध हुआ कि अन्तरिक्ष में अनेक प्रकार की किरणों का जाल प्रवाहित होता है जो पृथ्वी से टकराता है उससे सौर जगत और पृथ्वी के सभी जीव प्रभावित होते हैं। अत: (वाइब्रेशन) उच्चारण शक्ति द्वारा एक ही मंत्र की बारम्बार पुनरावृति से एवं मानव मन के अन्दर निहित भावों के साथ उसका तार-तम्य होने से उसका प्रभाव, सूक्ष्म व स्थूल जगत पर आश्चर्यजनक परिणाम पैदा करता है। हाल ही में एक पाश्चात्य वैज्ञानिक ने त्रिकोण, चतुष्कोण वर्ततुलादि आकृति के घरों में बालकों को रखकर परिवर्धन का परिणाम अंकित कर यह पाया कि त्रिकोण आकृतियों के सहयोग में आनेवाले बालक ज़्यादा

परिपुष्ट व बौद्धिक प्रतिभा सम्पन्न हुए। इन सभी तथ्यों से यंत्रों के प्रयोग उनकी आकृतियां, उनके मंत्र व उनके तन्त्र सभी मिलकर मानव के अभाव को विगलित कर उसे यथेष्ट समृद्धि व सिद्धिप्रद होती हैं।

यंत्र	मंत्र	तंत्र
	बीज मंत्र ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्यास्त नमः जप सं. ७०००	१. माणिक्य नग २. धातु-ताँबा या सोना रवि पुष्पयोग
	ॐ श्राँ श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः जप ११०००	१. मोती २. धातु-चाँदी
	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः जप १००००	१. मूंगा (प्रवाल) २. धातु-ताँबा या सोना
	ॐ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः जप ४०००	१. पन्ना २. धातु-सोना, कासी
	ॐ ज्राँ ज्रीं ज्रौं सः गुरवे नमः जप १९०००	१. पुखराज २. धातु-सोना
	ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः जप १९०००	१. हीरा २. धातु-चाँदी या सोना
	ॐ खाँ खीं खौं सः शनैश्चराय नमः जप २३०००	१. नीलम २. धातु-लोहा

	ॐ भ्राँ भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः जप १८०००	१. लहसुनिया २. धातु-लोहा या अभ्रक
	ॐ प्राँ प्रीं प्रौं सः केतवे नमः जप १७०००	१. वैडूर्य २. धातु-लोहा

१. बीज मंत्रों के बाद ॐ भूर्भुवः स्व ॐ लगाकर मूल वैदिक ग्रह मंत्र जोड़कर अन्त में इसी का विलोम लगाकर भी जाप किया जाता है।
जैसे-ॐ **ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूभुर्वः स्वः ॐ आकृष्णेनरजस्स वर्तमानो निवेशयन्नमृतमर्त्य च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानिपश्चन्॥ ॐ स्वः भवः भूः ॐ सः ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः ॐ सूर्याय नमः।**
नवग्रह मंत्र सभी कर्मकाण्ड की पुस्तकों में वेदोक्त व पुराणोक्त मिलते हैं।

२. प्रत्येक ग्रह के वार के दिन शुभ मुहूर्त में उस ग्रह का जप अभीष्ट फल प्रद होता है।

३. प्रत्येक ग्रह का यंत्र उस ग्रह की धातु का बना हो तो श्रेष्ठ रहता है।

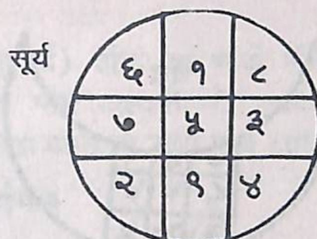
४. यंत्र के प्रतिदिन पूजन से व दर्शन से भी अभीष्ट सिद्धि होती है।

५. यंत्र बना लेने के बाद उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करा लेना चाहिये। तभी उसका पूजन फलद होता है।

६. वार व्रतों में यंत्र गणनांक के अनुसार वार ज्ञात करने से भी सफलता मिलती है व दोष शामित होते हैं।

सिद्ध सूर्य यन्त्र

सूर्य यन्त्र ताम्बे या सोना (स्वर्ण) धातु में बनता है। इस यन्त्र को बनाने के लिए सबसे उत्तम मुहूर्त रवि योग या रविपुष्या मृत योग होता है। इस यन्त्र के नीचे सवा पांच रत्ती का "माणक रत्न" प्राण प्रतिष्ठित करके लगाना चाहिए।



इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए सूर्य के मन्त्र के सात हज़ार जप करने चाहिएं। जप के दशांत का हवन, मार्जन, तर्पण, एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए तान्त्रिक व वैधिक मन्त्र इस प्रकार है।

ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मतर्यच।
हिरण्ययेन रविता स्थेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

तांत्रिक मन्त्रः—

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

तन्त्र प्रयोग : अमूल्य रत्न के अभाव में शास्त्रों में वनौषधियों, वनस्पतियों के वर्णन भी मिलते हैं।

"**मूलधार्य त्रिशूल्याः**" (विल्व वृक्ष) सोमवार को इस वृक्ष की जड़ प्रातः 8 बजे लाल डोरा डालकर "ह्रीं हंस" इस मंत्र से।। बार अभिमंत्रित करके दायें हाथ में धारण करें, तो सूर्य कृत बाधा शान्त होती है। स्थानान्तरणके लिये बायें हाथ में बांध लेवें तो सुनिश्चित स्थानान्तरण होता है। पतिपत्नी के मनमुटाव को भी यही जड़ी दूर करती है।

विशेष : सुवर्ण धातु की जगह यह यन्त्र चांदी में भी बनाया जा सकता है तथा बहुमूल्य माणक की जगह सिलोनी माणक, रातड़ी, या लालडी नामक उपरत्न का भी प्रयोग किया जा सकता है। पाठक गण चाहेंगे तो दोनों ही प्रकार के यन्त्र हमारे कार्यालय से सीधा सम्पर्क प्राप्त कर सकते हैं। मेश राशिवाले एवं सिंह लग्नवालों के लिए यह सूर्य यन्त्र विशेष रूप से उन्नतिदायक एवं सफलतादायक रहता है।

सिद्ध चन्द्र यन्त्र

चन्द्र यन्त्र शुद्ध चांदी में बनाना चाहिए इसके लिए सर्व शुद्ध मुहूर्त सोमपुष्य है अथवा कोई भी पुष्य नक्षत्र को चन्द्र बना सकते हैं इस यन्त्र के लिए चन्द्र यन्त्र के ऊपर सवा दो रत्ती का मोती प्रतिष्ठित करके लगाना चाहिए।



इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए चन्द्रमन्त्र के 11 हज़ार जप करने चाहिएं। उसके दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। चन्द्र यन्त्र सिद्ध करने के लिए तांत्रिक एवं वैदिक मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ इमन्देवा असपत्क्न ठं सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महतेज्यैष्ठयायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।

इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोमीराजा सोमोस्म्माकम्ब्राह्मणाना ठं राजा॥

तांत्रिक मन्त्र—

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं सः चन्द्राय नमः।

तन्त्र प्रयोग—

अमूल्य रत्न के अभाव में शास्त्रों में वनौषधियों, वनस्पतियों के वर्णन भी मिलते हैं।

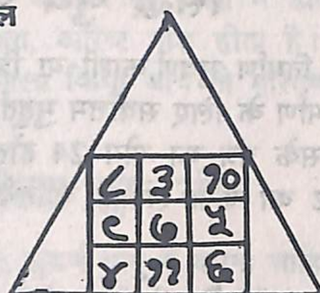
"विगुणेक्षीरिका" (खीरणी) के वृक्ष की जड़ रविवार को 12 से 3 बजे के मध्य दिन में लाकर माला के मणियों की तरह बनाकर, सफेद डोरों में डालकर कंठ में बांध लें, "वं डं लं" मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करने में चन्द्र कृत अरिष्ठ शान्त हो जाते हैं। यदि प्रतिदिन पंचगव्य दिया जाये तो, केन्सर सम्बन्धित रोगों से भी फायदा होता है। वज़न 11 रत्ती होना चाहिए। यह जडी माता-पुत्र के मनमुटाव को दूर करती है।

विशेष—

चन्द्र यन्त्र कर्क राशि एवं कर्क लग्न वालों को धारण करना चाहिए। जिनकी कुण्डली में बालारिष्ट योग हो उन बच्चों के गले में 8 वर्ष तक यह यन्त्र पहनाना चाहिए। इस यन्त्र से मानसिक शान्ति एवं चिन्ता दूर होती है।

सिद्ध मंगल यंत्र

मंगल यन्त्र सोना (सुवर्ण) तांबा या चांदी में बनाया जा सकता है। इसके लिए सर्व शुद्ध मुहूर्त भोम अश्वनी योग अथवा भोम पुष्य होता है। सिद्ध भोगम यन्त्र के नीचे सवा आठ या सवा पांच रत्ती का मूंगा प्राण प्रतिष्ठित करके लगाना चाहिए।



इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए मंगल यन्त्र के दस हज़ार वैदिक या तांत्रिक मन्त्रों को जप करना चाहिए। उसके दशांश का मार्जन, तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। मंगल यन्त्र को सिद्ध करने के लिए तांत्रिक एवं वैदिक योग इस प्रकार है—

ॐ अग्निर्ममूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्म्।
अपा ठ रेता ठ सिजिन्वति॥

तांत्रिक मंत्र—

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

विशेष यन्त्र मेष एवं वृश्चिक लग्न व राशि वालों को धारण करना चाहिए। जिनकी कुण्डली मंगलीक हो उनके मंगलीक दोष को यह यन्त्र दूर करता है।

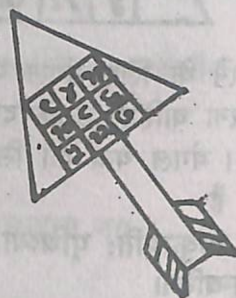
अविवाहित कन्याओं के लिए यह यन्त्र अमृततुल्य उपादेय व अमूल्य औषधि है जहां तक हो सके इस यन्त्र में मूंगा त्रिकोणात्मक ही लगाएं। पाठकगण

चाहें तो सब प्रकार से सिद्ध यह यन्त्र सीधा कार्यालय से भी प्राप्त कर सकते हैं। रत्न के अभाव में निम्न औषध का प्रयोग भी शास्त्र में दिया गया है।

"मूलमिन्दौ जिह् भें" (नाग जिह्वा) मंगलवार को इस वृक्ष की जड़ 3 से 7 बजे के मध्य लायें। एवं "वं क्षं ले डं" बीज मंत्र से 51 बार अभिमंत्रित करके माला मणियों की तरह 13 रत्ती वज़न का बना कर लाल डोरा में पुरोकर बाईं भुजा पर धारण करें तो भौमकृत अरिष्ट निवृत्ति के साथ, चर्मरोगों में भी फायदा होता है। यदि प्रतिदिन भौम कावेदौक्त मंत्र के एक हज़ार जाप 41 दिन तक किये जायें तो भ्रातृवर्ग के मनमुटाव व हिस्टीरिया रोग दूर होता है।

सिद्ध बुध यंत्र

बुध यंत्र का निर्माण सुवर्ण,काशी या त्रिलो में करना चाहिए। रविपुष्य या बुधपुष्य इस निर्माण के लिए सर्वोत्तम मुहूर्त है। बुध यंत्र बाण की आकृति में होता है तथा इसके यंत्र का योग 24 होता है। तथा यंत्र के नीचे सवा पांच रत्ती या केरट का पन्ना लगाना चाहिये।



इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए बुध मंत्र के चार हज़ार जाप करने चाहिएं। तथा उस दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। बुध के वैदिक व तांत्रिक मंत्र इस प्रकार है—

ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृतित्वमिष्टापूर्तेषु ठं सृजेथाममंच।
अस्मिन्सधास्त्थे अद्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत॥

तांत्रिक मन्त्र

ॐ ब्रां ब्री ब्रौं बुधाय नमः।

विशेषः—

मिथुन एवं कन्या राशि व लग्न वालों के लिए यह यंत्र बहुत उपयोगी है। इस यंत्र के धारण करने से बुद्धि तेज़ होती है तथा व्यक्ति के व्यापार व आय के स्त्रोत बढ़ते हैं। पन्ना महंगा होता है इस के अभाव में "ऑनेक्ष" जबरजद, मर्गज व फिरोजा भी धारण कर सकते है। यह दोनों ही प्रकार के यन्त्र हमारे कार्यालय से निवेदन करके प्राप्त किये जा सकते हैं।

तंत्र प्रयोग—

"वृद्धारौश्चमूलम्" (विधायरा) वृक्ष की जड़ जिसका वजन 18 रत्ती हो बुधवार को 4 से 6 के मध्य में लावे, "उं उं उं" मंत्र 121 बार अभिमंत्रित करके माला मणियों की तरह, बनाकर हरा डोरा में डालकर, कंठ में नाभि तक लटकती पहनें तो बुधकृत, अरिष्ट नाश होता है। साथ ही यदि बुध मंत्र का जाप, प्रति दिन दो माला किया जाये तो मस्तिष्क शुद्धि व मुकदमों में विजय भी होती है।

सिद्ध गुरु यंत्र

गुरु यंत्र का निर्माण शुद्ध सुवर्ण धातु में करना चाहिए। सुवर्ण के अभाव में चांदी भी काम में ली जा सकती है। इसके लिए सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त गुरु पुष्यामृतयोग है। इस यंत्र के नीचे सवा पांच या सवा नौ रत्ती का प्राण प्रतिष्ठित करके लगाना चाहिए।

इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए गुरु मंत्र के 19 हज़ार जाप करने चाहिएं। जप के दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए वैदिक व तांत्रिक मन्त्र इस प्रकार है-

ॐ बृहस्पते अतियदर्या अर्हाद्दयुमदविभातिक्रतु मज्जनेषु।
यद्दीयच्छवस ऋतप्रजाततदसमासु द्रविणेन्देहि चित्रम्।।

तांत्रिक मन्त्रः—

ॐ ज्राँ ज्रीं जौं सः गुरवे नमः।

विशेषः—

इस यंत्र के निर्माण हेतु बहुमूल्य पुखराज की जगह सुनेला, लेमनटोपाज अथवा संगमरियम सुलेमानी हकीक पत्थर धारण कर सकते हैं। बहुमूल्य रत्न एवं अल्पमूल्य रत्न दोनों ही प्रकार के यन्त्र कार्यालय से निवेदन करके प्राप्त किये जा सकते हैं।

तंत्र प्रयोगः—

रत्न के अभाव में "भार्गी" (भौरगी) वृक्ष की जड़ गुरुवार को 1 बजे से 2 बजे तक लावें "ऐं वं ह्रीं" मंत्र से 51 बार अभिमंत्रित करके सफेद धागे में माला मणियों की तरह बनाकर, बायें भुजा पर धारण करने से गुरुकृत दोष की निवृत्ति होती है। साथ ही यदि इस ग्रह का वेदोक्त मंत्र की दो माला प्रतिदिन जाप किया जाये तो स्त्री के गर्भ सम्बन्धी व पुरुष की प्रमेह सम्बन्धी बीमारियां भी ठीक हो जाती है।

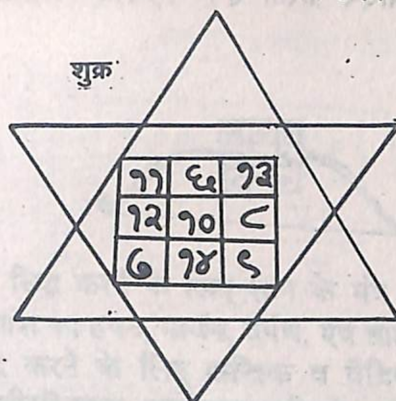
धनु व मीन राशि एवं लग्न वालों को गुरु यंत्र बहुत ही उन्नति व लाभदायक रहता है। गुरु यंत्र व्यक्ति में विद्या बल एवं नैतृत्व शक्ति को बढ़ाता है। यह तन्त्र राजनैतिक ताकत एवं पद प्रतिष्ठा प्राप्त करने में बहुत ही सहायक सिद्ध होता है।

गुरु

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

सिद्ध शुक्र यंत्र

शुक्र यंत्र सफेद सोना, प्लेटोनियम या चांदी में बनाया जा सकता है। किसी भी पुष्यनक्षत्र गुरु या रवि पुष्य को बनाना उत्तम रहता है। इस यन्त्र के नीचे सवा पांच रत्ती या औंस का हीरा लगाना चाहिए। यह यंत्र सितारे की आकृति में होता है। तथा यन्त्रात्मक कोष्ठकों की कुल जोड़ संख्या 30 होती है।



इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए शुक्र मन्त्र के 19 हज़ार जाप करने चाहिए। जबकि दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। यन्त्र को सिद्ध करने हेतु वैदिक व तांत्रिक मन्त्र इस प्रकार है–

तान्त्रिक मंत्र

ॐ द्री द्रौ सः शूक्राय नमः।

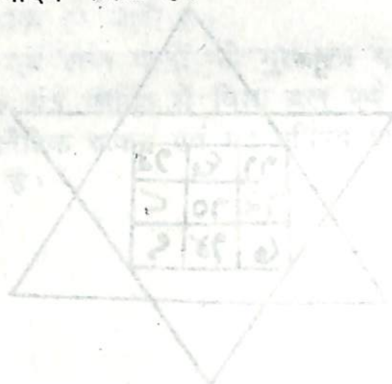
विशेष

शुक्र यंत्र में हीरे की जगह स्फटिक अमरीकन डायमण्ड या जर्किन से काम लिया जा सकता है। क्योंकि हीरा पहनना आम आदमी के बस की बात नहीं वृष व तुला राशि एवं लग्न वालों को अपनी उन्नति के लिए शुक्र यंत्र धारण करना चाहिए। यह यन्त्र व्यक्ति के व्यापार व आकर्षण शक्ति को बढ़ाता है। तथा विदेश यात्रा के लिए विशेष रूप से सहायक यन्त्र है।

तंत्र प्रयोग :

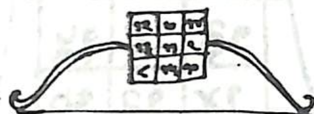
अमूल्य रत्न के अभाव में शास्त्रों में वनौषधियों, वनस्पतियों के वर्णन भी मिलते हैं।

"**सिंह पुच्छस्यमूलम्**" (मंजीठ) शुक्रवार की रात्रि में 1 से 11 के मध्य में "लं डं वं" बोलकर इस वृक्ष की जड़ 14 रत्ती के लगभग लाएं एवं माला मणियों की तरह बनाकर, सफेद धागे में पुरोकर बायें हाथ में बांध कर गुग्गल धूप देता हुआ, "ऐं क्ष व" बीजमंत्र बोलते जायें 21 बार शुक्रकृत अरिष्ट निवृत्ति होती है साथ ही यदि शुक्र का वेदोक्त मंत्र जाप 3 माला प्रतिदिन किया जाये तो भूत प्रेतादि बीमारी के साथ-साथ हार्ट ट्रबल से भी मुक्ति होकर भाग्योदय करती है।



सिद्ध शनि यंत्र

शनि यंत्र त्रिलो या लोहे में बनाना चाहिए। इसके लिए सबसे उत्तम मुहूर्त शनिरोहिणी अमृत सिद्ध योग एवं शनिपुष्य है। यंत्र के सभी कोष्ठात्मक संख्यों का कुल योग 33 आता है। धनुषकारीय इस यंत्र के नीचे सवा पांच रत्ती का नीलम लगाना चाहिए।



इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए शनि के मंत्र के 23 हज़ार जाप करने चाहिएं। जप के दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण, एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए तान्त्रिक व वैदिक मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपोभवन्तुपीतये।

शय्योरभिसवन्तुनः॥

तान्त्रिक मन्त्रः—

ॐ खाँ खी खौ सः शनैश्चराय नमः।

विशेष:—मकर व कुम्भ राशि एवं लग्नवालों को शनियन्त्र अवश्य धारण करना चाहिए। नीलम महंगा रत्न है इसके अभाव में स्टार निली, जामुनिया, कटेला, धुनेला, ब्लैक स्टार, लाजावल, गनमेटल इत्यादि धारण किये जा सकते हैं। रत्न के अभाव में घुडनाल व शनिमुद्रिका भी धारण की जा सकती है। इस यन्त्र के धारण करने से व्यक्ति को अचानक सट्टा या शेयर में लाभ हो सकता है। एवं शनि सम्बन्धी सभी दोष दूर हो जाते हैं।

तन्त्र प्रयोगः— "विच्छोलम्" (अम्लवेत) वृक्ष की जड़ जिसका वज़न 18 रत्ती हो, शनिवार को दोपहर में लाकर "वं डं क्षं पं हं" बीजमंत्र से 51 बार अभिमंत्रित कर माल मणियों की तरह बनाकर काले धागे में बांधकर पैर पर बांधें। या कंठ में धारण करें। इसमें बिच्छूजड़ी भी जिसके कांटे हों कांटा लगने से जैसे बिच्छू काटता है उसकी जड़ भी उतना ही काम करेगी। यदि शनि ग्रह का पुराणोक्त मंत्र प्रतिदिन 1000 हजार जाप किया जाये। शनि कृत अनिष्ट दूर करने के साथ यह प्रयोग एक्सीडेंट एवं लकवा की बीमारी से भी मुक्त कर देता है।

सिद्ध राहु यंत्र

राहु यंत्र लोहा त्रिलो या अभ्रक धातु में बनाया जा सकता है। किसी भी पुष्य नक्षत्र के दिन सुरपाकार आकृति में बनाना चाहिए। इस यन्त्र के सभी कोष्ठकों की संख्या का योग 36 होता है। इस यंत्र के नीचे सवा पांच रत्ती का लहसुनिया लगाना चाहिए।

राहू

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए राहु के मन्त्रों का 18 हज़ार जप करने चाहिएं। जप के दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण, एवं ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए तांत्रिक व वैदिक मन्त्र इस प्रकार है—

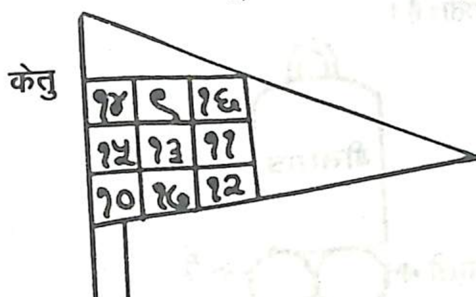
ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा।
कयाशचिष्ठयावृता॥
तांत्रिक मन्त्र
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
विशेषः—

यह यन्त्र राहु जनित सभी दोषों को शान्त करता है। जिनकी जन्म कुण्डली में राहु की महादशा या अन्तर दशा चल रही हो, उन्हें यह यंत्र विशेष रूप से धारण करना चाहिए।

"**मलयजम्**" (**चन्दन**) वृक्ष की जड़ से "ऐं ह्रीं वं" बीज मंत्र बोलकर बुधवार को सांय 7 व 9 के मध्य लाई जाये, जिसका वजन 13 रत्ती हो माला मणियों की तरह छिद्र करके नीले डोरा में डालकर "वं डं लं" बीज मंत्र से 31 बार अभिमंत्रित करके कंठ में धारण करने से राहुकृत अनिष्ट दूर होता है। यदि तंत्रोक्त मंत्र राहु का दो हजार प्रतिदिन जाप करके इसको बायें भुजा पर बांधा जाये तो राजयोग एवं परीक्षा में सफलता एवं विवाह में सहायता मिलती है।

सिद्ध केतु यंत्र

केतु यंत्र लोहा या त्रिलोह या मिश्रित धातु में बनाया जा सकता है। इसे किसी भी पुष्य नक्षत्र के दिन ध्वजाकार आकृति में बनाना चाहिए। इस यन्त्र के सभी कोष्ठकों की संख्या का योग 39 होता है। इस यंत्र के नीचे सवा पांच रत्ती का गोमेद (वैदूर्य) लगाना चाहिए।



इस यन्त्र को सिद्ध करने के लिए केतु के मंत्रों का 17 हज़ार जाप करना चाहिए। जबकि दशांश का हवन, मार्जन, तर्पण एवं ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस यंत्र को सिद्ध करने के लिए वैदिक व तांत्रिक मन्त्र इस प्रकार है:—

ॐ केतुंकृष्ण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे।
समुषद्दिभरजायथाः॥

तांत्रिक मन्त्रः—

ॐ प्राँ प्री प्रौ सः केतवे नमः।

विशेषः—

गोमेद के अभाव में इसका उपरत्न तुसा सा साफी भी काम लिया जा सकता है। यह यन्त्र केतुजन्य सभी उपद्रव व दोषों को शान्त करता है। जिन लोगों की जन्म कुण्डली में केतु की महा दशा या अन्तर दिशा चल रही हो उन्हें यह यन्त्र विशेष रूप से धारण करना चाहिए।

तंत्र प्रयोगः— "अश्वगाधाम्" (असगन्ध) पेड़ की जड़ बुधवार को प्रातः 8 से 11 के मध्य 13 रत्ती की लाकर, (क्रीं क्रां औं) मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके, काले डोरे में माला मणियों की तरह डालकर, बायें भुजा पर बांधने से केतु कृत अरिष्ट दूर होते हैं। यदि वेदोक्त केतु मंत्र 21 बार प्रतिदिन जप करके कमर में धारण करें तो वायु-सम्बन्धी, गण्ठ-सम्बन्धी, मूत्र-सम्बन्धी बीमारी व पत्थरी-सम्बन्धी बीमारी भी ठीक होती है।

रत्न जड़ित लक्ष्मी यंत्र

जिन लोगों की जन्म कुण्डली में मंगल व चन्द्र की युति हो, अथवा दोनों एक दूसरे के सामने हों अथवा परस्पर केन्द्र में हों तो उन को यह यन्त्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह यंत्र शुद्ध चांदी में बनता है तथा उसमें सवा चार रत्ती का मूंगा एवं सवा चार रत्ती का मोती संयुक्त रूप से ''बीसा यंत्र'' के साथ जड़ा जाता है।



बीसा यंत्र में ये दोनों रत्न ''लक्ष्मी योग'' को प्रबल करते हैं। बीसा यन्त्र में कोई भी रत्न प्रतिकूल कार्य नहीं करता और जातक को वांच्छित धन लाभ देता है। जिन लोगों के हाथ में पैसा नहीं टिकता एवं जिन लोगों के धनस्थान में राहु बैठा हो, धन के घड़े में छेद हो, उन लोगों को यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अनुभूत प्रयोग है कि कुण्डली जन्म दुर्बल योग, दरिद्रयोग इस यन्त्र के धारण करने से नष्ट हो जाते है। संकट योग धनहीन योग एवं केमद्रुम योग में जन्म लेने वाले जातकों के लिये यह यन्त्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है।

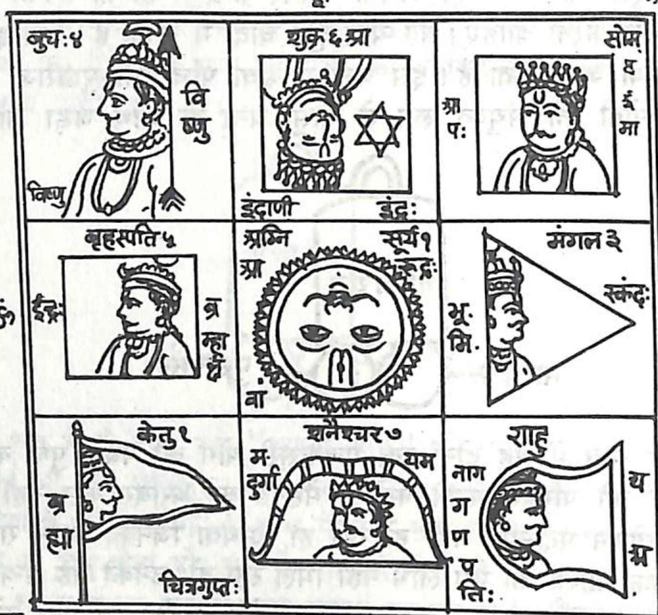
रत्न जड़ित गजकेसरी यन्त्र

जिन लोगों की जन्म कुण्डली में गुरु व चन्द्र की युति हो, अथवा दोनों एक दूसरे के सामने हों अथवा परस्पर केन्द्र में हों तो उनको यह यन्त्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह यन्त्र शुद्ध चांदी में बनता है। तथा इसे सुवर्ण में भी बनाया जा सकता है। इस यन्त्र में सवा पांच रत्ती पुखराज एवं सवा चार रत्ती मोती को संयुक्त रूप से बीसा यन्त्र के साथ जड़ा जाता है।



बीसा यन्त्र में यह दोनों रत्न गजकेसरी योग को पबल पुष्ट करते हैं। जिन लोगों को परिश्रम करने पर भी मेहनत का बराबर फल नहीं मिलता जिनका प्रमोशन पदोन्नति नहीं हो रही हो, अथवा जिनको अपने राजनैतिक व सामाजिक महत्त्व का पूरा लाभ नहीं मिल रहा हो, उनको यह यन्त्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अनुभूत प्रयोग है कि इस यन्त्र को धारण करने से व्यक्ति का प्रभाव, पराक्रम, प्रभुत्व बढ़ जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को शीघ्र प्रभावित करके अपना कार्य दूसरों से निकलवाने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। महत्वकांक्षी लोगों के लिए यह यन्त्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है जो जातक की कार्यकुशलता को कई गुना बढ़ा देता है। जिनकी जन्म कुण्डली में विवाहमेलापक के समय गणदोष या नाड़ी दोष बनता है वे दम्पत्ति इस यन्त्र को अवश्य धारण करें। इससे पति-पत्नी के बीच मधुर सामंजस्य व प्रेम स्थापित हो जाता है तथा वैवाहिक जीवन पूर्ण सुखमय हो जाता है। इस यन्त्र को धारण करते समय संकल्प में अपनी मनोकामना का उल्लेख अवश्य करें। क्योंकि यह यन्त्र उद्योग एवं व्यापार में भागीदारों के मध्य व्याप्त मनोमालिन्यता को भी दूर करता है।

सिद्ध नवग्रह यन्त्र

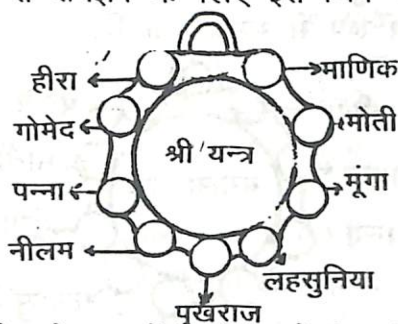


इस नवग्रह यन्त्र में सभी नवग्रहों का वैदिक व पौराणिक विग्रह दिया हुआ है। इस यन्त्र को लाल मखमल के फ्रेम में जड़वा कर पूजन कक्ष में स्थापित करना चाहिए तथा इस यन्त्र का नित्य पूजन धूप दीप व नैवेद्य के साथ करना चाहिए तथा जिस ग्रह की दिशा चल रही हो उस ग्रह पर पहले चन्दन की बिन्दी व पुष्प चढ़ाना चाहिए व बाद में चन्दन व पुष्प चढ़ाना चाहिए। इससे सभी ग्रह पूजित व हर्षित रहते हैं तथा व्यक्ति को किसी भी ग्रह का कुप्रभाप स्पर्श नहीं कर पाता। इस नवग्रह का पूजन करते समय निम्न मन्त्र का पाठ करना चाहिए।

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी।
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः।
सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु॥

नवरत्न जड़ित श्रीयन्त्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण में निर्मित श्रीयन्त्र के चारों और यदि नवरत्न जड़ दिये जायें तो यह श्रीयन्त्र नवरत्न जड़ित श्रीयन्त्र कहलाता है। परन्तु ध्यान रखने योग्य बात यह है कि इस श्रीयन्त्र के शीर्ष बिन्दु पर सूर्य का रत्न माणक आना चाहिए। और शेष सभी रत्न विनसोत्तरी दिशा क्रम से जड़ित होने चाहिए। यथा— "आचंभैराजीतशबुकेशु" यह इसका सूत्र है इसका मतलब है कि आ= आदित्य (माणक) चं= चन्द्रमा (मोती), मौ= मंगल (मूंगा), रा= राहु (लहसुनिया), जी= जीव (पुखराज), श = शनि (नीलम), बु = बुध (पन्ना), के = केतु (गोमेद), शु = शुक्र (हीरा) इस यन्त्र को विशेष रूप से समझने के लिए इस चित्र को देखें।

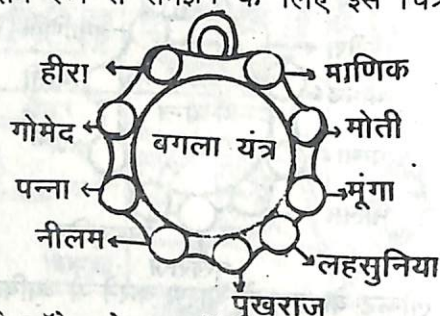


इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे लक्ष्मी उसके साथ है नवग्रह श्रीयन्त्र से बंधे हुए होने के कारण ग्रहों की प्रतिकूल दशा का असर धारण करने वाले व्यक्ति पर नहीं होता। गले में होने के कारण यह यन्त्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यन्त्र से स्पर्श होकर जो जल बिन्दु शरीर को लगते हैं वह गंगा जल के समान पवित्र हो जाते हैं। अपरोक्ष रूप से एक प्रकार से व्यक्ति का नित्य प्रति रत्न स्नान भी हो जाता है। इसलिए यह सबसे पावरफुल श्रीयन्त्र कहलाता है। जिस प्रकार अमृत से ऊपर कोई औषधि नहीं उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस श्रीयन्त्र से बढ़िया अन्य कोई यंत्र संसार में नहीं है। इस प्रकार के श्रीयन्त्र शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके हमारे कार्यालय में बनाये जाते हैं।

नवरत्न जड़ित बगला यन्त्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण में निर्मित बगला यन्त्र के चारों ओर यदि नवरत्न जड़ दिये जायें तो यह बगला यन्त्र नवरत्न जड़ित बगला यन्त्र कहलाता है। परन्तु ध्यान रखने योग्य बात यह है कि इस बगला यन्त्र के शीर्ष बिन्दु पर सूर्य का रत्न माणिक आना चाहिए। और शेष सभी रत्न विनशोत्तरी दशा क्रम से जड़ित होने चाहिए। यथा— "आचंभौराजीशबुकेश" यह इसका सूत्र है मतलब है कि आ= आदित्य (माणक) चं= चन्द्रमा (मोती), भौ= मंगल (मूंगा), रा= राहु (लहसुनिया), जी= जीव (पुखराज), श = शनि (नीलम), बु = बुध (पन्ना), के = केतु (गोमेद), शु = शुक्र (हीरा) इस यन्त्र को विशेष रूप से समझने के लिए इस चित्र को देखें।



इस यन्त्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति अपने शत्रु को नष्ट करने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे कोई गुप्त शक्ति उसके साथ चल रही है। इस यन्त्र को हर समय नहीं पहनना चाहिए। रात्रिकाल में, गृहस्थ के समय इसको उतार लेना चाहिए। इस यन्त्र को पहनकर व्यक्ति यदि कोर्ट में खड़ा हो जाये और मन में बगलामुखी यन्त्र का उच्चारण करता रहे तो प्रतिकूल मजिस्ट्रेट (न्यायाधीश) भी उसके खिलाफ फैसला नहीं दे सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि इसे पहन कर व्यक्ति यदि जलती आग में भी कूद जाये एवं शत्रुओं के बीच में भी घुस जाये तो उस का बाल बांका नहीं होता है, यह अनुभूत है।

श्री शतचण्डी-विधि और सप्तशती-महायन्त्र

किसी शिवालय अथवा दुर्गा-मन्दिर के निकट एक सुन्दर मण्डप बनाएं, जिसमें दरवाज़ा और वेदी भी बनी हो। उसके चारों ओर तोरण (बन्दनवारें) लगाएं और ध्वजारोपण भी करें। मण्डप के अन्तर्गत पश्चिम भाग या मध्य भाग में होमकुण्ड बनाएं। स्नान और नित्य-क्रिया से निवृत्त हो दस उत्तम ब्राह्मणों का वरण करें। वे ब्राह्मण जितेन्द्रिय, सदाचारी, कुलीन, सत्यवादी तथा बोधयुक्त हों। साथ ही सलज्ज (अवैध कर्म करने में सदा ही लजाने वाले) दयालु और प्रतिदिन दुर्गासप्तशती का पाठ करने वाले हों। उन्हें विधिपूर्वक (पाद्म अर्ध्य, आचमनीय के अनन्तर) मधुपर्क निवेदन करके सुवर्ण-वस्त्रादि दानपूर्वक जप के लिये आसन और माला दें तथा हविष्य भोजन अर्पण करें। वे विचारशील ब्राह्मण हविष्यान्न भोजन तथा भूमि पर ही शयन करें और मन्त्रार्थ-चिन्तन में चित्त लगाये हुए पृथक्-पृथक् मार्कण्डेयपुराणोक्त चण्डिकास्तव का दस-दस बार पाठ करें। इसके अतिरिक्त प्रत्येक को एक-एक हजार नवार्णमन्त्र का जप करना चाहिये।

यह जप सम्पुट पाठ से [1] पृथक करना उचित है। एक सहस्र जप प्रत्येक ब्राह्मण के लिये अनिवार्य है। शक्ति सम्प्रदाय वालों का कथन है कि शतचण्डी का आरम्भ ऐसे समय से करना चाहिये, जिससे कि कुल सौ पाठ अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी अथवा पूर्णिमा- इन्हीं तिथियों में समाप्त हों।

इस अनुष्ठान में यजमान को नौ कुमारियों का पूजन करना चाहिये, जो कि दो वर्ष से लेकर दस वर्ष तक की उम्र वाली हों। उनके नाम क्रमश: निम्न प्रकार से हैं—(1) कुमारी (2) त्रिमूर्ति, (3) कल्याणी, (4) रोहिणी, (5) कालिका, (6) शाम्भवी, (7) दुर्गा, (8) चण्डिका और (9) सुभद्रा।

इन्हीं नाम-मंत्रों से इनकी पूजा करनी चाहिये। इनमें हीनांगी, अधिकांगी, कुष्ठ और फोड़ोंवाली, अन्धी, कानी, कुरूपा, केकरी (ऐंचातानी), कुबड़ी, अधिक रोमवाली, दासी से उत्पन्न हुई तथा रोगिणी—ये कन्याएं वर्जित हैं।

अपने सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि के लिये ब्राह्मण-कन्या का, यश के लिये क्षत्रिय-कन्या का, धन के लिये वैश्य-कन्या का और पुत्र के लिये शूद्र-कन्या का पूजन करना चाहिये।

---

1. प्रत्येक मन्त्र के आदि-अन्त में किसी बीज अथवा अन्य मन्त्र का उच्चारण करने से वह मन्त्र सम्पुटित होता है।

गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, भक्ष्य, भोज्य तथा वस्त्राभरणों से अपनी शक्ति के अनुसार कन्याओं का पूजन करे(दो वर्ष की उम्रवाली कन्या कुमारी कही गयी है, तीन वर्ष वाली त्रिमूर्ति, चार वर्ष वाली कल्याणी, पाँच वर्ष वाली रोहिणी, छः वर्ष वाली काली, सात वर्ष वाली चण्डिका, आठ वर्ष वाली शाम्भवी, नौ वर्ष वाली दुर्गा और दस वर्ष की उम्रवाली सुभद्रा कहलाती है। नाम-मन्त्रों से ही इनकी पूजा करनी चाहिये।[1]

इसका आवाहन करने के निमित्त शंकरजी का कहा हुआ मन्त्र बतलाया जा रहा है "मैं मन्त्राक्षरमयी, लक्ष्मीरूपिणी, मातृरूपाधारिणी तथा साक्षात नव-दुर्गास्वरूपिणी कन्या का आवाहन करता हूँ।" इस समय कुमारी आदि कन्याओं के पूजन का मन्त्र बतलाता हूँ--- "हे कौमारि! हे जगदम्ब! तुम जगत् की पूजनीय, वन्दनीया और सर्वशक्तिस्वरूपिणी हो, मेरी की हुई पुजा को अगीकर करो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। मैं त्रिपुररूपिणी, त्रिपुर की आधारभूता, तीन वर्ष की अवस्थावाली, ज्ञानमयी, त्रिभुवनवन्दिता भगवती त्रिमूर्ति की पूजा करता हूँ। जो कलारूपिणी होने पर भी कलातीत हैं, उस करुणाभरे हृदय वाली शिवरूपा कल्याणजननी भगवती कल्याणी का मैं पूजन करता हूँ। अणिमा आदि गुणों की आश्रयभूता, अकारदि अक्षरमयी, अनन्तशिक्तिसम्पन्ना, लक्ष्मीरूपा रोहिणी की मैं आराधना करता हूँ। जो इच्छानुसार विचरण करने वाली सुन्दरी, कान्तिमती, कालचक्रमयी, कामदायिनी और करुणा करने में उदार है, उस कालिका भवानी की मैं पूजा करता हूँ। जो अत्यन्त कुपित, वीरभाव से युक्त, चण्ड, मायाविनी तथा चण्ड-मुण्ड नामक दैत्यों का नाशकरने वाली है, उस प्रचण्ड पराक्रमवाली चण्डिका देवी की मैं अर्चना करता हूँ। सदा आनन्द देने वाली, शान्तिमयी, सर्वदेववन्दिता, सर्वभूतमयी, लक्ष्मीरूपा शाम्भवी की मैं आराधंना कर रहा हूँ। दुर्गम और दुस्तर कार्य में सांसारिक कष्टों को नष्ट करने वाली, दुर्गतिनाशिनी दुर्गा की मैं भक्तिपूर्वक पूजा करता हूँ। जिसकी सोने की-सी आभा है, जो परम सुन्दरी तथा सुख-सौभाग्य को देने वाली है, उस कल्याणजननी सुभद्रा देवी की मैं पूजा करता हूँ।" इन पुराणोक्त मंत्रों द्वारा कन्याओं का पूजन करना चाहिये (इति कुमारी-पूजा)

अथ महायन्त्रादि-पूजन प्रकारः—

वेदी पर सुन्दर सर्वतोभद्रमण्डल बनाकर उस पर विधिपूर्वक कलश-स्थापन करें और कलश के ऊपर भगवती पार्वतीजी का आवाहन करें। उनके

---

1. जैसे कुमारी की पूजा "कुमार्यै नमः" इस मन्त्र से करनी उचित है, इसी प्रकार अन्य कन्याओं के नाम से ही पूजन विहित है।

समक्ष में नाना उपचारों द्वारा कन्याओं, ब्राह्मणों तथा नवार्णमन्त्र द्वारा आवरण-देवताओं का पूजन करे। फिरसम्प्रदाय के अनुसार ॐ कारपीठ, पूर्णपीठ और कामपीठ का अर्चन करें। पीठ की पूर्वादि दिशाओं में गणेश आदि चार की स्थापना करे। उनके नाम ये हैं—गणेश, क्षेत्रपाल, दो पादुकाएँ और तीन बटुक। आग्नेय आदि चारों कोणों में जया, विजया, जयन्ती और अपराजिता--- इन चार देवियों की आराधना करें।

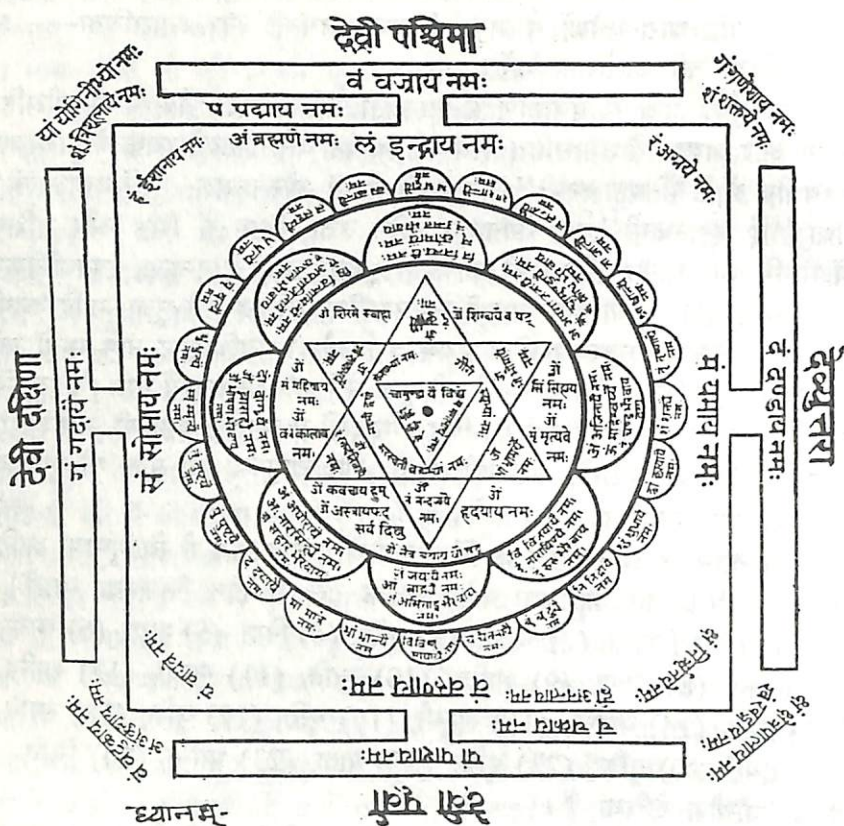
उपर्युक्त यन्त्र में पूर्वकोण में सरस्वती सहित ब्रह्मा, नैर्ऋत्य में श्रीसहित विष्णु और वायव्य में उमासहित शिव की स्थापना करें। षटकोणचक्र के मध्यवर्ती मध्यबीज में "श्रीं महालक्ष्मी" और दायीं-बायीं ओर क्रमशः "ह्रीं महाकाली" तथा "ऐं महालक्ष्मी" का आवाह्न करे। उत्तर दिशा में सिंह और दक्षिण में महर्षि का स्थापन करें। छहों कोणों में पूर्वादि क्रम से नन्दजा, रक्तदन्तिका, शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा और भ्रामरी को स्थापित करे। इनकी पूजा आदि कार्यों में इनके नामों के अनुस्वारसहित प्रथम वर्ण और प्रणवविशिष्ट नाम मन्त्रों को ग्रहण करना चाहिये। जैसे—भ्रामरी की पूजा में "ॐ भ्रां भ्रामर्यै नमः।" इत्यादि रूप से सर्वत्र समझ लेना चाहिये। फिर अष्टदलों में क्रमशः ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, ऐन्द्री, और चामुण्डा की पूजा भी पूर्वोक्त रीति से नाम-मन्त्रों द्वारा ही करें।

तदनन्तर अष्टदलकमल के किंजल्कों में पूर्वादि क्रम से विष्णुमाया आदि चौबीस देवियों की आराधना करें। प्रत्येक दल मे तीन किंजल्क समझें।

(1) विष्णु माया, (2) चेतना, (3) बुद्धि, (4) निद्रा, (5) क्षुधा, (6) छाया, (7) शक्ति, (8) तृष्णा, (9) क्षान्ति, (10) जाति, (11) लज्जा, (12) शान्ति, (13) श्रद्धा, (14) कान्ति, (15) लक्ष्मी, (16) धृति, (17) वृत्ति, (18) स्मृति, (19) दया, (20) तुष्टि, (21) पुष्टि, (22) माता, (23) भ्रान्ति, (24) चिति—ये ही चौबीस देवियां हैं।

सप्तशती-स्तोत्र के पाँचवें अध्याय में इन चौबीस देवियों का पाठ नहीं है—ऐसा समझने की भूल नहीं करनी चाहिये, क्योंकि ऐसा करने से कात्यायिनी तन्त्र से विरोध पड़ता है। कमलनाल के मूल में माधव आदि चार की पूजा करके आधार, कूर्म, शेष और पृथ्वी की पूजा करेड्ड। गृहकोणों में गणेश, क्षेत्रपाल, बटुक तथा योगियों की और पूर्वादि दिशाओं में इन्द्रादि देवताओं की पूजा करनी चाहिये। इसी प्रकार चार दिनों तक करें। उनमें भी प्रथम दिन सप्तशती स्तोत्र का एक पाठ, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन और चौथे दिन चार पाठ प्रत्येक ब्राह्मण करे। पाँचवें दिन हवन होना चाहिये।

श्रीदुर्गा सप्तशती यन्त्र



त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल, चौबीस दल एवं भूपुर से आवृत्त ''दुर्गा सप्तशती यन्त्र'' के बिना दुर्गापूजन में सिद्धि नहीं मिलती, ऐसा शास्त्रकारों का मत है। इस यन्त्र में विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा करके, नित्य दुर्गा पूजन करने पर व्यक्ति को दुर्गा सम्बन्धी अनुष्ठानों में तत्काल सिद्धि मिलती है। शतचण्डी, लक्षचण्डी व दुर्गा सम्बन्धी याज्ञिक कर्मों में प्राधानपीठ में उच्चासन पर इस यन्त्र को ही प्रतिष्ठित कर पूजित किया जाता है। चमचौरस रजत पत्र पर बना यह यन्त्र पिछले 50 वर्षों से हमारे पूजा-गृह में प्रतिष्ठित है। अतः इसका चमत्कारी प्रभाव अनुभूत है।

होम-द्रव्य

विधिपूर्वक स्थापित हुए अग्नि में तीन बार मधु से भिगोये हुए हविष्य, द्राक्षा, केला, मातुलिंग, ईख, नारियल, तिल, जातीफल, आम तथा अन्य मधुर द्रव्यों से दस आवृत्ति सप्तशती के प्रत्येक मन्त्र पर हवन करें और एक सहस्र नवार्ण मन्त्र से भी हवन करे। फिर आवरण-देवताओं के लिये उनके नाम-मंत्रों द्वारा हवन करके यथोचितरूप से पूर्णाहुति दें। तत्पश्चात् ब्राह्मणवृन्द देवताओं सहित अग्नि का विसर्जन करके यजमान को कलश के जल से अभिषिक्त करें। यजमान प्रत्येक ब्राह्मण को एक-एक अशर्फी अथवा सुवर्ण यथाशक्ति दक्षिणा रूप में दान करें। फिर नाना प्रकार के भक्ष्य-भोज्यों द्वारा सौ ब्राह्मणों को भोजन कराएं और उन्हें दक्षिणा देकर आशीर्वाद लें। इस प्रकार करने पर जगत् अपने वश में होता है और सभी उपद्रव नष्ट हो जाते है।

इस पुस्तक के पाठकों और अधिकारी साधकों के समक्ष "श्रीसप्तशती-महायन्त्र" का शुद्ध स्वरूप निवेदन करने के प्रयोजन से साथ में विधानरूप से "शतचण्डी विधि" का प्रयोग ऊपर दे दिया गया है। बात यह है कि ऋग्वेदीय "ब्रह्मकर्मसमुच्च्यं" नामक ग्रन्थ (निर्णयसागर यन्त्रालय) को देखते हुए हमारी दृष्टि में मुद्रित "दुर्गासप्तशतीमहायन्त्रम्" का चित्र आया और पूरी तरह देखने पर उसमें कई दोष अंतर्गत हुए, क्योंकि "शतचण्डीविधि" के वर्णन तथा अन्य तन्त्रसिद्ध महापुरुषों के दीप्त अनुभव से उस मुद्रित यन्त्र में कुछ दोषपूर्ण भेद था। जैसे सबसे अंदर के छोटे त्रिकोण में महाकाली आदि तीन महाशक्तियों के जो तीन बीज कोणों में रखे हुए हैं, वे अलग-अलग निज शक्ति के कोण के अन्तर्गत न होकर एक ही पंक्ति में उस मुद्रित यन्त्र में थे और इस पर भी "श्री" के स्थापन पर लकीं बीज अप्रासगिंक रूप से था। इसके अतिरिक्त कुछ और भी अशुद्धि थी। "तन्त्र" में किसी भी बात का इधर से उधर हेरफेर होना अथवा जरा-सा भी अन्यथा रूप से प्रयुक्त होना महान् दोष माना गया है। तब किया कराया एक दम व्यर्थ हो जाता है। इन भावों की प्रेरणा से "शप्तशती महायन्त्र" का शुद्धरूप "कल्याण" पाठकों के सामने उपस्थित किया गया है। इसकी अनिवार्यता "शतचण्डी" अनुष्ठान में होती है, जिसकी शास्त्रीय विधि ऊपर अंकित है। "शतचण्डी" श्रीदुर्गा सप्तमी का परम अस्त्र है और उसकी शक्ति तथा प्रयोग संनिहित हैं। इस महायन्त्र में ग्रहीता के पास इस महायंत्र का होना अखिल ब्रह्माण्ड

को अपने हस्तगत करना है। इस महायंत्र ने ब्रह्माण्ड की प्रत्येक बात को पूर्णता के साथ अपने अन्तर्गत रख छोड़ा है और इस प्रकार उस साधक का जीवन दिव्य और पूर्ण हो जाता है। पूर्ण इसलिये कि इस छवि में समस्त भागवत-शक्तियों का समावेश है। माँ की समस्त शक्तियों में भगवती दुर्गा का स्वरूप प्रत्येक भाव से पूर्ण है। किसी एक दिशा अथवा स्तर के भाव में माॅ दुर्गा सीमित नहीं हैं। केवल ज्ञान, केवल बल प्रेम से वे बँधी हुई नहीं हैं। वे हैं अखण्डरूप में समस्त भावों को धारण किये हुए। इसी से वे दुर्गा हैं-दुर्गमनीया। पूर्णा हैं, समसत संख्याओं की परम शिरोमणि अखण्ड नौ रूप से अपने यंत्र-तंत्र विस्तुत किये हुए हैं—"नवदुर्गाः प्रकीतिताः।" माँ की ही करुणा एवं कृपा का बल-अपने अंहकार का नहीं, साधक की उचित अग्रगति करता है।

उपर्युक्त यंत्र को साफ कागज पर अन्तरस्थ छोटे समत्रिकोण से बनाना आरम्भ करें। पूर्वदिशा अपने सामने रहे। उसके बाद बाह्य षट्समकोण बनाकर (रक्तवर्ण), चारों ओर कृष्णवर्णका घेरा खींचकर उसके बाहर 24 कमल दल बनाकर और प्रतिकोण तथा कमलदल के अंदर लिखित शक्त्यिों को साथ-ही साथ भरकर बाहर चारों द्वारयुक्त पीले रंग के चतुरस से वेष्टित कर दें।

अष्यादिन्यास, करन्यासादि, जिनका पूरा विधान तंत्र-ग्रंथ में है, करके अनुंष्ठान को आरम्भ करना चाहिये।

भोजपत्र पर यदि अकिंत करना हो तो केसरयुक्त चन्दन से बिल्व-लेखनी द्वारा अकिंत करना चाहिये।

वर प्राप्ति यंत्र

अनेक परिवारों में कन्याएं विवाह योग्य व युवा हो जाती हैं। मैं ज्योतिष का कार्य कर रहा हूँ इसलिए यहां तक भी देखा गया है कि अनेक कन्याएं युवा अवस्था की सीढ़ियों को लाँघ भी चुकी होती हैं पर उन्हें योग्य वर नहीं मिलता। अतः माता पिता के साथ-साथ प्रियजन व स्वयं कन्याएं भी अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहती हैं।

उन्हीं कन्याओं के लिए यहां मेरा स्वयं का लगभग 2,000 जगह अनुभूत-सुनिश्चित अवधि में ही फलदायक एक यंत्र जन लाभार्थ प्रस्तुतः है- अनुभव कर फल प्राप्त करें।

प्रस्तुति—

भारतीय संस्कारों में यह एक विशेषता है कि भारतीय नारी के लिए पति ही परमेश्वर या ब्रह्मा स्वरूप होता है। भारतीय नारी के इस महत्त्वपूर्ण त्याग से ही विश्व भी भारत के सामने नतमस्तक है—

जैसे 9 के अंक में कोई विकार नहीं है वैसे ही ब्रह्मा में कहीं विकार नहीं है। उदाहरण नौ के अंक का पहाड़ा- 9×1=9 या 9×2=18, 1+8=9 या 9×3=27 । 2+7=9 । 9×4=36। 3+6=9 पूरे पहाड़े में ही गुणा व जोड़ से 9 का अंक ही विद्यमान है। वैसे ही यह यंत्र प्रतिदनि 72 बार 72 दिन तक 7+2=9 यंत्र की संख्या को किधर से भी जोड़ दीजिए 72 आएगा। 7+2=9 क्लीं मंत्र इसमें जोड़ देने का एकमात्र लक्ष्य है कि हमारे ऋषिमुनियों के अनुसार क्लीं बीज मंत्र काम-प्राप्ति का प्रतीक है। वह भावना भारतीय नारी के लिए पति परमेश्वर से ही निहित है।

लेखन विधि—

विवाह योग्य कन्याओं को चाहिए कि नीचे लिखा यंत्र सफेद कागज़ पर लाल स्याही से 72 बार प्रतिदिन लिखें एवं 72 दिन तक लिखती जायें प्रति दिन यंत्र समाप्ति पर यंत्रों की गन्धाक्षत से पूजा करें। 72 दिन तक इस प्रयोग के करने पर सुशील सुन्दर योग्य वर प्राप्त हो जाता है।

नियम—

कन्या को चन्द्र बल देखकर शुक्ल पक्ष में यंत्र लिखना आरम्भ करना चाहिए। सफेद कागज की कापी में या सफेद लम्बे कागज पर रात्रि में 8 बजे के बाद एवं 12 बजे से पूर्व लिखे शान्त मस्तिष्क जब हो। माँ भगवती का ध्यान करके यंत्रों को एक जगह इकट्ठा करती जायें, अन्त में 72वें दिन सबको एक जगह करके कुआँ, तालाब नदी में बहा दें। पूर्वाभिमुख होकर लिखें।

नोट—

यंत्र लिखना आरंभ करने के पश्चात् यदि कन्या रजस्वला हो जाय तो 5 दिन यंत्र लिखना बन्द कर देवे और पुनः लिखना चालू कर दे।

वर प्राप्ति के लिए बीज मंत्र युक्त 72 का यंत्र

७	३१	३४	क्लीं
३३	१	६	३२
२	३६	२९	५
३०	४	३	३५

मनोवाँछित कन्या प्राप्ति हेतु सरल प्रयोग ॥

श्री गणेशाय नमः॥ अथ गंधर्वराज विधि लिख्यते।। आचमनं प्राणायाम्॥ संकल्पम्॥ अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुक शर्माऽहं अमुक कन्या प्राप्त्यर्थे राजगंधर्व मंत्रस्य जप महंकरिष्ये॥

हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

राजगंधर्वमंत्रस्य मदन ऋषिः अनुष्टुपंछद राजगंधर्व देवता ॐ बीजम् ह्रींशक्ति क्लीं कीलकम् मम शीघ्र कन्या प्रात्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ ह्रीं विश्वासु अंगुष्टाभ्यां नमः ॐ

राजगंधर्व तर्जनीभ्यां नमः ॐ कन्यासहस्त्र संवत मध्यमाभ्यां नमः ॐ कन्या स्वरूपं ममानिः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कन्याकनिष्टीकाभ्यां नमः॥ प्रयच्छः-2 स्वाकरतल करपृष्ठाम्यां नमः॥ स्व हृदयादीन्यास कृत्वा॥

अथ ध्यानम्—
ईश्वर शीर्षसमुत्पन्नां मदनविह्वललालसा,
विद्याधरः कुलाल ललीतां जयति त्रौलोक्य
मोहिनी, बाला श्रीमत्कल्प तरोर्मुलैगणी
मण्डपमध्यमां सिंहासनारुठा रागविश्वासु
प्रदंकोटी कंदर्पः कोटी लावण्यं विवाहार्थ विचिन्येत
अथास्यमंत्रा—
ॐ ह्रीं विश्वासु राजगंधर्व
कन्याशलकृतं सहस्त्र संवृनमभाभि लिखि प्रयच्छ—2 स्वाहा ॥ 1 ॥

निशाँतरे अयं जपित्वाध्यात्वा विद्या मिमांजपेत् ॥ मासमेकंतः लक्षजपः तद्दशांस लाजा होम ॥ चतुर्विशंती ब्राह्मण भोजनम् शीघ्र कन्या प्राप्ति ॥

नोटः- शुभ मुहूर्त में जन्म से, सातवें तथा ग्यारवें चन्द्रमा में तथा रोहिणी, कृतिका या पुनर्वसु तथा पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ किये गये कार्य से तत्काल सिद्धि होती है।

विशेष योगः—

प्रसूतिकष्ट निवारण—

किसी भी शुभ दिन को केसर, चन्दन जायफल, जावित्री गोरोचन इन पांचों चीजों का मिश्रण कर स्याही बनाकर अनार की कलम से, काँसी की थाली में गायत्री मंत्र लिखकर उसे प्रसव-कष्ट से पीड़ित प्रसूता को दिखाया जाय, फिर से धोकर वह पानी उसे पिला दिया जाय। ऐसा करने से सारे कष्ट दूर होकर, सुखपूर्वक शीघ्र प्रसव होता है।

बुरे स्वप्नों का फल नाश—

यदि रात को अचानक डर लगने लगे व भयंकर आकृतियाँ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से डराने लगें, तो उस अवस्था में प्रसूता शुद्ध वस्त्रों में रहे, पलंग पर रति-क्रिया से लिप्त अशुद्ध वस्त्र न हों। शयन के पहले हाथ पैर धोकर गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल को चारों ओर छिड़के तथा 'रात्रि सूक्त' का पाठ करे। विघ्न-बाधाएं स्वतः ही नष्ट हो जायेंगी।

यंत्र विज्ञान की सत्यता

यंत्र शास्त्र—

यंत्र शास्त्र में अंकों का कोष्ठकों में संग्रह किया जाता है। अंकों की पुनरावृत्ति का अपना एक अलग रहस्य है। कार्य सिद्धि हेतु किये जाने वाले कर्मकाण्ड, व मंत्रानुष्ठानों में से यंत्र साधन भी एक महत्त्वपूर्ण व सर्वाधिक प्रचलित शास्त्र है। 21 मार्च को जब दिन-रात बराबर होते हैं और एक देवता दूसरे देवता को आकाश में चार्ज देते हैं तब उस शुभ पवित्र मुहूर्त में ये यंत्र साधन करके तैयार किये जाते हैं। इनके प्रयोग निःशुल्क करने से ये अटूट प्रभाव दिखाते हैं वरना निष्फल हो जाते हैं। आधुनिक काल में पन्द्रिया व बीसा का अत्यधिक प्रचलन है। इन यंत्रों में 1 से 9 तक के ही अंक प्रयोग में लाये जाते हैं। शून्य (0) को वर्जित रखा है। ये यंत्र बहुत ही प्रभावशाली व चमत्कारिक होते हैं। तथा अलग 2 वर्णों के लिए अलग 2 यंत्र के प्रयोग का विधान है। कहा भी है—'जिसके पास हो बीसा, उसका क्या करे जगदीशा।' पन्द्रिया व बीसा विशेष कार्यों के लिए विशेष समय एवं विशेष अनुष्ठान क्रियाओं के द्वारा कठिनता से सिद्ध होते हैं। इनके अलावा भी यन्त्र शास्त्र में कुछ ऐसे प्रयोग हैं जो सरल हैं तथा अनुभव के आधार पर जिनका कार्य भी शीघ्र होता है ऐसे यन्त्रों को मैं जिज्ञासु पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

लिखने की विधि—

अनार की कलम सर्वसिद्धिदायी मानी गई है। अतः अनार की कलम से भोजपत्र अथवा श्वेत पत्र पर अष्ट गंध, केसर, कस्तूरी एवं गोरोचन इत्यादि मिलाकर शुद्ध स्थान पर शुद्ध चित्त से लिखें। ये यंत्र क्रूर ग्रह शान्ति (Evil Stars Killer) है जो इस प्रकार है।

रोज़ी रोज़गार का यंत्र—

दुकान की बिक्री कम हो गई हो या व्यापार में कम लाभ होता हो

७३	८०	२	७
९	३	७७	७९
७६	७४	८	१
४	३	७५	७८
अपना नाम मय जं. राशि			

तो पूर्णिमा की रात्रि को 12 बजे दुकान के पूर्व सामने दीवार पर चमेली के तेल में सिन्दूर मिलाकर गुलाब की कलम से लिख लें तो एक ही सप्ताह में चौगुनी आमदनी हो जायेगी। परन्तु बिना सिला वस्त्र धारण करके लिखने का आदेश है। ऐसा करने से शीघ्र लाभ होता है।

सर्व कार्य सिद्धि यंत्र—

जब नौकरी न लगती हो, परीक्षा में कई बार अनुत्तीर्ण हो चुके हों, शादी न होती हो, तो लिखा है कि इस यंत्र की हल्दी+केसर की रोशनाई बना कर अनार की कमल से कागज पर लिखकर चमेली के तेल में बत्ती बनाकर शुक्ल पक्ष के रविवार को दिन के 12 बजे जला दें। मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३
ॐ ह्रीं हं सः			
अपना मनोरथ लिखें			

मंत्र शास्त्र—

मंत्र जाप या अनुष्ठान के लिए पूर्ण श्रद्धा भक्ति से विद्वान गुरु को तलाश कर गुरु बनाएं और गुरु के मंत्र दीक्षा मय विधि के ग्रहण करे बिना गुरु के मंत्र सिद्धि असम्भव ही हो जाती है और कोई विघ्न उपस्थित हो गया तो उसका निरकरण भी कठिन हो जाता है। मंत्र जाप से पहले गणेश पूजन, गुरु का ध्यान करके कुल्लू का संकल्प करने का आदेश है। किसी मंत्र जाप करने से आगे का पीछे मस्तिष्क के ऊपर मंत्र जाप करने को 'कुल्लूका' कहते हैं। जप तीन प्रकार के होते है।

1. **वाचिक जप**-- इसमें एक-एक शब्द का स्पष्ट उच्चारण किया जाता है।

2. **उपांशु जप**—यह मौन होता है।

3. **मानस जप**—मन ही मन जिह्वा व कण्ठ द्वारा होता है। ये मंत्र जाप षट् कर्मों के लिए होते हैं।

1. **शांतिकरण**-ग्रहों का दोषदमन करने के लिए होता है।
2. **वशीकरण**- जीवगण को अपने वश में करने के लिए होता है।
3. **स्तम्भन**-जीव की प्रवृति का अवरोध करने के लिए होता है।
4. **विद्वेषण**-दो प्रेमियों के घनिष्ठ प्रेम-डोर को तोड़ने के लिए होता है।
5. **उच्चाटन**-किसी को भटकाने के लिए, मानसिक भ्रम उत्पत्ति के लिए होता है।
6. **मारण**- किसी जीव का जीवन ध्वंस करने के लिए किया जाता है।

षट्कर्म देवता—

रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा एवं भद्रकाली क्रम से षट कर्मों के देवता हैं। इनकी पूजा जप से पहले करने का आदेश है।

विशेषः—

1. दिशा निर्णय, दिन निर्णय, तिथि निर्णय, नक्षत्र एवं लग्न का निर्णय करके जाप करने से सिद्धि मिलती है। 2. मारण के कर्म के लिये देवता का खड़ा हुआ, उच्चाटन में निद्रित तथा अन्य कर्म के लिये बैठे हुये देवता का ध्यान करें। 3. अनुष्ठान इत्यादि में मंत्र (संस्कृत) के सब कीलित हैं उनका उत्कीलन करना भी आवश्यक होता है वरना मंत्र काम नहीं करते।

लौंग वशीकरण मंत्र—

ॐ नमो आदेश गुरु का लौंग-लौंग तू मेरा भाई, तुम्हारी शक्ति चलाई पहली लौंग राती वाती, दूजी लौंग जीवन माती, तीजी लौंग अङ्ग में राखे, चौथी लौंग दुई कर जोड़े, चारों लौंग जो मेरी खाये'' (अमुक नाम) झट मेरे पास चल आवे, आदेश देवी कामरू कामख्या की दुहाई फिरे।

विधि—

रविवार से प्रारम्भ कर लगातार 21 दिन तक प्रतिदिन 21 मंत्र पढ़कर दीपक पूजन करें, फिर 4 लौंग 7 बार पढ़कर जिसे खिलाएं वह तब ही मन से मोहित हो जाये ऐसा लिखा है।

तन्त्र शास्त्र—

1. सर्पदन्त यदि स्त्री अपनी जेब में सहवास के समय रखे तो कदापि गर्भ धारण न होगा।
2. भैंस का गोबर और दही मिलाकर एक सप्ताह जमीन में गाड़ने से बिच्छू की उत्पत्ति हो जाती है।
3. स्त्री को प्रसव में कष्ट व देरी हो रही हो तो चिरचिटे का एक पत्ता जाँघ में बाँधने से तुरन्त उत्पत्ति हो जाती है। बालक की उत्पत्ति पर उसे खोल दें वरना गर्भाशय शान्त न होगा।
4. मिरगी के रोगी को भेड़िये के नाखून की अंगूठी धारण कराओ।
5. भरणी नक्षत्र में आंवले की जड़, विशाखा नक्षत्र में आम की जड़ और उत्तराफाल्गुनी में अनार की जड़ उखाड़ कर लाएं, तीनों को एक साथ बाँधकर जिस काम के लिये जायें तो लिखा है कि अवश्य कार्य पूर्णतः सफल होए।
6. मेंढ़क की चरबी और अंजीर की लकड़ी इन दोनों को आपस में मिलाकर, जिस चूल्हे अथवा मिट्टी के नीचे गाढ़ दिया जाएगा तो उसकी अग्नि बंध जायेगी और तब तक उसमें अग्नि नहीं जलेगी, जब तक इन वस्तुओं को निकाल नहीं लिया जायेगा।

मन्त्र—शक्ति

घर रक्षा का चमत्कारी मुस्लिम मन्त्र

"ॐ बिसमिल्ला हिर्रहमाने रहीम या अल्लाह पाक, इस आंगन को कहता हूँ बन्द, हजरत सुलेमानी की बरकत से बन्द, हजरत मूसा की आज्ञा से बन्द, हजरत अली की शमशेर से बन्द, हजरत अहमद की कलाम से बन्द, या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द, या अल्लाह पाक, मालिक रब्बुल गफूर, हमारी इस दुआ को तू कर ले कबूल, बहक्के हक ला इलाहा इल्लाह मोहम्मदुरसूल्लाह।"

विधि—सोने के वक्त वजू (हाथ-मुंह धोकर) करके पानी के साथ पांच बार पढ़कर ताली मारकर सो रहें, उसका सिमाना (आवाज) जहां तक होगा, मकान रक्षित रहेगा।

धन-धान्य बढाने वाला दुर्लभ जैन मन्त्र

"ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं : कलिकुण्ड स्वामिने नमः, जये विजये अपराजिते चक्रेश्वरी ममार्थ सिद्धि-सिद्धि, कुरु-कुरु स्वाहा।"

दीपावली के दिन पवित्र होकर किसी भी धान के सात अच्छे दाने लेकर उन पर यह मन्त्र सात बार पढ़ना तथा दाने वस्तु (कोठी या बोरी) में वापस डाल देना, वस्तु के भीतर श्रीयन्त्र (सात धातु वाला) रखना। उस वस्तु की वृद्धि होगी तथा उससे बराबर लाभ होगा। यदि यह प्रयोग गल्ले पर करना हो तो उस दिन बाजार से कुछ रेजगारी लाएं तथा सात सिक्के पर इस मन्त्र का प्रयोग करें एवं ध्यान रखें कि वे सिक्के अगले वर्ष तक खर्च न हों। तत्पश्चात् 'कुबेर मन्त्र' पढ़कर श्रीयन्त्र को गल्ले में रखें। पूरे वर्ष रुपयों की बरकत रहेगी, गल्ला खाली कभी नहीं रहेगा। ध्यान रहे कि यह जैन यतियों द्वारा दुर्लभ मन्त्र है जो कि पहली बार प्रकाशित किया जा रहा है।

शत्रु की जबान बन्द करने का मन्त्र

मंत्र—ॐ श्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं बुहें हे सर्व दुःख-(फलाका) का मुख, बुद्धी स्तम्भ 2 स्वाहा।"

विधि—नाग फणी कील लेकर 108 बार पढ़ कर गाड़ें। शत्रु सीधा होकर आएगा, माफी मांगेगा।

* दुश्मन पर कावण व सीधा-झेर करने का मंत्र-

"12 सरसू 13 राई (फलां के) भेजूं जाको जाय फोड़तोड़ कलेजा खाय काली हनुमान की आण मेरा वेरी को मेरे हुक्म में न करे तो लूणा चमारी के नरककुण्ड में पड़े, फलो मंत्र ईश्वरी वाचा"

मंगलवार को मशान की भस्म, चौरायें की रेत, अगर हाथ आवें तो दुश्मन के पैर की रेत, 12 सरसओं, 13 राई, इस मंत्र को 108 बार पढ़कर दुश्मन के रास्ते या मकान पर या मकान की तरफ दुश्मन का नाम लेकर फेंकें।

"ॐनमो आदेश गुरु को, कामरु देश कामक्षा देवी जहां बसे ईस्मायल जोगी, ईस्मायल जोगी ने फलां के कलेजे में मारी चोट, फलां के लगे चोट मेरे लगाई न लगे तो माता कालका की दुहाई"

विधि-रविवार को नींबू पर 108 बार पढ़ कर शत्रु की दिशा पर फेंकें देवी व भैरू की पूजा करें बाकला तिलोट व धार दें, कार्य होगा।

अद्भुत सिद्धि दायक

शत्रु नाशक बगला-यन्त्र

आज का युग महत्वकांक्षा एवं संघर्ष का युग है। आज प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में लगा हुआ है। विशुद्ध स्पर्धा की जगह ईर्ष्या, रागद्वेष और घृणा ने ले ली है। फलतः इस समय चतुर्दिक् असंतोष, विद्रोह, ईर्ष्या, अभाव, युद्ध, घृणा और संघर्ष बिखरा पड़ा है। आज चारों तरफ परस्पर संघर्ष इतना अधिक बढ़ गया है कि मुकदमे बाज़ी, लड़ाई-झगड़ों एवं आपसी मन-मुटाव से जन-मन संत्रस्त व भयाक्रान्त हैं।

ऐसे विकट समय में "बगलामुखी साधना" ही भयग्रस्त लोगों को सांत्वना और साहस का सम्बल प्रदान कर सकती है। दुनिया के सभी श्रेष्ठ तांत्रिकों, मांत्रिकों, साधकों एवं सिद्ध तपस्वियों ने एक मत से स्वीकार किया है कि मानव को शान्ति और निश्चिन्तता तभी मिल सकती है जबकि वह अपने शत्रुओं से निश्चिंत रहे। उसके शत्रु उस पर हावी न हो सकें। अतः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए शास्त्रार्थ में व मुकद्मे में प्रतिद्वन्द्वी को कीलन करने के लिए, विजयश्री का वरण करने के लिये एवं अपना प्रभाव व पराक्रम बढ़ाने के लिये बगला साधना का महत्त्व बताया गया है।

शुक्ल यजुर्वेद माध्यदिनि संहिता के पांचवें अध्याय की 23, 24, 25 वीं काण्डिकाओं में अभिचार-कर्म की निवृत्ति में "बगला साधना" को सर्वोपरी बताया गया है। इस बारे में कोई दो राय नहीं हो सकती कि चुनावों में पूर्ण विजय, आत्मरक्षा व शत्रुओं को परास्त करने के लिये तथा अभिलक्षित व्यक्ति का मान-मर्दन करने के लिये यह साधना सर्वश्रेष्ठ, अद्भुत, अद्वितीय और सर्वोपरी है।

भगवती बगलामुखी देवी की उत्पत्ति के बारे में तन्त्र शास्त्रों में लिखा है कि एक समय सतयुग में भयंकर तूफान आया और समस्त चराचर सृष्टि नष्ट होने लगी तो शेषनाग की शय्या पर लेटे हुए भगवान विष्णु को चिन्ता हुई। उन्होंने भगवती त्रिपुरसुन्दरी की आराधना प्रार्थना की। उन देवी ने प्रसन्न होकर बगलादेवी के रूप में अवतार लिया और सौराष्ट्र (काठियावाड़) देश में हरिद्रा नाम के पीले सरोवर में जलक्रीड़ा करती हुई प्रगट हुईं। उनका अपूर्ण तेज चारों ओर फैल गया। उस दिन मंगलवार था तथा चतुर्दशी तिथि थी। उस रात्रि का नाम वीर-रात्रि पड़ा। पंचमकार से सेवित देवी ने अर्धरात्रि के समय उस पीले सरोवर में निवास किया

और त्रैलोक्य का स्तम्भन करके भयंकर तूफान-बवंडर से सृष्टि की रक्षा की। तान्त्रिक जन तभी से मंगलवार को जब चतुर्दशी पड़ती है पंचमकार करके भगवती बगलामुखी देवी की आराधना करते हैं। भगवती के जनित तेज से दूसरी त्रैलोक्य स्तम्भिनि ब्रह्मास्त्र विद्या उत्पन्न हुई।

बगला का अर्थ—

कृष्ण यजुर्वेद की काठक संहिता में बगला पर विशेष विस्तार से उल्लेख मिलता है। वेद एवं प्राचीन तांत्रिक ग्रन्थों का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि बगला वस्तुतः अपभ्रंश शब्द है। संस्कृत वांग्मय में उत्पति-व्युत्पति के दृष्टिकोण से अधोलिखित सम्भावनाएं प्रगट होती हैं।

1. वल्गु—अतिसुन्दर, आकर्षक, मनोहर अर्थात् सम्पूर्ण त्रैलोक्य को वशीभूत व आकर्षित करने वाली परम सुन्दरी देवी का नाम 'वल्गुमुखी' रख दिया गया हो जो कि आगे चलकर वल्गा, बल्गा, बगला, में परिवर्तित हो गया।

2. वल्गा—(वल्ग् + अचू + टाप्)—लगाम अर्थात् विपरीत आचरण करने वाले उद्दण्ड शत्रुओं को नियन्त्रण में रखने वाली महाशक्ति का नाम 'वल्गा' रखा गया हो तथा आगे चलकर वल्गहा तथा विपर्यय शक्ति के कारण बगला हो गया।

3. बलगहा—'हा' धातु यहां पर मारने के अर्थ में प्रयुक्त हुई है। अर्थात् बलवान शत्रुओं को मारने व नष्ट करने में समर्थ देवी का नाम। शब्द की विपयर्यता से आगे चलकर 'बगला' हो गया हो।

भाष्यकार उव्वट ने इसका अर्थ इस प्रकार किया है। —**'बलगान् कृत्या विशेषान भूमौ निखनितान् शत्रुभि विनाशार्थहन्तीति बलगहा तां बल-गहनम्'** अर्थात् शत्रु के विनाश के लिये कृत्या-विशेष भूमि में जो गाड़ देते हैं। उन्हें नाश करनेवाली वैष्णवी महाशक्ति को बलगहा कहते हैं, यही अर्थ बगलामुखी का भी है। **'कृत्या'** वह स्त्री देवता है जिसकी पूजा बलि विनाश के लिये की जाती है। पूर्वकाल में अमरीषऋषि के ऊपर दुर्वाशा ने किया था तथा आचार्य शंकर के ऊपर एक दुष्ट तांत्रिक ने किया था। इस प्रकार शत्रुओं द्वारा किये गये अभिचार को नष्ट करनेवाली महाशक्ति का नाम बगलामुखी रखा गया। शत्पथ ब्राह्मण में "कृत्या-विशेषा वलगाः" का प्रयोग हुआ है। भाष्यकार महिधर ने "वलगा" का अर्थ इस प्रकार किया है—**"यस्य वधार्थ क्रियते तं वृधवन्नाच्छादयन् गच्छतीति वलगः"** अर्थात् जिसके वध के लिये कृत्या का प्रयोग किया जाता है, उसे गुप्त रीति से मार देता है।

चूंकि अपनी उत्पति के समय यह देवी पीले सरोवर के ऊपर पीतवर्णीय अद्भुत कांचन आभा से युक्त थी। इसलिये कुछ तांत्रिकों ने इसको, "पीताम्बरी" नाम से भी संबोधित किया है।

कुछ भी हो घोर कलिकाल में भी बगला के प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से प्रत्यक्ष सिद्धिदायक हैं। साधक अपने काम-क्रोध आदि विकारों के नाश के लिये इसकी साधना करता है। व्यापारिक लोग अपने पराक्रम की वृद्धि हेतु, जनसामान्य मुकदमों में अनुकूलता व सफलता के लिये तथा नेतागण राजनीति में अपने प्रतिद्वंद्वी का पराभव करने के लिये बगलामुखी-यंत्र का प्रयोग करते देखे गये हैं।



सावधानी— यह विद्या अत्यन्त दुष्कर एवं कठिन होने के साथ-साथ अत्यंन्त गोपनीय भी रही है। यद्यपि इस समय इस विद्या के बारे में कुछ पुस्तकें भी मिल जायेंगीं परन्तु मैंने पाया कि पूर्णता किसी में नहीं है। कुछ ग्रन्थ तो जरूरत से ज्यादा बढ़ा-चढ़ा कर अप्रायोगिक कर्मकाण्ड से बोझिल बना दिये गये हैं। वास्तव में यह विद्या परम्परागत परम्परा से उद्भूत है। किताबी ज्ञान से इसमें दक्षता प्राप्त नहीं की जा सकती है। पिछली कई पीढ़ियों से हमारा परिवार ज्योतिष व कर्मकाण्ड में अग्रगण्य रहा है। और यह मेरा परम सौभाग्य है कि मेरा जन्म उस परिवार में हुआ है जो कि पिछली नव पीढ़ियों से श्रीमाली ब्राह्मणों के कुलगुरु के रूप में प्रतिष्ठित है। ब्राह्मणों को देवाध्ययन कराना, उन्हें संस्कार देना, समय-समय पर ज्योतिष व कर्मकाण्ड के द्वारा श्रीमाली ब्राह्मणों को सही दिशा दर्शन, कराने का पवित्र कार्य पैतृक धाती (धरोहर) के रूप में हमें प्राप्त है। हमारी पैतृक हस्तलिखित पुस्तकों में, मुझे इसका प्रयोग प्राप्त हुआ। मैंने स्वयं जीवन की विकट परिस्थितियों में एक दो बार इसका प्रयोग किया और तत्पश्चात् एक दो व्यक्तियों से इसका अनुष्ठान भी करवाया और आयोजन सफल रहा। तब से मेरा विश्वास बगला यंत्र में पूर्णतः जम गया।

परन्तु ध्यान रहे कि बगला के अनुष्ठान निरपराध व सज्जन व्यक्तियों को सताने के लिये नहीं हैं। अपने शत्रु को, प्रतिद्वन्द्वी को अपने विरुद्ध निरपराध सजा मिलने से रोकने के लिये, बंधन मुक्ति के लिये, किसी उच्चाधिकारी को अपने अनुकूल में निर्णय करने की प्रेरणा के लिये यदि इसका प्रयोग किया जाये तो कोई अनुचित बात नहीं होगी।

यदि ठीक से अनुष्ठान करने के बाद भी आपका काम नहीं हुआ है या जो संकेत आपको मिलते हैं वे प्रतिकूल हैं। तो यह अनुष्ठान उस व्यक्ति विशेष के लिये तुरन्त छोड़ देना चाहिये। यदि फिर भी आप हठ करके अनुष्ठान करते हैं तो आपका काम तो हो जायेगा परन्तु आपको चपत ज़रूर लगेगी। यह मेरा निजि अनुभव है कि हठी व जिद्दी बालक के रोकर किसी वस्तु के मांगने से माँ झुंझलाकर वस्तु तो दे देती है परन्तु कभी-कभी चपत भी लगा देती है। बुद्धिमान व्यक्ति माँ के संकेत को समझ जाता है परन्तु हठी व क्रोधी व्यक्ति पुत्र मृत्यु, स्त्री मृत्यु एवं स्वयं की अकाल मृत्यु के रूप में चपत खाता है। इसके तीन मुख्य कारण हैं। (1) जिस व्यक्ति के विरुद्ध आप प्रयोग कर रहे हैं। वह सात्विक व निरपराध हो। (2) ज्रिस व्यक्ति के विरुद्ध आप प्रयोग करें वह स्वयं माँ का अनन्य भक्त हो। (3) आप अनधिकृत रूप से शास्त्रीय परम्पराओं के विपरीत उच्चारण दोष किंवा त्रुटि पूर्ण साधना में संलग्न हों।

अनुष्ठान के नियम—

बगला साधना खुले आकाश के नीचे नहीं करें, मकान की ऊपरी छत पर नहीं करें, सीला हुआ पहना वस्त्र न करें। एक वस्त्र से न करें। कम से कम दो वस्त्र धोती व उपवस्त्र का होना आवश्यक है।

साधक को पीले रंग के आसन पर बैठना चाहिये। बगला पूजा में पीले पुष्प एवं पीले चावल ही काम में आते हैं। इस साधना में जप के लिए हल्दी की गांठों की माला होती है। ऐसी माला पूरी 108 मणकों की बन सके तो ठीक अन्यथा 54, 36, 27, अथवा 9 मणकों की भी बन सकती है।

आहार—

जिस दिन अनुष्ठान चल रहा हो दिन में दोपहर में एक बार दूध चाय या फल या सूखा मेवा ले सकते हैं। रात को केसरिया खीर, बेसन के लड्डू, पीली सब्जी तथा सब्जी जिसमें सौंधा नमक व काली मिर्च ही होनी चाहिये, ले सकते हैं। लाल मिर्च सर्वथा वर्जित है। अनुष्ठान के समय व्यक्ति पूर्णतः मनसा, वाचा, कर्मणा ब्रह्मचर्य का पालन करे। इसके मन्त्र का पुश्चरण एक लाख पच्चीस हजार जप संख्या करने से हो जाता है। उसका दशांश संख्या हवन करें। हवन का दशांश मन्त्रों से तर्पण, तर्पण के दशांश मन्त्रों का मार्जन तथा मार्जन के दशांश संख्या में ब्राह्मण भोजन करायें। ध्यान रहे कि अनुष्ठान काल में बगलामुखी देवी का चित्र व यंत्र आपकी आंखों के सामने होना चाहिये तथा आपकी अनुष्ठान क्रिया पर किसी भी अन्य व्यक्ति की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिये।

बगला मंत्र प्रयोग—

सबसे पहले भूत-शुद्धि, फिर आत्म-शुद्धि कर लें। तत्पश्चात् हाथ में द्रव्य, अक्षत, पुष्प, जल लेकर संकल्प करें और संकल्प के अंत में यह पद जोड़ दें। **''मम समस्त सद् अभीष्ट सिद्धार्थ........(यहां कार्य प्रयोजन को कह) श्री भगवती पीताम्बराया श्री बगलामुखी देव्याः यथा लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये''** कहकर जल आदि सामग्री छोड़ दें। तत्पश्चात् विनियोग करें। **विनियोग मन्त्र :—ॐ अस्याश्री बगलामुखी ब्रह्मास्त्र विद्या मंत्रस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुपछन्दः बगलामुखी देवता ह्रीं बीजम् क्लीं शक्तिः हं कीलकः बगलामुखी प्रसनार्थे जपे विनियोगः।**

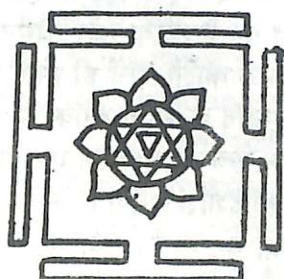
अथन्यास—

ॐ ह्रीं अंगुष्ठायभनमः॥ ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यांनमः॥ ॐ हं ह्रीं अनामिकाभ्यानमः॥ ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यांनम्‌ः॥ ॐ ह्रीं करतलकर पृष्टाभ्यानमः॥

यंत्र पूजन-एवं यन्त्रोद्धार :—

यन्त्रोद्धारः॥ त्र्यस्त्रं वृत्तमष्टदलम्पद्मम्भूपुरान्वितम्॥

अर्थात् मध्य में त्रिकोण, उसके ऊपर षट्कोण, उसके बाद गोल घेरा गोल घेरे के ऊपर अष्टदल और अष्टदल के ऊपर अष्टपद्म और एक भूपुर से युक्त यह यंत्र बगला-यन्त्र कहलाता है। प्राचीन तांत्रिकों, कालीतंत्रों, शाक्त प्रमोद तथा मन्त्र महोदधि को यही यन्त्र अभीष्ट है।



बगला—यंत्र

यंत्र पूजन—

हाथ में पीले चावल ले एवं बगला यंत्र के त्रिकोण के मध्य बिंदु पर ध्यान एकत्रित करके यह मत्र पढ़ें।

"ॐमनं नित्य बगलामुखी एहि-एहि मण्डल मध्ये अवतर-अवतर सानिध्यं कुरू-कुरू स्वाहा महा पद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे। सर्वभूत हिते मातरेहि परमेश्वरि। देवेशिभक्ति सुलभे परिवार समन्विते यावदत्वं पूजयिष्यामि तावदत्वं सुस्थिरा भव।" (चावल यन्त्र पर छोड़ दें)

ध्यान मंत्र—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं।
हेमाभांगरूचिं शांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम्॥
हस्तैर्मुद्गर पाश बद्ध रसनां संविभ्रतीं भूषणै।
र्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये।

इसके पश्चात् षोडषोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् बगलामुखी की मूर्ति अथवा यंत्र को प्राणप्रतिष्ठा से पूजित करके भगवती बगला का आह्वान मुद्रा से आह्वान करें।

आह्वान मंत्र—

मध्य सुधाब्धिमणिमण्डपरत्न वेदींसिंहासनोपरिगताम्परिपीत वर्णाम्॥
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीन्देवीन्नमामिध्रतमुद्गर वैरिजिह्वाम्॥

मन में ऐसी धारणा रखें कि मणीमण्डल व रत्न सिंहासन पर बैठी हुई पीत आभा व आभूषणों से युक्त बगलादेवी बायें हाथ से शत्रु की जिह्वा को खींचकर दायें हाथ से गदा से आक्रमण करने वाली हैं। ऐसा ध्यान आते ही देवी को तुरंत नमस्कार करें।

नमस्कार मंत्र—

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी व्वामेन शत्रून्परिपीडयन्तीम्॥
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यान्द्विभुजान्नमामि॥

फिर मानसिक पूजा करके मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ करें।

मूल मंत्र—

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व्वदुष्टानां वाचम्मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥

इस प्रकार से बगला साधना परिपूर्ण हो जाती है। कुछ लोग इस मूल मंत्र में शत्रु का नाम भी डाल देते हैं। इसका भी प्रभाव शीघ्र होता देखा गया है। बगलामुखी यंत्र को धारण करने का प्रभाव बहुत ही अनुकूल होता देखा गया है। 'दुर्वासा तंत्र' में बताया गया है कि प्रत्येक श्रेष्ठीजन, धनिक, राजा तथा युद्ध-प्रिय व्यक्ति को हर समय बगलामुखी यंत्र धारण किये रहना चाहिये। महर्षि अंगिरा ने 'कृत्या' कर भाष्य लिखा है। उनके अनुसार जिस व्यक्ति ने बगलामुखी यंत्र धारण कर रखा है उसे प्रत्यंगिरा शक्ति स्वयं प्रतिपक्षी की क्रिया को लौटाकर अभिचार करने वाले को मार देती है।

भाष्यकार महिधर ने लिखा है कि यदि किसी शत्रु ने मारण प्रयोग या उच्चाटन तथा पराभव हेतु कोई कार्य किया हो तो बगलायंत्र धारण करने से शत्रु के प्रयोग निष्फल हो जाते हैं। यन्त्र धारण करने वाले व्यक्ति का पराक्रम व वैभव अद्‌भुत ढंग से बढ़ता है। बगला यन्त्र धारण करने वाले व्यक्ति से द्वेष रखने वाला व्यक्ति स्वयं आकर मित्रता की याचना करता है।

कालसर्प (नागपाश) यन्त्र



जब सारे ग्रह राहु और केतु के मध्य में आ जाते हैं तो "कालसर्पयोग" की सृष्टि होती है। कालसर्पयोग का प्रमुख लक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रभाव मानसिक अशान्ति के रूप में प्रकट होता है। भाग्योदय में बाधा सन्तान अवरोध ग्रह में प्रतिपल कलह, धन प्राप्ति में बाधा परिश्रम का लाभ न मिलना, बुरे स्वप्न आना, स्वप्न में सांप दिखना एवं प्रतिफल में कुछ अशुभ होने की आशंका बनी रहती है तो निश्चय जाने कि आपकी कुण्डली में कालसर्पयोग पूर्ण रूप से प्रभावित है।

कालसर्प योग भी कुल 3456 प्रकार के होते हैं—

प्राचीन विद्वानों ने 12 प्रकार के कालसर्पयोगों का विश्लेषण किया है तथ इन योगों को अनन्त, कुलिक, वासुकी, शंखमाल, पद्म, महापद्म, तक्षक, कर्कोटक, शंखचूड़, घातक, विषधर तथा शेष इन नामों से अभिहित भी किया है। ये सभी योग लग्न से सप्तम एवं द्वितीयभाव से अष्टम भाव क्रमवार ग्रह–स्थिति लेकर बनाये गये हैं।

अब तक हमारी मान्यता थी कि कालसर्प योग मात्र 12 प्रकार के होते हैं। परन्तु व्यावहारिक परीक्षणों से पता चला कि अलग-अलग लग्नों में घटित होने वाले अलग-अलग प्रकार के अनन्तादि कालसर्प योग का असर अलग-अलग प्रकार से घटित होगा। उदाहरणार्थ—लग्न से लेकर सप्तम भाव तक राहु-केतु से ग्रसित योग को अनन्तनाग नामक कालसर्प योग कहते हैं। अब लग्न में पड़ा मेषराशिगत राहु, वृषराशिगत राहु से भिन्न असर देगा। इसी प्रकार मिथुन लग्नगत राहु का प्रभाव सिंह लग्न से भिन्न होगा। इसी दृष्टि से मोटे तौर पर 12 X 12 = 144 प्रकार के कालसर्पयोग बनते हैं।

इसमें भी "उदित गोलार्द्ध" एवं "अनुदित गोलार्द्ध" के भेद से यह संख्या 144 द्विगुणित हो जाती है। 144 X 2 = 288 इस प्रकार से कालसर्प योगों की कुल संख्या 288 प्रकार की होती है। इसमें भी यदि एक ग्रह इनकी पकड़ से बाहर निकल जाये तो आंशिक कालसर्प योग बनता है अतः 288 को 12 से गुणा करने पर कुल 3456 प्रकार की कालसर्प योग वाली कुण्डलीया प्राप्त होती है और इन सब के फलादेश अलग-अलग प्रकार के होते हैं। इन सब की विस्तृत विवेचना के लिए हमारी पुस्तक "कालसर्प योग शान्ति एवं घट-विवाह पर शोधकार्य" को पढ़ें।

कालसर्प योग विधि की निवृति वर्ष में पड़ने वाले कतिपय विशेष मुहूर्त में ही होती है तथा इसपर खर्चा भी बहुत आता है इसके लिए उपरोक्त नाशपाश यन्त्र को सपत धातु में बनवाकर लाल या पीले मखमल को लगाकर लकड़ी के फर्मे में जड़ित करके इसके नित्य दर्शन करें एवं दुरवा, पीपल, अशोक या आम के पत्ते से नित्य प्रति जल का छींटा देने से यह योग शान्त होता है तथा व्यक्ति के घर में शान्ति एवं मन मस्तिष्क में शान्ति मिलती है। यह अनुभूत है।

इस यन्त्र के आगे नागपंचमी के दिन केशरयुक्त खीर का भोग लगावएं इस योग से कुप्रभाव का नाश होता है इसी प्रकार कालसर्प योग की अंगूठी स्वर्ण या रजत या सपत धातु में बनती है, इसको धारण करने से भी व्यक्ति को 15 से 20 प्रतिशत राहत मिलती है। नागपाश यन्त्र के नित्य पूजन से 30 से 50 प्रतिशत राहत मिलती है। पूर्ण राहत तो कालसर्प योग की सम्पूर्ण विधि कराने से ही मिलती है। इसके लिए हमारे यहां पर सामुक विधि सम्पन्न कराई जाती है। इच्छित व्यक्ति सम्पर्क करके लाभ उठा सकता है।

पागड़े जीत का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखें। देवदत्त की जगह पर अभीष्ट व्यक्ति का नाम लिखें। तत्पश्चात् यन्त्र को अपनी पगड़ी, टोपी या साफे में रखकर, अपने इष्टदेव का स्मरण कर अभीष्ट व्यक्ति के पास जाएं, आपका कार्य तत्काल होगा।

हमने इस यन्त्र पर बहुत शोध किया और हमारे अनुभव में यह आया कि भोजपत्र पर अष्टगन्द से बनाया हुआ यन्त्र केवल एक बार काम करके ही रह जाता है। हमने इस यन्त्र को सुवर्ण व रजत पत्र पर बनवाया तो इसके परिणाम ज्यादा अच्छे निकले। हमारे पाठकों व शिष्यों के इस विषय में अनेक पत्र आये कि अब उन्हें सन्तोष है। परन्तु उन्होंने बताया कि एक बार काम लेने पर दूसरी बार काम लेने हेतु यन्त्र को वापस प्राण प्रतिष्ठित करना पड़ता है। उसके बाद हमने इस यन्त्र के चारों ओर नवरत्न जड़े एवं अविरल दूध की धारा से इस पर रुद्राभिषेक किया एवं साधक को पहनाया तो उसके परिणाम ज्यादा चमत्कारी थे।

अनुभव में यह आया कि भोजपत्र पर लिखा गया कोई भी यन्त्र केवल एक बार ही काम करता है। तथा मनुष्य के पसीने की गन्ध का स्पर्श हो जाते ही अथवा झूठे या अपवित्र वस्तुओं के संसर्ग से यह यन्त्र प्रभावहीन होकर काम करना बन्द कर देते हैं जबकि सुवर्ण, रजत पत्रों पर निर्मित यन्त्र अपवित्र होने पर उन्हें दूध व गंगाजल से धोकर वापस काम में लिया जा सकता है। उन्हें प्राण प्रतिष्ठित करके पुन: "रिचार्ज" किया जा सकता है। परन्तु ध्यान रखें कि ये सभी यन्त्र खुदे हुए न होकर उभरे हुए होने चाहिएं।

श्री सौन्दर्य लहरी के यन्त्रात्मक प्रयोग

आद्यशंकराचार्य विरचित सौन्दर्य लहरी के सौ श्लोकों पर सौ यन्त्रों की पूजा, पुरश्चरण, नैविद्य, फल इत्यादि को लेकर सौ प्रकार के प्रयोग शास्त्र विधित हैं। सबसे पहले यह प्रयोग केरल भाषा के ग्रन्थों में प्रकाशित हुए। इन प्रयोगों के चमत्कारिक फल श्रुति को लेकर लौकिक प्रयोग भी हुए। मैसूर विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या संशोधनालय ने इन यन्त्रों को संस्कृत में प्रकाशित किया। हिन्दी भाष्य पाठक इन यन्त्रों के ज्ञान से अब भी अपरिचित हैं। अत: हिन्दी प्रेमी यन्त्र-मन्त्र जिज्ञासुओं के लिये इन यन्त्रों को पहली बार यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

इस यन्त्रों के प्रयोग के पूर्व भगवती त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करें और नीचे लिखे विनयोग एवं न्यास करें उसके बाद ही यन्त्रों का पूजन करें।

श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः—

अस्य श्रीसौन्दर्य लहरी स्तोत्रस्य गोविन्दः ऋषिः। अनुष्टुपछन्दः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता शिवः शक्तया युक्त इति बीजम्। सुधासिन्धोर्मध्य इति शक्तिः। जपो जल्पः शिल्पमिति कीलकम्। श्री ललितामहात्रिपुरसुन्दरी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

हां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, हूं मध्यमाभ्यां नमः, हैं अनामिकाभ्यां हौं हं, कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, हः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ह्रां हृदयाय नमः, हः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ह्रां हृदयाय नमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, हं शिखायै वौषट्, हैं कवचाय हूं, ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट., हः अस्त्राय फट्॥

ध्यानम् —

**लौहिस्यनिर्जितजपाकुसुमानुरागां
पाशाकुंशे धनुरिषूनपि धारयन्तीम्।
ताम्रेक्षणामरूणमाल्यविशेषभूषां
ताम्बूलपूरितमुखीं त्रिपुरां नमामि॥**

पृथिव्यात्मने गन्धंकल्पयामि, हं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि, धूपं कल्पयामि, रं वह्नयात्मने दीपं कल्पयामि, वं जलात्मने ॐ॥

सकल कार्य विजय यन्त्र

श्लो. १



(i) यन्त्रमिदं तण्डुलपिष्टेन स्थण्डिले विलिख्य घृतदीपसंस्थापनपूर्वकं द्वादश दिनानि संपूज्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्तयेत्। अनेने सकलकार्यजयः।

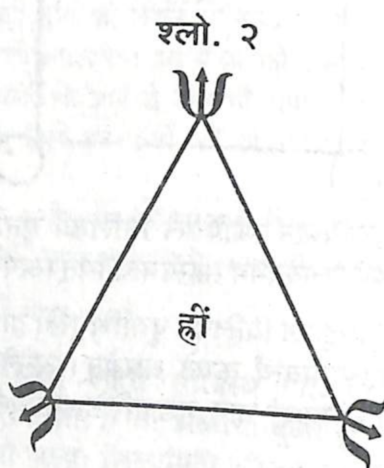
(ii) इदमेव यन्त्रं हेमपट्टतले विलिख्य पूर्वाभिमुखो द्वादश दिनानि संपूज्य श्लोकमिमं प्रतिदिनं सहस्त्रमावर्त्य कण्ठे धारयेत्। अनेने सकलाभिवृद्धिः। उभयत्र नैवेद्यं त्रिमधुरम्। त्रिमधुरं नाम गुडनारिकेलकदलीफलानां मिश्रणेन संपादितं द्रव्यम्।

इस यन्त्र को चावल के आटे से स्थण्डिल के ऊपर बनाएं तथा मध्य में घी का दीपक स्थापित करें। बारह दिन तक नित्य पूजन व दर्शन करें तथा अधोलिखित मन्त्र के एक हजार जाप करें तो निश्चय ही सकल कार्य में विजय होवे। इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके प्रति दिन इस मन्त्र के एक हज़ार जाप करके बारहवें दिन यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति की निश्चय उन्नति होगी। पूजा के बाद यन्त्र पर त्रिमधुर नैवेद्य (गुड़ नारियल केला) का भोग लगावें।

शिवः शत्तया युक्तों यदि भवति शक्तिः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिंचादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति॥ 1 ॥

सर्वलोक वशीकरण यन्त्र

श्लो. २



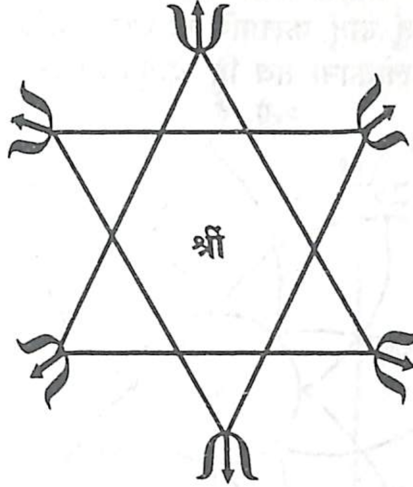
यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टे विलिख्य, उत्तराभिमुखः पञ्चपञ्चाशद्दिनानि संपूज्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावयर्त्य धारयेत्। अनेन सर्वलोकवश्यता प्रकृतिजयश्च। नैवेद्यं क्षीरपायसम्।

इस यन्त्र को सोने (सुवर्ण) पत्र पर लिखकर उत्तराभिमुख पर बैठ कर पचपन दिन तक विधिवत पूजन करावें और खीर का नैवेद्य लगाएं। निम्नलिखित मन्त्र का प्रतिदिन एक हजार बार जप करने पर सभी लोग वशीभूत हो जाते हैं।

तनीयांसं पांसुं तव चरणम केंरूहभवं
विरिचिंः सचिंन्वन्विरचयति लोकानविकलम्।
बहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्त्रेण शिरसां
हरः संक्षुद्यैनं भजति भसितोदूलनविधिम्॥ 2॥

ऐश्वर्य वृद्धि यन्त्र

श्लो. ३



(i) इदं यन्त्रं कनकपट्टतले विलिख्य ईशानाभिमुखः पञ्चदश दिनानि संपूज्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन सर्वैश्वर्यविद्यो भवतः।

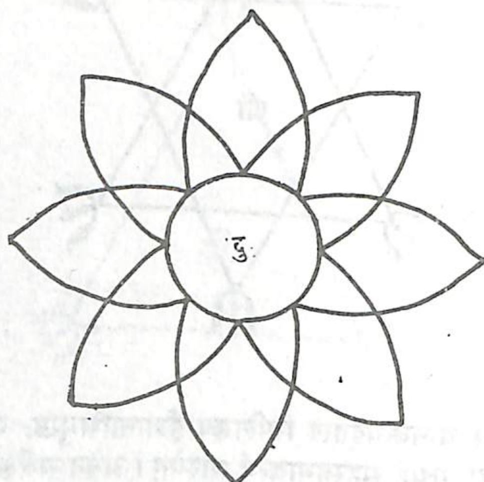
(ii) इदमेव यन्त्रं चतुः पञ्चाशद्दिनानि पूर्ववदभ्यर्च्य प्रतिवासरं श्लोकमिमं द्विसहस्त्रमावर्त्य साधयेत्। साधको वेदविद्भवेत्। उभयत्र नैवेद्यं—माषापूपः।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर ईशान्य दिशा की ओर मुख करके प्रतिदिन निम्नलिखित श्लोक का एक हज़ार बार जप करें तथा उड़द व मालपुवे का भोग लगाएं तो पचासवें दिन के पश्चात् व्यक्ति को सभी प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। यदि इस श्लोक के नित्य-प्रति दो हज़ार जप चौपन दिन तक करें तो साधक सभी प्रकार की वैद्य विद्याओं का जानकार हो जाता है।

अविद्यानामन्तसिमिरमिहरद्वीप नगरी
जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्दसुतिझरी।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका. जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवति॥ 3॥

साम्राज्य वृद्धि यन्त्र

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यमिनया।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वांछासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निगुणौ॥ 4॥
श्लो. ४



(i) यत्रमिदं रजतपट्टे विलिख्य पूर्वाभिमुखः षोडश दिनान्यभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रतिदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—साम्राज्यसिद्धिः।

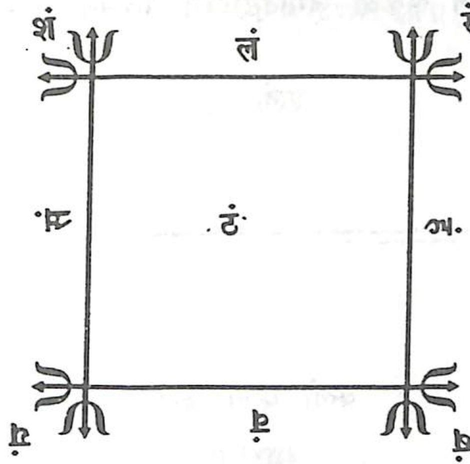
(ii) इदमेव यन्त्रं षट्त्रिंशद्दिनानि पूर्ववदभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रमावर्तयेत्। अनेन साधकं दारिद्यरोगादयो न बाधन्ते। उभयत्र नैवेद्यं—हरिद्रान्नम्। अत्र केरलभाषापुस्तके श्रीमिति बीजाक्षरं दृश्यते।

इस यन्त्र को चान्दी के पत्र पर लिखकर पूर्वाभिमुख बैठकर सोलह दिन तक प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र के एक हज़ार जप करें तथा यन्त्र को हल्दी एवं पीले अन्न का भोग लगाएं तो सोलह दिन के पश्चात् व्यक्ति को साम्राज्य की प्राप्ति हो।

यदि इस यन्त्र की पूर्ववत् छत्तीस दिन तक अर्चना करें तो व्यक्ति की दरिद्रता नष्ट हो जाती है।

सकलजन सम्मोहन यन्त्र

श्लो. ५



इदं यन्त्रं ताम्रपपट्टे विलिख्य वायव्याभिमुखोऽष्टौ दिनानि संपूज्य प्रत्यहं श्लोकमिमं द्विसहस्त्रमावर्त्य शिरसि धरयेत्। फलं सकलजनसंमोहनं स्त्रीणां पुरुषवश्यता च। नैवेद्यं—गुडपायसम्।

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत्।
स्मरो पि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम्॥ 5॥

इस यन्त्र को तांबे के पत्र पर उत्कीर्ण करके वायव्य दिशा की ओर मुख करके उपरोक्त श्लोक के दो हज़ार जाप प्रतिदिन करें। नित्य प्रति गुड़ व दूध का भोग यन्त्र को लगाएं तथा आठ दिन तक नित्य पूजन व दर्शन करने के बाद यन्त्र को गले में धारण करके इच्छित पुरुष स्त्री के सामने जाएं तो देखते ही देखते वह सम्मोहित हो जायेगी।

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

धनुः पौष्पं मौर्वा मधुकरमया पंच विशिखाः
वसन्तः सामन्तो मलयमरुदायोधनरथः।
तथाप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपां
अपागांत्ते लब्ध्वा जगदिदमनगों विजयते ॥ 6 ॥

श्लो. ६.

क्लीं क्लीं क्लीं साध्यम् क्लीं क्लीं क्लीं

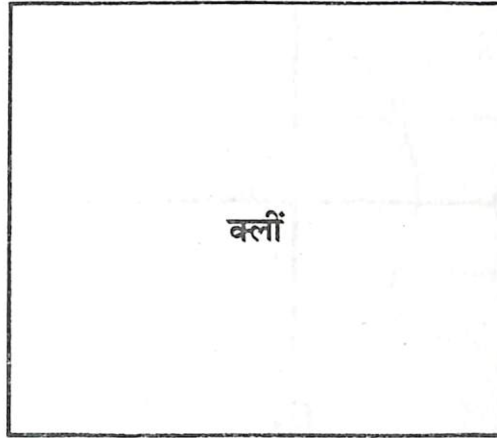
यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य पूर्वाभिमुखः एकविंशतिदिनानि समाराध्य पद्यमिदं प्रतिदिनं पञ्चशतमावर्त्य धारयेत्। फलं—साधकस्य षण्डत्वनिवृत्या पुत्रावाप्तिः। नैवेद्यं—इक्षुखण्डः।

सुवर्ण यन्त्र पर इस यन्त्र को बनाकर पूर्वाभिमुख बैठकर प्रतिदिन पांच सौ बार इसका जाप करें तथा ईख (गन्ने) के टुकड़े का भोग लगाएं। इक्कीस दिन तक इस यन्त्र की विधिवत् पूजा करने के बाद गले में धारण कर लें तो साठ वर्ष की आयु बीतने के पश्चात् भी निःसंदेह पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।

शत्रुजंय यन्त्र

कणत्कांचीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
परिक्षीण मध्य परिणतशरच्चन्द्रवदना।
धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाशा करतलैः
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ॥ 7 ॥

श्लो. ७.



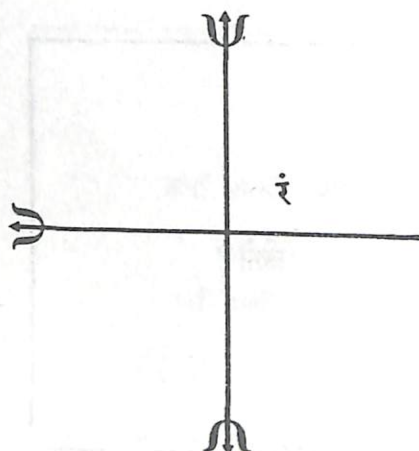
यन्त्रमिदं हाटकपट्टे विलिख्य पूर्वाभिमुखः पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि समभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्त्य शिरसि धारयेत्। भस्म वाऽभिमन्त्र्य धारयेत्। अनेन शत्रुजयः। नैवेद्यं-क्षीरपायसम्।

इस यन्त्र को सुवर्ण के पत्ते पर लिखकर पूर्वाभिमुख बैठकर उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हजार बार पाठ करें। पैंतालीस दिन तक विधिवत् अर्चना करने के बाद इस यन्त्र की भस्मी का तिलक करके शत्रु के सामने जाएं। तो शत्रु पराजित होगा, ध्यान रहे कि प्रतिदिन के नैवेद्य में दूध या खीर का भोग लगाएं।

बन्दी मोक्ष यन्त्र

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नापोपवनवति चिन्तामणिगृहे।
शिवाकारे मंचे परमशिवपर्यंकनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम्॥ 8॥

श्लो. ८



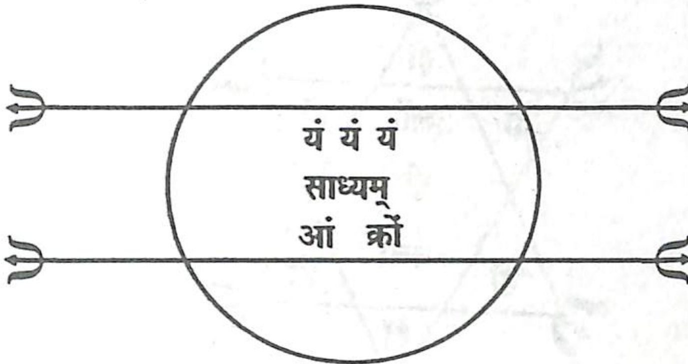
यन्त्रमिदं रक्तचन्दनखण्डे निर्माय द्वादश दिनानि रक्तपुष्पैरभ्यर्च्य पद्यमिदं प्रत्यहं द्विशतोत्तरसहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं कारागृहनिवृत्तिः सकलकार्यजयश्च। नैवेद्यं कृष्णमरिचः।

इस यन्त्र को लाल चन्दन के टुकड़े पर बनाकर नित्य लाल पुष्प चढ़ाएं तथा नैवेद्य में काली मिर्च का भोग लगाएं। बारह दिनों में बीस हजार मन्त्रों के जप करने पर बन्दी कारागृह से छूट जाता है तथा साधक सकल कार्य में सफलता मिलती है।

परदेश से वापस लौटने का यन्त्र

महीं मूलाधारे कमपि मणिमूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरूतमाकाशमुपरि।
मनो पि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे॥ 9॥

श्लो. ६



(i) यन्त्रमिदं कनकपट्टे विलिख्य दश दिनान्यभ्यर्च्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्तयेत्। फलं—देशान्तरगतस्य क्षिप्रागमनम्।

(ii) इदमेव यन्त्रं गन्धचोलिकयालिप्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि सापराध्य पद्यमिदं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्तयेत्। अनेन साधकः पञ्चभूतानि जयिष्यति। उभयत्र नैवेद्यं क्षीरपायसम्।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक हजार बार जप करें। दस दिन तक श्रद्धा करने पर अर्चना करने पर देशांतर गया हुआ आदमी भी वापस लौट आए। नैवेद्य भी दूध अथवा खीर की ही दें।

रजोदर्शन यन्त्र

सुधाधारासारैश्चरण युगलान्तर्विगलितैः
प्रपचं सिचंन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः।
आवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि ॥ 10 ॥

श्लो. १०°



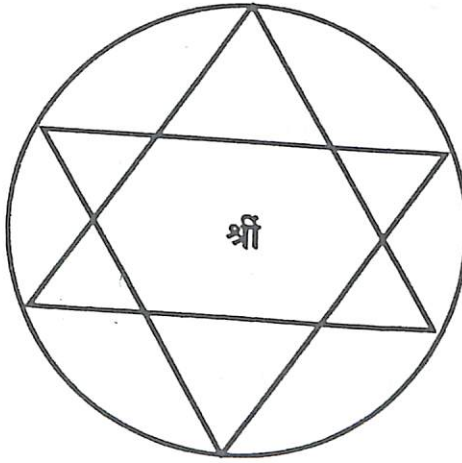
इदं यन्त्रं हाटकपट्टतले विलिख्य षड्दिनान्यभ्यर्च्य प्रतिदिनं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य रक्तक्षौमतन्तौ निबध्य धारयेत्। फलं—वृष्यं स्त्रीणां रजोदर्शनं च। नैवेद्यं—कदलीफलम्।

इस यन्त्र को सुवर्ण के पट्टे पर लिखकर उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हजार जाप करें एवं लाल रंग का तंनतू (मौली) से यन्त्र का वेष्टन करें। छः दिन तक पूजन करने के पश्चात् वेष्टी लाल सूत्र (मौली) को स्त्री के हाथ में बांधें तथा नित्य केले का भोग लगाएं तो कैसी भी स्त्री हो उसको रजोदर्शन होगा।

वन्ध्यादोष निवृति यन्त्र

चतुर्भिश्श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पंचभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः।
चतुश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय-
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः ॥ 11 ॥

श्लो. ११



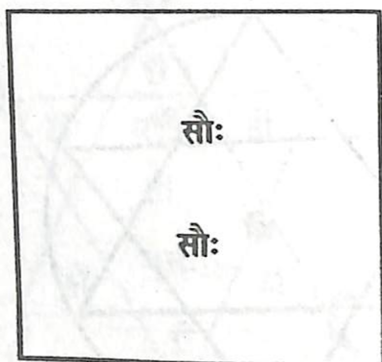
इदं यन्त्रं कनकपट्टतले विलिख्य एकाशीतिदिनानि संपूज्य श्लोकमिमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। नवनीतं वाऽभिमन्त्र्य सेवयेत्। अनेन वन्ध्यादोषो निवर्तते। नैवेद्यं—गुडपायसम्।

इस यन्त्र को सोने के पत्र पर लिखकर उपरोक्त श्लोक के प्रति दिन एक हज़ार जप करें। एक सौ एक दिन तक इस यन्त्र का पूजन करके गले में धारण करें तथा गुड़ और दूध का भोग लगाएं। इसी मन्त्र से नित्य-प्रति मक्खन से सेवन करें तो स्त्री का बन्धीत दोष दूर हो।

वाचाल यन्त्र

त्वदीयं सौन्दर्य तुहिनगिरिकन्ये तुलयिंतु
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिंचिप्रभृतयः।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम्॥ 12॥

श्लो. १२



यन्त्रमिदं जले विलख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यभ्यर्च्य जलं स्पृष्ट्वा श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रमावर्त्य पिवेत्। अनेन मूकोऽपि कविर्भवेत्, वशित्वं सिध्येत्। नैवेद्यं—मधु।

इस यन्त्र को जल में लिखकर कंठ परियन जल में बैठकर प्रतिदिन एक हज़ार मन्त्रों का जाप करें। तथा नैवेद्य में शहद चढ़ाएं तथा शहद का प्रसाद वांच्छित व्यक्ति को भी दें। चौवन दिन तक इस प्रकार नित्य प्रयोग करने पर गूंगा व्यक्ति भी बोलने लगेगा।

स्त्री वशीकरण यन्त्र

नरं वर्षीयासं नयनविरसं नर्मसु जड़ं
तवापागांलोके पतितमनुथावन्ति शतशः।
गलद्वेणीबन्ध्याः कुचकलशविस्रस्तसिचयाः
हठात्त्रुदयत्कांचयो विगलितदुकूला युवतयः॥ 13॥

श्लो. १३

क्लीं	क्लीं	क्लीं
	साध्यम्	
क्लीं	क्लीं	फ्लीं

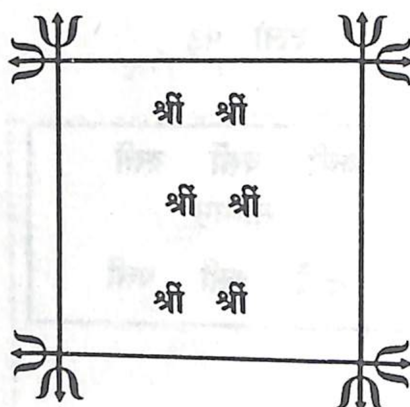
इदं यन्त्रं हेमपट्टे विलिख्य षड्दिनानि समाराध्य श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं स्त्रीवश्यता। नैवेद्यं—त्रिमधुरम्।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर छः दिन तक नित्य पूजन करें। तथा उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार बार जाप करें। नित्य प्रति त्रिमधुर (गुड़, नारियल, केले) का भोग लगाएं। साधीयन की जगह स्त्री का नाम लिखें और सातवें दिन यन्त्र को गले में धारण करके जिस स्त्री के पास जायेंगे वह वशीभूत हो जायेगी।

कामरोग निवारक यन्त्र

क्षितौ षट्पचांशद्द्विसमधिकपचांशदुदके
हुताशे द्वाषिष्टिश्चतुरधिकपचांशदनिले।
दिवि द्विष्षट्त्रिंशन्मनसि च चतुष्षष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम्॥ 14॥

१४ श्लो.

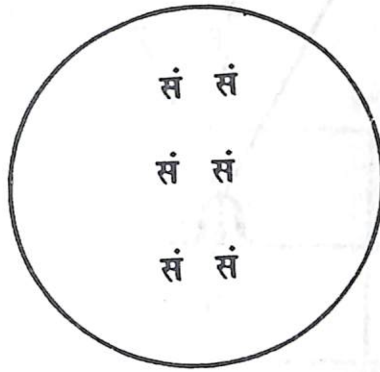


यन्त्रमिदं हाटकपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन वसन्तादिरोगाः दुर्भिक्षं च न बाधेत। नैवेद्यं—क्षीरपायसम्।

इस यन्त्र को आम की पट्टी पर लिख कर उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार बार जाप करें। पैंतालीस दिन तक दूध व खीर का भोग लगाने के बाद यन्त्र को धारण करने पर किसी प्रकार का कामजनित रोग व दुबर्लता नहीं रहती।

विज्ञान वेत्ता यन्त्र

शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुजटाजूटमकुटां
वरत्रासत्राणस्फटिकघटिका पुस्तककराम्।
सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां संनिदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः फणितयः ॥ 15 ॥



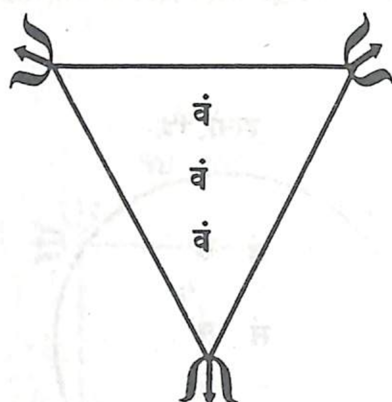
(i) यन्त्रमिदं सुवर्णपट्टे विलिख्य एकचत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन साधकः कर्विविज्ञानी च भवेत्।

(i) इदमेव यन्त्रं जले विलिख्य पूर्ववत्संपूज्य जप्त्वा पिवेत्। फलं—पूर्ववत्। उभयत्र नैवेद्यं—मधु कदलीफलं शर्करा च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर इक्तालीस दिन तक विधिवत् पूजा करें। उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार बार जप करें। शहद, केला एवं शक्कर का भोग लगाएं तथा यह यन्त्र वांच्छित व्यक्ति को पहनाएं तो निश्चय ही साधक विज्ञान वेत्ता एवं विलक्षण बुद्धि का ज्ञाता होता है।

वेद शास्त्र विशारद यन्त्र

श्लो. १६



यन्त्रमिदं हेमपट्टतले विलिख्य एकचत्वारिंशदहानि समाराध्य श्लोकमिमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—देवशास्त्रादिज्ञानम्। नैवेद्यं—मधु।

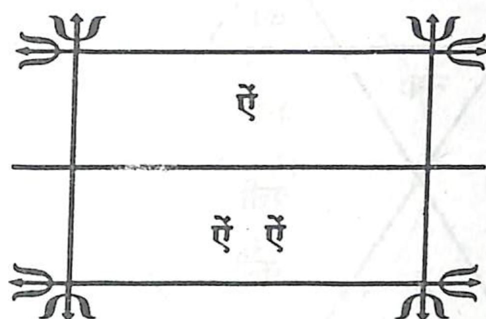
कवीन्द्राणां चेतः कमलवनबालातपरूचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरूणामेव भवतीम्।
विरिंचिप्रेयस्यास्तरूणतरश्रृंगारलहरी
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रजंनममी॥ 16॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार बार जप करें। नित्य प्रति शहद का भोग लगाएं एवं भोग खुद भी गहण करें। इक्तालीस दिन के प्रयोग के पश्चात् साधक वेद शास्त्र विद्या विशारद हो जाता है।

सकल कला कोविद् यन्त्र

सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभगंरूचिभिः
वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि संचिन्यति यः।
स कर्ता काव्यानां भवति महतां भगिंरूचिभिः
वचोभिर्गाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः॥ 17॥

श्लो. १७



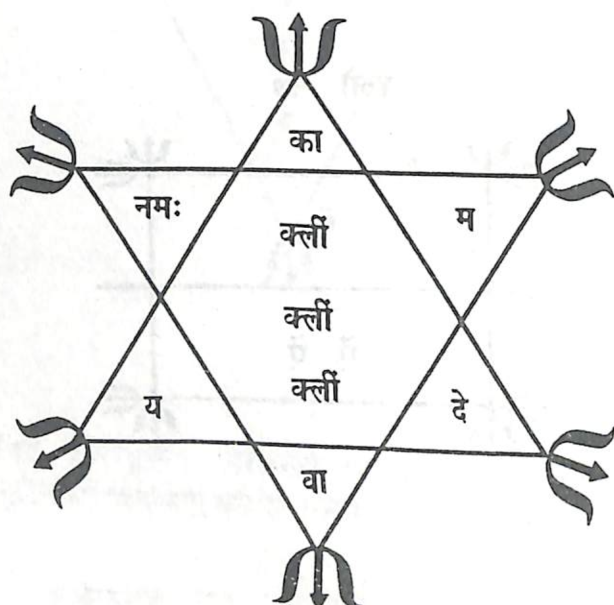
इदं यन्त्रं हाटकपट्टे विलिख्य एकनवतिदिनान्यभ्यर्च्य श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन साधकः सकलकलाकोविदो भवेत्। नैवेद्यं— मधु कदलीफलं क्षीरं शर्करा खण्डशर्करा च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पट्टे पर लिखकर उपरोक्त श्लोक के उन्तीस दिन तक एक हज़ार जाप करें। यन्त्र को शहद, केला, खीर, शक्कर व मिश्री का भोग लगाएं और फिर धारण करने पर व्यक्ति सकल शास्त्र कोविद एवं सम्पूर्ण विद्वान् बन जाता है।

सकल प्राणी वशीकरण यन्त्र

तनुच्छायाभिस्ते तरूणतरणिश्रीसरणिभिः
दिवं सर्वामुर्वामरूणिमनि मग्नां स्मरति यः।
भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयनाः
सहोर्वश्या वश्याः कतिकति न गीर्वाणगणिकाः ॥ 18 ॥

श्लो. १८



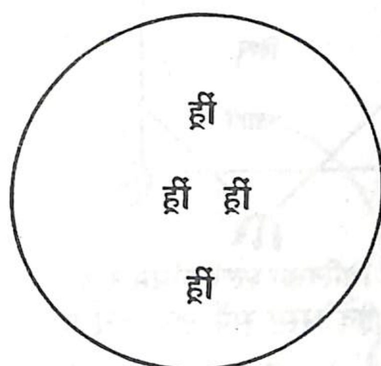
यन्त्रमिदं सुवर्णपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यर्चयित्वा प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। चन्दनं कुंङ्कुम पुष्पं वाऽभिमन्त्र्य दद्यात् फलं—सकलप्राणिवश्यता। नैवेद्यं—क्षीरपायसं ताम्बूलं च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त श्लोक के चौवन दिन तक एक हज़ार जाप करें। इस यन्त्र पर चन्दन, कुमकुम पुष्प चढ़ाएं तथा अभिमन्त्रित करके जिस प्राणी को देखें वह वशीभूत हो जायेगा। नैवेद्य में दूध, खीर व तांबूल का भोग लगाएं।

सकल प्राणी वशीकरण यन्त्र

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्थ ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम्।
स स्वः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम्॥ 19॥

श्लो. १६



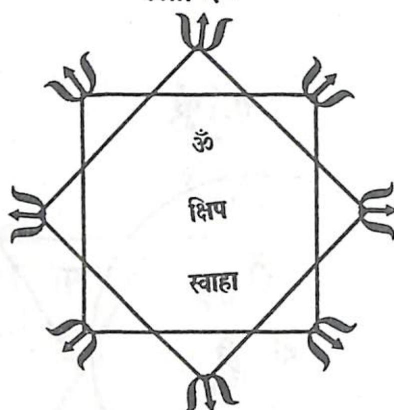
इदं यन्त्रं हेमपट्टतले विलिख्य पञ्चशितिदिनान्याराध्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं द्विशताधिकसहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। चन्दनं पुष्पं भस्म कुंकुम वाऽभिमन्त्र्य धारयेत्। अनेन सकलराजराक्षसमृगस्त्रीवश्यता भवति। नेवेद्यं—क्षीरं मधु कदलीफलं च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त श्लोक के इक्कीस सौ जप प्रतिदिन करें तथा पचास दिन तक खीर, शहद, केले का भोग लगाएं। तथा इस मन्त्र से चन्दन, पुष्प, कुमकुम भस्म को अभिमन्त्रित करके धारण करने पर समस्त देव-दानव, मानव-स्त्री व पशु-पक्षी वश में हो जाते हैं।

विष निवारक यन्त्र

किरन्तामगेभ्यः किरणनिकुरूम्बामृतरसं
हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वर पलुष्टान् दृष्टया सुख्यति सुधाधारसिरया ॥ 20 ॥

श्लो. २०



(i) यन्त्रमिदं भस्मनि विलिख्य श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य तद्भस्म दद्यात्। अनेन विषनिवृत्तिर्भवति। इदं भस्म सर्पे लग्नं चेत् मुह्यात्। ज्वराश्च निवर्तेत।

(ii) इममेव श्लोकं पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि प्रत्यहं द्विसहस्त्रमावर्त्य साधयेत्। अनेन साधकस्य कदापि विषभीतिर्न जायते।

(iii) इदमेव यन्त्रं मयूरताम्रेण पुन्नागताम्रेण वा मिश्रितसुवर्णपट्टतले विलिख्य श्लोकमिमं पूर्ववत्संसाध्य तद्यन्त्रमङ्गुलोयकं कृत्वा धारयेत्। तद्धस्तेन सर्पदष्टे जले प्रोक्षिते विषनिवृत्तिर्भवति।

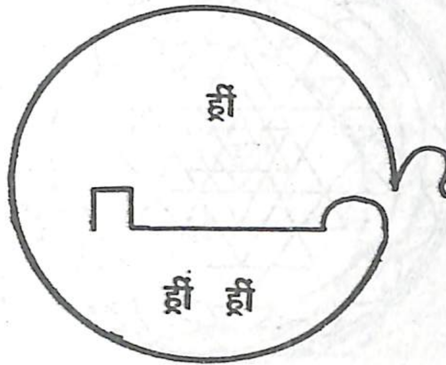
इस यन्त्र को भस्मी से लिखकर उपरोक्त श्लोक का एक हज़ार जाप प्रतिदिन करें। चौवन दिन तक विधिवत् पूजन करने के बाद अभिमन्त्रित भस्मी को जिस प्राणी को देंगे उसका सर्प विष नष्ट हो जायेगा व असाधक ज्वर उतर जायेगा।

इस यन्त्र को मोर के पंख से तांबे, कुन्नाक तांसर से मिश्रित सुवर्ण पत्र पर लिखें तथा पूर्व साधना करके यन्त्र से अभिमन्त्रित जल से सर्प के काटे हुए स्थान को धोने एवं आधे जल को पिलाने पर कैसा भी विष हो, नष्ट हो जाता है।

विरोध नाशक यन्त्र

तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम्।
महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम्॥ 21॥

श्लो. २१



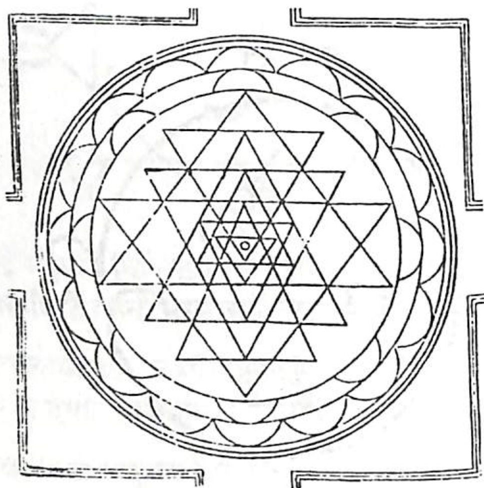
यन्त्रमिदं स्वर्णपट्ट रजतपट्टे वा विलिख्य पञ्चचत्वारिंशदहानि पूजयित्वा श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन सकलजनविरोधनाशः वश्यता च। नैवेद्यं—कदलीफलं मधु गुड़ं च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र या रजत पत्र, ताम्र पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक पूजा करें। प्रतिदिन एक हज़ार मन्त्रों की आवर्ती करें तथा मधु, गुड़ व केले का भोग लगाएं। उसके पश्चात् इस यन्त्र को गले में धारण करने पर सभी विरोधी एवं द्वेष रखने वाले वशीभूत हो जाते हैं तथा विरोधी किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचा पाते हैं।

सकल ऐश्वर्य एवं साम्राज्य प्राप्ति यन्त्र

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरूणां
इति स्तोतुं वाछंन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्द ब्रहमेन्द्रस्फुटमकुट नीराजितपदाम् ॥ 22 ॥

श्लो. २२



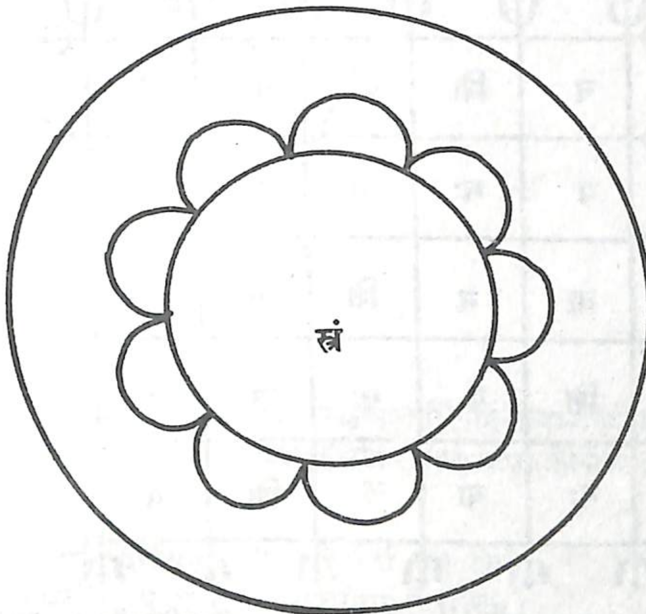
चक्रमिदं सुवर्णपट्टतले विलिख्य कस्मिंश्चित्पुण्यतीर्थे क्षेत्रे देवीसन्धिौ वा उपविश्य पञ्चचत्वारिंशदहानि संपूज्य श्लोकमिममहरहस्सहस्त्रमावर्त्य साधयेत्। अनेन ऐहिकसर्वाभीष्टसिद्धि, सकलैश्वर्यप्राप्तिः साम्राज्यावाप्तिश्च भवति। नैवेद्यं—मधु त्रिमधुरं दधि क्षीरं चित्रान्नं च।

उपरोक्त यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर किसी पवित्र तीर्थ पर जाकर देवी के सान्निध्य में बैठकर चौवन दिन तक उपरोक्त मन्त्र के नित्य प्रति एक हज़ार जाप करें फिर इस यन्त्र को पूजा में रखें। शहद, त्रिमधुर, खीर, दही एवं विभिन्न प्रकार के पकवानों का भोग लगाएं। सिद्ध होने पर यह यन्त्र सभी प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करता है। सकल ऐश्वर्य एवं साम्राज्य को प्रदान करता है।

भूत-प्रेत नाशक यन्त्र

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा
शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शंके हृतमभूत्।
यदेतत्वद्रूपं सकलमरूणाभं त्रिनयनं
कुपाभ्यामानम्रं कुटिलशशिपूठालमकुटम्॥ 23॥

२३ श्लो.



यन्त्रमिदं हेमपट्टे विलिख्य पृहे संस्थाप्य त्रिंशद्दिनान्यभ्यर्च्य प्रत्यहं स्लोकमिमं त्रिसहस्त्रमावर्तयेत्। फलं—सर्वापन्निवृत्तिः ऋणमोचनं भूतप्रेतशमनं च भवति। नैवेद्यं—क्षीरपायसम्।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर घर में रखें तथा उपरोक्त मन्त्र के तीन हज़ार जप प्रतिदिन के हिसाब से तीस दिन तक जाप करें तथा नैवेद्य में खीर व दूध का भोग लगाएं। ऐसा करने पर सब प्रकार के शापों से मुक्ति होकर भूत-प्रेत इत्यादि अशुभ आत्माओं का नाश होता है।

शिव यन्त्र

जगत्सूते धाता हरिरवति रूद्रः क्षमयते
तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति।
सदापूर्वः सर्वं तदि्दमनुगृह्णाति च शिवः
तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भूलतिकयोः ॥ 24 ॥

श्लो. २४

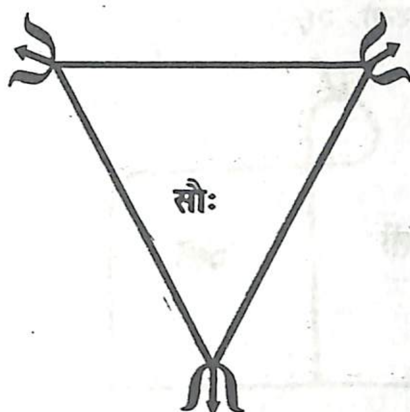
न	शि	य	मः	वा
य	मः	वा	न	शि
वा	न	शि	य	मः
शि	य	मः	वा	न
मः	वा	न	शि	य

शिवयन्त्रमिदं हाटकपट्टतले विलिख्य त्रिंशद्दिनानि सम्पूज्य श्लोकमिममहरहस्सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—भूतप्रेतपिशाचापस्मारा-दिनिवारणम्। नैवेद्यं मधु माषापूपः तिलपिष्टं च।

इस शिव यन्त्र को लकड़ी के छोटे पट्टे पर लिखकर प्रतिदिन उपरोक्त श्लोक के एक हजार जाप करें। प्रतिदिन करते हुए तीस दिन का अनुष्ठान करें। नैवेद्य में शहद, उड़द, तिल चढ़ावें तो शिवजी की कृपा से भूत-प्रेत-पिशाच व गंदी हवाओं का नाश होकर व्यक्ति को आराम मिलता है।

पद प्राप्ति यन्त्र

श्लो. २५



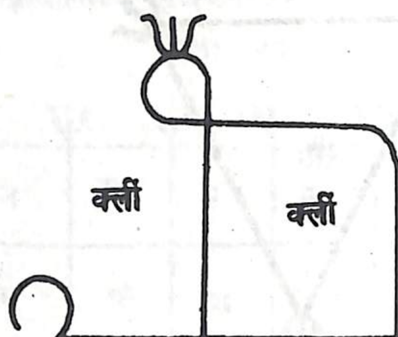
इदं यन्त्रं हेमपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यभ्यर्च्य श्लोकमिमं सहस्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—राजकीयाधिकारः उत्कृष्टपदवीलाभश्च। नैवेद्यं—मधु।

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे
भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता।
तथा हि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ॥ 25 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त श्लोक के एक हज़ार जाप प्रतिदिन के हिसाब से चौवन दिन तक अनुष्ठान करें। नैवेद्य में शहद का भोग लगाएं तत्पश्चात् नारियल का भोग लगाएं। इस यन्त्र को गले में धारण करने पर सरकार में उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। राजदरबार में सम्मान मिलता है।

शत्रुन्जय यन्त्र

श्लो. २६



(i) यन्त्रमिदं सुवर्णपट्टतले विलिख्यार्चयित्वमावास्यायां श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सर्वसिद्धिः।

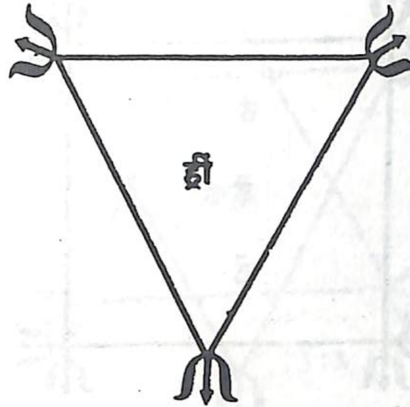
(ii) इदमेव यन्त्रं षड्दिनानि पूजयित्वाऽनुदिनं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्तयेत्। अनेन शत्रुजयो भवति। उभयत्र नैवेद्यं—गुड़पायसम्।

विरिचिः पंचत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम्।
वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि सम्मीलितदृशा
महासंहारे स्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ॥ 26॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर अमावस्या के दिन उपरोक्त श्लोक के एक हज़ार जाप करके गले में पहनें तो सब प्रकार के कार्य सिद्ध हों। यदि छः दिन तक इसी प्रकार से पूजा करते रहें तथा गुड़ व दूध का भोग यन्त्र को लगाएं और गले में धारण करें तो व्यक्ति निश्चय ही शत्रु पर विजय पाता है।

देवी दर्शन यन्त्र

श्लो. २७



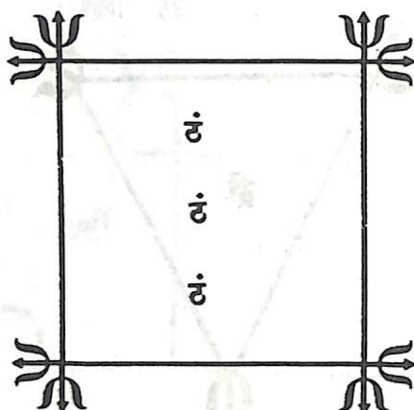
इदं यन्त्रं हेमपट्टे लिखित्वा पञ्चचत्वारिंशदहानि पूजयित्वा श्लोकमिममहरहः सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलम्—मन्त्रसिद्धिः देवीदर्शनं आत्मज्ञानं च। नैवेद्यं—गुड़पायसम्।

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्र मणमशनाद्याहुतिविधिः।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम्॥ 27॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त मन्त्र के एक हज़ार जाप प्रतिदिन करें ऐसा क्रम चौवन दिन तक जारी रखें। यन्त्र को गुड़ व दूध का भोग लगाएं और फिर गले में धारण करें। ऐसा करने पर मन्त्र भी सिद्ध होता है एवं देवी के दर्शन होकर व्यक्ति को आत्म ज्ञान की प्राप्ति होती है।

अपमृत्यु नाशक यन्त्र

श्लो. २८



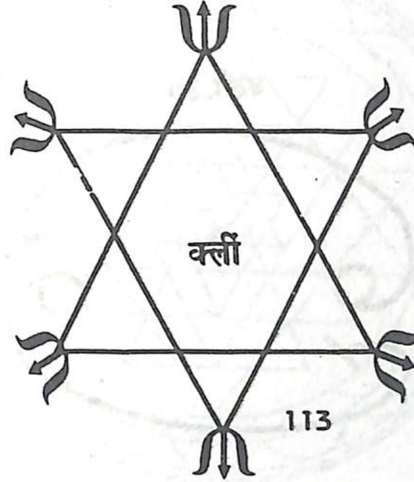
यन्त्रमिदं हाटकपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि समाराध्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—स्त्रीणां सकलकार्यसिद्धिः पुरुषाणामपमृत्युनिवारणं च। नैवेद्यं—क्षीरपायसं त्रिमधुरं ताम्बूलं च।

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणीं
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाया दिविषदः।
करालं यत्क्ष्वेलं कबलितवतः कालकलना
न शम्भोस्तन्मूलं तव जननि ताटंकमहिमा॥ 28॥

इस यन्त्र को सुवर्ण के पट्टे पर लिखकर विधिवत् पूजन करें तथा प्रतिदिन एक हज़ार श्लोक की आवर्ति से चौवन दिन तक यन्त्र का पूजन करें। नैवेद्य में खीर, दूध, त्रिमधुर व पान का भोग लगाएं। उसके पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करें तो स्त्री-पुरुष के सकल कार्य सिद्ध होकर उसका अपमृत्यु (अकाल मृत्यु) से बचाव होता है।

स्व वशीकरण यन्त्र

श्लो. २६



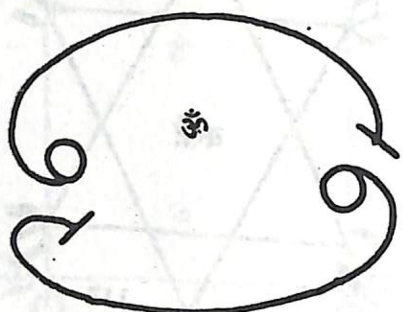
इदं यन्त्रं हेमपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यर्चयित्वा श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—दुष्टान् मूर्खांश्च सतः कृत्वा स्ववशीकरणम्। नैवेद्यं—मधु माषापूपश्च।

किरीटं वैरिंचं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भरिमकुटम्।
प्रणमेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते॥ 29॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर एक हज़ार जप के हिसाब से चौवन दिन तक निरन्तर जप करें तथा शहद व उड़द का भोग लगाएं। ऐसा करने पर दुष्ट व मूर्ख व्यक्ति वशीभूत हो जाते हैं। उसका अपने पर कोई बुरा असर नहीं हो पाता है। इसीलिए इसका नाम स्व-वशीकरण यन्त्र है।

परकाया प्रवेश यन्त्र

श्लो.३०



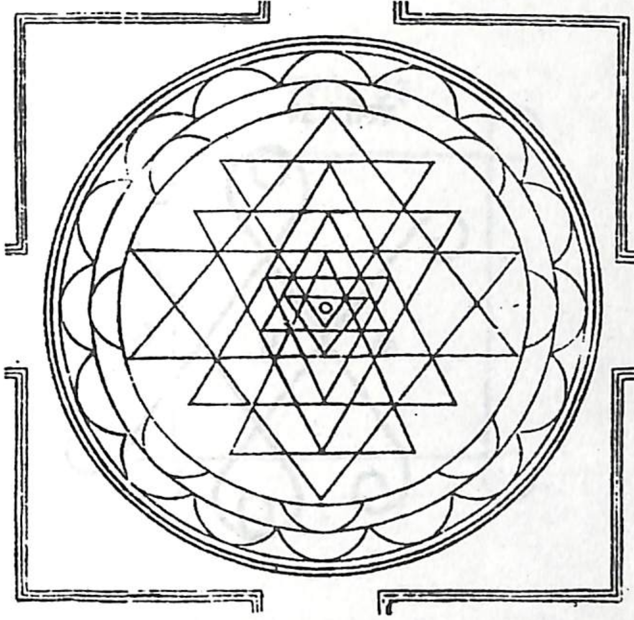
यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य षण्णवतिदिनानि समाराध्य श्लोकमिममहरहस्सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—अणिमाद्यष्टसिद्धिः परकायप्रवेशः अग्निस्तम्भनं च। नैवेद्यं—मधु त्रिमधुरं ताम्बूलं च।

स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमायाभिरभितः
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः।
किमाश्चर्य तस्य त्रिनयनसृद्धि तृणयतः
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम्॥ 30॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त मन्त्र छः दिन तक लगातार छः हज़ार जाप करें। यन्त्र को शहद, त्रिमधुर एवं ताम्बुल (पान) का भोग लगाएं तत्पश्चात् यन्त्र को गले में धारण कर लें। ऐसा करने पर व्यक्ति अणीमाधी, आठ सिद्धियों को प्राप्त करता है तथा अग्निस्तम्पन करता हुआ परकाया प्रवेश में समर्थ हो जाता है।

राज वशीकरण यन्त्र

श्लो. ३१



चक्रमिदं हाटकपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशदहान्यर्चयित्वा हस्ते निधाय श्लोकमिममनुदिनं सहस्रमावर्तयेत्। अनेन सकलजनवश्यं राजवश्यं च भवेत्। नैवेद्यं—मधु क्षीरं च।

चतुष्षष्टया तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम्॥ 31॥

इस चक्र को आम के पट्टे पर लिखकर हाथ में लेकर चौवन दिन तक नित्य प्रति एक हज़ार मन्त्रों का आवंटन करें। नैवेद्य में शहद व खीर का भोग लगाएं। ऐसा करने पर सकलजन वशीभूत होकर व्यक्ति राजा को भी वशीभूत करने में सक्षम हो जाता है।

रसायन सिद्धि यन्त्र

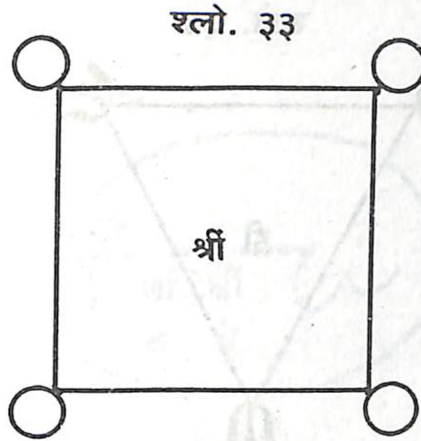


इदं यन्त्रं, स्वर्णपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सकलविद्यासिद्धिः रसायनसिद्धिश्च। नैवेद्यं—दध्यन्नं माषापूपश्च। अत्र केरलभाषापुस्तके यमिति बीजाक्षरं न दृश्यते।)

शिवश्शक्तिः कामः क्षितिरथ रविश्शीतकिरणः
स्मरो हंसश्शक्रस्तदनु च परामारहरयः।
अमी हल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिताः
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम्॥ 32॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर प्रतिदिन एक हज़ार श्लोक के जाप से विधिवत् पूजन करें। नैवेद्य में दही, उड़द एवं विचित्र अन्न को चढ़ावें तत्पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करें। ऐसा करने पर व्यक्ति सकल विद्याओं की प्राप्ति करके रस सिद्ध वैद्य हो जाता है।

धन प्राप्ति यन्त्र

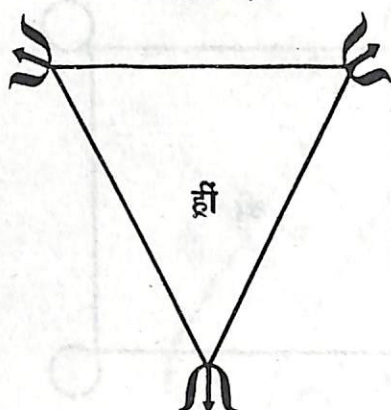


यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य तत्र रौप्यकं निधाय पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रमावर्वयेत्। फलं— भूरिधनावाप्तिः। नैवेद्यं मुद्रान्नं मधु।

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनोः
निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाग्नौ जुह्वन्तस्सुरभिघृतधाराहुतिशतैः॥ 33॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर यन्त्र मध्य में रजत बिन्दु को स्थापित करें और उपरोक्त श्लोक का एक हज़ार आवर्तन चौवन दिन तक करें। नैवेद्य में शहद व द्राक्षा चढ़ावें तो रुका हुआ पैसा आवे एवं व्यक्ति को यथेष्ट धन की प्राप्ति हो।

महाबुद्धिमान यन्त्र



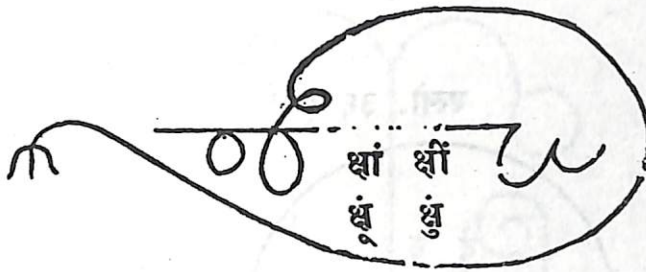
यन्त्रमिदं हेमपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशदहान्यभ्यर्च्य पद्यमिदं प्रत्यहं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन साधकः महाबुद्धिमान् भवेत्। नैवेद्यं—मधु।

शरीरं त्वं शम्भोश्शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनधम्।
अतश्शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः ॥ 34 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक इस श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार जाप के हिसाब से अर्चन करें। नैवेद्य में मधु (शहद) का भोग लगाएं और फिर यन्त्र को गले में धारण कर लें तो व्यक्ति कुशाग्र बुद्धि वाला एवं तेजस्वी हो जाता है।

क्षय रोग नाशक यन्त्र

श्लो. ३५.



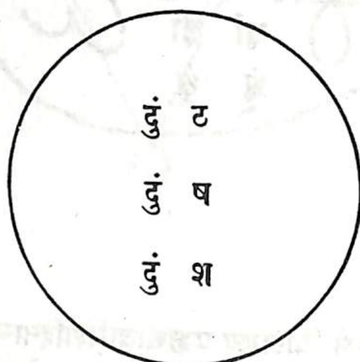
इदं यन्त्रं स्वर्णपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्त्य धारयित्वा हरीतकीमभिमन्त्र्य सेवयेत्। अनेन क्षयरोगो निवर्तते। नैवेद्यं—मधु क्षीरपायसं च।

मनस्त्वं व्योम त्वं मरूदसि मरूत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम्।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्वतपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे॥ 35॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य अर्चन पूजन करें। प्रतिदिन उपरोक्त श्लोक के एक हज़ार जाप करें एवं हरित वनस्पति को अभिमन्त्रित करके सेवन करें। शहद, खीर व दूध का भोग लगाएं तो व्यक्ति का क्षयरोग नाश होकर उसको उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

कठिन रोग निवृत्ति यन्त्र

तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं
परं शंभुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता।
यमाराध्यन् भक्तया रविशशिशुचीनामविष्ये
निरालोके लोके निवसति हिभ्रालोकभुवने ॥ 36 ॥

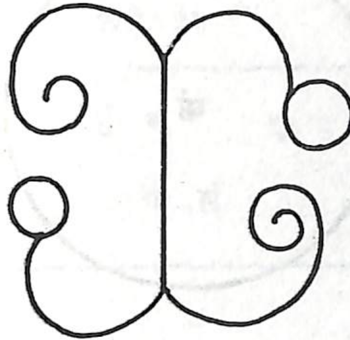


यन्त्रमिदं कनकपट्टे विलख्य पञ्चचत्वारिंशदहान्यर्चयित्वा पद्यमिदमहरहः सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत् रोगशान्तये जलं वाऽभिमन्त्र्य पाययेत्। फलं नानाविधकठिणरोगनिवृत्तिः। नैवेद्यं—मधु माषापूपश्च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर प्रतिदिन एक हज़ार मन्त्र के हिसाब से चौवन दिन तक पूजन करते रहें तथा इसी मन्त्र से अभिष्टि जल रोगी को पिलावें तो नाना प्रकार के कठिन रोगों का नाश होकर व्यक्ति को उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मरक्षा यन्त्र

श्लो. ३७



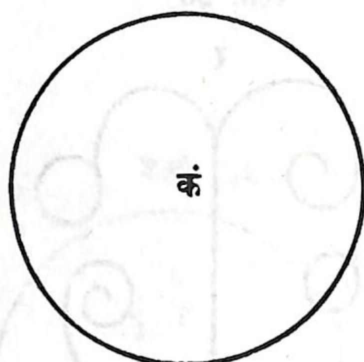
इदं यन्त्रं जातरूपपट्टे विलिख्यार्चयित्वा पद्यमिदं पञ्चसहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। जलं वाभिमन्त्र्य पिबेत्। फलं—ब्रह्मरक्षोबाधानिवृत्तिः। नैवेद्यं—गुड़पायसं नारिकेलफलं कदलीफलं च।

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम्।
ययोः कान्त्या यान्त्याः शशिकिरणसारूप्यसरणेः
विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती॥ 37॥

इस यन्त्र को चमड़े के पट्टे पर लिखकर एक दिन में पांच हज़ार जाप करें। नैवेद्य में गुड़, दूध, नारियल व केला चढ़ावें फिर अभिमन्त्रित जल ब्रह्म राक्ष, जिन, या हटीपिशाच से ग्रसित व्यक्ति को पिलावें तथा पट्टे को गले में बान्ध दें तो व्यक्ति ब्रह्म रक्षा से रक्षित होकर स्वस्थ हो जाता है।

बालारिष्ट् नाशक यन्त्र

श्लो. ३८.



यन्त्रमिदं हेमपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि पूजयित्वाऽनुदिनं श्लोकमिमं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। जलं वाऽभिमन्त्र्य प्रोक्षयेत्। फलं बालारिष्ट निवृत्तिः। नैवेद्यं— ११ माषापूपाः ताम्बूलं नारीकेलफलं कदलीफलं च।

समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम्।
यदालापादष्टादशगुणित विद्यापरिणतिः
यदादत्ते दोषाद्गुणमखिलमभ्यः पय इव॥ 38॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त श्लोक से चौवन दिन तक पूजन करें तथा एक हज़ार मन्त्र प्रतिदिन जपें। उसके पश्चात् यह यन्त्र बालक के गले में पहना दें इस मन्त्र से अभिष्टि यन्त्र से बालक को छींटा दे। यन्त्र को ग्यारह उड़द के दाने नारियल, केला एवं ताम्बुल (पान) चढ़ावें। ऐसा करने पर बालारिष्ट भय का नाश होता है अर्थात् जन्म कुण्डली के दुरपयोग के कारण अत्यन्त छोटी आयु वाले बच्चों के जीवन की रक्षा हो जाती है।

दुस्वप्न नाशक यन्त्र

श्लो. ३६

टं	पं	पः
	षं सं	

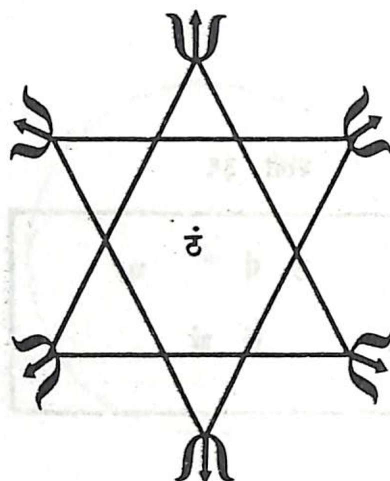
यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य द्वादशदिनान्यभ्यर्च्य प्रत्यहं श्लोकमिममष्टोत्तरशतमावर्त्य धारयेत्। अनेन दुरस्वप्नं शाम्यति। नैवेद्यं—क्षीरं क्षीरपायसं मधु च।

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
तमीडे संवर्त जननि महतीं तां च समयाम्।
यदालोके लोकान् दहति महति क्रोधकलिते
दयार्द्रा या दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति॥ 39॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर बारह दिन तक उपरोक्त श्लोक के एक हजार आठ मन्त्रों का नित्य जाप करें। यन्त्र को दूध, खीर, व शहद का भोग लगावें। अनुष्ठान समाप्ति पर यन्त्र को गले में धारण कर लें। निश्चय ही दुस्वप्न एवं अशुभ की आशंका का नाश होता है।

स्वप्न में इष्ट वस्तु के दर्शन का यन्त्र

श्लो. ४०



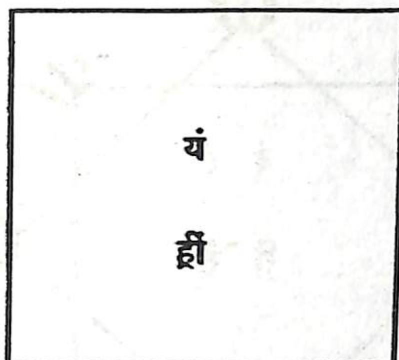
इदं यन्त्रं हेमपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वाश्रशदहान्यर्चयित्वा पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्योपधाने निक्षिप्य शयीत। फलं—इष्टार्थस्य स्वप्ने दर्शनम्। फलं—इष्टार्थस्य स्वप्ने दर्शनम्। नैवेद्यं—मधु क्षीरपायसं ताम्बूलं च।

तटित्वन्तं शत्तया तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारन्ताभरणम रिण्डेन्द्रधनुषम्।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं
निषेये वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम्॥ 40॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र के एक हज़ार पाठ करें। चौवन दिन के पश्चात् यन्त्र को तकिये के नीचे रखकर सो जाओ। पूजाकाल में यन्त्र को शहद, क्षीर, दूध व ताम्बुल (पान) का नित्य भोग लगावें। सोते समय अभीष्ठ वस्तु का मन में ध्यान रखते हुए सो जायें तो वांच्छित वस्तु स्वप्न में दिखलाई पड़ेगी।

उदर रोग नाशक यन्त्र

श्लो. ४१



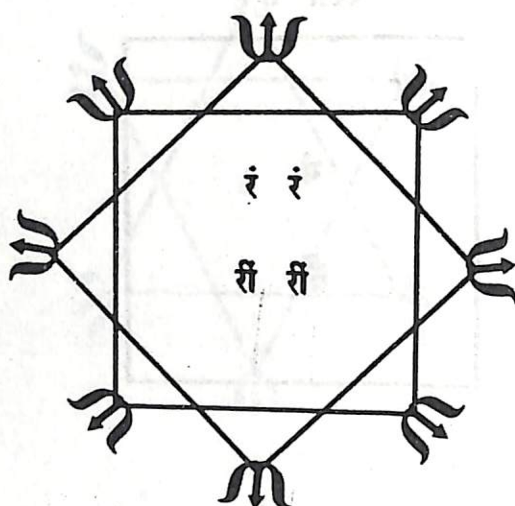
यन्त्रमिदं हेमपट्टतले विलिख्य त्रिंशदहानि पूजयित्वा पद्यमिदमहरहश्चतुस्सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सकलोदररोगनिवृत्तिः नैवेद्यं—मधु।

तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम्।
उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम्॥ 41॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर तीस दिन तक विधिवत पूजा करें तथा उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन चार हज़ार जाप करते हुए शहद का भोग लगावें फिर यन्त्र को गले में धारण करेंगे तो सभी प्रकार के उदर रोग नष्ट हो जाते हैं यहाँ तक कि पेट का केंसर एवं जलधर जैसे रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

उदर व्याधि नाशक यन्त्र

श्लो. ४२



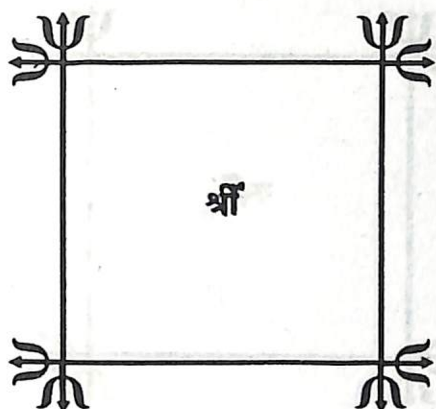
इदं यन्त्रं स्वर्णपट्टे विलिख्य पञ्चत्वारिंशद्दिनानि समाराध्य श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन महोदरव्याधिर्नश्यति। नैवेद्यं—शर्करा।

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिस्सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः।
स नोडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
धनुः शौनासीरं किमिति न निबन्धाति धिषणाम्॥ 42॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर, उपरोक्त श्लोक के एक हज़ार जाप चौवन दिन तक करें, यन्त्र को शक्कर का भोग लगावें तो पेट के अन्दर या भयंकर व्याधि भी नष्ट हो जाती है।

सकल जन वशीकरण यन्त्र

श्लो. ४३



यन्त्रमिदं हाटकपट्टे विलिख्य चत्वारिंशदहान्यभ्यर्च्य पद्यमिदमनुदिनं त्रिसहस्त्रमावर्त्याङ्गलीयकं कृत्वा धारयेत्। फलं—सकलजनवश्यता। नैवेद्यं—मधु।

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं
घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरम्बं तव शिवे।
यदीयं सौरभ्यं सहणमुपलच्छु सुमनसो
वसन्त्यस्मिन्मन्ये वलमथनवाटीविटपिनाम्॥ 43॥

इस यन्त्र को लकड़ी के पट्टे पर लिखकर चालीस दिन तक नित्य पूजा करें तथा उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन तीन हज़ार बार जाप करें एवं शहद का भोग लगावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र की अंगूठी बनाकर शरीर पर धारण करने से व्यक्ति सभी प्रकार के लोगों को वश में करने में सक्षम हो जाता है।

दूसरों के वशीकरण को नष्ट करने वाला यन्त्र

श्लो. ४४



यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य द्वादशाहान्यर्चयित्वा श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। कुङ्कुमं हरिद्राचूर्णं वाऽभिमन्त्र्य तिलकं धारयेत्। अनेन वश्यता बाधानिवृत्तिश्च भवेत्। नैवेद्यं—गुड़पायसम्।

तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी-
परीवाहस्त्रोतस्सरणिरिव सीमन्तसरणिः।
वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-
द्विषां बृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम्॥ 44॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर बारह दिन तक नित्य पूजन करें तथा उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में गुड़ और दूध का भोग लगावें तथा इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कुमकुम व हल्दी के चूरन का तिलक जिसके सिर पर लगायेंगे वह प्राणी दूसरों के वशीकरण से छुट जायेगा।

वाक्सिद्धि यन्त्र

श्लो. ४५

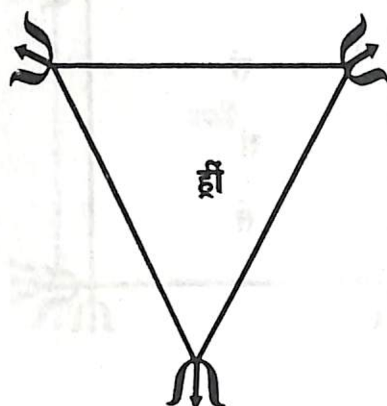


इदं यन्त्रं स्वर्णपट्टतले विलिख्य चत्वारिंशदहानि समाराध्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। फलं—वाक्सिद्धिः। नैवेद्यं—त्रिमधुरं मधु च।

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्री भिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पकेंरूहरूचिम्।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरूचिकिजंल्करूचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ॥ 45 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चालीस दिन तक नित्य पूजन करें तथा प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार बार जाप करें तथा यन्त्र को शहद व त्रिमधुर भोग लगावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र को गले में धारण कर लें तो व्यक्ति वचन सिद्धि हो जाता है। अर्थात् उसके मुंह से जो बात निकलेगी वह सत्य सिद्ध होती चली जायेगी।

गर्भधारण यन्त्र

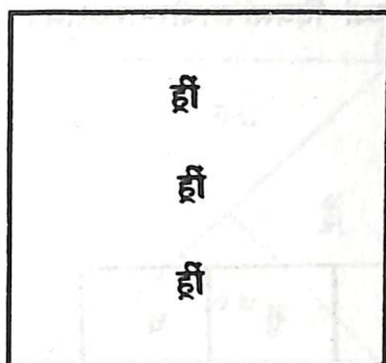


यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन भर्तृसमागमो गर्भधारणं च भवति। नैवेद्यं—क्षीरपायसं—मधु च।

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम्।
विपर्यासन्यासादुभयमपि संभूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः ॥ 46 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजा करें। प्रस्तुत श्लोक को नित्य एक हजार जप करें। यन्त्र को दूध, खीर व शहद का भोग लगावें तद्पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करें एवं पति के साथ रमण करें तो निश्चय ही गर्भ धारण होगा।

देवता वशीकरण यन्त्र



(i) इदं सुवर्णपट्टे विलिख्य पञ्चविंशतिदिनानि संपूज्य पद्यमिदमनुदिनं सप्तसहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन देवता वशमेष्यति।

(ii) भस्म वाऽभिमन्त्र्य धारयेत्। फलं—सकलवश्यता। उभयत्र नैवेद्यं—नारिकेलफलं कदलीफलं मधु च।

भ्रुवौ भुग्नो किंचिंद्भवनभयभगंव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररूचिभ्यां घृतगुणम्।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे॥ 47॥

इस यन्त्र को सवर्ण पत्र पर लिखकर सौ दिन तक नित्य पूजन करें तथा इस श्लोक का प्रतिदिन सात हजार जप करें तो देवता भी वशीभूत हो जाते हैं।

इस यन्त्र को नारियल, केला व शहद का भोग लगावें तथा इस मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्मी को ललाट पर लगाने से व्यक्ति देवता एवं कई प्रकार के प्राणियों को वशीभूत करने में समर्थ हो जाता है।

नवग्रह दोष नाशक यन्त्र

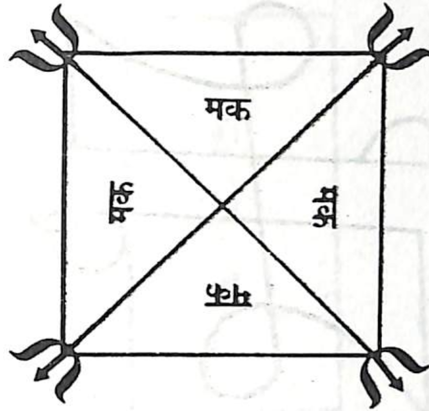
अहः सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायक तया।
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरूचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ॥ 48 ॥

बु	शु	च
गु	र	कु
रा	श	के

यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य एकोनविंशतिदिनानि समाराध्य श्लोकम्रिमं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन नवग्रहदोषशान्तिर्भवति। नैवेद्यं—चित्रान्नं कदलीफलं मधु च।

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर इक्कीस दिन तक नित्य पूजन करें तथा उपरोक्त श्लोक का एक हज़ार जाप प्रतिदिन करें। नैवेद्य में शहद, केला एवं चित्र-विचित्र पकवान का भोग लगावें। इस यन्त्र को गले में धारण करने से नवग्रह जनित दोष नष्ट होकर शांत हो जाते हैं।

निधि दर्शन यन्त्र

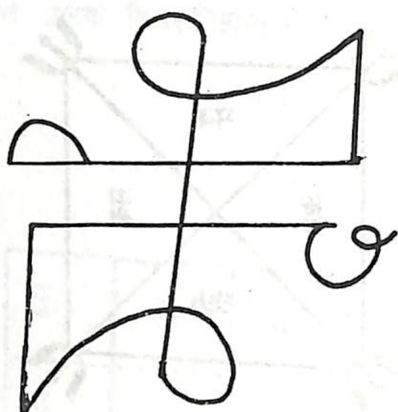


यन्त्रमिदं हरिद्राखण्डे लिखित्वा पञ्चविंशतिदिनान्यभ्यर्च्य श्लोकमिममहरहस्सहस्त्रमावर्त्य हरिद्राखण्डमग्नौ दग्ध्वा तत्तैलेन पिष्ट्वा पञ्चदशवर्षीयस्य मार्जालदृशो बालकस्य हस्तेन अक्ष्णोर्लेपयित्वा पश्यतो निधिदर्शनं भवति। नैवेद्यं—मुद्रान्नं मधु च।

विशाला कल्याणी स्फुटरूचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधारा धारा किमपि मधुरा भोगवतिका।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ॥ 49 ॥

इस यन्त्र को हरिद्रा खण्ड (हल्दी का गांठीया) पर लिखें तथा सौ दिन तक नित्य पूजन करें एवं प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जाप नित्य करें उसके बाद हरिद्रा खण्ड को अग्नि में जलाकर उसे तेल से पिसकर काजल बनावें और फिर (मंजरी आंखों) बिल्ली की जैसे आंख वाला पन्द्रह वर्ष के बालक के हाथ से आंखों में काजल लगावें तो जमीन में गड़ा धन दिखलाई देवे। यन्त्र को शहद एवं उड़द का भोग लगावें।

चेचक रोग नाशक यन्त्र



इदं यन्त्रं कनकपट्टतले विलिख्य चत्वार्यहान्यर्चयित्वा पद्यमनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। जलं वाभिमन्त्र्य सेवेत। एवं कृते मसूरिका न समागमिष्यति। नैवेद्यं—शर्करा खण्डशर्करा गुडं कदलीफलं मधु नारिकेलं च।

कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं
कटाक्षव्याक्षेमभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम्।
अमुचंन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरलौ
असूयासंसर्गादलिकनयनं किंचिदरूणम्॥ 50॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चार दिन तक पूजन अर्चना करें एवं प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार जाप करें तद्पश्चात् इसी मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित करके रोगी को पिलावें तो उसको चेचक का रोग नहीं होगा। यन्त्र पूजा के समय शक्कर, मिश्री, गुड़, केला, शहद, एवं नारियल का भोग लगावें।

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

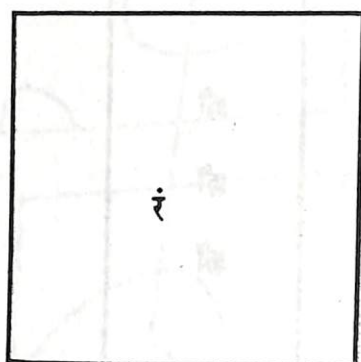
क्लीं
क्लीं
क्लीं

यन्त्रमिदं सुवर्णपट्टे विलिख्य, पञ्चचत्वारिंशदहानि संपूज्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। चन्दने वा विलिख्य पूर्ववत्पूजादिकं कृत्वा तिलकं धारयेत्। फलं—सर्वजनवश्यता। नैवेद्यं—माषापूपः मधु च।

शिवे श्रृगांरार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गंगायां गिरिशचरिते विस्मयवती।
हराहिभ्यो भीता सरसिरूहसौभाग्यजननी
सखीषु स्मेरा ते मयी जनति दृष्टिः सकरूणा॥ 51॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखें और चौवन दिन तक विधिवत् पूजा करें एवं प्रस्तुत श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार जप करें तथा चन्दन को अभिमन्त्रित करके चन्दन घोटकर इस मन्त्र से तिलक करने पर व्यक्ति सभी लोगों को वश में करने के लिए समर्थ हो जाता है। नैवेद्य में शहद का भोग लगावें।

कर्ण रोग नाशक यन्त्र

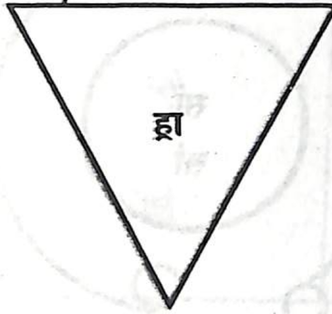


इदं यन्त्रं कलकपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशदहानि समाराध्य श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—कर्णरोगशमनं नेत्ररोगनिवृत्तिश्च। नैवेद्यं—तिलान्नं क्षीरपायसं च।

गते कर्णाभ्यर्ण गरूत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले।
इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलात्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशर विलासं कलयतः॥ 52॥

इस यन्त्र को चांदी के पट्टे पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजा करें। और इस श्लोक का एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में खीर, दूध, व तिल का भोग लगावें। यन्त्र को शरीर पर धारण करने से कर्णरोग का नाश होता है और साथ ही नेत्रगत रोगों का भी नाश होता है।

प्रतिकूलता नाशक यन्त्र

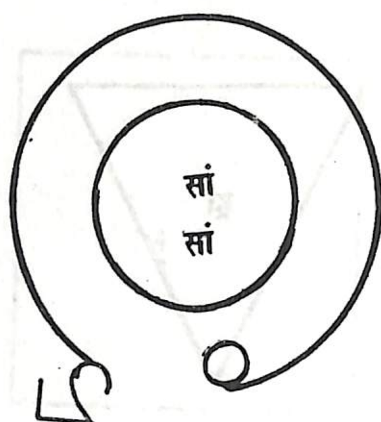


यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टे विलिख्य भूमौ संस्थाप्य तत्र दीपं निधाय श्लोकमिमं त्रिसहस्त्रमावर्तयेत्। अनुकूलतायां दीपं उज्जवलेत् न चेत्प्रातिकूल्यम्। नैवेद्यं—गुडापूपः माषापूपः क्षीरपायसं च।

विभक्तत्रैवर्ण्य व्यतिकरितलीलाजंनतया
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते।
पुनः स्रष्टुं देवान् द्रहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजः सत्वं बिभ्रत्तम इति गुणानां त्रयमिव॥ 53॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर भूमि पर स्थापित करें और इस श्लोक का तीन हजार जप करें तद्पश्चात् मन्त्र पर दीपक जलावें तो सारी प्रतिकूलता नष्ट होकर अनुकूल परिस्थितियां बनती हैं। यन्त्र को खीर, दूध एवं गुड़ का भोग लगावें।

योनि रोग नाशक यन्त्र

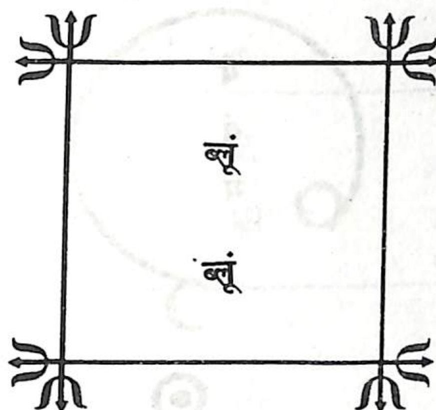


यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन योनिरोगो निवर्तते। नैवेधं—गुडपायसम्।

पवित्रीकर्तुं नः पशुमतिपराधीनहृदय
दयामित्रैर्नेत्रैररूणधवलश्यामरूचिभिः।
नदः शोणो गंगा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयति संभेदमनधम्॥ 54॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक पूजा करें एवं प्रस्तुत मन्त्र का एक हज़ार जाप नित्य करें। यन्त्र को गुड़ व दूध का भोग लगावें। इस यन्त्र को धारण करने पर सभी प्रकार के रोगों का नाश होता है। यह यन्त्र विशेष करके स्त्री वर्ग के लिए बनाया गया है जो अपने रोग दूसरों को नहीं बता सकती।

अन्य व्याधी नाशक यन्त्र



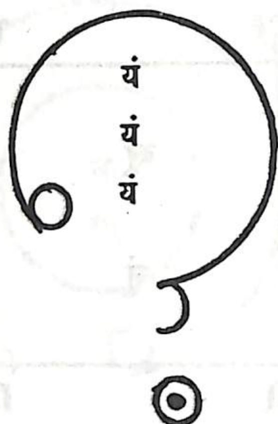
इदं यन्त्रं हाटकपट्टे विलिख्य पद्यमिदं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। कलिद्रुमफलं वाऽभिमन्त्र्य बध्नीयात्। अनेनाण्डव्याधिश्शाम्यति। नैवेद्यं कदलीफलं क्षीरपायसं मधु ताम्बूलं च। (अत्र केरलभाषापुस्तके "बंला संला" इति बीजाक्षरभेदो दृश्यते।)

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुः सन्तो धरणिधरराजन्यतनये।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शंके परिहृतनिमेषास्तव दृशः॥ 55॥

इस यन्त्र को सुवर्ण के पट्टे पर लिखकर प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जाप करें। यन्त्र को नैवेद्य में दूध, खीर, केला, शहद व पान का भोग लगावें। कलि ध्रुम (बहेड़ा) के फल को अभिमन्त्रित करके शरीर पर बांधें तो सब प्रकार की व्याधि नष्ट होती है।

वृष्टि प्रदाता यन्त्र

श्लो. ५६



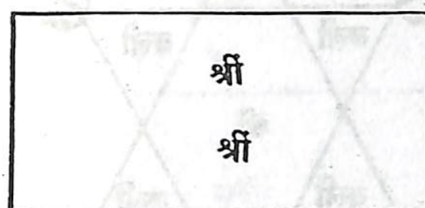
यन्त्रमिदं जातरूपपट्टतले मकरमत्स्यदन्ते वा लिखित्वा पञ्चचत्वारिंशदहान्यभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रत्यहं विंशतिसहस्रमावर्त्य स्वस्मिन्निवेशयेत्। अनेन द्वारपालको धावेत्। मुद्रितं कवाटं स्वयमुद्धाटयेत्। वृष्टिश्च भवेत्। नैवेद्यं—मधु।

तवापर्णे कर्णेजपनयनपैशुन्यचकिताः
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाः शफरिकाः।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघट्य्य प्रविशति॥ 56॥

इस यन्त्र को चांदी के पत्र पर लिखें अथवा मगरमच्छ या मच्छली के दांत पर लिखें। चौवन दिन तक बीस हज़ार मन्त्रों का जाप करें। अनुष्ठान पूरा हो जाने पर यन्त्र को अपनी जेब में रखें एवं कोई भी बन्द दरवाजे को दौड़ते हुए अपने हाथ से उदघाटित करें। दरवाजे के खुलते ही वर्षा हो जायेगी।

बहुभाग्यवान यन्त्र

श्लो. ५७



इदं यन्त्रं हेमपट्टे विलिख्य षडहान्यभ्यर्च्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्रमावर्त्य धारयेत्। साधको बहुभाग्यवान् भवेत्। नैवेद्यं—क्षीरपायसं मधु च।

दृश द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरूचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपगा मामपि शिवे।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः॥ 57॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर छः दिन तक प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार पाठ नित्य करते हुए अर्चना करें। नैवेद्य में दूध, खीर व शहद का भोग लगावें। इस यन्त्र को गले में धारण करें तो व्यक्ति का भाग्योदय होता है एवं साधक बहुत भाग्यशाली हो जाता है।

सकल राज वशीकरण यन्त्र

श्लो. ५८



यन्त्रमिदं कुङ्कमचूर्णे लिखित्वा पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि समाराध्य श्लोकमिममनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा तिलकं धारयेत्। फलं—सकलराजवश्यता सर्वव्याधिहृतिश्च। नैवेद्यं—मधु।

अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये
न केषामाधत्ते कुसुमशर को दण्डकुतुकम्।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणमथमुल्लघंय विलसन्
अपागंव्यासगों दिशति शरसन्धानधिषणाम्॥ 58॥

इस यन्त्र को कुमकुम के चूर्ण से लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजन करें एवं प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जप करें। नैवेद्य में शहद का भोग लगावें। अनुष्ठान पूरा होने पर अभिमन्त्रित कुमकुम का तिल ललाट पर लगावें तो साधक सभी प्रकार के राज वर्गी लोगों का वशीकरण कर लेता है। इस प्रयोग से सभी प्रकार के व्याधियों का नाश भी होता है।

सकलजन वशीकरण यन्त्र

श्लो. ५६

ऐं
क्लीं
सौः

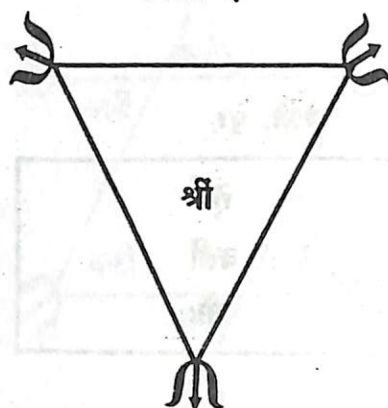
इदं यन्त्रं स्वर्णपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सकलजनवश्यता। नैवेद्यं—गुडोदनं मधु च।

स्फुरन्दण्डाभोगप्रतिफलितताटकं युगलं
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम्।
समारूह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं
महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते ॥ 59 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजन करें और इस मन्त्र का प्रतिदिन एक हज़ार जप करें। नैवेद्य में शहद व गुड़ का भोग लगावें। यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति सकलजन को वशीभूत करने में समर्थ हो जाता है।

सकल विद्या प्राप्ति यन्त्र

श्लो. ६०



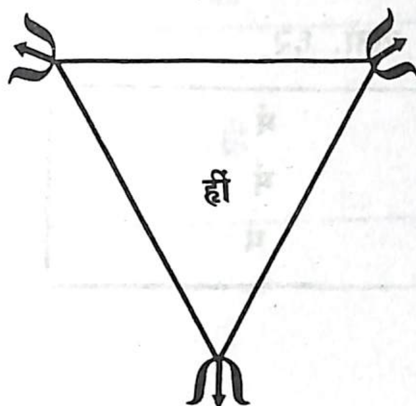
यन्त्रमिदं हाटकपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशदहान्यभ्यर्च्य श्लोकमिममहरहस्सहस्र मावर्त्य धारयेत्। अनेन साधकः सकलविद्यामाप्नुयात्। नैवेद्यं मधु क्षीरपायसं च।

सरस्वत्याः सूक्तीरमृतलहरीकौशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम्।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
झणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ॥ 60 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पट (Gold Plate) पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजन करें तथा प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में शहद व खीर अथवा दूध का भोग लगावें। इस यन्त्र को गले में धारण करने से व्यक्ति को समस्त प्रकार की विद्याएं स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं।

सकल पुरुष वशीकरण यन्त्र
(केवल स्त्रियों के लिए)

श्लो. ६१



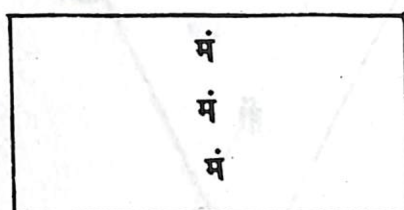
इदं यन्त्रं कनकपट्टे विलिख्याष्टौ दिनानि समाराध्य पद्यमिदमनुदिनं द्वादशसहस्रमावर्त्य स्त्रीणामाभरणे निक्षिपेत्। अनेन सकलपुरुषवश्यता भवेत्। नैवेद्यं—नारिकेलफलं कदलीफलं मधु च।

असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम्।
वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिः श्वासगलितं
समृद्धया सत्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः ॥ 61 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर आठ दिन तक नित्य पूजा अर्चना करें। प्रस्तुत श्लोक का बारह हज़ार जाप करके स्त्री अपने आभूषण में धारण करें। तो वह स्त्री सभी प्रकार के पुरुषों को वशीभूत करने में समर्थ हो जाती है। नैवेद्य में नारियल, केला व शहद का भोग लगावें।

निद्रा यन्त्र

श्लो. ६२



यन्त्रमिदं हेमपट्टतले लिखित्वाष्टौ दिनानि संपूज्य श्लोकमिमं प्रत्यहमष्टसहस्त्रवारं जप्त्वा रात्रौ निद्राविहीनस्य समीपे स्थापितं चेत् स निद्रां लभते। नैवेद्यं—माषापूपः मधु च।

प्रकृत्याऽऽरक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरूचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता।
न बिम्बं तद्बिम्बप्रतिफलनरागादरूणितं
तुलामध्यारोढुं कथमिव विलज्जेत कलया॥ 62॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर आठ दिन तक नित्य पूजन करें एवं मन्त्र का प्रतिदिन आठ हजार जाप करें। नैवेद्य में शहद का भोग लगावें। यन्त्र सिद्ध होने पर रोग ग्रसित व्यक्ति के सिर के नीचे रख दें तो व्यक्ति को नींद आने लगेगी।

यथोक्त आचरण यन्त्र

श्लो. ६३

ह्रीं

यन्त्रमिदं हाटकपट्टतले विलिख्य त्रिंशद्दिनान्याराध्य पद्यमिदमनुदिनं त्रिंशत्सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन सर्वाऽपि यथोक्तमाचरेत्। नैवेद्यं—नारिकेलफलम्। (केरलभाषापुस्तके यन्त्रमिदं न दृश्यते।)

स्मितज्योत्सान्जालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणामासीदतिरसतया चंचुजडिमा।
अतस्ते शीतांशोरमृतहरीमाम्लरूचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काजिंकथिया॥ 63॥

इस यन्त्र को सुवर्ण यन्त्र पर लिखें और तीस दिन तक नित्य अर्चन पूजन करें। तीस हज़ार जप परिपूर्ण होने पर यन्त्र को गले में धारण करें। नैवेद्य में नारियल का फल चढ़ावें। इस यन्त्र को धारण करने पर व्यक्ति जैसा बोलेगा वैसा ही आचरण करेगा।

सकलजन वशीकरण यन्त्र

श्लो. ६४



इदं यन्त्रं कुङ्कमे विरच्याष्टावहानि पूजयित्वा प्रत्यहं श्लोकमिममयुतवारं जप्त्वा धारयेत्। फलं—सकलजनवश्यता। नैवेद्यं—गुडपायसं मधु च।

अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेड नजपा।
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषां॥ 64 ॥

इस यन्त्र को कुमकुम से लिखकर आठ दिन तक नित्य पूजन अर्चन करें और प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जप नित्य करें। नैवेद्य में गुड़, शहद व दूध का भोग लगावें। यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति सकलजन को वशीभूत करने में समर्थ हो जाता है।

स्व वशीभूत करने का यन्त्र

श्लो. ६५



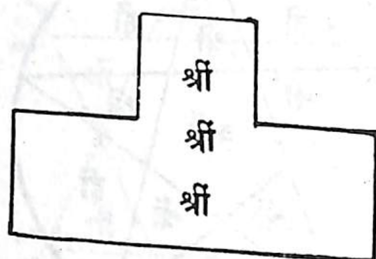
यन्त्रमिदं हेमपट्टतले विलिख्य गुग्गुलेन धूपयित्वा पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि रक्तपुष्पैः श्रीचक्रवदभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन सर्वाऽपि स्ववशगो भवेत्। नैवेद्यं—मधु।

रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरसैत्रः कवचिभिः
निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकलाः
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः ॥ 65 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक रक्त पुष्प से पूजन करें और गुगल धूप से नित्य धूपीत करें एवं प्रतिदिन एक हज़ार मन्त्र जाप करें और श्रीयन्त्र के समान इसका पूजन करने से सभी लोग साधक के वश होकर इच्छा अनुरूप कार्य करने लगते हैं।

संगीत विद्या यन्त्र

श्लो. ६६



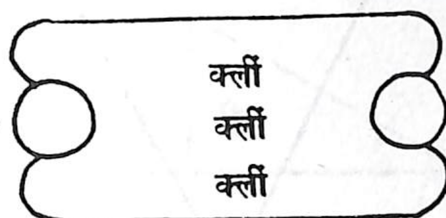
इदं यन्त्रं कनकपट्टतले लिखित्वा पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि समाराध्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन साधकः वीणादिसङ्गीतविद्याकुशलो भवेत्। नैवेद्यं— गुडपायसं मधु च।

विपंच्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपतेः
त्वया रब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने।
तदीर्यमाधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम्॥ 66॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य आराधना करें। प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार बार जाप करें। यन्त्र को गुड़, दूध व शहद का भोग लगावें एवं अनुष्ठान पूरा होने पर गले में धारण करें। व्यक्ति वीणा इत्यादि सभी प्रकार के संगीत वाध्य यन्त्रों में प्रवीण हो जाता है।

सकल स्त्री वशीकरण यन्त्र

श्लो. ६७

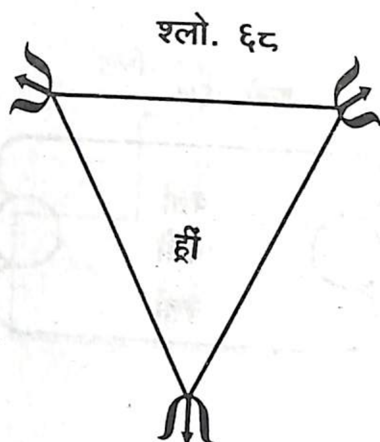


यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टतले विलिख्य पत्या साकं पञ्चचत्वारिंशदहानि समाराध्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सकलस्त्रीवश्यता। नैवेद्यं—मधु क्षीरपायसं ताम्बूलं च।

करा‍ग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया।
करग्राह्य शम्भोर्मुखमुकुरवृत्तं गिरिसुते
कथंकारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम्॥ 67॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजा करें एवं प्रस्तुत मन्त्र का एक हज़ार जाप प्रतिदिन करें। फिर यन्त्र को शहद, खीर, दूध व ताम्बुल (पान) का भोग लगावें एवं गले में धारण करें तो सभी प्रकार की स्त्रियां वशीभूत हो जाती हैं।

सकल राज वशीकरण यन्त्र



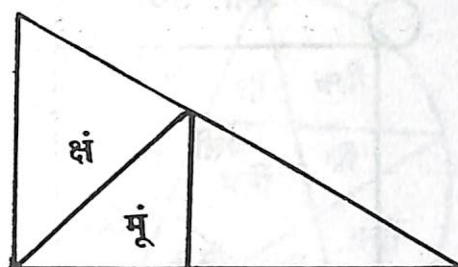
इदं यन्त्रं कुंकुमे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि श्रीचक्रवदभ्यर्च्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। फलं सकलराजवश्यता। नैवेद्यं—मधु तांबूलं च। (केरलभाषापुस्तके यन्त्रमिदं नास्ति।)

भुजाश्लेषान्नित्यं पुरदमयितः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम्।
स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यं वहति यदधो डारलतिका॥ 68॥

इस यन्त्र को कुमकुम पर लिख कर चौवन दिन तक श्रीयन्त्र के समान नित्य न करें एवं प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जाप प्रतिदिन करें व शहद व पान भोग लगावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र को गले में धारण करने से सभी र के राजपुरुष वशीभूत हो जाते हैं।

पुष्प वशीकरण यन्त्र

श्लो. ६६



यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टतले लिखित्वा पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि समाराध्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्रमावर्त्य साधयेत्। चम्पकपुष्पमभिमन्त्र्याभिलषितस्त्रियै दद्यात्। सा वशमेष्यति। नैवेद्यं—मधु। (केरलभाषापुस्तके यन्त्रमिदं न दृश्यते।)

गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते॥ 69॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर पैंतालीस दिन तक नित्य पूजन करें। प्रस्तुत मन्त्र का एक हज़ार जाप नित्य करें। फिर इस यन्त्र से चम्पक (चमेली) पुष्प को अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को देंगे वह उसे देखते ही वशीभूत हो जायेगी। नैवेद्य में यन्त्र को शहद का भोग लगावें।

सकल पुरुष वशीकरण यन्त्र



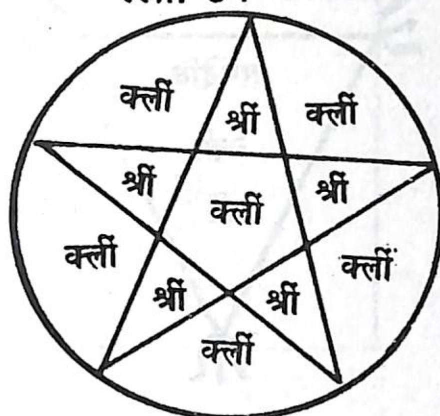
इदं यन्त्रं कनकपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि समभ्यर्च्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्रवारं जप्त्वा धारयेत्। फलं—सकलपुरुषवश्यता। नैवेद्यं—नारिकेलफलं मधु च।

मृणालीमृद्वीनां तव भुजलतानां वतसृणां
चतुर्भिः सौन्दर्यं सरसिजभवस्तौति वदनैः।
नखेभ्यः संत्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया॥ 70॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक पूजा अर्चन करें। प्रस्तुत मन्त्र का नित्य एक हज़ार जाप करते हुए नारियल का भोग लगावें। यन्त्र को गले में धारण करने पर साधक सकल पुरुषों को वश में करने में सफल हो जाता है।

यक्षिणी वशीकरण यन्त्र

श्लो. ७१



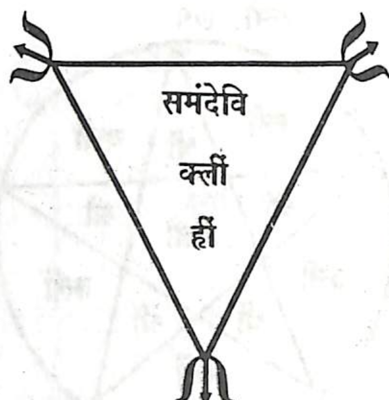
यन्त्रमिदं हाटकपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि पूजयित्वा वटवृक्षे उपविश्य पद्यमिदमनुदिनं द्वादशसहस्त्रमावर्त्य साधयेत्। अनेन यक्षिणी वशमेश्वति। नैवेद्यं—मधु।

नखानामुद्योतैर्नवनलिनरागं विहसता
कराणां ते कान्तिं कथय कथयामः कथमुमे।
कयाविद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम्॥ 71॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक वटवृक्ष के नीचे बैठकर नित्य पूजन करें तथा प्रतिदिन बारह हज़ार मन्त्रों का जाप करें। नित्य शहद का भोग लगावें तो साधक को यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।

भयनाशक यन्त्र

श्लो. ७२



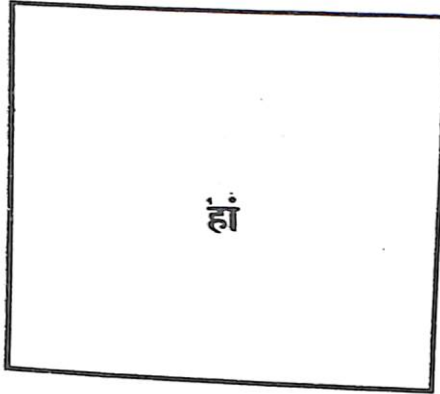
इदं यन्त्रं कनकपट्टतले विलिख्य पञ्चचत्वारिंशदहान्यर्चयित्वा श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्रमावर्त्य धारयेत्। एवं कृते साधकः रात्रौ यत्र कुत्र वा गन्तुं शक्नुयात्। भयलेशोऽपि नास्ति। नैवेद्यं—मधु।

समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम्।
यदालोक्याशकांकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झडिति॥ 72॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजन करें। प्रस्तुत मन्त्र का एक हज़ार जप करें। तद्पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करके साधक रात्रि में किधर भी, अगमय स्थान पर गमन करने पर भी लेश मात्र भी भय नहीं रहता। इस यन्त्र को शहद का भोग लगावें।

दुगदप्रदाता यन्त्र

श्लो. ७३

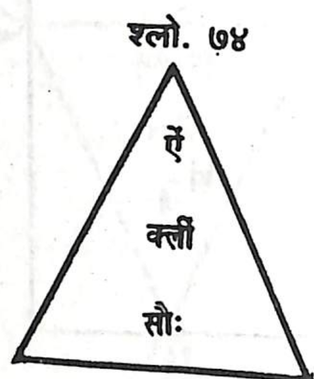


इदं यन्त्रं कनकपट्टे विलिख्य सप्तदिनान्यभ्यर्च्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्रवारं जप्त्वा धारयेत्। फलं—स्त्रीणां स्तन्याभावे स्तन्यप्राप्तिः, धेनूनां स्थगितस्य पयसो वहिर्निस्सरणं च। नैवेद्यं—मधु क्षीरं च।

अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
न संदेहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसगंरसिकौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौंचदलनौ ॥ 73 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सात दिन तक नित्य अर्चना करें। एवं प्रस्तुत मन्त्र का एक हज़ार जप करें। तद् पश्चात् यन्त्र जिस गाय के गले में डालेंगे उसके स्तनों से दूध निकलने लगेगा। इसे जिस स्त्री के गले में पहनायेंगे. यदि उसके स्तन कम हों तो स्थूल व प्रगाढ़ हो जायेंगे। यदि स्तनों में दूध सूख गया है तो उनमें स्वतः ही दूध बनने लगेगा। यन्त्र के नैवेद्य में खीर व शहद का भोग लगावें।

कीर्तिदायक यन्त्र



यन्त्रमिदं हेवपट्टतले विलिख्य देवसन्निधौ पञ्चचत्वारिंशदहानि समाराध्य श्लोकमिमं प्रतिवासरमष्टोत्तरशतमावर्त्य धारयेत्। अनेन साधकः कीर्तिमाप्नुयात्। नैवेद्यं—क्षीरपायसं मधु च।

वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम्।
कुचाभोगो बिम्बाधररूचिभिरन्तश्शबलितां
प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते॥ 74॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर देवता के सान्निध्य में चौवन दिन तक नित्य पूजन करें। प्रस्तुत श्लोक का प्रतिदिन एक सौ आठ बार जप करें। यन्त्र को ख़ीर, दूध व शहद का भोग लगावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र को गले पर धारण करने पर व्यक्ति को विमल यश व कीर्ति की प्राप्ति होती है।

कवित्वदायक यन्त्र



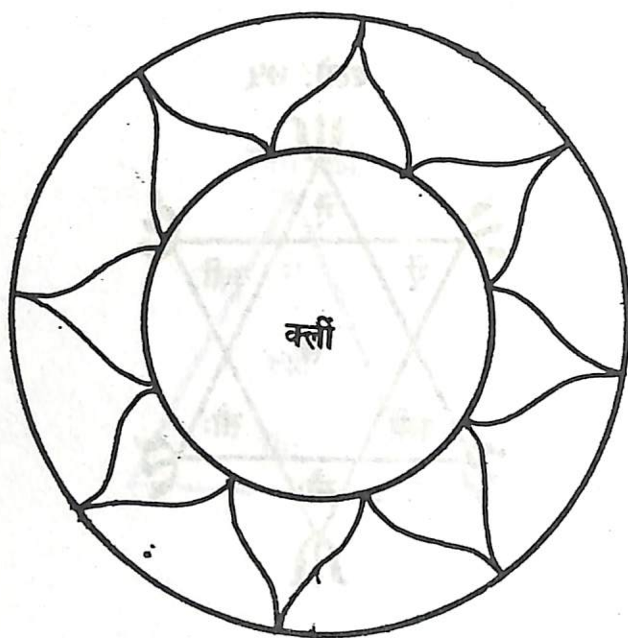
इदं यन्त्र हाटकपट्टतले विलिख्य त्रीणि दिनान्याराध्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन साधकः कविर्भवेत्। नैवेद्यं—कदलीफलं मधु च।

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
पयः पारावारः परिवहति सारस्वतमिव।
दयावत्या दत्तं द्रविलशिशुरास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता॥ 75॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर तीन दिन तक नित्य पूजन करें। तथा प्रस्तुत श्लोक के एक हज़ार जाप करते हुए तीनों दिन केले व शहद का भोग लगावें तद् पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति प्रतिभाशाली कवि बन जाता है।

सकलजन वशीकरण यन्त्र

श्लो. ७६

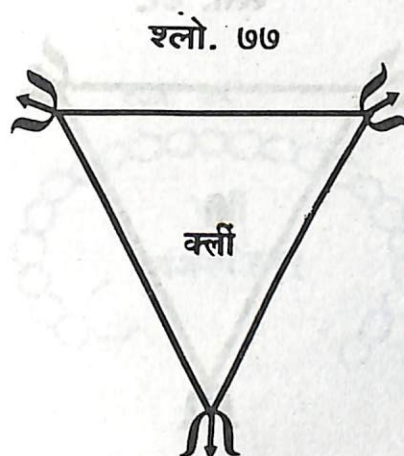


यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टतले लिखित्वाऽष्टौ दिनान्यर्च्य पद्यमिदमनुदिनं द्वादशसहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सकलजनवश्यता। नैवेद्यं—नारिकेलफलं कदलीफलं दध्यन्नं मधु च।

हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसगों मनसिजः।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ॥ 76 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर बारह हज़ार मन्त्र प्रतिदिन के हिसाब से आठ दिन तक पूजन करें। प्रस्तुत यन्त्र को नारियल, केला, दही व शहद का भोग लगावें। तद् पश्चात् गले में धारण करने पर व्यक्ति सकलजन को वशीभूत करने में सफल हो जाता है।

राजपुरुष वशीकरण यन्त्र



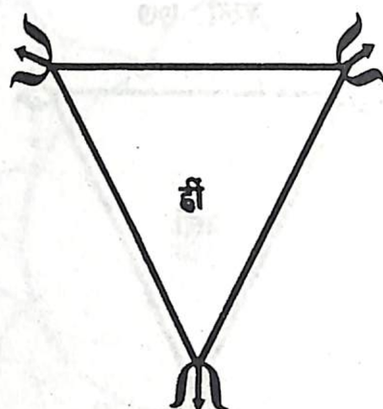
कपिलागोघृतमर्दितरक्तोत्पलेङ्गाले यन्त्रमिदं श्लोकं च विलिख्य दशदिनानि संपूज्य श्लोकमिममनुदिनं द्विसहस्त्रमावर्त्य तिलकं धारयेत्। फलं—राजवश्यता। नैवेद्यं—कदलीफलं मधु च।

यदेतत्कालिन्दी तनुतरतरगांकृति शिवे
कृशे मध्ये किंचिंजनति तव यद्भाति सुधियाम्।
विमर्दादन्योन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम्॥ 77॥

कपिला गोघ्रत या लाल चन्दन से इस यन्त्र को लिखकर दस दिन तक नित्य पूजन करें तथा प्रस्तुत मन्त्र का दो हज़ार जाप नित्य करें तद् पश्चात् इस मन्त्र को बोलते हुए साधक अपने ललाट पर तिलक करे और राजदरबार में जाये तो सभी राजपुरुष वशीभूत हो जायेंगे। इस यन्त्र को केले व शहद का भोग लगावें।

सकल राज वशीकरण यन्त्र

श्लो. ७८



रक्तचन्दनं पन्नीराख्यपुष्पद्रवेण पिष्ट्वा गन्धचेलिकामिश्रिते तस्मिन् यन्त्रमिदं विरच्य चत्वारिंशद्दिनानि संपूज्य पद्यमिदमनुदिनमष्टोत्तरशतमावर्त्य ललाटे धारयेत्, अनेन सकलराजवश्यता भवेत्। नैवेद्यं—मधु भाषापूपश्च।

स्थिरो गंगावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता
कलावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते॥ 78॥

लाल चन्दन या सुगन्धित पुष्पों के चूर्ण से या अष्ठगन्द से इस यन्त्र को बनावें। चालीस दिन तक इसकी पूजा करें तथा प्रस्तुत श्लोक का एक सौ आठ बार नित्य आवर्तन करें। यन्त्र को शहद व उड़द के पुये का भोग लगावें। इस चूर्ण का तिलक ललाट पर लगाने से राज दरबार में जाने पर सभी राजपुरुष वशीभूत हो जाते हैं।

इन्द्रजाल सिखाने वाला यन्त्र

श्लो. ७६



यन्त्रमिदं हेमपट्टे विलिख्य पञ्चचत्वारिंशद्दिनान्यभ्यचरू पद्यमिदं प्रत्यहं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। साधकः इन्द्रजालविद्यानिपुणो भवेत्। नैवेद्यं—मधु क्षीरपायसं च।

निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण कलमजुषो
नमन्भूर्तेर्नारीतिलक शनकैस्त्रुदयत इव।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समविस्थास्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये॥ 79॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर चौवन दिन तक नित्य पूजन करें और प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार जाप करें। यन्त्र को शहद व दूध व खीर का भोग लगावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति इन्द्रजाल विद्या एवं जादूगरी का निपुण कलाकार हो जाता है।

इन्द्रजाल दिखाने का यन्त्र

श्लो. ८०



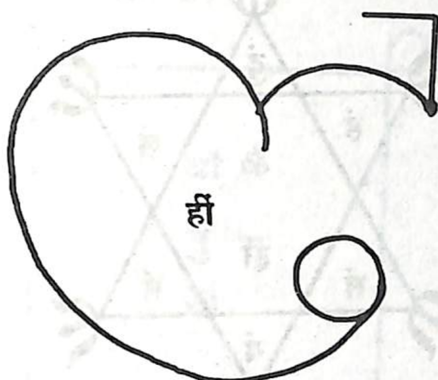
इदं यन्त्रं कनकपट्टतले लिखित्वा प्रथमपुष्पिण्या योनौ संस्थाप्य पञ्चदिनान्यर्चयित्वा पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य हस्ते निबध्य तिलकं धारयेत्। अनेन साधकः इन्द्रजाल दर्शयितुं समर्थो भवेत्। नैवेद्यं—मधु।

कुचौ सद्यस्स्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता
तव त्रातुं भगांदलमिति वलगं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव॥ 80॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर पहली बार रजस्वला हुई स्त्री की योनि में रखकर पांच दिन तक नित्य पूजन करें। प्रस्तुत श्लोक का एक हज़ार जप करें। फिर इस यन्त्र को दाहिने हाथ पर बांधकर तिलक करें। नैवेद्य में शहद का भोग लगावें। ऐसा करने पर व्यक्ति इन्द्रजाल व जादूगरी का खेल दिखाने में समर्थ हो जाता है।

अग्निस्तम्भन यन्त्र

श्लो. ८१



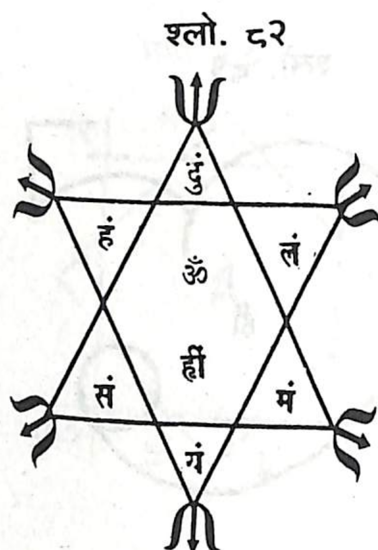
यन्त्रमिदं हाटकपट्टतले लिखित्वाऽऽग्नेयाभिमुखः षोडश दिनानि समाराध्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य साधयेत्। अनेन अग्निस्तम्भनं कर्तुं शक्यते। नैवेद्यं—गुड़पायसं मधु माषापूपश्च।

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजात्
नितम्बादाच्छिय त्वयि हरणरूपेण निदधे।
अतस्ते विस्तीर्णा गुरुरयमशेषां वसुमतीं
नितम्बप्राग्भारस्स्थगयति लघुत्वं नयति च॥ 81 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर आग्नय दिशा की ओर मुख करके सोलह दिन तक पूजन करें। इस मन्त्र का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। यन्त्र को गुड़, दूध, शहद व उड़द के पुये का भोग लगावें। ऐसा करने पर साधक अग्नि के स्तम्भन करने में समर्थ होता है।

जल साधक यन्त्र

श्लो. ८२

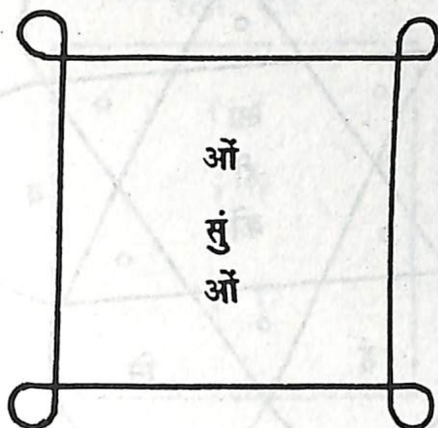


इदं यन्त्रं भूर्जपत्रे लिखित्वा पादुकायां निक्षिप्य चत्वारिंशदहानि संपूज्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा तत्पादुकां धारयेत्। अनेन साधको जले चरितुं समर्थो भवेत्। नैवेद्यं—नारीकेलफलं कदलीफलं मधु च।

करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीं
उभाभ्यामूरूभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विधिज्ञे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि॥ 82॥

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर पादुका पर चिपका दें अथवा नई पादुका पर इस यन्त्र को अष्टगन्द से लिख सकते हैं। चालीस दिन तक इसका नित्य पूजन करें एवं प्रस्तुत मन्त्र का एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में नारियल, केला व शहद चढ़ावें। इस यन्त्र के प्रभाव से साधक जल पर चलने में समर्थ हो जाता है। ऐसा शास्त्र में कहा गया है।

सैन्य स्तम्भन यन्त्र



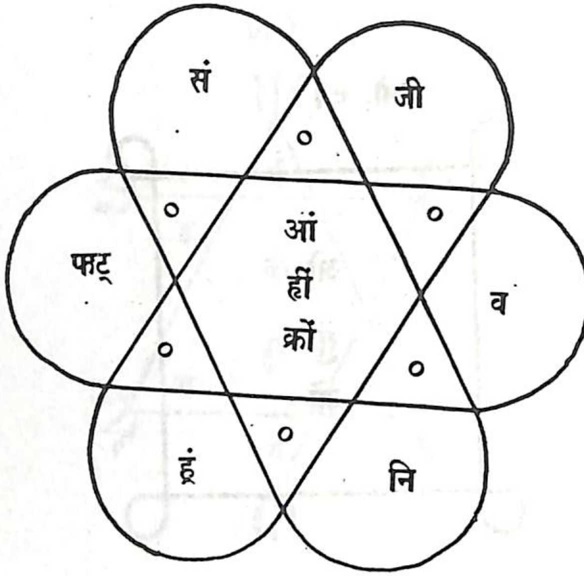
यन्त्रमिदं कनकपट्टे विलिख्य द्वादशदिनानि जपाकुसुमैरभ्यर्च्य पद्यमिदमहरहस्सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—गजतुरगसैन्यस्तम्भनम्। नैवेद्यं—गुड़पायसं मधु च।

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषगो जंघे ते विषमविशिखो बाढमकृत।
यदग्रे दृश्यन्ते दशक्षारफला: पादयुगली-
नखाग्रच्छद्मानः सुरमकुटशाणैकनिशिताः ॥ 83 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर बारह दिन तक जवाकुसम नाम पुष्प से पूजन करें। गुड़, दूध व शहद का भोग लगाते.हुए उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। इससे हाथी, घोड़ा सहित सभी सेना का स्तम्भन हो जाता है।

परकाया प्रवेश यन्त्र

श्लो. ८४



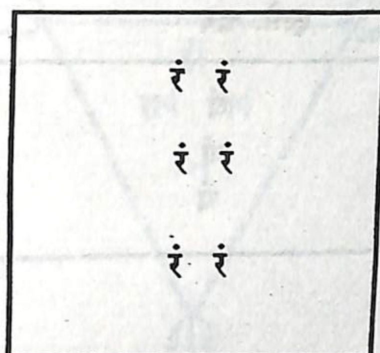
इदं यन्त्रं हेमपट्टतले लिखित्वा संवत्सरमेकमभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। एवं कृते साधकः परकायप्रवेशे शक्तो भवेत्। नैवेद्यं—क्षीरपायसं चित्रान्नं मधु च।

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ।
ययौः पंद्य पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररूणहरिचूडामणिरूचिः ॥ 84 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर एक वर्ष तक नित्य पूजन करें एवं प्रतिदिन विधिवत् उपरोक्त श्लोक का एक हज़ार जप करें। फिर इस यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति परकाया प्रवेश विद्या में समर्थ हो जाता है। इस यन्त्र को नैवेद्य में दूध, खीर, शहद व चित्र-विचित्र पकवान का भोग लगता है।

भूत बाधा निवृति यन्त्र

श्लो. ८५



यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टतले लिखित्वा द्वादशाहानि रक्तपुष्पैः संपूज्य पद्यमिदमनुदिनं सस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन भूतबाधानिवृत्तिः। नैवेद्यं—क्षीरपायसं गुडोदकं कदलीफलं च।

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयोः
तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरूचिरसालक्तकवते।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकंकेलितरवे॥ 85॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर बारह दिन तक लाल पुष्प से पूजा करें एवं उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। खीर, दूध, गुड़ व केले का भोग लगावें। फिर इस यन्त्र को जिस व्यक्ति को पहनावें उसको भूत-प्रेत बाधा नहीं सताएगी।

पिशाच बाधा नाशक यन्त्र

श्लो. ८६

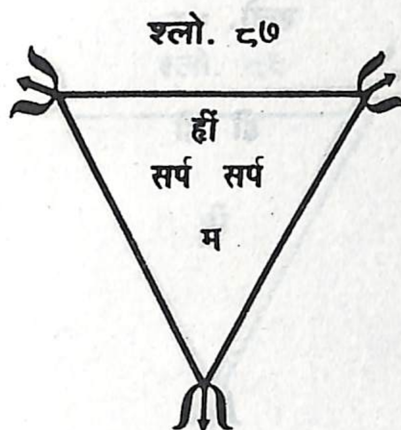
यं यं यं

इदं यन्त्रं हाटकपट्टे विलिख्य एकविंशतिदिनानि संपूज्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्।कलशोदकमभिमन्त्र्याभिषिञ्चेत्।अनेन समस्तपिशाचबाधानिवृत्तिः। नैवेद्यं—क्षीरपायसं नारीकेलफलं कदलीफलं मधु च।

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते।
चिरादन्तश्शल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा॥86॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर इक्कीस दिन तक नित्य पूजन करें। और इस श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। इसी मन्त्र से कलश के पानी को भी अभिमन्त्रित करें। पिशाच बाधा ग्रसित व्यक्ति को यह यन्त्र पहनावें एवं जल का छींटा दें तो पिशाच बाधा नष्ट हो जायेगी। नैवेद्य में खीर, दूध, नारियल, केला व शहद चढ़ावें।

सर्प भगाने का यन्त्र

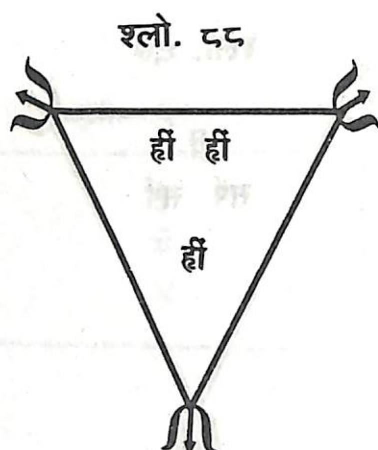


यन्त्रमिदं श्मशानभस्मनि विरच्य दशदिनान्याराध्य पद्यमिदमहरहः सहस्त्रमावर्त्य साधयेत्। साधकः सर्पानयने समर्थो भवेत्। नैवेद्यं—क्षीरपायसं मधु कदलीफलं नारीकेलफलं च।

हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
निशायां निद्राणं निशि चरमभागे च विशदौ।
वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रममिह किम् ॥ 87 ॥

इस यन्त्र को श्मशान की भस्म से लिखकर दस दिन तक नित्य पूजन करें। एवं उपरोक्त मन्त्र से एक हज़ार जाप करें। यन्त्र के नैवेद्य में दूध, खीर, शहद व नारियल चढ़ावें। ऐसे साधक के पास भूलकर भी सर्प नहीं आते।

हिंसक पशुओं को भगाने का यन्त्र



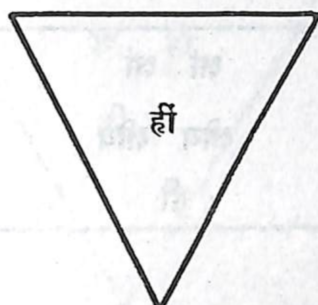
इदं यन्त्रं स्वर्णपट्टे रजतपट्टे वा लिखित्वा पञ्चदशदिनानि समाराध्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। साधकः मृगानयने प्रभवति। नैवेद्यं—गुड़पायसं नारिकेलफलं कदलीफलं च।

पदं ते कीर्तानां प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीकर्पूरतुलाम्।
कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा॥ 88॥

इस यन्त्र को सुवर्ण या रजत पत्र पर लिखकर पचास दिन तक पूजन करें और प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार जप करें। नैवेद्य में गुड़, दूध, नारियल एवं केला चढ़ावें। अनुष्ठान समाप्त होने पर यन्त्र को गले में धारण कर लें। ऐसे साधक को हिंसक पशु नुकसान नहीं पहुंचाते एवं उसे देखते ही दूर भागते हैं।

सर्वरोग नाशक यन्त्र

श्लो. ८६



यन्त्रमिदं हाटकपट्टतले लिखित्वा त्रिंशदहान्यर्चयित्वा पद्यमिदमनुदिनं सहस्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—सर्वरोगशमनम्। नैवेद्यं—गुड़पायसं मधु च।

नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसंकोचशशिभिः
तरुणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ।
फलानि स्वस्स्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रावं श्रियमनिशामह्नाय ददतौ ॥ 89 ॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर तीस दिन तक नित्य पूजन करें और उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में गुड़, दूध व शहद चढ़ावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र को गले में धारण करने से व्यक्ति के सभी प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

क्षुद्र बाधा नाशक यन्त्र

श्लो. ६०

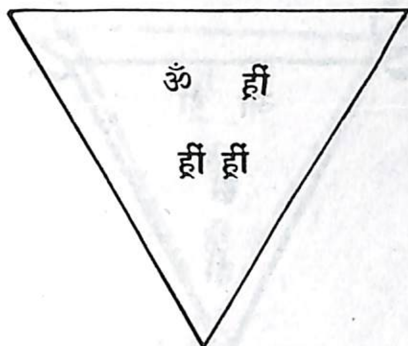
क्षां क्षां
क्षोय क्षीय
ह्रीं

इदं यन्त्रं हाटकपट्टे लिखित्वा पञ्चदशाहान्यभ्यर्च्य श्लोकमिममहरहस्सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। फलं—क्षुद्रबाधानिवृत्तिः नैवेद्यं—क्षीरपायसं मधु च।

ददाने दीनेभ्यश्श्रियमनिशमाशानुसदृशीं
अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति।
तवास्मिन् मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन् मज्जीवः करणचरणष्षट्चरणताम्॥ 90॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर पचास दिन तक इसकी नित्य पूजा करें। तथा उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। तथा नैवेद्य में दूध, खीर व शहद का भोग लगावें। तद् पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करें। ऐसा करने पर शुद्र, नीच एवं म्लेच्छ व्यक्ति द्वारा की गई बाधा से मुक्ति मिलती है।

भूमि लाभ देने वाला यन्त्र



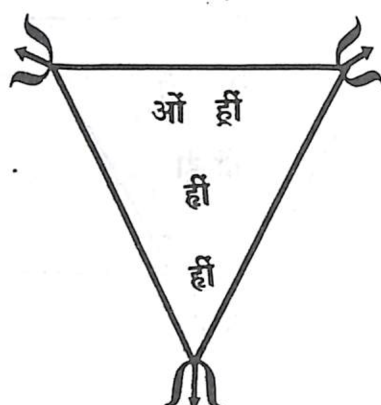
यन्त्रमिदं पद्यं च कनकपट्टतले लिखित्वा पञ्चविंशत्यहानि समाराध्य पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। साधकस्य भूलाभो धनलाभश्च भवति। नैवेद्यं—क्षीरपायसम्।

पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः
स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति।
अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमंजीररणित-
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारूचरिते॥ 91॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सौ दिन तक पूजा करें एवं उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में दूध व खीर का भोग लगावें। तद् पश्चात् इस यन्त्र को गले में धारण करने से साधक को भूमि सम्बन्धी क्रियाकलाप द्वारा धन का लाभ होता है।

राज्य प्राप्ति यन्त्र

श्लो. ९२

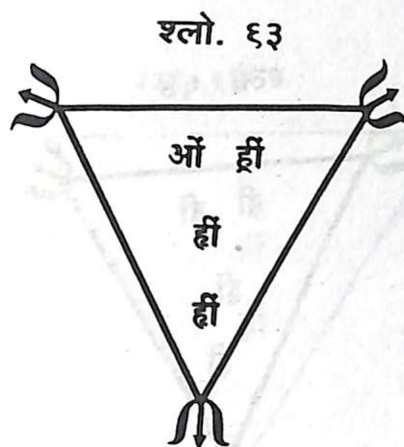


इदं यन्त्रं सुवर्णपट्टे विलिख्य पञ्चविंशतिदिनान्यभ्यर्च्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन साधको राज्यं लभते। नैवेद्यं—चित्रान्नं क्षीरं क्षीरपायसं ताम्बूलं च।

गतास्ते मचंत्वं द्रहिणहरिरूद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः।
त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारूणतया
शरीरी श्रृंगारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्॥ 92॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सौ दिन तक नित्य पूजा करें एवं उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन एक हज़ार जप करें। नैवेद्य में दूध, खीर, पान एवं विचित्र प्रकार के पकवान का भोग लगावें। फिर इस यन्त्र को धारण करने से व्यक्ति को राज्य, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

सकल अभीष्ट सिद्धि यन्त्र

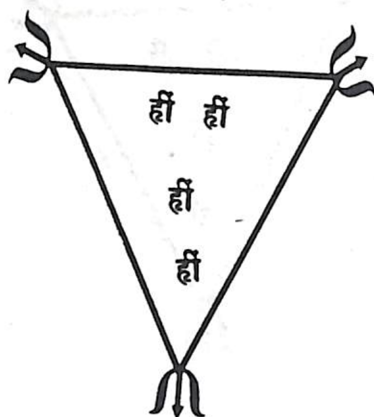


यन्त्रमिदं हेमपट्टतले विलिख्य पञ्चविंशतिदिनानि पूजयित्वा पद्यमिदमनुदिनं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन सकलाभीष्टसिद्धिर्भवति। नैवेद्यं—मधु।

अराला केशुषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे।
भृशं तन्वी मध्ये पृथुरूरसिजारोहविष्ये
जगत्रातुं शंभोर्जयति करूणा काचिदरूणा॥ 93॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सौ दिन तक नित्य पूजा करें। तथा उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार जाप करें। यन्त्र के नैवेद्य में शहद का भोग लगावें। अनुष्ठान की समाप्ति पर यन्त्र को गले में धारण करने से व्यक्ति के सम्पूर्ण अभीष्ट कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

इष्टार्थ सिद्धि यन्त्र



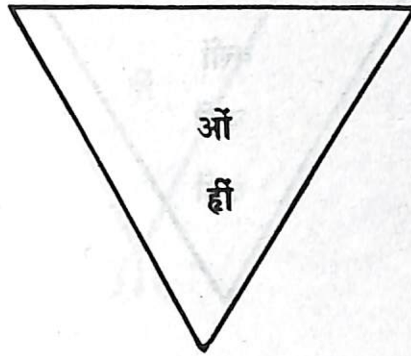
इदं यन्त्रं हाटकपट्टे लिखित्वा पञ्चविंशत्यहान्यभ्यर्च्य श्लोकमिमं प्रतिवासरं सहस्त्रमावर्तयेत्। फलं—इष्टार्थसिद्धिः। नैवेद्यं—मुद्रान्नं नारिकेलफलं कदलीफलं च।

कलकंः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरर्मरकतकरण्डं निबिडितम्।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयोभूयो निबिडयति नूनं तव कृते॥ 94॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सौ दिन तक नित्य पूजन करें तथा उपरोक्त मन्त्र का एक हज़ार जाप करें। नैवेद्य में नारियल, केला व अन्न चढ़ावें। अनुष्ठान पूरा होने पर यन्त्र को गले में धारण करने पर मनुष्य का वांछित कार्य सिद्ध होता है।

घाव भरने का यन्त्र

श्लो. ६५

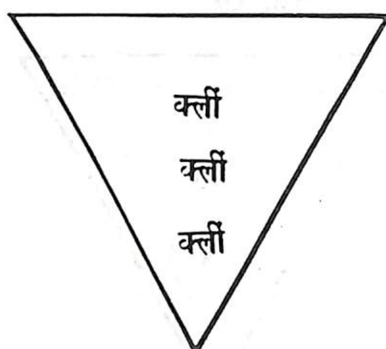


यन्त्रमिदं कनकपट्टतले विलिख्य तिलतैले निक्षिप्य त्र्यहमाराध्य पद्यमिदमनुदिनमष्टोत्तरशतमावर्त्य तत्तैलं व्रणे विलिम्पेत्। फलं—सद्योत्रणविरोपणम्। नैवेद्यं—तिलान्नं गुडं च।

पुरारातेरन्तः पुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा।
तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां
तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमायाभिरमराः॥ 95॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर तिल के तेल में डाल दें। तीन दिन तक उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करें। उस तेल को घाव पर लगावें तो कैसा भी घाव हो शीघ्र भर जाता है। इस यन्त्र को नैवेद्य में तिल व गुड़ का भोग लगावें।

विद्यादायक यन्त्र



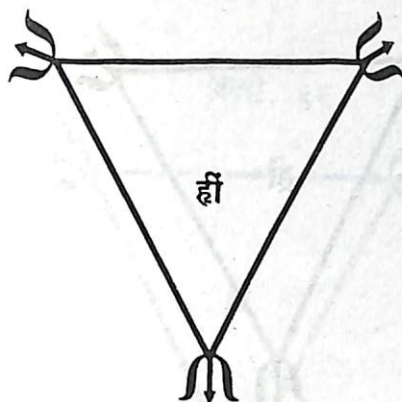
इदं यन्त्रं श्वेतार्कक्षीरेण धारणयोग्ये कस्मिंश्चिद्वस्तुनि लिखित्वाऽष्टौ दिनानि संपूज्य श्लोकमिमं प्रत्यहं सहस्त्रवारं जप्त्वा धारयेत्। साधको विद्यावान् भवेत्। नैवेद्यं— मधु क्षीरपायसं च।

कल्त्रं वैधात्रं कतिकति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासगंः कुरवकतरोरप्यसुलभः ॥ 96 ॥

इस यन्त्र को सफेद आकड़े के दूध से लिखें तथा आठ दिन तक इसका नित्य पूजन करें और प्रतिदिन एक हज़ार मन्त्र जपें। तद् पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति विद्यावान बन जाता है। यह यन्त्र भोजपत्र पर लिख सकते हैं तथा साधारण कागज पर भी लिख सकते हैं। इसके नैवेद्य में दूध, खीर, व शहद का भोग लगता है।

दृढ़ इच्छा शक्ति प्राप्ति करने का यन्त्र

श्लो. ९७



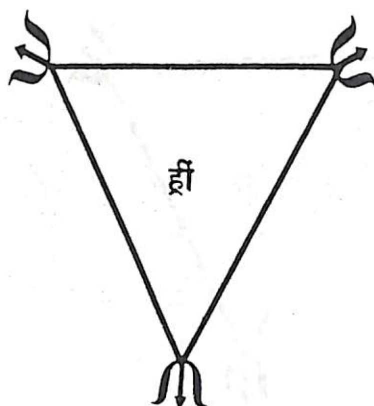
यन्त्रमिदं स्वर्णपट्टे ताम्रपट्टे वा लिखित्वाऽष्ट दिनानि समाराध्य श्लोकमिममहरहः सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। साधको दृढकायो भवेत्। नैवेद्यं—शाल्यन्नं मधु च।

गिरामाहुर्देवीं दुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।
तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि॥ 97॥

इस यन्त्र को सुवर्ण या ताम्र पत्र पर लिखकर आठ दिन तक पूजा करें। प्रतिदिन एक हज़ार मन्त्रों का जाप करते हुए शल्य अन्न व शहद का भोग लगावें। इस यन्त्र को धारण करने से व्यक्ति दृढ़ इच्छा शक्ति वाला हो जाता है और उसके संकल्प में कार्य करने की शैली में शक्ति आ जाती है। यह अनुभूत है। निरासावादी लोगों के लिए इस यन्त्र को धारण अमृततुल्य उपाध्य है।

वीर्य वर्धक यन्त्र

श्लो. ९८

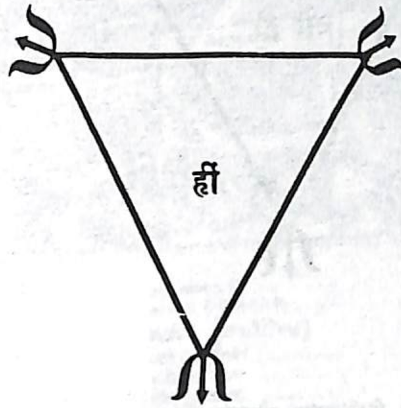


इदं यन्त्रं कनकपट्टतले विलिख्य षोडशदिनान्यर्चयित्वा पद्यमिदमनुदिनं सहस्रवारं जप्त्वा धारयेत्। अनेन स्त्रीणां गर्भधारणं पुरुषाणां बहुवृष्यता च भवेत्। नैवेद्यं—मधु।

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम्।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम्॥ 98॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सोलह दिन तक इसका नित्य पूजन करें। प्रतिदिन उपरोक्त श्लोक का एक हज़ार जप करें तथा नैवेद्य में शहद का भोग लगावें। तद् पश्चात् इस यन्त्र को गले में धारण करने से पुरुष की वीर्य उत्पन्न करने की शक्ति बढ़ जाती है और स्त्री को पहनाने से उसमें गर्भधारण करने की शक्ति बढ़ जाती है। यह यन्त्र स्त्री-पुरुष दोनों ही साधकों के वीर्य, ओज, तेज व बल को बढाता है।

शूरवीरता बढ़ाने वाला यन्त्र



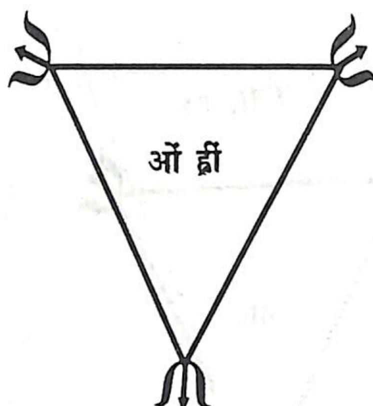
यन्त्रमिदं हेमपट्टे लिखित्वा षोड्श दिनान्यभ्यर्च्य प्रत्यहं श्लोकमिमं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन साधकः शूरो भवेत्। नैवेद्य—त्रिमधुरं माषादप मधु च।

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपन्तो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरंजीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्॥ 99॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर सोलह दिन तक नित्य पूजन करें एवं उपरोक्त श्लोक का प्रतिदिन एक हज़ार आवर्तन करें। नैवेद्य में उड़द, शहद, नारियल, व केला चढ़ावें। तद् पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करने पर कायर व्यक्ति भी शूरवीर हो जाता है तथा रण में शत्रु को परास्त कर देता है।

सकल कार्य सिद्धि यन्त्र

श्लो. १००



इदं यन्त्रं स्वर्णपट्टतले विलिख्य षोड्श दिनान्याराध्य श्लोकमिमं प्रतिवारसं सहस्त्रमावर्त्य धारयेत्। अनेन सकलकार्यसिद्धिर्भवेत्। नैवेद्यं—नारिकेलफलं कदलीफलं च।

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधिः
सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना।
स्वकीयैरम्भोभिः सलिलनिधिसौहित्यकरणं
त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचांस्तुतिरियम्॥ 100॥

इस यन्त्र को सुवर्ण पत्र पर लिखकर उपरोक्त मन्त्र का एक हजार जाप प्रतिदिन करते हुए सोलह दिन तक इसका पूजन करें। नैवेद्य में नारियल व केला चढ़ावें। तद् पश्चात् यन्त्र को गले में धारण करने पर व्यक्ति के सकल कार्य सिद्ध होते हैं एवं व्यक्ति सर्वांगीन उन्नति को प्राप्त करता है।

□□□



डायमंड पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित



ज्योतिष और तंत्र-मंत्र की उपयोगी पुस्तकें



राधाकृष्ण श्रीमाली

- ज्योतिष और लाटरी ....
- शरीर सर्वांग लक्षण ....
- वृहद हस्त रेखा ....
- नक्षत्र विज्ञान ....
- अंक ज्योतिष ....
- तंत्र रहस्य ....
- भृगु संहिता ....
- मंत्र शक्ति से रोग निवारण ....
- मंत्र शक्ति ....
- तंत्र शक्ति ....
- तंत्र शक्ति साधना और सैक्स ....
- स्वप्न ज्योतिष ....
- रमल विज्ञान ....
- प्रश्नोत्तर ....
- प्रश्न ज्योतिष ....
- यंत्र शक्ति ....
- भारतीय ज्योतिष ....
- ज्योतिष और रत्न ....
- ज्योतिष सीखिये ....
- दशाफल दर्पण ....
- स्तोत्र शक्ति ....
- मंत्र शक्ति से कामना सिद्धि ....

कीरो (ज्योतिष)

- कीरो नक्षत्र विज्ञान ....
- कीरो अंक विज्ञान ....
- कीरो हस्त रेखाएं ....

पं. भोजराज द्विवेदी

- अपनी जन्म पत्रिका आप बनाएं ......
- ज्योतिष प्रश्नोत्तरी ....
- वक्री ग्रह ....
- अनुभूत यंत्र मंत्र तंत्र और टोटके ......
- ज्योतिष और धनयोग ....
- ज्योतिष में भवन, वाहन और कीर्ति योग
- ज्योतिष और राजयोग ....
- ज्योतिष और विवाह योग ....
- ज्योतिष और सन्तान योग ....
- ज्योतिष और आयुष्य योग ....
- ज्योतिष और रोग विचार ....
- मंत्र शक्ति और साधना . ...
- तंत्र शक्ति और साधना ....
- यंत्र शक्ति और साधना ....
- वृहद हस्तरेखा विज्ञान ....
- हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विज्ञान) ....

दयानन्द वर्मा

- ध्यान योग ....
- सफलता की सीढ़ियां ....
- पामिस्ट्री गाईड ....

नितिन शर्मा

- मुखाकृति विज्ञान ....

पं० उर्मिला शर्मा

- ज्योतिष और पति-पत्नी का चुनाव ...

छात्रोपयोगी पुस्तकें

ले० अनन्त पै

- स्मरण शक्ति कैसे बढ़ाएं ....
- सफल कैसे बनें ....
- आत्मविश्वास कैसे प्राप्त करें ....
- बच्चों की सफलता में सहायक कैसे बनें ....

नवीनतम प्रकाशन : कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एंड आपरेटिंग गाइड 35/-

डायमण्ड पाकेट बुक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

महिलाओं की सम्पूर्ण मासिक पत्रिका

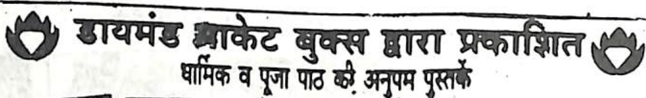
गृहलक्ष्मी

नई नवेली, पारिवारिक पत्रिका

मनोरंजक फिल्म पत्रिका

मूवी

चित्रहार



धार्मिक व पूजा पाठ की अनुपम पुस्तकें



...प्रकाशन : कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एंड आपरेटिंग गाइड 35/-.

डायमण्ड पाकेट बुक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

स्मरण शक्ति कैसे बढ़ायें

लेखक : अनन्त पै मूल्य 30/- डाक खर्च 5/-

लेखक की अन्य उपयोगी पुस्तकें

आत्म विश्वास कैसे प्राप्त करें	30.00
सफल कैसे बनें	30.00
बच्चों की सफलता में सहायक कैसे बनें	30.00

राशिफल

डायमण्ड राशिफल

12 राशियां अलग-अलग पुस्तकों में उपलब्ध

मूल्य प्रत्येक

डायमंड पाकेट बुक्स द्वारा प्रकाशित

छात्रोपयोगी पुस्तकें



जीवनी माला

चन्द्रशेखर आज़ाद ....
महाराणा प्रताप ....
ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ....
मुगल सम्राट अकबर ....
युग प्रवर्तक महात्मा बुद्ध ....
अशोक महान ....
भारत का स्वतंत्रता संग्राम ....
सरदार बल्लभ भाई पटेल ....
गोबिन्द वल्लभ पंत ....
नेलसन मंडेला ....
डा. राजेन्द्र प्रसाद ....
स्वामी विवेकानन्द ....
महामात्य-चाणक्य ....
मदनलाल धींगरा ....
लोकमान्य तिलक ....
तांत्याटोपे ....
योगीराज अरविन्द ....
स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुयायी ....
मदन मोहन मालवीय ....
अशफाक उल्ला खां ....
गोपाल कृष्ण गोखले ....
महर्षि विश्वामित्र ....
स्वामी श्रद्धानन्द ....
युग पुरुष नेहरू ....
महात्मा गांधी ....
गणेश शंकर विद्यार्थी ....
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ....
इन्दिरा गांधी ने कहा था ....
बादशाह खान ....
राष्ट्रमाता इन्दिरा गांधी ....
वीर सावरकर ....
अमर शहीद भगत सिंह ....
स्वामी रामतीर्थ ....
लाला लाजपत राय ....
राम प्रसाद बिस्मिल ....
छत्रपति शिवाजी ....
1857 का स्वतन्त्रता संग्राम ....
सुभाष चन्द्र बोस ....
मदर टेरेसा ....
डायना की रोमांचक गाथा ....
नीलकंठ (भगवान शिव) ....
प्रजाप्रति ब्रह्म ....
गजानन ....
भगवान परशुराम ....
सत्य साईं बाबा ....
रामकृष्ण परमहंस ....
विनोबा भावे ....
भीमराव अम्बेडकर ....

ले० अज्ञात पै
छात्रोपयोगी पुस्तकें

स्मरण शक्ति कैसे बढ़ायें ....
सफल कैसे बने ....
आत्म विश्वास कैसे प्राप्त करें ....
बच्चों की सफलता में सहायक कैसे बने ....

नवीनतम प्रकाशन : कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एंड आपरेटिंग गाइड 35/-

डायमण्ड पाकेट बुक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

महिलाओं की सम्पूर्ण मासिक पत्रिका
गृहलक्ष्मी
नई नवेली, पारिवारिक पत्रिका

मनोरंजक फिल्म पत्रिका
मूवी
चित्रहार

डायमंड पाकेट बुक्स में ओशो का अलौकिक साहित्य

संभोग से समाधि की ओर-I
संभोग से समाधि की ओर-II
संभोग से समाधि की ओर-III
संभोग से समाधि की ओर IV
रजनीश ध्यान योग
मिट्टी के दीये
गीता : विज्ञान, कला, अध्यात्म
गीता : समस्त योगों का सार
गीता : मनोविज्ञान का परम शास्त्र
गीता : योग विज्ञान
साक्षी कृष्ण और रासलीला
कृष्ण : साधना रहित सिद्धि
कृष्ण और हंसता हुआ धर्म
कृष्ण : गुरु भी सखा भी
कृष्ण : जिज्ञासा, खोज, उपलब्धि
शिव साधना
शिव दर्शन
दिया अमृत पाया जहर
सम्बोधि के क्षण
राम खुमारी
अभिनव धर्म
करुणा और क्रान्ति
ध्यान की कला
ध्यान और प्रेम
मुक्ति बोध
साधना सूत्र : हेरत हेरत हे सखी
साधना सूत्र : आत्मा का कमल
साधना सूत्र : ह्रदय संगीत
अमृत की दिशा
सम्भावनाओं की आहट
शून्य का दर्शन
प्रार्थना के बीज
नये समाज की खोज
मैं धर्मिकता सिखाता हूं, धर्म नहीं
योग सूत्र : एक वैज्ञानिक दृष्टि
योग सूत्र : आन्तरिक अनुशासन
योग सूत्र : प्रज्ञा और समाधि
योग सूत्र : सद्‌गुरु समर्पण
योग सूत्र : नींद, स्वप्न और बोध
योग सूत्र : अहंकार और समर्पण
योग सूत्र : बुद्धों का मनोविज्ञान
योग सूत्र : समाधि के दो रूप
जीवन संगीत
ध्यान एक शून्य गगन
भीतर का दीया
उपनिषद-शून्य संवाद
एकमात्र उपाय : जागो
भक्ति :विराट का अनुभव
भक्ति : निराकार से एकाकार
भक्ति : जीवन रूपांतरण की कला
भक्ति : शून्य की झील में प्रेम का कमल
परम प्रेम रूपा भक्ति
सहज योग : साक्षी और प्रेम
सहज योग : ध्यान और प्रेम
सहज योग : प्रार्थना और आनंद
सहज योग : महाक्रान्ति अभी और यहीं
साधना के आयाम
कुंडलिनी और तंत्र
कुंडलिनी यात्रा
कुंडलिनी जागरण और शक्तिपात
कुंडलिनी और सात शरीर
जात हमारी ब्रह्म है
सुखिया सब संसार दुखिया दास कबीर
जित देखूं तित तूं
जोतहिं जोति समानी
बोलै शेख फरीद
क्या मेरा क्या तेरा
मन लागा यार फकीरी में
सत भाषै रैदास
निरगुन का बिसराम
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
प्रभु की पगडंडियां
साधना पथ
स्वर्णिम भारत
भारत के जलते प्रश्न
धर्म और राजनीति
शिक्षा : नये प्रयोग
अस्वीकृति में उठा हाथ
नयी क्रान्ति की रूपरेखा
विचार क्रान्ति
गांधी पर पुनर्विचार
हरि ओउम तत्सत्
ओउम शांति:शांति:शांति:
ओउम मणि पद्‌म हुंम
एक महान् चुनौती : मनुष्य का स्वर्णिम भविष्य
ध्यान दर्शन
नव संन्यास क्या
क्रान्तिसूत्र
झुक आई बदरिया सावन की
पिया मिलन की आस
मेरा मुझमें कुछ नहीं
होनी होय सो होय
लाली मेरे लाल की

डीलक्स संस्करण
सम्भोग से समाधि की ओर (सम्पूर्ण संस्करण)
जस पनिहार धरे सिर गागर
नाम सुमिर मन बावरे
ज्योति से ज्योति जले
समाधि के नृत्य गीत
का सोवे दिन रैन
एक ओंकार सतनाम
मैं मृत्यु सिखाता हूं
आत्मपूजा उपनिषद्-भाग-1
आत्मपूजा उपनिषद्-भाग-2
समाधि की सुराही
दुख के पार
मौलिक क्रान्ति
जीवन अमृत
मौन संगीत
सन्तो मगन भया मन मेरा
गुरु परताप साध की संगति
प्रेम-रंग-रस ओढ़ चदरिया
अरी, मैं तो नाम के रंग छकी
झरत दसहूं दिस मोती
मनमधुकर खेलत वसन्त
अजहूं चेत गंवार
अवसर बीता जाए
ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया
अथातो भक्ति जिज्ञासा
भक्ति : विराट से मैत्री
भक्ति : परम क्रान्ति
भक्ति : ध्यान की मधुशाला
सत्य की पहली किरण
सुमरिन मेरा हरि करे
उड़ियो पंख पसार
पाथेय

ओशो सम्बन्धी
(स्वामी अगेह भारती)
ओशो गाथा
ओशो के संग कुछ अनमोल क्षण
विचारों के फूल
ओशो की मधुशाला में बच्चन
मेरी रजनीशपुरम यात्रा
एक ओशो शिष्य की अन्तर्यात्रा
शांति की खोज- (उर्मिला)
एक फक्कड़ मसीहा : ओशो
—स्वामी ज्ञानभेद



डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़-2, नई दिल्ली-20

लेखक परिचय



पुस्तक के यशस्वी लेखक डा॰ भोजराज द्विवेदी

दैवज्ञ शिरोमणि डा॰ भोजराज द्विवेदी ज्योतिष, मन्त्र-तन्त्र व अध्यात्म विद्या के जाने-माने लेखक, लब्ध प्रतिष्ठित पत्रकार व भविष्यवक्ता हैं। एम.ए. संस्कृत दर्शन प्रथम श्रेणी में रहकर सर्वोच्च अंक लिये तथा सम्प्रति जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर में ही वराहमिहिर ज्योतिष को लेकर शोधकार्य कर रहे हैं। ज्योतिष विषय को लेकर "अज्ञात-दर्शन" नामक एक समाचार-पत्र का सम्पादन गत 17 वर्षों से कर रहे हैं। ज्योतिष में आपको ढेरों मानपत्र, अनेक स्वर्ण पदक प्राप्त हो चुके हैं तथा कई नागरिक अभिनन्दन हो चुके हैं। आपको केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री माखनलाल फोतेदार द्वारा डॉक्टर ऑफ ऐस्ट्रोलोजी की उपाधि मिल चुकी है तथा पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह द्वारा अंग वस्त्र, मुकुट एवं स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया। आप देश-विदेश के अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की अध्यक्षता भी कर चुके हैं तथा सिंगापुर, हांगकांग, अबूधापी, दुबई, शारजाह एवं अनेक मुस्लिम राष्ट्रों की भी यात्रा कर चुके हैं। ज्योतिष विषय को लेकर पचास से अधिक रेडियो वार्ता, एक हज़ार लेख व डेढ़ हज़ार से अधिक भविष्यवाणियां प्रकाशित होकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। ज्योतिष-क्षेत्र में आपने दर्जनों स्तरीय पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से एक यह दुर्लभ पुस्तक आपके हाथों में है।



डायमंड पाकेट बुक्स प्रा. लि.